# हिन्दी शिक्षण

## (Teaching in Hindi)

### पेपर–5 & 6

**ch-,M-**
**B.Ed.**

nwjLFk f'k{kk funs'kky;
egf'kZ n;kuUn fo'ofo|ky;
jkgrd&124 001

Copyright © 2003, Maharshi Dayanand University, ROHTAK
All Rights Reserved. No part of this publication may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means; electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the written permission of the copyright holder.

Maharshi Dayanand University
ROHTAK – 124 001

Developed & Produced by EXCEL BOOKS PVT. LTD., A-45 Naraina, Phase 1, New Delhi-110028

# विषय सूची

## इकाई–1


**अध्याय 1:** हिन्दी शिक्षण–मातभाषा का महत्त्व 5

**अध्याय 2:** अनुदेशनात्मक उद्देश्य 9

**अध्याय 3:** श्रवण–कौशल शिक्षण 25

**अध्याय 4:** मौखिक अभिव्यक्ति कौशल शिक्षण 30

**अध्याय 5:** वाचन कौशल शिक्षण 35

**अध्याय 6:** लेखन–शिक्षण 46

**अध्याय 7:** उच्चारण–शिक्षण 50

**अध्याय 8:** अक्षर–विन्यास 60

**अध्याय 9:** विराम–चिन्ह 68


## इकाई–2


**अध्याय 10:** सूक्ष्म शिक्षण द्वारा विभिन्न कौशलों का ज्ञान 71

**अध्याय 11:** पाठ योजना का अर्थ, महत्व एवं रूपरेखा 85

**अध्याय 12:** अनुदेशनात्मक सामग्री 91


## इकाई–3


**अध्याय 13:** कविता शिक्षण 96

**अध्याय 14:** गद्य शिक्षण 104

**अध्याय 15:** व्याकरण शिक्षण 111

**अध्याय 16:** रचना–शिक्षण 116


## इकाई–4


**अध्याय 17:** हिन्दी–पाठ्यक्रम निर्माण एवं समीक्षा 125

**अध्याय 18:** हिन्दी–पाठ्य–पुस्तक समीक्षा 129


## इकाई–5


**अध्याय 19:** हिन्दी में मूल्यांकन 136

**अध्याय 20:** हिन्दी में गहकार्य 144

**अध्याय 21:** पाठ–योजना 148

# TEACHING OF HINDI
## PAPER–V & VI
## Group-A (Option-2)

***Objectives of Teaching of School Subjects***

1. To develop among the student-teachers an understanding and appreciation of the nature of the subject, its structure and content, and the manner in which content is organized for effective understanding and processing of information.
2. To provide student-teachers with such content as would deepen and enrich their knowledge in the subject.
3. To deal with such remedial content as would enable them to avoid common mistakes in teaching of the subject.
4. To acquint the student teachers with the specific objectives of teaching the subject and its place in the curriculum.
5. To acquaint them with the different methods of teaching and the teaching skills associated with them.
6. To enable the students-teachers to learn various techniques and methods of evaluating performance in the subject.

## THEORY

M.Marks : 100
Time : 3 Hrs.

***Note:*** The examiner is requested to set 10 questions taking two questions from each unit. The candidate will be required to attempt five questions selecting at least one from each unit.

## हिन्दी शिक्षण पाठ्यक्रम

1. अ. मातभाषा शिक्षण, अर्थ, स्वरूप, महत्व एवं ब्लूम द्वारा निर्धारित अनुदेशनात्मक उद्देश्य
   आ. भाषाई कौशल का सामान्य ज्ञान–
      क. श्रवण कौशल  ख. भाषण कौशल
      ग. पठन कौशल  घ. लेखन कौशल
   इ. हिन्दी में उच्चारण–शिक्षण, अक्षर–विन्यास एवं विराम चिन्ह
2. अ. सूक्ष्म शिक्षण द्वारा विभिन्न कौशलों का ज्ञान–
      क. प्रश्न कौशल  ख. उदाहरण कौशल
      ग. व्याख्या कौशल
   आ. पाठ योजना का अर्थ, महत्व एवं रूपरेखा
   इ. हिन्दी शिक्षण में अनुदेशानात्मक सामग्री का अर्थ, महत्व एवं उचित प्रयोग।
3. हिन्दी की विभिन्न विधाओं का शिक्षण
   क. कविता शिक्षण (रस पाठ एवं बोध पाठ के रूप में)  ख. गद्य शिक्षण
   ग. व्याकरण शिक्षण (औपचारिक एवं अनौपचारिक)  घ. रचना शिक्षण (कहानी रूप में पत्र एवं निबन्ध)
4. अ. हिन्दी पाठ्यक्रम निर्माण एवं समीक्षा
   आ. हिन्दी पाठ्य–पुस्तक की विशेषताएँ एवं समीक्षा।
5. हिन्दी में मूल्यांकन एवं गह–कार्य
   अ. हिन्दी में मूल्यांकन अर्थ व स्वरूप
   आ. विद्याओं में मूल्यांकन प्रक्रिया
   इ. हिन्दी शिक्षण में गहकार्य स्वरूप एवं संशोधन

# इकाई-1

# अध्याय-3: श्रवण–कौशल शिक्षण

**उद्देश्यः**

प्रस्तुत पाठ पढ़ने के फलस्वरुप छात्रों से यह अपेक्षा की जाती हैः–

- श्रवण कौशल का अर्थ एवं महत्व को बताते है।
- श्रवण कौशल के उद्देश्यों का प्रत्याभिज्ञान करते है।
- श्रवण कौशल शिक्षण विधियों का प्रत्यास्मरण करते हैं।

**सरंचनाः**

1.1 भूमिका
1.2 श्रवण कौशलः अर्थ
1.3 श्रवण कौशलः महत्व
1.4 श्रवण कौशलः उद्देश्य
1.5 श्रवण कौशलः विधियाँ
1.6 सारांश
मॉडल उत्तर
1.7 मुख्य शब्द
1.8 संदर्भ ग्रन्थ

## 1.1 भूमिका

श्रवण कौशल के बारे में जानने से पहले छात्रों आप के लिए यह आवश्यक ही अनिवार्य भी है कि आप भाषायी कौशलों से परिचित हो लें। तभी आप सभी कौशलों को अच्छी तरह से समझ सकेगें।

मनुष्य में भाषा सीखने की प्रवत्ति स्वाभाविक रुप से विद्यमान रहती है। उसकी इस प्रवत्ति का प्रमाण शैशवावस्था में मिल जाता है। जब वह अनुकरण के माध्यम से अपने माता–पिता तथा घर के अन्य सदस्यों से ध्वनियाँ ग्रहण करता है, ध्वनि समूहों को समझने लगता है और उन्हें बोलने लगता है। यह स्वाभाविक प्रवत्ति ही उसे भाषा सीखने की ओर प्रशस्त करती है।

भाषा एक कला है, दूसरी कलाओं की भाँति इसे सीखा जाता है और सतत अभ्यास से इसमें प्रवीणता आती है। जिस प्रकार दूसरी कलाओं में साधनों की आवश्यकता होती है उसी प्रकार भाषा सीखने के लिए भी साधन की आवश्यकता होती है। साधन का दूसरा नाम अभ्यास है कला की साधना अन्ततः आदत बन जाती है। शुद्ध एवं शिष्ट बोलने वाले व्यक्ति को स्कूल में पढ़े व्याकरण के नियम याद न हो, लेकिन बोलने वक्त स्वतः उसके मुख से व्याकरण सम्मत शुद्ध भाषा ही निकलेगी।

भाषा ज्ञार्नाजन का सशक्त साधन है, परन्तु सबसे पहले भाषा कौशलों 'L.' 'S.' 'R.' 'W. में प्रवीणता प्राप्त करने की आवश्यकता होती है।

**L. Listening skill. S. Speaking or oral skill**

**R. Reading skill. W. Writing skill**

श्री एस.के. देशपांडे ने इस तथ्य पर अपने विचार प्रकट करते हुए कहा है–"भाषा–शिक्षण का सम्बन्ध केवल ज्ञान प्रदान करना या सूचनायें प्रदान करना मात्र नहीं बल्कि भाषा सीखने वालो को इन चारो विविध कौशलों में दक्ष बनाना है।"

भाषा शिक्षण के उद्देश्यों की विवेचना करते हुए पिछले अध्याय में हमने कौशलात्मक उद्देश्य के बारे में पढ़ा था उसी कौशलात्मक उद्देश्य के अर्न्तगत हम इन चारो कौशलों को समाहित करते हैं:–

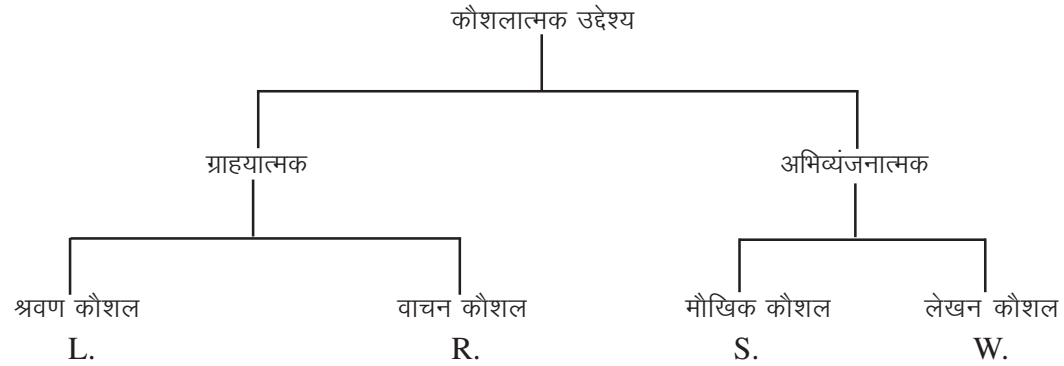


प्रस्तुत चित्र से स्पष्ट हो जाता है कि हम किन–किन कौशलो के माध्यम से ग्रहण एवं अभिव्यक्त करते हैं। यदि हम इन कौशलों में प्रवीणता अर्जित नहीं करते तो हम न अन्य विषयों को समझ सकते हैं और न ही भावों एवं विचारो को मौखिक अथवा लिखित भाषा में व्यक्त कर सकते हैं। इन चारो कौशलों में दक्षता प्राप्त करने का अर्थ है– शुद्ध भाषा बोलना, सफलतापूर्वक सस्वर एवं मौन पाठ करना, धैर्यपूर्वक दूसरों की बात सुनना, प्रभावपूर्ण भाषा में लिखकर अपने विचार प्रकट करना। साहित्य का रसास्वादन करना इत्यादि है।

**अपनी प्रगति जांचिए-1**

1. एस०के० देशपांडे ने भाषा सीखने के बारे में क्या कहा है?

## 1.2 श्रवण-कौशल का अर्थ

भाषा–श्रवण का सम्बन्ध 'कर्ण' से है। शब्द का अर्थ सामाजिक प्रसंग में सुनने से ग्रहण किया जाता है। छात्र कविता, कहानी, भाषण वाद–विवाद, वार्तालाप आदि का ज्ञान सुनकर ही प्राप्त करता है और उसका अर्थ भी ग्रहण करता है। यदि छात्र की श्रवण–इन्द्रिय में दोष है तो वह न भाषा सीख सकता है और न अपने मनोभावों को अभिव्यक्त कर सकता है। अतः उसका भाषा ज्ञान शून्य के बराबर ही रहेगा। बालक सुनकर ही अनुकरण द्वारा भाषा ज्ञान अर्जित करता है।

## 1.3 श्रवण-कौशल शिक्षण का महत्वः

बच्चा जन्मोपरान्त ही सुनने लग जाता है। यह ध्वनियाँ उसके मन–मस्तिष्क पर अकिंत हो जाती है। यह अकिंत ध्वनियाँ ही बच्चे के भाषा ज्ञान का आधार बनती है। अच्छी प्रकार से सुनने के कारण ही बालक ध्वनियों के सूक्ष्म अन्तर को समझ पाता है। श्रवण–कौशल ही अन्य भाषायी कौशलों को विकसित करने का प्रमुख आधार बनता है।

1. ध्वनियों के सूक्ष्म अन्तर को पहिचानना।
2. अध्ययन की आधारशिला।
3. भाषा शिक्षण के उद्देश्यों की प्राप्ति।
4. वाचन कौशल का विकास।
5. लेखन कौशल का विकास।
6. व्यक्तित्व का विकास।
7. विभिन्न साहित्यिक व सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्राप्ति में सहायक।

**अपनी प्रगति जांचिए-2**

1. भाषा श्रवण का सम्बन्ध किस से है?
2. ध्वनियाँ कहाँ अंकित होती है?

## 1.4 श्रवण-कौशल शिक्षण के उद्देश्य

1.4.1. सुनकर अर्थ ग्रहण करने की योग्यता का विकास करना।

1.4.2. किसी भी श्रुत सामग्री को मनोयोग पूर्वक सुनने की प्रेरणा प्रदान करना।

1.4.3. वक्ता के मनोभावों की निपुणता पैदा करना।

1.4.4. श्रुत सामग्री के विषय को भली–भांति समझने की योग्यता उत्पन्न करना।

1.4.5. श्रुत सामग्री के विषय के महत्वपूर्ण एवं मर्मस्पर्शी विचारों भावो एवं तथ्यों का चयन करने की क्षमता प्रदान करना।

1.4.6. विद्यार्थियों में ध्वनियों, शब्दों का शुद्ध उच्चारण तथा स्वर, गति, लय और प्रवाह के साथ पढ़ने की योग्यता विकसित करना।

1.4.7. छात्रों की मौलिकता में वद्धि करना।

1.4.8. छात्रों का मानसिक एवं बौद्धिक विकास करना।

1.4.9. छात्रों में भाषा व साहित्य के प्रति रुचि पैदा करना।

1.4.10. छात्रों को साहित्यिक गतिविधियों में भाग लेने व सुनने के लिए प्रेरित करना।

1.4.11. श्रुत सामग्री का सारांश ग्रहण करने की योग्यता विकसित करना

सुनकर अर्थ ग्रहण करने से अभिप्राय यह है कि छात्र में निम्नलिखित योग्यता आ जाए।

(i) धैर्यपूर्वक सुनना, सुनने के शिष्टाचार का पालन करना।

(ii) ग्रहणशीलता की मनःस्थिति बनाये रखना। शब्दों मुहावरों व उक्तियों का प्रसंगानुकूल भाव व अर्थ समझ सकना।

(iii) स्वराघात, बलाघात व स्वर के उतार–चढ़ाव के अनुसार ग्रहण करना।

(iv) भावानुभूति कर सकना, भावाभिव्यक्ति के ढंग को समझ सकना।

(v) भावों, विचारों व तथ्यों का मूल्यांकन कर सकना।

## 1.5 श्रवण-कौशल की शिक्षण विधियाँ

शिक्षक, शिक्षार्थियों में श्रवण कौशल विकसित करने के लिए अग्रांकित तथ्य अपनाता है–

1.5.1. **सस्वर वाचनः** छात्र अध्यापक द्वारा किये गए आदर्श वाचन और कक्षा में किसी अन्य छात्र द्वारा किये जाने वाले अनुकरण वाचन को ध्यानपूर्वक सुनकर शुद्ध उच्चारण, यति, गति, आरोह–अवरोह आदि का ज्ञान प्राप्त करता है।

1.5.2. **प्रश्नोत्तरः** कक्षा–शिक्षण के उपरान्त अध्यापक पठित सामग्री को आधार बना कर छात्रों से प्रश्न पूछता है, छात्रों के उत्तर से इस तथ्य का मूल्यांकन हो जाता है कि छात्रों में सुनकर विषय–वस्तु को ग्रहण किया है या नहीं। पठित सामग्री के आधार पर प्रश्न पूछने से छात्र सावधान भी हो जायेगें और कक्षा में पढ़ाई गई बातों को ध्यानपूर्वक सुनेगें।

1.5.3. **कहानी कहना व सुननाः** अध्यापक बच्चों को कहानी सुनाये और बाद में उसी कहानी को बच्चों से सुनें। इससे पता लग जायेगाा कि छात्रों ने कहानी सुनी या नहीं। कहानी के द्वारा बच्चों का ध्यान सुनने की तरफ आकर्षित किया जा सकता है।

1.5.4. **श्रुतलेखः** वैसे तो श्रुतलेख लेखन कौशल को विकसित करने का साधन है, परन्तु इसकी सहायता से श्रवण कौशल को भी विकसित किया जा सकता है। श्रुतलेख सुनकर लिखना होता है, जो छात्र ध्यान से सुनेगा वह पूरी सामग्री को लिख लेगा, जो छात्र ध्यान से नहीं सुनेगा उसके लेख के बीच–बीच में शब्द या वाक्यांश छूट जायेगें।

1.5.5. **भाषणः** भाषण श्रवण–कौशल का प्रशिक्षण देने में भी प्रयुक्त किया जाता है, वैसे तो यह मौखिक कौशल को विकसित करने का साधन है। छात्रों को पहले यह बता दिया जाता है कि भाषण को ध्यान से सुने। भाषण समाप्ति

के उपरान्त उनसे प्रश्न पूछे जायेगें। प्रश्नो के उत्तरो से यह पता लग जाता है कि छात्रो ने भाषण ध्यान से सुना है अथवा नहीं।

1.5.6. **दश्य-श्रवण सहायक सामग्री का प्रयोगः**

(i) ***ग्रामोफोन एवं टेपरिकार्डरः*** ग्रामोफोन एवं टेपरिकार्डर सामान्यतः मनोरंजन के साधन के रुप में प्रयुक्त होते है, लेकिन श्रवण–कौशल को विकसित करने के लिए टेपरिकार्डर का प्रयोग रोचक साधन के रुप में किया जा सकता है। यह ज्यादा कीमती नहीं है। इसीलिए इसे विद्यालय में आसानी से खरीदा जा सकता है। कविता कहानी, महान पुरुषों के भाषण, वार्ता आदि सुनाकर बच्चों के श्रवण कौशल का विकास किया जाता है। टेपरिकार्डर के द्वारा छात्रों को जब चाहे सुना सकते हैं। तत्पश्चात् छात्रो से प्रश्न आमंत्रित कर उनके श्रवण कौशल की भी जाँच की जा सकती है।

(ii) ***रेडियोः*** रेडियो के द्वारा आकाशवाणी से छात्रों के लिए तरह–तरह के उपयोगी शैक्षिक एवं मनोरंजक कार्यक्रम समय–समय पर प्रसारित किए जाते हैं। श्रवण कौशल को विकसित करने में रेडियो भी एक महत्वपूर्ण साधन है।

(iii) ***चलचित्रः*** चलचित्र में आवाज़ सुनाई देने के साथ–साथ दश्य भी दिखाई देते हैं। बच्चे हर दश्य को बहुत ध्यान से देखते है। अतः शैक्षिक चलचित्रो का प्रयोग भाषा शिक्षण को रोचक बना देता है।

(iv) ***दूरदर्शनः*** चलचित्र तो सिनेमाहाल में जाकर ही देखा सकता है। लेकिन दूरदर्शन अब हर घर में पहुँच चुका है। घर में बैठे हुए हम बोलने वाले की आवाज़ तो सुनते ही है, साथ में उसकी आकृति भी देखते हैं। श्रवण कौशल को विकसित करने में दूरदर्शन का प्रयोग भी कारगर साबित हो सकता है।

(v) ***वीडियोः*** जैसे किसी भी वार्ता को टेप कर टेपरिकार्डर भी सुनाया जाता है, ठीक उसी तरह किसी कार्यक्रम को रिकार्ड कर वीडियो के द्वारा दूरदर्शन पर दिखाया जा सकता है। प्रतिष्ठत विद्वानों के भाषण, वार्ता एवं विभिन्न शैक्षिक कार्यक्रमों के कैसेट लाकर दिखाये जा सकते हैं उससे श्रवण कौशल के साथ मौखिक अभिव्यक्ति कौशल विकसित करने में सहायता मिलती है।

1.5.7. **कम्पयूटरः** आधुनिक युग विज्ञान का युग है। प्रौद्योगिकी ने हमारे जीवन में क्रान्ति ला दी है। कम्पयूटर की सहायता से भी छात्र के श्रवण कौशल को विकसित किया जा सकता है। प्रतिष्ठत व्यक्तियों के भाषण, वार्ता आदि की फ्लापी व अन्य शैक्षिक कार्यक्रम भी कम्पयूटर द्वारा दिखाए जा सकते हैं। हरियाणा सरकार भी अपने प्रत्येक स्कूल में कम्पयूटर से शिक्षा देने के लिए प्रतिबद्ध है।

अतः इन उपरोक्त साधनों का प्रयोग कर हम छात्रों के श्रवण कौशल को विकसित करने में सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

**अपनी प्रगति जांचिए-3**

1. श्रवण कौशल की शिक्षण विधि के अन्तर्गत कौन से तकनीकी यंत्र आते हैं?
2. चल–चित्र से आप क्या समझते हैं?

## 1.6 सारांश

भाषायी कौशलों में श्रवण कौशल का स्थान निःसन्देह महत्वपूर्ण है क्योंकि बच्चा जन्मोपरान्त सुनने के पश्चात् ही बोलना प्रारम्भ करता है, अतः इसी प्रकार स्कूल में, जीवन के अन्य क्षेत्रों में वह सुनकर अधिक ग्रहण करता है, सुनने के पश्चात ही वह अन्य क्रियाएँ यानि, बोलना, पढ़ना व लिखना क्रमशः करता है। देवनागरी लिपि में तो जैसा बोला जाता है वैसा ही लिखा जाता है अतः छात्र (बच्चे) का श्रवण कौशल विकसित होने के पश्चात् ही मौखिक अभिव्यक्ति व लेखन अभिव्यक्ति में सक्षम होगा।

**श्रवण कौशल**

**मॉडल उत्तर**

1.1 श्री एस०के० देशपंडे ने कहा है कि ''भाषा शिक्षण का सम्बन्ध केवल ज्ञान प्रदान करना या सूचनाएँ प्रदान करना नहीं, बल्कि भाषा सीखने वालों को इन चारों विविध कौशलों में दक्ष बनाना है।

2.1 भाषा–श्रवण का सम्बन्ध 'कर्ण' से है।

2.2 जन्मोपरान्त ध्वनियाँ बच्चे के मन–मस्तिष्क पर अंकित होती है।

3.1 श्रवण कौशल शिक्षण विधि के अन्तर्गत प्रमुख तकनीकी यंत्र है, ग्रामोफोन या टेपरिकार्डर, रेडियो, दूरदर्शन, वीडियो, कम्प्यूटर, चलचित्र आदि।

3.2 चल–चित्र से तात्पर्य है कि आवाज सुनने के साथ दश्य दिखाई दे व क्रियाएँ भी होती हैं।

## 1.7 मुख्य शब्द

**श्रवण**–श्रवण का अर्थ सुनना होता है।

**ग्राह्यात्मक**–जो हम विभिन्न क्रियाओं व कौशलों के द्वारा ग्रहण करते हैं।

**अभिव्यजनात्मक**– हम जिनको अभिव्यक्त करते हैं यथाः बोलकर व लिखकर।

**स्वराघात**–स्वर पर आघात करना।

## 1.8 सन्दर्भ ग्रन्थ


1. अनन्त चौधरी नागरी लिपि और हिन्दी वर्तनी, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना
2. जयनारायण कौशिक हिन्दी शिक्षण, हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़
3. रमन बिहारी लाल हिन्दी शिक्षण, रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ 1980-81
4. Decent E.B. Improving the teaching of Reading, Londone Prentice Hall, 1964

# इकाई-1

# अध्याय-4: मौखिक अभिव्यक्ति कौशल शिक्षण

**उद्देश्यः**

प्रस्तुत पाठ के अध्ययन के पश्चात छात्रों में निम्नांकित परिवर्तन देखे जा सकते हैं।

- छात्र सुश्रव्य वाणी में बोलता है।
- वह शुद्ध उच्चारण व उचित स्वराघात, बलाघात व स्वर के उत्तर चढ़ाव के साथ बोल सकेगा।
- छात्र प्रसंगानुसार उचित गति के साथ बोलता है।
- वह प्रवाह व गति साथ बोल सकते हैं।
- वह मौखिक अभिव्यक्ति की विशेषताएँ बताने में समर्थ है।
- वह मौखिक अभिव्यक्ति की शिक्षण प्रविधियाँ का प्रत्याभिज्ञान करते है।

**संरचनाः**

1.1 मौखिक अभिव्यक्ति की भूमिका
1.2 मौखिक अभिव्यक्ति का अर्थ
1.3 मौखिक अभिव्यक्ति : महत्व
1.4 मौखिक भाषा शिक्षण के उद्देश्य
1.5 मौखिक भाषा शिक्षण के विशेषताएँ
1.6 मौखिक अभिव्यक्ति की शिक्षण विधियाँ
1.7 मौखिक भाव–प्रकाशन से सम्बन्धित शिक्षक की सावधानियाँ
1.8 सारांश
मॉडल उत्तर
1.9 मुख्य शब्द
1.10 संदर्भ ग्रन्थ

## 1.1 मौखिक अभिव्यक्ति की भूमिका

मानव प्रधानतः अपनी अनुभूतियों तथा मनोवेगों की अभिव्यक्ति उच्चरित अथवा मौखिक भाषा में ही करता है प्रिय छात्रो! लिखित भाषा तो गौण तथा उसकी प्रतिनिधि मात्र है, क्योंकि भावों की अभिव्यक्ति का साधन साधारणतः उच्चरित भाषा ही होती है। भावों के आदान–प्रदान का एक ही साधन है– भाव या वाणी।

आधुनिक जनतांत्रिक युग में जीवन की सफलता के लिए मौखिक भाव–प्रकाशन या वाणी उतना ही आवश्यक और अनिवार्य है जितना कि स्वयं हमारा जीवन। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में व्यक्ति को प्रतिपल मौखिक आत्माभिव्यक्ति की शरण लेनी पड़ती है।

## 1.2 मौखिक अभिव्यक्ति का अर्थ

मनुष्य सामाजिक प्राणी है, एकान्तवासी साधक नहीं। अतः उसे प्रति क्षण प्रत्येक पग पर समाज में अपनी स्थिति बनाये रखने के लिए सभी प्रकार के मनुष्यों से व्यवहार करना पड़ता है। अपनी जीविकापार्जन तथा उसके साधनों की उपलब्धि के लिए,

विभिन्न क्रिया–प्रतिक्रियाओं के लिए वाणी की सहायता लेनी पड़ती है। इसके साथ ही, प्राणीजगत की यह प्रवत्ति है, कि वह अपने भावों, अर्न्तद्वन्द्वों तथा उद्वेगों को दूसरों पर प्रकट करना चाहता है, तथा दूसरों की प्रकृति, आदतों, विचारों को जानने का इच्छुक रहता है। सम्प्रेषण के माध्यम के रूप में मौखिक ढंग से भाषा का व्यवहार मानव की अपनी विशेषता है।

अन्य जीवों में जटिल मानसिक क्रियाओं का अभाव है। अतः भाषा के प्रतीकात्मक व्यवहार में वे अक्षम हैं। विभिन्न प्रकार की जटिल मानसिक प्रक्रियाएं परोक्ष रूप से प्रत्येक भाषायी व्यवहार में अन्तर्निहित रहती है, जिसका केवल अनुमान लगाया जा सकता है।

## 1.3 मौखिक अभिव्यक्ति का महत्त्व

1.3.1. मौखिक भाषा ही अभिव्यक्ति का सहज व सरलतम माध्यम है।

1.3.2. भाषा की शिक्षा मौखिक भाषा से प्रारम्भ होती है।

1.3.3. मौखिक अभिव्यक्ति में अनुकरण और अभ्यास के अवसर बराबर मिलते रहते हैं।

1.3.4. मौखिक भाषा के प्रयोग में कुशल व्यक्ति, अपनी वाणी से जादु जगा सकता है, लोकप्रिय नेताओं के भाषण इसी बात का प्रमाण है।

1.3.5. मौखिक भाषा के द्वारा विचारों के आदान–प्रदान से नई–नई जानकारियाँ मिलती है।

1.3.6. अशिक्षित व्यक्ति बोलचाल के द्वारा ही ज्ञान–अर्जित करता है।

1.3.7. रोजमर्रा के कार्यकलापों में मौखिक भाषा प्रयुक्त होती है।

1.3.8. सामाजिक सम्बन्धों के सुदढ़ बनाने में एवं सामाजिक जीवन में सामजस्य स्थापित करने में मौखिक भाषा की प्रमुख भूमिका होती है।

**अपनी प्रगति जांचिए-1**

1. मौखिक अभिव्यक्ति से आप क्या समझते हैं?
2. मौखिक भाव–प्रकाशन की महत्ता बताईये?

## 1.4 मौखिक भाव-प्रकाशन शिक्षण के उद्देश्य

1. बालकों का उच्चारण शुद्ध एवं परिमार्जित हो।
2. छात्रों को शुद्ध उच्चारण, उचित स्वर, उचित गति के साथ बोलना सिखाना।
3. छात्रों को निस्संकोच होकर अपने विचार व्यक्त करने के योग्य बनाना।
4. छात्रों को व्याकरण सम्मत भाषा का प्रयोग करना सिखाना।
5. छात्र सरल एवं मुहावरेदार भाषा का प्रयोग करते हैं।
6. बोलने में विराम चिन्हों का ध्यान रखना सिखाना।
7. विषयानुकूल व प्रसंगानुकूल शैली का प्रयोग करना सिखाना।
8. छात्रों में स्वाभाविक ढंग से परस्पर वार्तालाप करने की आदत विकसित करना।
9. छात्रों को धाराप्रवाह, प्रभावोत्पादक वाणी में बोलना सिखाना।
10. छात्रा क्रमबद्धता बनाये रखेगा।
11. वह विषय की योग्यता को अक्षण्णु बनायेगा।

## 1.5 मौखिक अभिव्यक्ति की विशेषताएं

1. **स्वाभाविकताः** बोलने में स्वाभाविकता हो, बनावटी बोली का प्रयोग हास्यास्पद हो सकता है। अस्वाभाविक भाषा वक्ता को अविश्वसनीय बना देती है। स्वाभाविक भाषा विश्वसनीय होती है।
2. **स्पष्टताः** मौखिक अभिव्यक्ति का दूसरा गुण है– स्पष्टता। बोलने में स्पष्टता होना अति आवश्यक है। जो बात कही जाए वह स्पष्ट व साफ होनी चाहिए।
3. **शुद्धताः** बोलते समय शुद्ध उच्चारण होना चाहिए अशुद्ध उच्चारण से अर्थ का अनर्थ हो जाता है।
4. **बोधगम्यः** मौखिक अभिव्यक्ति में सरल व सुबोध भाषा का प्रयोग करना चाहिए।
5. **सर्वमान्य भाषाः** मौखिक भाव–प्रकाशन में सर्वमान्य भाषा का प्रयोग करना चाहिए। अप्रचलित शब्दों के प्रयोग से वार्तालाप नीरस हो जाता है।
6. **शिष्टताः** वार्तालाप करते समय शिष्टाचार का ध्यान रखना चाहिए। अशिष्टता सम्बन्धों को बिगाड़ देती है। शिष्टता मौखिक भाव–प्रकाशन का एक अन्य गुण है।
7. **मधुरताः** मौखिक भाव प्रकाशन का अन्य गुण है मधुरता। कहा भी गया है– 'कोयल काको देत है कागा काको लेत, वाणी के कारणेन मन सबको हर लेत।' मीठी वाणी का प्रयोग कर मनुष्य किसी (दुश्मन) को भी अपना बना सकता है।
8. **प्रवाहमयताः** विराम चिन्हों के उचित प्रयोग से अभिव्यक्ति में सम्यक् गति आ जाती है। अतः मौखिक भाव–प्रकाशन में उचित प्रवाहमयता होनी चाहिए।
9. **अवसरानुकूलः** मौखिक भाव–प्रकाशन की अन्य विशेषता है अवसरानुकूल भाषा का प्रयोग। हर्ष, उल्लास, सुख दुःख, दया, करूणा, सहानुभूति प्यार आदि भावों को अवसर के अनुकूल व्यक्त करते हैं।
10. **श्रोताओं के अनुकूल भाषाः** मौखिक अभिव्यक्ति की अन्य महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि सुनने वाले कौन है, किसस्तर के हैं, के अनुकूल ही भाषा का प्रयोग करना चाहिए।

**अपनी प्रगति जांचिए-2**

1. मौखिक अभिव्यक्ति के उद्देश्यों पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखों?
2. मौखिक अभिव्यक्ति के गुण या विशेषताओं पर प्रकाश डालिए?

## 1.6 मौखिक अभिव्यक्ति कौशल की शिक्षण विधियाँ

जैसाकि हम पहले बता चुके है कि मौखिक कार्य ही भाव शिक्षण का प्रमुख आधार है। मौखिक भाषा के बिना सीखना व सिखाना दोनों ही असम्भव कार्य है। इसके लिए शिक्षक निम्नांकित शिक्षण–विधियों का प्रयोग करता है–

1. **वार्तालापः** शिक्षण सामग्री या पाठ्य विषय पढ़ाते हुए या अन्य मौकों पर छात्रों के साथ अध्यापक वार्तालाप करते हैं। अतः शिक्षक को चाहिए कि वह प्रत्येक छात्र को वार्तालाप में भाग लेने के लिए प्रेरित करें। वार्तालाप का विषय छात्रों के मानसिक, बौद्धिक स्तर के भीतर ही होनी चाहिए।
2. **सस्वर वाचनः** पाठ पढ़ाते समय पहले शिक्षक को स्वयं आदर्श वाचन करना चाहिए, बाद में कक्षा के छात्रों से अनुकरण वाचन या सस्वर वाचन कराना चाहिए। सस्वर वाचन करने से छात्रों की झिझक, व संकोच खत्म होता है।
3. **प्रश्नोत्तरः** सामान्य विषयों पर या पाठ्य–पुस्तकों से सम्बन्धित पाठों पर प्रश्न पूछने चाहिए। अगर छात्रों का उत्तर अपूर्ण या अशुद्ध है तो सहानुभूति पूर्ण ढंग से उत्तर को पूर्ण व शुद्ध कराया जाये।
4. **कहानी सुनानाः** मौखिक भाव–प्रकाशन विकसित करने की एक विधि कहानी सुनाना भी है। छोटे बच्चे कहानियां सुनना पसन्द करते हैं। अतः अध्यापक को पहले स्वयं कहानी सुनानी चाहिए। बाद में छात्रों से कहानी सुननी चाहिए।

5. **चित्र-वर्णनः** प्रायः छोटी कक्षाओं के बच्चे चित्र देखने में रूचि लेते हैं। उदाहरणार्थ 'गाय' का चित्र दिखा कर गायों के बारे में छात्रों से पूछा जा सकता है व छात्रों को बताया जाता है। इसी प्रकार चित्र की सहायता से कहानी भी सुनायी जा सकती है।

6. **कविता सुनना व सुनानाः** छोटे बच्चे कविता या बालोचित गीत सुनाने व सुनने में काफी रूचि लेते हैं अतः कविताएं कंठस्थ कराके उन्हें कविता पाठ के लिए प्रेरित करना चाहिए। अतः कविता पाठ मौखिक भाव–प्रकाशन की शिक्षा देने का अन्य उपयोगी साधन है।

7. **वाद-विवादः** बालकों के मानसिक स्तर व बौद्धिक स्तर को ध्यान में रखकर वाद–विवाद करवाया जा सकता है। अपने विचारों का तर्कपूर्ण प्रतिपादन करने का प्रशिक्षण देने के लिए वाद–विवाद एक उत्तम साधन है।

8. **सत्संगः** सत्संग का हमारे मौखिक भाव–प्रकाशन पर बहुत प्रभाव पड़ता है। साधारणतः बालक जैसे वातावरण में रहेगा। उसका इसी प्रकार का भाव प्रकाशन होगा।

9. **पाठ का सारः** पाठ्य–पुस्तक के किसी पाठ या रचना को पढ़ कर छात्र से उस पाठ का सार सुनना मौखिक अभिव्यक्ति का अन्य उपयोगी साधन है।

10. **भाषणः** 'भाषण' भाव–प्रकाशन का एक सशक्त साधन है परन्तु **'भाषण'** छात्रों के मानसिक एवं बौद्धिक स्तर के अनुकूल होना चाहिए।

11. **नाटक-प्रयोगः** नाटक द्वारा भावभिव्यक्ति का अच्छा अभ्यास हो जाता है। रंगशाला में बालक को आंगिक वाचिक एवं भावों के अभिनय की दीक्षा सफलतापूर्वक मिल सकती है।

12. **स्वतंत्र आत्मप्रकशनः** बालकों को विभिन्न घटनाओं दश्यों या व्यक्तिगत जीवन से जुड़े अनुभव सुनाने का अवसर देकर अध्यापक मौखिक भाषा का अभ्यास करा सकता है।

## 1.7 मौखिक भाव-प्रकाशन से सम्बन्धित शिक्षक की सावधानियाँ

1. बच्चों की त्रुटियों को ठीक कराने के लिए स्वर यन्त्रों को साधा जाए।
2. यदि प्राकृतिक कारणों से बालक शुद्ध उच्चारण नहीं कर पाता है, तो उसके माता–पिता को सूचित करना चाहिए एवं डॉक्टरों से उचित चिकित्सा करवानी चाहिए।
3. शिक्षक स्वयं बोलने का दष्टान्त पेश करें, जिसमें तेजी, शीघ्रता व क्रोध न हो।
4. बालकों में किसी प्रकार का संकोच न आने पाये।
5. बोलने में कठिनाई अनुभव करने वाले छात्रों को अधिक से अधिक बोलने व पढ़ने का अवसर मिलना चाहिए। जिससे उनमें धीरे–धीरे साहस व स्वावलम्बन का विकास हो। कई बार बच्चा मनोवैज्ञानिक कारणों से भी हकलाने लगता है और अशुद्ध उच्चारण की आदत पड़ जाती है।

   अतः बच्चे के मन से भय, झिझक की भावना निकाल कर अभ्यास द्वारा यह कठिनाई दूर की जा सकती है।
6. भाषा क्षेत्रीयता प्रान्तीयता व व्याकरण दोषों से रहित हो।
7. बोलते समय सस्वरता व भावानुसार वाणी के उतार चढ़ाव पर भी ध्यान देना चाहिए।

## 1.8 सारांश

उपर्युक्त विवेचन के आलोक में कहा जा सकता है कि जीवन के क्षेत्र में सफलता अर्जित करने हेतु मौखिक अभिव्यक्ति का महत्त्व असंदिग्ध है। क्योंकि हम प्रतयेक कार्य को लिखकर नहीं करते, अनेकों कार्य हम मौखिक अभिव्यक्ति द्वारा ही सम्पन्न करते हैं। उदाहरणार्थ बड़े नेता अपने लच्छेदार भाषणों से ही जनता को गुमराह या बेवकूफ बना कर वोट हासिल करते हैं। मौखिक अभिव्यक्ति में पारंगत व्यक्ति हर स्थान व प्रत्येक समय पर अपनी बात को बच्चों के साथ प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करके मनवा लेता है।

**मौखिक अभिव्यक्ति**

अर्वाचीन समय में हम अधिकतर कार्य मौखिक रूप से ही सम्पन्न करते हैं। टेलिफोन सेदूर–दराज क्षेत्रों में बैठे अपने प्रियजनों की कुशल क्षेम जान लेते हैं, कम्प्यूटर के द्वारा हम ने केवल बातचीत ही नहीं करते अपतु सामने स्क्रीन पर उसकी तस्वीर भी देखते हैं। अतः मौखिक अभिव्यक्ति की महत्ता निश्चित रूप में असंदिग्ध है।

**मॉडल उत्तर**

1.1 मनुष्य की प्रायः अपने मनोवेगों एवं अनुभूतियों की अभिव्यक्ति करना ही मौखिक अभिव्यक्ति है।

1.2 भाषा की शिक्षा मौखिक भाषा के द्वारा ही प्रारम्भ होती है मौखिक अभिव्यक्ति में अनुकरण और अभ्यास के बराबर अवसर मिलते हैं। सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि अशिक्षित व्यक्ति बोलचाल के आध्यम से ही ज्ञान अर्जित कर लेता है।

2.1 बालकों का उच्चारण शुद्ध एवं स्पष्ट हो, बोलते वक्त व्याकरण सम्मत भाषा का प्रयोग करें। धारा प्रवाह व गतिमय में बोलते वक्त विराम चिन्हों का ध्यान रखें। अर्थ का अनर्थ ना बनाये।

2.2 मौखिक अभिव्यक्ति में शुद्धता, स्पष्टता व स्वाभाविकता का गुण होना अनिवार्य है। अवसरों के अनुकूल बोलना चाहिए, श्रोताओं या सुनने वालों के अनुरूप भाषा का प्रयोग करें। मधुरता मौखिक अभिव्यक्ति में चार चाँद लगा देती है।

## 1.9 मुख्य शब्द

**मौखिक अभिव्यक्ति**–वह माध्यम जिसके द्वारा हम अपने भावों विचारों को दूसरे के सामने प्रकट करें व दूसरे के मनोवेगों व अनुभूतियों को सुने, वही मौखिक अभिव्यक्ति है।

**अग्रांकित**–जो आगे अंकित किया जाए, वही अग्रांकित है।

**बोधगम्य**–जिसको साधारण जन भी समझ सके, बोधगम्य है।

## 1.10 सन्दर्भ ग्रन्थ


1. उमा मंगल (डॉ०) हिन्दी शिक्षण, आर्य बुक डिपो, करोल बाग, नई दिल्ली, 2000-20003
2. सावित्री सिंह हिन्दी शिक्षण, लायल बुक डिपो, मेरठ
3. Lado, Robert Language Teaching-A Scientific
4. विजय सूद हिन्दी शिक्षण विधियाँ, टण्डन पब्लिकेशन, लुधियाना 1995
5. सीताराम चतुर्वेदी भाषा की शिक्षा, हिन्दी साहित्य कुटीर, वाराणसी

# इकाई-1

# अध्याय-5 : वाचन – कौशल शिक्षण

**उद्देश्यः**

उपर्युक्त अध्याय के अध्ययन के उपरान्त छात्रों से अपेक्षा की जाती है कि वे (वाचन पठन) कौशल शिक्षण के उपरान्त वे–

- पठन कौशल शिक्षण के अर्थ को भली प्रकार समझते हैं।
- पठन कौशल शिक्षण के महत्त्व से भली प्रकार परिचित होंगें।
- पठन कौशल शिक्षण के उद्देश्यों को प्रत्यास्मरण करते हैं।
- पठन कौशल की विशेषताएं समझते हुए उसके आधार पर चर्चा करते हैं।
- पठन–कौशल की प्रणालियां को समझते हुए इनका प्रत्याभिज्ञान करते हैं।
- पठन कौशल की त्रुटियों को समझते हुए उनका निवारण करने का प्रयत्न करते हैं।
- वाचन–कौशल के प्रकार पर प्रकाश डालते हैं।

**संरचनाः**

1.1 पठन/वाचन कौशल शिक्षण की भूमिका
1.2 पठन/वाचन कौशल शिक्षण का अर्थ
1.3 पठन/वाचन कौशल शिक्षण का महत्त्व
1.4 पठन/वाचन कौशल शिक्षण के उद्देश्य
1.5 पठन/वाचन कौशल शिक्षण के आधार
1.6 पठन/वाचन कौशल शिक्षण के गुण या विशेषताएँ
1.7 पठन/वाचन कौशल शिक्षण की प्रणाली
1.8 पठन/वाचन कौशल शिक्षण की त्रुटियाँ
1.9 पठन/वाचन कौशल शिक्षण : शिक्षण दोषः निवारण
1.10 वाचन के प्रकार
1.11 सारांश
मॉडल उत्तर
1.12 मुख्य शब्द
1.12 सन्दर्भ ग्रन्थ

## 1.1 पठन/वाचन कौशल की भूमिका

भाषा शब्द से ही ज्ञात होता है कि भाषा का मूल रूप उच्चरित रूप है। इसका दष्टिकोण प्रतीक लिपिबद्ध होता है। मुद्रित रूप लिपिबद्ध रूप का प्रतिनिधि है। जब हम बच्चे को पढ़ाना आरम्भ करते हैं तो अक्षरों के प्रत्यय हमारे मस्तिष्क के कक्ष भाग में क्रमबद्ध होकर एक तस्वीर बनाते हैं, और हम उसे उच्चरित करते हैं। यह क्रिया जिसमें शब्दों के साथ अर्थ ध्वनि भी निहित है। वाचन कहलाती है।

## 1.2 पठन कौशल का अर्थ

**कैथरीन ओकानर के मतानुसार**– "वाचन/पठन वह जटिल अधिगम प्रक्रिया है, जिसमें दश्य, श्रव्यों सर्किटों का मस्तिष्क के अधिगम केन्द्र से सम्बन्ध निहित है।"

लिखित भाषा के ध्वन्यात्मक पाठ को मौखिक पठन कहते हैं। पर बिना अर्थ ग्रहण किए गए पढ़ने को पठन नहीं कहा जा सकता। पठन की क्रिया में अर्थ ग्रहण करना आवश्यक होता है। अर्थ ग्रहण किस सीमा तक होता है, यह तो पठनकर्त्ता के ज्ञान एवं कौशल पर निर्भर है।

## 1.3 वाचन/पठन का महत्त्व

वाचन की जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आवश्यकता होती है। वाचन की योग्यता न रखने से व्यक्ति संसार की सांस्कृतिक महानता में अपने अस्तित्व का आनन्द नहीं ले पाता। वाचन–योग्यता के बिना मनुष्य के जीवन में कई प्रकार की बाधाएं खड़ी हो जाती है। निम्नांकित तथ्यों से वाचन के महत्त्व को आंका जा सकता है–

1. वाचन शिक्षा प्राप्ति में सहायक है।
2. वाचन कौशल ज्ञानोपार्जन का साधन है, क्योंकि पाठ्य–पुस्तक पढ़ने से तो केवल ज्ञान के दर्शन होते हैं। संदर्भ ग्रंथ पढ़ने से ज्ञान की पिपासा कुछ हद तक शान्त होती है।
3. आधुनिक युग 'विशिष्टताओं' का युग है, व्यक्ति जिस भी व्यवसाय में है वह विशिष्टता प्राप्त करना चाहता है, नवीनतम जानकारी प्राप्त करना चाहता है, यह जानकारी उसे पुस्तकों से मिलती है।
4. सामाजिक दष्टिकोण से भी वाचन बहुत महत्वपूर्ण है। सामाजिक कार्यों तथा दैनिक कार्यों में मनुष्य को कहीं कुछ पढ़कर सुनाना पड़ता है। कहीं अभिनन्दन पत्र पढ़ना होता है, कहीं किसी महापुरुष या नेता का संदेश पढ़ कर सुनाना होता है। कहीं पत्र–लिखने पढ़ने होते हैं अतः इस प्रकार के अनेकों सामाजिक कार्यों में वाचन की आवश्यकता से उसकी सामाजिक उपयोगिता बढ़ जाती है।
5. लोकतन्त्रात्मक युग में वाचन का महत्त्व और भी बढ़ गया है। चुनावों के दौरान राजनीतिक दलों के घोषणा प्रकाशित होते रहते हैं, उन्हें अच्छी प्रकार से समझने के लिए वाचन की योग्यता का होना आवश्यक है। अतः लोकतन्त्रात्मक प्रवत्ति के विकास में वाचन महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।
6. 'वाचन' मनोरंजन का महत्वपूर्ण साधन है। घर में, उपवन में, यात्रा में व्यक्ति कहीं भी अपनी बोरियत को दूर करने के लिए, कहानी, पत्रिका इत्यादि पढ़कर समय का सदुपयोग कर सकता है।
7. सामाजिक, राजनैतिक, साहित्यिक तथा सांस्कृतिक विकास के लिए आलोचनात्मक दष्टिकोण का विकसित होना आवश्यक है। आलोचनात्मक दष्टिकोण के विकास के लिए अध्ययन अति आवश्यक है। और 'अध्ययन' वाचन का ही एक रूप है।

**अपनी प्रगति जांचिए-1**

1. पठन कौशल का अर्थ बताईये?
2. पठन कौशल के महत्त्व पर प्रकाश डालिए?

## 1.4 वाचन/पाठन कौशल के उद्देश्य

1. बालकों के स्वर में आरोह–अवरोह का ऐसा अभ्यास करा दिया जाए कि वे यथावसर भावों के अनुकूल स्वर में लोच देकर पढ़े।
2. बालकों को वाचन के माध्यम से शब्द–ध्वनियों का पूर्ण ज्ञान कराया जाता है वाचन की इस कला से छात्र मुँह व जिह्वा के उचित स्थान से ध्वनि उच्चरित करते रहेंगें।
3. वाचन के माध्यम से शब्दों पर उचित बल दिया जाता है।

4. छात्र पढ़कर उसका भाव समझें तथा दूसरों को भी समझाएं वाचन का यह एक उद्देश्य है।
5. वाचन से अक्षर, उच्चारण, ध्वनि, बल, निर्गम, सस्वरता आदि को सम्यक् संस्कार प्राप्त होता है।
6. वाचन के द्वारा छात्र विराम, अर्द्धविराम आदि चिन्हों का प्रयोग समझ जाता है
7. वाचन का उद्देश्य पठित अंश का भाव ग्रहण करना है।
8. वाचन का अन्य उद्देश्य त्रुटियों का निवारण भी है।
9. वाचन शब्द भण्डार में वद्धि करता है।
10. वाचन से स्वाध्याय की प्रवत्ति जागत होती है।

## 1.5 वाचन/पाठन के आधार

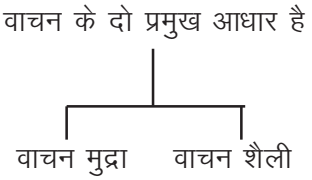


1. वाचन मुद्रा का अर्थ है बैठने, खड़े होने का ढंग, वाचन सामग्री, हाथ में ग्रहण करने की रीति तथा भावानुसार हाथ, पैर, नेत्र आदि अन्य अंगों का संचालन।
2. भावानुसार स्वर के उचित आरोह–अवरोह के साथ पढ़ना वाचन शैली है। प्रत्येक वाचक को वाचन करते समय बाएं हाथ में पुस्तक को इस प्रकार बीच में पकड़ना चाहिए कि ऊपर उसके बीच में मोड़ पर बाएँ हाथ का अँगुठा आ जाए और दूसरा हाथ भावाभिव्यक्ति के लिए खुला छुटा रहे। बड़ी पुस्तक को दोनों हाथों से पकड़ा जा सकता है। पढ़ते समय दष्टि पुस्तक पर ही ना रहे, वरन् छात्रों की ओर भी देख लेना चाहिए।

## 1.6 पाठन/वाचन के गुण या विशेषताएं

सुन्दर वाचन में निम्न गुणों का होना जरूरी है–

1. प्रत्येक अक्षर को शुद्ध तथा स्पष्ट उच्चरित करना
2. वाचन में सुन्दरता के साथ प्रवाह बनाये रखना
3. मधुरता, प्रभावोत्पादकता तथा चमत्कारपूर्ण ढंग से आरोह–अवरोह के साथ वाचन होना चाहिए।
4. प्रत्येक शब्द को अन्य शब्दों से अलग करके उचित बल तथा विराम के साथ पढ़ना।

**अपनी प्रगति जांचिए-2**

1. वाचन में कौन–कौन से गुण अपेक्षित है, बताईये?
2. वाचन के प्रमुख आधार क्या हैं?

## 1.7 वाचन/पठन कौशल की शिक्षण विधियाँ

**(क) शब्द तत्व पर आधारित विधियाँ**

(i) ***वर्णबोध विधिः*** इस विधि में पहले छात्रों को वर्णों का ज्ञान कराया जाता है। वर्णों में भी स्वर पहले और व्यंजन बाद में सिखाए जाये। फिर मात्राओं का ज्ञान कराया जाए। मात्राओं के उपरान्त संयुक्ताक्षरों की जानकारी दी जाए।

यह विधि मनोवैज्ञानिक नहीं है। इस का आधार यह है कि जब तक बालक को अक्षर का ज्ञान नहीं होगा, तब तक वह उच्चारण या वाचन नहीं सीख सकता है।

(ii) ***ध्वनि साम्य विधिः*** यह विधि वर्णबोध विधि का संशोधित रूप है। इसमें समान उच्चारण वाले शब्दों को साथ–साथ सिखाए जाएं यथा।

राम, नाम, काम, शाम

गर्म, धर्म, कर्म, चर्म

केला, ठेला, मेला, रेला

उपर्युक्त विधि में ध्वनियों पर विशेष ध्यान दिया जाता है। इसी कारण वाक्यांश, वाक्य की अर्थ व शब्द गौण हो जाते हैं।

**(ख) स्वरोच्चारण विधिः** इस विधि में अक्षरों एवं शब्दों को उनकी स्वर ध्वनि के अनुसार पढ़ाया जाता है। इसमें बारहखड़ी को आधार माना जाता है, जैसे– क, का, कि, की, कु, कू, के, कै, को, कौ, कं कः। इसमें स्वर के बिना व्यंजन नहीं सिखा सकते। यह विधि प्रगतिशील एवं मनोवैज्ञानिक नहीं है।

**अर्थ ग्रहण पर आधारित विधियां**

(i) ***देखो और कहो विधिः*** इस विधि में शब्द से सम्बन्धित वस्तु या चित्र दिखाकर पहले शब्द का ज्ञान कराया जाता है। चित्र के नीचे वस्तु का नाम लिखा होता है। चित्र परिचित होने के कारण बच्चे आसानी से शब्द से साहचर्य स्थापित कर लेते हैं अध्यापक का अनुकरण करते हुए बच्चे शब्द का उच्चारण करते हैं। कई बार देखने–सुनने और बोलने से वर्णों के चित्र मस्तिष्क पर अंकित हो जाते हैं।

***गुणः*** यह विधि मनोवैज्ञानिक है। इसमें पूर्ण से अंश की ओर ज्ञात से अज्ञात की ओर सरल से जटिल की ओर आदि शिक्षण सूत्रों का पालन होता है।

***दोषः*** इस विधि में सभी शब्दों के चित्र उपस्थित करना असम्भव है। बच्चे चित्र से साहचर्य स्थापित कर लेते हैं। चित्र के अभाव में शब्द पढ़ना कठिन हो जाता है।

(ii) ***वाक्य विधिः*** इस मत के प्रतिपादकों का मत है कि बालक वाक्य या वाक्यांशों में बोलता है। इसकी इकाई वाक्य है शब्द नहीं। इसलिए प्रारम्भ से ही बालकों को वाक्यों से ही वाचन शुरू कराना चाहिए।

यह विधि मनोवैज्ञानिक है। पहले वाक्य फिर शब्द, फिर वर्ण – इस क्रम से बच्चों को वाचन का अभ्यास कराया जाता है।

(iii) ***कहानी विधिः*** इस विधि में छोटे–छोटे वाक्यों से निर्मित कहानी चार्ट व चित्रों के माध्यम से बच्चों के समक्ष प्रस्तुत की जाती है। शिक्षक इस कहानी को कक्षा में कहता है। इसके बाद शिक्षक कहानी को श्यामपट्ट पर लिखता है व वाचन कराता है। विद्यार्थी शिक्षक का अनुकरण करते हैं। वाक्य के विश्लेषण के माध्यम से छात्र शब्द एवं वर्णों का ज्ञान प्राप्त करते हैं।

***गुणः*** यह वाक्य विधि का परिष्कृत रूप है।

(iv) ***अनुकरण विधिः*** यह विधि **'देखो और कहो'** विधि का दूसरा स्वरूप है। इसमें अध्यापक एक–एक शब्द बालकों के समक्ष कहता है और छात्र उसे दुहराते हुए अनुकरण करते हैं। इस प्रकार छात्र शब्द–ध्वनि का उच्चारण एवं वाचन सीखते हैं।

(v) ***सम्पर्क विधिः*** इस विधि का प्रचार माण्टेसरी ने किया था। इसमें पहले बालकों को चित्र, खिलौने, वस्तुएं आदि से परिचित कराते हैं। उनके आगे उन वस्तुओं के कार्ड रखते हैं। फिर कार्डों को आपस में मिला देते हैं और बच्चों को कहा जाता है, जो कार्ड जिस वस्तु से सम्पर्क रखते हैं, उसके आगे पुनः रख दें। इस सम्पर्क प्रणाली के अभ्यास से धीरे–धीरे छात्र शब्द व वर्ण से परिचित हो जाते हैं।

हिन्दी वाचन में ये विधि विशेष सहायक नहीं है।

**ग. उपयुक्त विधिः** वाचन के लिए उपयुक्त विधि में निम्न तथ्यों पर ध्यान दिया जाये–

(i) बालकों के समक्ष उपयुक्त वातावरण प्रस्तुत किया जाए उपयुक्त वातावरण में तीन बातें रहें–

(i.i) बालकों को प्रवाहपूर्ण ढंग से बोलना सिखाना।

(i.ii) स्वरों का अन्तर समझावें।

(i.iii) कहानी आदि सुनाकर वाचन के प्रति उत्सुकता पैदा करें।

(ii) वर्णों की समानता के चित्र दिखायें, किसी असमान चित्र को पहचानने का अभ्यास करावें।

(iii) दष्टि का अभ्यास आवश्यक है।

(iv) मौखिक कार्य पर अधिक बल दें।

(v) बालकों से आकृतियां बनवाकर उनमें रंग भरवाए, गिनना सिखाए आदि।

(vi) जहां जो विधि उपयुक्त हो, उसका आश्रय लेकर छात्रों को वाचन का अभ्यास कराना चाहिए।

## 1.8 पाठन/वाचन सम्बन्धी त्रुटियां

1. अटक–अटक कर पढ़ना।
2. वाचन के समय अनुचित मुद्रा, पुस्तक को आँखों के सन्निकट या दूर रखना।
3. अशुद्ध उच्चारण।
4. वाचन में गति का न होना।
5. दष्टि दोष से अक्षरों का ठीक दिखाई न देना।
6. पाठ्य सामग्री का कठिन होना।
7. अक्षर या संयुक्ताक्षरों सम्बन्धी त्रुटियाँ।
8. भावानुकूल आरोह–अवरोह का अभाव।
9. वाचन सम्बन्धी मार्ग–दर्शन का अभाव
10. अध्यापक का व्यवहार।

## 1.9 पाठन/वाचन सम्बन्धी दोषों का निवारण

1. **आवत्ति-पुनरावत्तिः** इसका अभिप्राय यह है कि बार–बार आवत्ति या पुनरावत्ति के माध्यम से अभ्यास कराकर उच्चारण सम्बन्धी दोषों का निवारण किया जा सकता है।
2. स्थान–परिवर्तन
3. अस्पष्टता निवारण
4. चिकित्सा विधि
5. वाचन सम्बन्धी उचित मार्गदर्शन
6. कक्षा का आकर्षक वातावरण
7. छात्रों के मानसिक स्तर के अनुकूल पाठ्य–सामग्री का चुनाव।

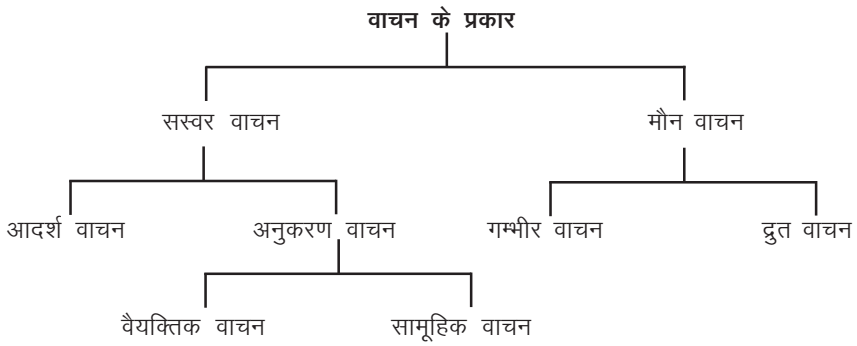

**अपनी प्रगति जांचिए**

1. पठन कौशल शिक्षण की प्रणालियों का वर्णन करो?
2. वाचन सम्बन्धी त्रुटियों पर संक्षिप्त नोट लिखों?
3. वाचन सम्बन्धी त्रुटियों का निराकरण आप कैसे करेंगे। बताईये?

## 1.10 वाचन के प्रकार

वाचन को मूलतः दो भागों में विभक्त कर सकते हैं।

1. **सस्वर वाचनः** स्वर सहित पढ़ते हुए अर्थ ग्रहण करने को सस्वर वाचन कहा जाता है। यह वाचन की प्रारम्भिक अवस्था होती है। वर्णमाला के लिपिबद्ध वर्णों की पहचान सस्वर वाचन के द्वारा ही करायी जाती है।

**सस्वर वाचन में ध्यान रखने योग्य बातें**

(i) सस्वर वाचन भावानुकूल करना चाहिए।

(ii) सस्वर वाचन आदि करते समय विराम चिन्हों का ध्यान रखना चाहिए।

(iii) सस्वर वाचन करते शुद्धता एवं स्पष्टता का ध्यान रखना चाहिए।

(iv) स्वर में यथा सम्भव स्थानीय बोलियों का पुट नहीं होना चाहिए।

(v) सस्वर वाचन में आत्मविश्वास का होना आवश्यक है।

**सस्वर वाचन में गुण**

(i) शुद्ध उच्चारण

(ii) उचित ध्वनि निर्गम

(iii) उचित लय एवं गति

(iv) उचित बल–विराम

(v) उचित हाव–भाव

(vi) उचित वाचन मुद्रा

(vii) स्वर माधुर्य

(viii) प्रभावोत्पादकता

(ix) अंग संचालन

(x) स्वाभाविकता

(xi) अर्थ–प्रतीति

(xii) स्वर में रसात्मकता, वाचन की मुद्रा

(i) ***आदर्श वाचनः*** जब अध्यापक कक्षा में छात्रों के समक्ष स्वयं वाचन प्रस्तुत करता है, उसे आदर्श वाचन कहते हैं। अध्यापक अपने वाचन को गति, यति, आरोह–अवरोह, स्वराघात व बलाघात को ध्यान में रखकर कक्षा में प्रस्तुत करता है।

(ii) ***अनुकरण वाचनः*** आदर्श वाचन के पश्चात् छात्रों द्वारा कक्षा में अनुकरण वाचन किया जाता है। अनुकरण वाचन के निम्न उद्देश्य है–

(a) शिक्षक द्वारा किए गए आदर्श वाचन का अनुकरण करना

(b) उच्चारण को शुद्ध बनाना

(c) वाचन में गति एवं प्रवाह का ध्यान रखना

(d) वाचन करते समय अर्थ–ग्रहण की योग्यता का विकास करना।

(e) पाठ के भावानुसार वाचन पैदा करने की क्षमता विकसित करना तथा वीर–रस की शिक्षण सामग्री का वाचन, ओजपूर्ण एवं उच्च स्वर से, श्रंगार रस की शिक्षण का वाचन, स्नेहयुक्त एवं मधुर स्वर से, करूण रस में द्रयार्द्र स्वर से, भक्ति रस की शान्त एवं गंभीर स्वर से वाचन करना।

**वाचनकर्त्ता के अनुसार पुनः सस्वर वाचन का विभाजनः** जैसा कि प्यारे बच्चों पीछे चित्र के माध्यम से दर्शाया गया है–

(a) *वैयक्तिक वाचनः* एक व्यक्ति द्वारा आवाज किए जाने सस्वर वाचन को व्यक्तिगत वाचन कहते हैं। माध यमिक कक्षाओं में वाचन प्रायः वैयक्तिक ढंग से होता है, शिक्षक सुनकर छात्रों की उच्चारण सम्बन्धी त्रुटियों का निवारण करता है। इस विधि में वाचन दोषों का निदान सरलता से हो जाता है और उपचारात्मक शिक्षण के लिए व्यक्तिगत ध्यान देने में शिक्षक को सरलता होती है।

(b) *सामूहिक वाचनः* दो या दो से अधिक छात्रों द्वारा आवाज सहित किए जाने वाले वाचन को सामूहिक वाचन कहते हैं। इस वाचन से बच्चों (छात्रों) की झिझक दूर होती है। उनमें मौखिक अभिव्यक्ति के लिए आत्मविश्वास का संचार पैदा होता है। सामूहिक वाचन 13–14 वर्ष की आयु तक के बालकों के लिए ही किया जाए। छात्रों की संख्या बहुत अधिक ना हो, ताकि पड़ोसी कक्षा की शान्ति भंग न हो।

2. **मौन वाचनः** लिखित सामग्री को चुपचाप बिना आवाज निकाले पढ़ना मौन वाचन कहलाता है।

**मौन वाचन का महत्त्व**

(i) मौन वाचन में थकान कम होती है, क्योंकि इस में वाग्यन्त्रों पर जोर नहीं पड़ता।

(ii) मौन वाचन में नेत्र तथा मस्तिष्क सक्रिय रहते हें।

(iii) मौन वाचन के समय पाठक एकाग्रचित्त, होकर, ध्यान केन्द्रित कर पढ़ता है।

(iv) मौन वाचन अवकाश का सदुपयोग करता है।

(v) मौन वाचन में समय की बचत होती है। श्रीमती ग्रे एवं रीस के एक परीक्षण द्वारा यह पता चलता है कि कक्ष छह के बालक एक मिनट में सस्वर वाचन मे 17० शब्द बोलते हैं और मौन वाचन में इतने समय में 21० शब्द बोलते हैं।

(vi) मौन वाचन कक्षा में अनुशासन बनाये रखने में सहायक है।

(vii) चिन्तन करने में मौन वाचन सहायक है।

(viii) स्वाध्याय की रूचि जागत करने में मौन वाचन सहायक है। गहन अध्ययन वही व्यक्ति कर सकता है, जिसे मौन वाचन का अभ्यास हो।

**मौन वाचन के उद्देश्य**

मौन वाचन शिक्षार्थियों के वाचन की गति के विकास के लिए है। मौन वाचन के मूल उद्देश्य अग्रांकित है।

(i) पठित सामग्री के केन्द्रीय भाव को समझना

(ii) अनावश्यक स्थलों को छोड़ते हुए, मूल तथ्यों का चयन करना।

(iii) पठित सामग्री का निष्कर्ष निकालना।

(iv) पठित सामग्री पर पूछे गए प्रश्नों का उत्तर दे सकना।

(v) भाषा एवं भाव सम्बन्धी कठिनाईयाँ सामने रख सकना।

(vi) शब्दों का लक्ष्यार्थ और व्यंग्यार्थ जान लेना।

(vii) अनुक्रमणिका, परिशिष्ट, पुस्तक–सूची आदि के प्रयोग की योग्यता प्राप्त कर लेना।

(viii) उपसर्ग, प्रत्यय, सन्धि–विच्छेद द्वारा शब्द का अर्थ जान लेना।

**मौन वाचन के भेद**

(i) गम्भीर वाचन (ii) द्रूत वाचन

जैसा कि पिछले चित्र में बताया जा चुका है।

**(i) गम्भीर वाचन**

(i.i) भाषा पर आधिकार करना

(i.ii) विषय–वस्तु पर अधिकार करना

(i.iii) नवीन सूचना एकत्र करना

(i.iv) केन्द्रीय भाव की खोज करना

**(i) द्रुत वाचन**

(ii.i) सीखी हुई भाषा का अभ्यास करना

(ii.ii) साहित्य से परिचय प्राप्त करना

(ii.iii) आनन्द प्राप्त करना

(ii.iv) खाली समय का सदुपयोग

(ii.v) द्रुत वाचन के माध्यम से सूचनाएं एकत्रित करना।

## 1.11 सारांश

अब तक आप समझ चुके हैं कि पठन कौशल से महता को नकारना असम्भव ही नहीं दुष्कर कार्य है। आज जहाँ प्रत्येक क्षेत्र में ज्ञान का विस्फोट हो रहा है वहाँ पठन कौशल में पारंगत होना अनिवार्य है। लिखित भाषा के धवन्यात्मक पाठ को पठन कहते हैं। लेकिन बिना अर्थ ग्रहण किए पढ़ने का पठन नहीं कहा जा सकता पढ़ने की क्रिया में अर्थ ग्रहण करना आवश्यक है। पढ़ कर किसी भी प्रकार का ज्ञानार्जन किया जा सकता है, पढ़ने के लिए सब प्रकार के समचारों से युक्त अखबार सबसे सस्ता व सुलभ साधन है, जहां से हम देश–विदेश की, आस–पास की, खेल–जगत की, आध्यात्मिक जगत की, रहस्य–रोमांच की जितनी चकाचौंध की विज्ञापन जगत की, उद्योग बाजार से यानि सभी प्रकार की अनौपचारिक जानकारियां हमें मिलती है। औपचारिक शिक्षा हेतु भी पठन–कौशल अनिवार्य है, उद्देश्य गुण या विशेषताएं प्रणाली वाचन कौशल में दक्ष बनाती है।

## वाचन कौशल

### मॉडल उत्तर

1.1 पठन कौशल के अर्थ को हम कैथरीन ओकानर के शब्दों में जान सकते हैं–''वाचन/पठन वह जटिल अधिगम प्रक्रिया है, जिसमें दश्यों, श्रवयों, सर्किटों का मस्तिष्क के अधिगम केन्द्र से सम्बन्ध निहित है।

1.2 पठन कौशल एक प्रकार से तो ज्ञानार्जन का साधन है, लेकिन जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में इसकी (पठन–कौशल) की महत्ता असंदिग्ध है। आज के विशिष्टताओं के युग में व्यक्ति जिस की व्यवसाय में विशिष्टतया प्राप्त करना चाहता है। तो वह जानकारी उसे पुस्तकों से मिलती है।

2.1 वाचन करते समय आरोह–अवरोह, स्वराघात व बलाघात का ध्यान रखना चाहिए व विराम चिन्हों को भी ध्यान में रखें।

2.2 वाचन के दो आधार है वाचन मुद्रा व वाचन शैली। वाचन मुद्रा का अर्थ है, बैठना, खड़े होने का ढंग, हाथ में शिक्षण सामग्री को पकड़ना, भावानुसार अंग संचालन आदि।

2.3 भावानुसार पढ़ना उचित वाचन शैली है। वाचन शैली के नियमों को नजर में रखते हुए वाचन करें।

3.1 पठन कौशल की शिक्षण प्रणालियां निम्नांकित हैं–

1. शब्द तत्त्व पर आधारित विधियां/प्रणाली
    - 1.1 वर्ण बोध विधि
    - 1.2 ध्वनि साम्य विधि
    - 1.3 स्वरोच्चारण विधि
2. अर्थ ग्रहण पर आधारित विधियां
    - 2.1 देखो और कहो विधि
    - 2.2 वाक्य विधि
    - 2.3 कहानी विधि
    - 2.4 अनुकरण विधि
    - 2.5 सम्पर्क विधि
3. उपयुक्त विधि
    - 3.1 स्वरों का अन्तर समझाना।
    - 3.2 प्रवाहपूर्ण ढंग से बोलना सिखाना।
    - 3.3 मौखिक कार्य पर बल।
    - 3.4 आकृतियाँ बनाना
    - 3.5 दष्टि का अभ्यास आदि

3.2 दष्टि दोष, अशुद्ध उच्चारण, अटक–अटक कर पढ़ना, आरोह–अवरोह का अभाव, विराम चिन्हों का गलत प्रयोग, निर्देशन की कमी आदि।

3.3 चिकित्सा विधि, वाचन सम्बन्धी निर्देशन या मार्ग दर्शन, स्थान परिवर्तन, मनोवैज्ञानिक सहायता मानसिक स्वरानुमूल पाठय–सामग्री

## 1.12 मुख्य शब्द

**कौशल**—किसी भी कार्य में कुशलता अर्जित करना

**वर्ण बोध**—वर्णों की जानकारी क्रमशः पहले स्वर बाद में व्यजन

**वाचन दोषों का निवारण**—वाचन में की जाने वाली गलतियों को अभ्यास से दूर करना।

## 1.13 सन्दर्भ ग्रन्थ


| | | |
|---|---|---|
| 1. | के० क्षत्रिया | मातभाषा शिक्षण, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा 1995 |
| 2. | के०के० सुखिया | हिन्दी ध्वनियाँ और उसका शिक्षण, रामनारायण लाल, इलाहाबाद |
| 3. | एम०एम० भाटिया एवं डी०के० वर्मा | हिन्दी शिक्षण, टण्डन पब्लिकेशन्ज किताब बाजार, लुधियाना |
| 4. | Strang and others | The Improvement of Reding, NewYork McGrow Hill, 1961 |

# इकाई-1

# अध्याय-6: लेखन-शिक्षण

**उद्देश्यः**

- छात्र लेखन–कौशल शिक्षण के अर्थ एवं महत्त्व को समझ सकेंगे।
- लेखन–शिक्षण के उद्देश्य को अपने शब्दों में बता सकेंगे।
- लेखन–शिक्षण के गुणों का प्रत्यास्मरण करेंगे।
- छात्र लेखन–शिक्षण की प्रविधियों का प्रत्याभिज्ञान कर सकेंगे।
- भाषा को शुद्ध रूप से लिखने की योग्यता प्राप्त कर सकेंगें।
- शुद्ध वर्तनी लिखने की गति में वद्धि कर पायेंगें।

**संरचनाः**

1.1 लेखन शिक्षण की भूमिका
1.2 लेखन शिक्षण का अर्थ
1.3 लेखन शिक्षण का महत्त्व
1.4 लेखन शिक्षण के उद्देश्य
1.5 लेखन शिक्षण के गुण
1.6 लेखन शिक्षण की प्रविधियाँ
1.7 लिखना सिखाने में ध्यान रखने योग्य बातें
1.8 सारांश
मॉडल उत्तर
1.9 मुख्य शब्द
1.10 संदर्भ ग्रन्थ

## 1.1 भूमिका

प्राचीन समय से ही मानव सष्टि–जगत में विचरण करता हुआ प्रकृति के नाना रूपों एवं व्यापारों से कहीं मेल खाता, कहीं टकराता जीवन में संचरण करता रहा होगा। इन रूपों एवं व्यापारों के प्रति कभी उदासीन कभी आनंदित होता हुआ, अपने हृदय स्थित भावों को बाह्य रूप में प्रकट करने की अभिलाषा करता रहा होगा, जिनकों वह क्रियाओं संकेतों, भाव–भंगिमाओं, अव्यवस्थित अपरिमार्जित बोली द्वारा अभिव्यक्त करता रहा है। वहीं क्रिया–कलाप अपरिमार्जित एवं अव्यवस्थित भाषा लिपि का वरदान पाकर सभ्यता और संस्कृति का संरक्षण करती है।

## 1.2 लेखन शिक्षण का अर्थ

आधुनिक समय में व्यक्ति अपने मनोभावों का प्रकटीकरण भाषा के माध्यम से दो रूपों में करता है।

1. मौखिक भाषा के माध्यम से
2. लिखित भाषा के माध्यम से

मौखिक रूप के अन्तर्गत भाषा का ध्वन्यात्मक रूप एवं भावों की मौखिक अभिव्यक्ति है। जब इन ध्वनियों को प्रतीकों के

रूप में व्यक्त किया जाता है, और इन्हें लिपिबद्ध करके स्थायित्व प्रदान करते हैं, तो वह भाषा का लिखित रूप कहलाता है। भाषा के इस प्रतीक रूप की शिक्षा, प्रतीकों को पहचान कर उन्हें बनाने की क्रिया अथवा ध्वनि को लिपिबद्ध करना लिखना है।

## 1.3 लेखन शिक्षण के उद्देश्य

प्यारे छात्रों लेखन–शिक्षण का अर्थ जानने के पश्चात् यह जरूरी हो जाता है कि हम लेखन शिक्षण के उद्देश्यों को भली–भाँति जाने।

1. छात्र सोचने एवं निरीक्षण करने के उपरान्त भावों को क्रमबद्ध रूप में व्यक्त कर सकेगा।
2. छात्र सुपाठ्य लेख लिख सकेगा।
3. शब्दों की शुद्ध वर्तनी लिख सकेगा।
4. छात्र ध्वनि, ध्वनि समूहों, शब्द, सूक्ति, मुहावरों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
5. विराम–चिन्हों का यथोचित प्रयोग कर सकेगा।
6. अनुलेख, अतिलेख, तथा श्रतुलेख लिख सकेगा।
7. व्याकरण सम्मत भाषा का प्रयोग करने में सक्षम होंगे।
8. वह वाक्यों में शब्दों, वाक्यांशों तथा उपवाक्यों का क्रम अर्थानुकूल रख सकेगा।
9. विभिन्न रचना वाले वाक्यों का शुद्ध गठन करेगा।
10. छात्र अभीष्ट सामग्री ही प्रस्तुत करेंगे।
11. क्रमबद्धता बनाये रखेंगे।
12. छात्र भाव की दष्टि से अभिव्यक्ति में संक्षिप्तता ला सकेंगें।
13. विद्यार्थी लिखित अभिव्यक्ति के विभिन्न रूपों की तकनीक का विधिवत् पालन करने में समर्थ होंगे।
14. वह लिखित अभिव्यक्ति के विभिन्न रूपों के माध्यम से अभिव्यक्ति कर पाने में सक्षम होंगे।

**अपनी प्रगति जांचिए-1**

1. मनुष्य अपने भावों का प्रकटीकरण किन साधनों से करता है।

## 1.4 लेखन शिक्षण के गुण

1. लेखन, सुन्दर, स्पष्ट एवं सुडौल हो।
2. उसमें प्रवाहशीलता एवं क्रमबद्धता हो
3. विषय (शिक्षण) सामग्री उपयुक्त अनुच्छेदों में विभाजित हो।
4. भाषा एवं शैली में प्रभावोत्पादकता हो।
5. भाषा व्याकरण सम्मत हो।
6. अभिव्यक्ति संक्षिप्त, स्पष्ट तथा प्रभावोत्पादक हो।

## 1.5 लेखन शिक्षण की प्रविधियाँ

लेखन शिक्षण कब से प्रारम्भ किया जाये, शिक्षाशास्त्रियों में मतैक्य नहीं है। प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री फ्रोबेल ने पढ़ने की क्रिया पहले और लिखने की क्रिया को बाद में रखने का सुझाव दिया है। वहीं दूसरी तरफ श्रीमती मारिया माण्टेसरी ने 'लिखाने सिखाने को पहले, तत्पश्चात् पढ़ना सिखाने का समर्थन किया है।' इन दोनों मतों से भिन्न एक तीसरा मत भी है। इसे दोनों मतों का समन्वयक कह सकते हैं क्योंकि अधिकांश शिक्षाविशारदों का मत है कि पढ़ना–लिखना साथ साथ चलना चाहिए।

अतः कहा जा सकता है, लेखन–शिक्षा अन्तिम सोपान है,। जब भाषा शिक्षक को यह विश्वास हो जाये कि बच्चे (छात्र) की हाथ की मांसपेशियाँ सुदढ़ हो चुकी है, और वह लिखने में सक्षम है, तब थोड़े–थोड़े समय लेखन का अभ्यास कराना चाहिए।

**अपनी प्रगति जांचिए-2**

1. लेखन शिक्षण के विषय में फ्रोबेल का मत क्या है?

## 1.6 लेखन की शिक्षण विधि

1. **माण्टेसरी विधिः** मान्टेसरी ने लिखना सिखाने में आँख, कान और हाथ– तीनों के समुचित प्रयोग पर बल दिया है। उनके मतानुसार पहले बालक को लकड़ी अथवा गत्ते या प्लास्टिक के बने अक्षरों पर ऊँगली फेरने को कहा जाये, फिर उन्हें पेंसिल को उन्हीं अक्षरों पर घुमवाना चाहिए। पेंसिल प्रायः रंगीन होनी चाहिए। इसी प्रकार बालक अक्षरों के स्वरूप से परिचित होकर उन्हें लिखना सीख जाता है।
2. **रूपरेखानुकरण विधिः** इस विधि में शिक्षक श्यामपट्ट या स्लेट पर चाँक या पेंसिल से बिन्दु रखते हुए शब्द या वाक्य लिख देता है और छात्रों से उन निशानों पर पेंसिल से लिखने के लिए बोलता है, जिससे शब्द, वाक्य या वर्ण उभर आये। इस प्रकार अभ्यास के माध्यम से वह वर्णों को लिखना सीख जाता है।
3. **स्वतंत्र अनुकरण विधिः** शिक्षक इस प्रविधि में श्यामपट्ट, अभ्यास पुस्तिका, या स्लेट पर अक्षरों को लिख देता है। छात्रों का कहा जाता है कि उन अक्षरों को देखकर उनके नीचे स्वयं इसी प्रकार के अक्षर बनाये। प्रारम्भ में बच्चे इस विधि से लिखना सीखते है।
4. **जेकॉटॉट विधिः** इस प्रणाली (विधि) में शिक्षक बालकों द्वारा पढ़े हुए वाक्य को स्वयं लिखकर छात्रों को लिखने के लिए दे देता है। छात्र एक–एक शब्द लिखकर अध्यापक द्वारा लिखित शब्द से मिलाते हुए स्वयं संशोधन करते चलते है। और पूरा वाक्य लिखने के पश्चात् शिक्षक मूल वाक्य को बिना देखे हुए उन्हें लिखने को कहता है, छात्र स्वयं लिखते हैं।

## 1.7 लिखना सिखाने में ध्यान देने योग्य बातें

छात्रों को लिखना सिखाते वक्त अध्यापक को निम्न तथ्यों को ध्यान में रखना चाहिए।

1. **बैठने का ढ़ंगः** लिखते समय छात्रों की रीढ़ की हड्डी सीधी रहे। झुक्कर लिखने की आदत न पड़ने पाये।
2. **अभ्यास पुस्तिका की आँखों से दूरीः** छात्र अभ्यास पुस्तिका को आँखों से लगभग 1 फुट की दूरी पर रखकर लिखें।
3. **कलम पकड़ने की विधिः** पहली और दूसरी ऊँगली के बीच में कलम रखकर उसे अँगूठे से पकड़ना चाहिए, कलम की निब को लगभग एक इंच से ऊपर पकड़ना चाहिए।
4. **पढ़नाः** लिखने के साथ–साथ पढ़ना भी हो, नहीं तो लिखना निरर्थक हो जायेगा।
5. **उपयुक्त वातावरणः** समय, स्थान आदि की उपयुक्तता पर शिक्षक को ध्यान रखना चाहिए।
6. **सुडौल अक्षरः** छात्र अक्षरों को सुन्दर बनाने का प्रयत्न करे। अक्षर पूरे लिखे जाये, तभी वह सुडौल होंगे।
7. **शिरारेखाः** शिरारेखा अक्षर का आवश्यक अंग है। अतः इस का प्रयोग किया जाना चाहिए।
8. **बायें से दायेंः** सभी वर्णों, वाक्यों के लिखने का क्रम बायें से दायें रहे।
9. **सीधी लिखाईः** अध्यापक को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वर्णों की खड़ी रेखाएं तिरछी ना होकर सीधी हो।
10. **नमूना उपयुक्त होः** अध्यापक द्वारा बनाए गए शब्द व अक्षर (मॉडल) आदर्श हो, जिनके आधार पर छात्र लिख सके।
11. **लिपि-प्रतीकः** अनुस्वार, विसर्ग, हलन्त, मात्राओं के प्रयोग में सावधानी रखनी चाहिए। छोटे–छोटे लिपि प्रतीकों की भूल से लेख विकृत हो जाता है।
12. **अभ्यासः** लिखना एक कला है, अतः छात्रों के बौद्धिक एवं मानसिक स्तर को ध्यान में रखते हुए अभ्यास करवाये।

**अभ्यास को आगे तीन श्रेणियों में विभाजित किया जाता है–**

1. सुलेख
2. अनुलेख
3. श्रुतलेख

1. **सुलेखः** सुन्दर लेख को सुलेख कहते हैं। लिखना सिखाते वक्त इस बात का ध्यान रखना चाहिए, छात्रों की लिखावट खराब न होने पाये। सुलेख शिक्षित व्यक्ति का आवश्यक लक्षण है।
2. **अनुलेखः** सुन्दर लिखावट के लिए प्रतिलेख और अनुलेख का भी आश्रय लिया जाता है। अनुलेख का अर्थ है– किसी लिखावट के पीछे या बाद में लिखना अनुलेख के लिए अभ्यास पुस्तिका की प्रथम पंक्ति में मोटे और सुन्दर ढंग के अक्षर, शब्द या वाक्य लिखे होते हैं, उनके नीचे की पंक्तियाँ रिक्त रहती है। इस विधि में छात्र छपे हुए अक्षरों के नीचे देखकर स्वयं अक्षर बनाता है। अनुलेख का प्रारम्भिक कक्षाओं में विशेष महत्त्व है। कक्षा तीन तक अनुलेख का अभ्यास कराना चाहिए।
3. **श्रुतलेखः** 'श्रुतलेख' सुना हुआ लेख है। इस विधि में अध्यापक बोलता जाता है, छात्र सुनकर अभ्यास–पुस्तिका या तख्ती पर लिखता जाता है। श्रुतलेख में सुन्दर लिखावट का महत्त्व नहीं हैं। महत्ता भाषा की शुद्धता का हो जाता है।

   श्रुतलेख वर्तनी–शिक्षण के लिए आवश्यक है। सुनकर लिखने में एक निश्चित गति से लिखना का अभ्यास हो जाता है।

**अपनी प्रगति जांचिए-3**

1. लेखन की शिक्षण विधियों के नाम बताइए
2. अभ्यास को कितने भागों में बांटा जा सकता है?

## 1.8 सारांश

अभी तक आप समझ चुके होंगे किन भाषायी कौशलों में लेखन कौशल अन्तिम परन्तु महत्वपूर्ण सोपान हैं लेखन कौशल के बगैर शिक्षण की कल्पना नहीं की जा सकती। परन्तु बच्चों को लेखन कौशल का अभ्यास तभी करवाया जाए, जब शिक्षक को यह विश्वास हो जाए कि वह (आगे) प्रथम तीनों, कौशलों का ज्ञान रखता है एवं उसकी मांसपेशियां कुछ सुदढ़ हो गई है। जब शिक्षक लेखन का अभ्यास करा सकता है। शिक्षक लेखन कौशल के उद्देश्य, गुण, शिक्षण विधियों का ध्यान रखते हैं। लिखना सिखाने के महत्वपूर्ण तथ्यों या महत्वपूर्ण बातों को ध्यान में रखकर शिक्षार्थियों को लेखन कौशल का अभ्यास करवाता है। औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने हेतु भी लेखन कौशल में दक्ष होना आवश्यक है। क्योंकि तीन घंटों की लिखित अभिव्यक्ति ही छात्रों की सफलता का आधार बनती है।

**मॉडल उत्तर**

1.1 व्यक्ति अपने भावों विचारों का प्रकटीकरण दो माध्यमों से करता है–

1. मौखिक भाषा के माध्यम से
2. लिखित भाषा के माध्यम से।

2.1 प्रसिद्ध शिक्षा–शास्त्री फ्रोबेल के मतानुसार पढ़ने की क्रिया को पहले और लिखने की क्रिया को बाद में रखने का सुझाव देते हैं।

3.1 लेखन कौशल की शिक्षण विधियों के नाम इस प्रकार है

1. मोण्टेसरी विधि
2. रूपरेखानुकरण विधि

3. स्वतन्त्र अनुकरण विधि
4. जेकाटॉट विधि

3.2 लेखन कौशल शिक्षण में अभ्यास को तीन भागों में वर्गीकृत किया हुआ है–

1. सुलेख
2. अनुलेख
3. प्रतिलेख आदि।

## 1.9 मुख्य शब्द

**रूपरेखा**–शिक्षक श्यामपट्ट पर या तख्ती व स्लेट पर चॉक व पैंसिल की सहायता से बिन्दुओं के माध्यम से वर्ण शब्द या वाक्य लिख देता है व छात्र उन पर निशानों पर पैंसिल से लिखते हैं, यह रूपरेखानुकरण है।

**सुडौल अक्षर**–जो सुन्दर अक्षर हो अर्थात् प्रत्येक अक्षर को पूरा लिखना–

**उदाहरणार्थ**–प्रचलित ढंग सही ढंग

| | |
|---|---|
| उ | इ |
| ह | ह |

## 1.10 सन्दर्भ ग्रन्थ


1. उमा मंगल (डॉ०) हिन्दी शिक्षण, आर्य बुक डिपो, करोल बाग नई दिल्ली 2003
2. भाई योगेन्द्र जीत हिन्दी भाषा शिक्षण, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।
3. हरिदेव बाहरी व्यावहारिक हिन्दी व्याकरण, लोक भारती प्रकरशन, इलाहाबाद
4. Freeman F.N. Teaching Handwriting: Washinton, America Education Research Association 1954

# इकाई-1

# अध्याय-7: उच्चारण–शिक्षण

**उद्देश्य:**

छात्रों से यह अपेक्षा की जाती है कि प्रस्तुत पाठ के अध्ययन के उपरान्त छात्रों में निम्न परिवर्तन आयेंगे।

- छात्र उच्चारण के अर्थ एवं महत्त्व को भली प्रकार समझते हैं।
- उच्चारण के विभिन्न सोपानों से परिचित हैं।
- छात्र उच्चारण स्थल की दष्टि से हिन्दी ध्वनियों के वर्गीकरण का प्रत्यास्मरण करते हैं।
- छात्र उच्चारण शिक्षा की महत्ता पर बल डालते हैं।
- उच्चारण दोष के विभिन्न प्रकारों से भली प्रकार परिचित हैं।
- उच्चारण दोषों का निराकरण हेतु अनेक साधनों तकनीक एवं विधियों का प्रयोग करते हैं।

**संरचना:**

1.1 उच्चारण शिक्षण की भूमिका
1.2 उच्चारण शिक्षण का अर्थ
1.3 उच्चारण शिक्षण का महत्त्व
1.4 उच्चारण शिक्षण के सोपान
1.5 उच्चारण स्थल की दष्टि से हिन्दी ध्वनियों का वर्गीकरण
1.6 उच्चारण शिक्षा की आवश्यकता
1.7 उच्चारण दोष के कारण
1.8 उच्चारण दोष के विभिन्न प्रकार
1.9 उच्चारण दोषों का निराकरण
1.10 सारांश
मॉडल उत्तर
1.11 मुख्य शब्द
7.12 संदर्भ ग्रन्थ

## 1.1 उच्चारण शिक्षण की भूमिका

हिन्दी भाषा का ध्वनितत्व वैज्ञानिक है, नागरी भाषा में प्रत्येक ध्वनि के लिए निश्चित अक्षर हैं और उनका सटीक उच्चारण है। उच्चारण पर बल न देने पर उच्चारण दोष उत्पन्न होता है और भाषा का रूप विकृत होता है, उसका निश्चित रूप नहीं बन पाता है।

भाषा के दो रूप हैं–

1. मौखिक भाषा
2. लिखित भाषा

शुद्ध उच्चारण के अभाव में मौखिक भाषा अस्वाभाविक एवं प्रभावहीन हो जाती है। प्रायः हम जैसा उच्चारण करते हैं या बोलते हैं वैसा ही लिखते हैं। अतः लिखित भाषा में भी वे दोष आ जाते हैं। शब्दों की वर्तनी की अशुद्धता के कारण हमारा उच्चारण अशुद्ध हो जाता है। इस प्रकार शुद्ध उच्चारण का बड़ा महत्व है। वही भाषा का स्वरूप निखारता है।

## 1.2 उच्चारण शिक्षण का अर्थ

भावों एवं विचारों की अभिव्यक्ति व आदान–प्रदान के लिए हम भाषा के दो रूपों का प्रयोग करते हैं मौखिक और लिखित रूप। मौखिक भाषा के प्रयोग का आधार ध्वनियां है, तथा प्रत्येक ध्वनि के लिए एक निश्चित अक्षर है, और उसका उच्चारण स्थान भी निश्चित है। यदि हम विचारों एवं भावों की अभिव्यक्ति के समय ध्वनि का उच्चारण उसके निश्चित स्थान से नहीं करेंगे तो हमारी अभिव्यक्ति दोषपूर्ण और मौखिक भाषा निरर्थक एवं प्रभावहीन हो जायेगी।

## 1.3 उच्चारण शिक्षण का महत्त्व

प्राचीन भारत में शिक्षा मौखिक रूप से प्रदान की जाती थी। अतः उस समय उच्चारण पर विशेष बल दिया जाता था। शुद्ध उच्चारण के संदर्भ में प्राचीन ग्रन्थों में विशेष रूप से लिखा गया है – यथा–

"प्रकृतिर्यस्य कल्याणी दन्ताष्ठौ यस्य शोभनौ।

प्रगल्भश्च विनीतश्च स वर्णनं वक्तुमहंति।।"

अभिप्राय यह है कि "जिसकी प्रकृति अच्छी है, जिसके दांत और ओष्ठ अच्छे हैं, जो वार्तालाप में प्रगल्भ और विनीत है, वही वर्णों का ठीक–ठीक उच्चारण कर सकता है।"

'याज्ञवल्कय शिक्षा' में उच्चारण के संदर्भ में विस्तारपूर्वक विवरण दिया गया है। **न्यायसूत्र** उच्चारण पर विशेष बल देता है– "जब बोलने वाले के मन में बोलने की इच्छा पैदा होती है, तो आत्मा से हृदयस्थ वायु को प्रेरणा मिलती है, जिससे कण्ठ, तालु आदि स्थानों पर एक प्रकार का आघात होता है।"

**महर्षि पाणिनि** के मतानुसार– "शब्दोच्चारण से पूर्व बुद्धि के साथ मिलकर आत्मा पहले अर्थ का ज्ञान कराती है, तब मन में बोलने की प्रेरणा प्राप्त होती है।"

आचार्य प्रवर पंडित सीताराम चतुर्वेदी उच्चारण के बारे में कहते हैं– "जैसे मतवाला हाथी एक पैर रखने के पश्चात् दूसरा पैर रखता है, उसी प्रकार एक–एक पद और पदान्त को अलग–अलग स्पष्ट करके बोलना चाहिए।"

**अपनी प्रगति जांचिए-1**

1. भाषा के कितने रूप हैं

## 1.4 उच्चारण शिक्षण के सोपान

1. उच्चारण करने से पूर्व मन में विचारों का जन्म होता है। विचारों की अभिव्यक्ति शब्दों के माध्यम से होती है। शब्द किसी अर्थ के परिचायक होते हैं। "शब्द और अर्थ एक ही सिक्के के दो पार्श्व हैं।"

   वाक्यप्रदीप में भी कहा गया है– "एकस्यैवात्मनौ भेदौ शब्दार्थो पथक स्थितौ।"
2. स्वर यंत्र में श्वास के आघात से पूर्ण ध्वनियों का जन्म होता है।
3. उच्चारण बोलकर करते हैं। बोलने के पूर्व मनमें बोलने की इच्छा बलवती होती है, तब कहीं जाकर उच्चारण किया जाता है।
4. उच्चारण करने के प्रयास में हृदयस्थल पर वायु में प्रकम्पन्न पैदा होता हे। इसका मतलब यह है कि वायु फेफड़े से निकलकर गले में तरंगित होकर उच्चारण को जन्म देती हैं।
5. वायु जब गले में तरंगित होती है, तो उस तरंगण से ध्वनियाँ उत्पन्न होती है।

6. ध्वनि मुख के विभिन्न भागों से टकरा कर अपना विभिन्न स्वरूप धारण करती है। यही स्वरूप उच्चारण की ध्वनियाँ है।

7. ध्वनि स्वर यंत्र से बाहर निकलती है। स्वर यंत्र से ध्वनियाँ तीन प्रकार से बाहर निकलती है।

   (i) स्वरों के उच्चारित करने के प्रयास में मुख का रूप बदल–बदलकर

   (ii) व्यजनों को उच्चारित करते समय जीभ, ओष्ठ, दांत तथा तालु का प्रयोग होता है।

   (iii) स्वर की प्रभावपूर्णता के लिए कम्पन यंत्रों का प्रयोग।

## 1.5 उच्चारण स्थल की दष्टि से हिन्दी ध्वनियों का वर्गीकरण

उच्चारण–स्थल की दष्टि से हिन्दी ध्वनियों का वर्गीकरण निम्न है–

| स्वर | व्यंजन | उच्चारण-स्थल |
|---|---|---|
| अ, आ, ऑ | क, ख, ग, घ, ङ, ह | कण्ठ |
| – | क, ख, ग | जिह्वामूल |
| इ, ई | च, छ ज, झ, ा, य, श | तालु |
| ऋ | ट, ठ, ड, ढ, ण, ड़, ढ़, ष | मूर्धा |
| – | त, थ, द, ध | दन्त |
| – | न, र, ल, स, ज | वर्त्स (ऊपरी दाँत के अन्दर के मसूड़े से) |
| उ, ऊ | प, फ, ब, भ, म | ओष्ठ |
| ए, ऐ | – | कण्ठ तालु |
| ओ, औ | – | कण्ठोष्ठय |
| – | व, फ | दन्त–ओष्ठ |

## 1.6 उच्चारण की शिक्षा की आवश्यकता

हिन्दी भाषा में उच्चारण सम्बन्धी अनेक दोष प्रचलित है। उच्चारण में ध्वनियों का विशेष महत्व है। ध्वनियों के अभाव में शब्दों का अस्तित्व नहीं है और न ही भाषा का। इसलिए ध्वनियों के उच्चारण पर विशेष बल देने की आवश्यकता है। उच्चारण की शिक्षा की आवश्यकता के निम्नलिखित कारण हैं–

1. अशुद्ध उच्चारण भाषा का स्वरूप बिगड़ता है। अशुद्ध उच्चारण उसका सुसंस्कृत स्वरूप विकृत करता है।

2. बिना उच्चारण ज्ञान के भाषा का ज्ञान नहीं हो सकता है। उच्चारण ध्वनियों के आधार पर किया जाता है। ध्वनियों के अभाव में न भाषा ठीक ढंग से समझी जा सकती है, न ही उसका सम्यक ज्ञान ही हो पाता है।

3. उच्चारण बाल्यावस्था से ही बनता–बिगड़ता है। इस कारण बालकों के उच्चारण पर विशेष बल देना चाहिए। बचपन से ही भ्रष्ट उच्चारण से बचाया जाना चाहिए।

4. हिन्दी भाषा–भाषी क्षेत्रों में अनेक बोलियाँ–उपबोलियाँ प्रचलित हैं, यथा ब्रज, अवधी, भोजपुरी, छत्तीसगढ़ी, बांगरी, मालवी, बुन्देली आदि। इन बोलियों का प्रभाव खड़ी बोली पर पड़ा है। इस कारण उसमें ग्रामीण भाषा का पुट मिल गया है। अध्यापक को सावधानीपूर्वक ग्रामीण बोलियों के उच्चारण के प्रभाव से बच्चों को मुक्त करना चाहिए। दुर्भाग्यवश अध्यापक भी इस दुष्प्रभाव से वंचित नहीं हैं। इसलिए अशुद्ध उच्चारण प्रचलित है।

5. अहिन्दी–भाषी क्षेत्रों के बालकों पर प्रांतीय भाषाओं का प्रभाव पड़ता है। वहाँ के बालकों को हिन्दी के उच्चारण में इन प्रांतीय भाषाओं के प्रभाव से बचाना चाहिए।

इस प्रकार हिन्दी में उच्चारण सम्बन्धी अनेक दोष एवं कठिनाइयाँ हैं। सावधानीपूर्वक इनका निराकरण करना चाहिए। इसके लिए छात्रों को उच्चारण दोष से मुक्त करना आवश्यक है।

## 1.7 उच्चारण दोष के कारण

उच्चारण सम्बन्धी दोष अनेक कारणों से होते हैं। क्षेत्र विशेष एवं व्यक्ति विशेष के कारण ये दोष उच्चारण के विकृत स्वरूप को जन्म देते हैं। उच्चारण दोष के निम्नलिखित कारण हैं–

1. **शारीरिक कारणः** उच्चारण यन्त्रों के विकार के कारण उच्चारण सम्बन्धी दोष आ जाते हैं। कुछ लोगों के कण्ठ, तालु, होंठ, दाँत, आदि उच्चारण–अंगों में दोष होते हैं। इसलिए वे सम्बद्ध ध्वनियों का सही उच्चारण नहीं कर पाते हैं।
2. **वर्णों के उच्चारण का अज्ञानः** हिन्दी भाषा की एक विशेषता यह भी है कि उसका जैसा अक्षर–विन्यास है, ठीक वैसे ही उच्चारित भी की जाती है। इसके बावजूद अज्ञानवश वर्णों व शब्दों के सही रूप कुछ लोग उच्चारित नहीं कर पाते हैं जैसे आमदनी को आम्दनी कहना, खींचने को खेंचना कहना, प्रताप को परताप कहना, वक्ष को व्रक्ष कहना, वीरेन्द्र को वीरेन्दर कहना आदि।
3. **क्षेत्रीय बोलियों का प्रभावः** कहावत है कि 'कोस–कोस पर पानी बदले, दस कोस पर बानी।' अर्थात् प्रत्येक दस कोस (बीस मील) पर बानी अर्थात् वाणी बदल जाती है। वास्तव में भाषा का रूप विभिन्न क्षेत्रों में परिवर्तित नजर आता है। इसका मूल कारण क्षेत्रीय भाषाओं का खड़ी बोली पर भोजपुरी प्रभाव है। क्षेत्र के लोग 'ने' का प्रयोग कम करते हैं, तो पंजाबी क्षेत्र के लोग उसका अनावश्यक प्रयोग भी करते हैं, यथा, हमने जाना है।' 'ने' के बदले कहीं 'ण' का प्रयोग, कहीं 'स' के बदले 'ह' का प्रयोग तो कहीं 'ए', 'औ' और 'न' के बदले 'ए', 'ओ', 'ण' का प्रयोग आदि।
4. **अन्य भाषाओं का प्रयोगः** हिन्दी भाषा पर अन्य भाषाओं का भी प्रभाव पड़ता है, जिससे उसके उच्चारण पर प्रभाव पड़ता है। उर्दू के कारण हिन्दी का क, ख, ग – क़, ख़, ग़ हो गया है। अंग्रेजी के कारण कालेज, प्लेटफार्म आदि अनेक शब्द जुड़ गये हैं। अंग्रेजी के कारण ही 'आ' का उच्चारण 'ऑ' होने लगा है।
5. **भौगोलिक कारणः** विभिन्न परिस्थितियों में रहने से स्वर–यंत्र में भी थोड़ी–बहुत विभिन्नता आ जाती है, इससे उच्चारण प्रभावित होता है। अरबवासी धूप आदि से बचने के कारण सिर पर कपड़ा बाँधते हैं, गला कस–सा जाता है, इस कारण वहाँ क, ख, ग – क़, ख़, और ग़ हो जाता है। हिन्दी में भी विभिन्न राज्यों में हिन्दी का उच्चारण इससे किंचित प्रभावित हुआ है।
6. **मनोवैज्ञानिक कारणः** उच्चारण पर मनोवैज्ञानिकता का प्रभाव पड़ता है। भय, संकोच, शीघ्रता, बिलम्ब आदि से उच्चारण में दोष आ जाते हैं। इससे तुतलाना, लापरवाही आदि का विकास होता है और उच्चारण प्रभावित होता है।
7. **स्थानीय प्रभावः** जिस क्षेत्र विशेष में बालक निवास करता है, वहां की भाषा बच्चे के उच्चारण को प्रभावित करती है– कहा भी जाता है– "चार कोस पर पानी बदले आठ कोस पर वाणी" स्थानीय बोली के प्रभाव से उच्चारण अशुद्ध हो जाता है।
8. **अध्यापक की अयोग्यताः** उच्चारण सुधार में अध्यापक का महत्त्वपूर्ण योगदान है। अगर अध्यापक उच्चारण में सतर्कता नहीं रखता या शुद्ध उच्चारण करने में असमर्थ है, तो छात्र उसका अनुकरण करके अशुद्ध उच्चारण करना प्रारम्भ कर देते हैं ओर यह दोष सदा के लिए उनमें घर कर जाता है।
9. **प्रयत्न-लाघवः** ध्वनियों व शब्दों के उच्चारण में पूर्ण सावधानी न रखने पर दोष का आना स्वाभाविक है। शब्दों एवं ध्वनियों का उच्चारण पूर्णरूप से किया जाना चाहिए। प्रयत्न–लाघव (short cut) विधि को अपनाने से उच्चारण सम्बन्धी दोष आ जाते हैं, यथा परमेश्वर को 'प्रमेसर', 'मास्टर साहब' को 'म्मासाब' आदि।
10. **दोषपूर्ण आदतेंः** वैयक्तिक दोषपूर्ण आदतें भी अशुद्ध उच्चारण का कारण बन जाती हैं। अनुस्वरों का अधिक उच्चारण इसका प्रचलित रूप है, जैसे 'कहा' को 'कहाँ' कहना या अनुस्वरों का लोप जैसा 'हैं' को 'है' कहना आदि। रुक–रुक कर बोलना, शीघ्रता में बोलना, किसी की नकल करके बोलना भी उच्चारण दोष लाने के कारण है।
11. **शुद्ध भाषा के वातावरण का अभावः** भाषा अनुकरण द्वारा सीखी जाती है। अगर भाषा के शुद्ध रूप का वातावरण

नहीं मिला तो अशुद्ध उच्चारण स्वाभाविक है। अशुद्ध उच्चारण के बीच पलने वाला बालक शुद्ध उच्चारण नहीं कर पाता है।

12. **अक्षरों एवं मात्राओं का अस्पष्ट ज्ञानः** जिन छात्रों को अक्षरों एवं मात्राओं का स्पष्ट ज्ञान नहीं दिया जाता, उनमें उच्चारण–दोष होता है। संयुक्ताक्षरों के संदर्भ में यह भूल अधिक होती है; जैसे स्वर्ग को सरग कहना, कर्म को करम कहना, धर्म को धरम कहना आदि।

13. **नागरी ध्वनियों का अनिश्चित उच्चारणः** नागरी ध्वनियों में 'ङ' 'ा'; 'ऋ', 'ष' 'क्ष' 'ज्ञ' आदि का प्रयोग बहुत कम होता है। इस कारण इनका उच्चारण अनिश्चित–सा हो गया है। इस कारण इनके उच्चारण में बहुधा भूल की संभावना रहती है।

14. अति शीघ्रता, असावधानी से भी उच्चारण अशुद्ध हो जाता है

**अपनी प्रगति जांचिए-2**

1. उच्चारण दोष के चार कारण बताओ।

## 1.8 उच्चारण दोष के विभिन्न प्रकार

उच्चारण दोष के विभिन्न प्रकार नीचे दिये जा रहे हैं:

1. **स्वर-लोपः** यथा 'क्षत्रिय' का 'छत्री', 'परमात्मा' का 'प्रमात्मा', 'ईश्वर' का 'इस्सर'।
2. **स्वर-भक्तिः** यथा 'बजेन्द्र' को बढ़ाकर 'बरजेन्दर', 'श्री' को 'सिरी', 'शक्ति' को 'सकती'।
3. **स्वरागमः** यथा 'स्नान' में 'अ' का आगम होकर होकर 'अस्नान्', 'स्कूल' में 'इ' का आगम होकर 'इस्कूल'।
4. **ऋ का अशुद्ध उच्चारणः** यथा 'अमत' का 'अम्रित', पंजाब में 'अम्रत', मराठी में 'अम्रत'।
5. **इ, उ का ई, ऊ के साथ भ्रमः** यथा 'कवि' का 'कवी', 'हिन्दू' का 'हिन्दु', 'ईश्वर का ईसवर', 'किन्तु' का 'किन्तू'।
6. **न और ण का भ्रमः** यथा 'रणभूमि' का 'रनभूमि', 'प्रणय' का 'प्रनय', 'कर्ण' का 'करन' आदि।
7. **क्ष और छ का झमेलाः** यथा लक्ष्मण को लछमन, अक्षर का अछर, क्षत्री का छत्री।
8. **श और ष का भ्रमः** यथा प्रकाश का प्रकाष, निष्काम का निश्काम।
9. **व और व का भ्रमः** यथा 'वन' (जंगल) का 'बन', वचन का 'बचन' वसंत का 'बसंत'।
10. **ड और ड़ का भ्रमः** जैसे गुड़ का गुड।
11. **ढ और ढ़ का भ्रमः** यथा पढ़ाई का पढाई, कढ़ाई का कढाई।
12. **चन्द्रबिन्दु और अनुस्वार का भ्रमः** यथा गंगा का गँगा और चाँद का चांद कहना।
13. **य और ज का भ्रमः** यथा यमराज को 'जमराज' लिखना, यज्ञ का 'जज्ञ' उच्चारित करना।
14. **अनुनासिकता का भ्रमः** यथा सोचने को सोंचना लिखना, बच्चा को बंच्चा लिखना।
15. **अल्पप्राण और महाप्राण सम्बन्धी भ्रमः** यथा बुढ़ापा को बुडापा, घूमना को गूमना, घर को गर।
16. **शब्द विपर्ययः** यथा लिफ़ाफा को लिलाफा कहना, आदमी को आमदी कहना।
17. **शब्दांश विपर्ययः** यथा 'बाल की खाल निकालने' को 'खाल की बाल निकालना'।
18. **हड़बड़ाहट या तुतलाहटः** यथा 'ततत तुम्मामारा घघरर कहाँ है'?
19. **न्यूनाधिक गतिः** शब्द या वाक्य या वाक्य खंड को शीघ्रता में बोलना या देर तक खींचकर बोलने से भी उच्चारण सम्बन्धी दोष आ जाते हैं।

20. **शारीरिक दोषः** जिह्वा, ओष्ठ, तालु आदि में दोष आने से उच्चारण सम्बन्धी दोषों का आना स्वाभाविक है।

21. **मनोवैज्ञानिक कारणः** भय, दुर्व्यवहार, शंका आदि से जिह्वा, तालु, ओष्ठ आदि लड़खड़ाने लगते हैं और उच्चारण सम्बन्धी दोष आ जाते हैं।

22. **ध्वन्यात्मक दोषः** यथा उलटा–पलटा को उल्टा–पल्टा लिखना।

इसी प्रकार हिन्दी भाषा में उच्चारण सम्बन्धी अन्य कई दोष विद्यमान हैं।

## 1.9 उच्चारण सम्बन्धी दोषों का निराकरण

शैशवावस्था एवं बाल्यावस्था से ही उच्चारण पर ध्यान देना चाहिए, ताकि बालक अशुद्ध उच्चारण न करें। बाल्यावस्था से से ही इस पहलू पर ध्यान देने से बालक भविष्य में कभी भी उच्चारण के दोषी नहीं होंगे। अशुद्ध उच्चारण के निराकरण के लिए निम्न उपाय किये जायें–

1. **उच्चारण अंगों की चिकित्साः** अगर उच्चारण करने वाले अंगों में कोई दोष हो तो चिकित्सक से चिकित्सा करानी चाहिए। उच्चारण करने में श्वास नलिका, कण्ठ, जीभ, वर्त्स, नाक, ओष्ठ, तालु, मूर्धा, दाँत आदि की सहायता ली जाती है। इन अंगों में दोष आने पर उच्चारण के प्रभावित होने की संभावना रहती है। इसलिए इन अंगों में दोष आने पर तत्काल चिकित्सा करानी चाहिए। उच्चारण करने वाले अंगों का चित्र सामने पष्ठ पर दिया गया है।

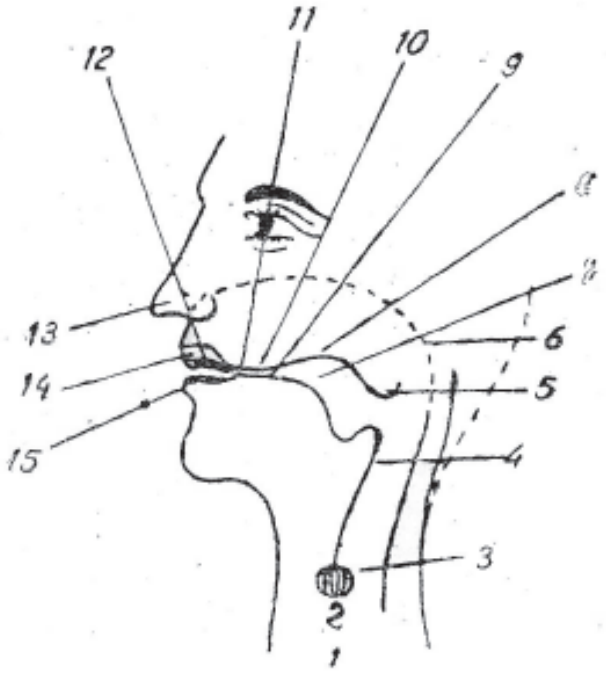


**उच्चारण स्थल**

1. श्वास नलिका (Wind pipe)
2. कंठपिटक (Larynx)
3. स्वरतंत्री (Vocal chords)
4. अभिकाकल (Epiglottis)
5. काकल (कौवा) (Uvula)
6. नासिका विवर (Nasal cavity)
7. कण्ठ (Guttur)
8. कोमल तालु (Soft Palate)
9. जीभ (Tongue)
10. मूर्धा (Hard Palate)
11. वर्त्स (Teeth ridge alveola)
12. ऊपर के दाँत (Upper teeth)
13. नाक (Nose)
14. ऊपर के ओष्ठ (Upper lip)
15. निचला ओष्ठ (Lower lip)

2. **शुद्ध उच्चारण वाले लोगों का सहवासः** बालक में अनुकरण की अपूर्व क्षमता होती है। वह अनुकरण के माध्यम से कठिन से कठिन तथ्य समझ लेता है। अगर उसे शुद्ध उच्चारण करने वाले लोगों, विद्वानों आदि के साथ रखा जाये तो उसमें उच्चारण दोष का भय नहीं रहेगा। उसका उच्चारण रेडियो, ग्रामोफोन, टेपरिकार्डर आदि के माध्यम से इसी पद्धति पर सुधारा जा सकता है।

3. **नागरी ध्वनितत्त्व को समझानाः** अध्यापक को ध्वनितत्त्वों का विशेषज्ञ होना चाहिए। उसे बालकों को वर्णमाला के स्वर, व्यंजन से लेकर कठिन उच्चारणों की शिक्षा विधिवत् देनी चाहिये, ताकि उनका उच्चारण सुधर जाये। उसे अर्द्ध–स्वरों एवं अर्द्ध–व्यंजनों, संयुक्ताक्षरों, संयुक्त ध्वनियों आदि का विशेष ध्यान रखकर उच्चारण सिखना चाहिए।

4. **ध्वनियंत्रों का सम्यक ज्ञान करानाः** बालकों को यह बताना अनिवार्य है कि ध्वनियाँ कैसे बनती है? ध्वनियों के उच्चारण में जीभ, ओष्ठ, कण्ठ, काकली आदि का क्या योगदान है। अल्पप्राण एवं महाप्राण ध्वनियों में क्या अन्तर है? स्वर और व्यंजन में क्या अन्तर है? इन तथ्यों को उसे उदाहरण देकर शिक्षा प्रदान करनी चाहिए। इस संदर्भ में उसे निम्न ध्वनियंत्रों एवं दश्य–श्रव्य उपकरणों की सहायता लेनी चाहिए–

   (i) ध्वनियंत्रों का चित्र।

   (ii) सिर एवं ग्रीवा का माडल, जिसमें उच्चारण स्थल दर्शाये गये हों।

   (iii) दर्पण (जिसमें उच्चारण करते समय बालक अपने उच्चारण–स्थल देख सके)।

   (iv) ग्रामोफोन (शुद्ध उच्चारण के लिए)।

   (v) लिंग्वाफोन (शुद्ध उच्चारण की शिक्षा के लिये)।

   (vi) टेपरिकार्डर (कठिन उच्चारणों के आदर्श उच्चारण के अभ्यास के लिए)।

   इसके अतिरिक्त कुछ मूल्यवान वैज्ञानिक यंत्र इस संदर्भ में बड़े उपयोगी हैं। पर निर्धनता के कारण इनकी उपयोगिता से हम वंचित हैं। ये उपकरण निम्न हैं–

   (i) ***कायमोग्राफः*** अल्पप्राण महाप्राण, घोष–अघोष, स्पर्श–संघर्षों की मात्रा आदि की शिक्षा के लिये यह उपकरण बड़ा ही उपादेय है।

   (ii) ***कृत्रिम तालुः*** ध्वनियों के शुद्ध एवं स्टीक उच्चारण के लिए यह उपकरण जीभ के ऊपरी तालु पर रखा जाता है।

   (iii) ***एक्सरेः*** स्वरों एवं व्यंजनों के उच्चारण में जीभ की सही स्थिति का पता एक्सरे के माध्यम से लगाया जा सकता है।

   (iv) ***लैरिंगोस्कोपः*** स्वरतंत्रियों की गतिविधियों के अध्ययन में इस यंत्र की उपयोगिता जगत विख्यात है।

   (v) ***अन्य उपयोगी यंत्रः*** इन्द्रीस्कोप, आटोफोनोस्कोप, नेमोग्राफ, फ्लास्क स्टेथोग्राफ आदि उपकरण विदेशों में उच्चारण सम्बन्धी सुधार के लिए प्रयुकत किये जा रहे हैं।

5. **हिन्दी ध्वनियों का वर्गीकरण सिखानाः** हिन्दी ध्वनियों के वर्गीकरण की सच्ची शिक्षा दिये बिना छात्रों का उच्चारण दोष कदापि दूर नहीं किया जा सकता है। ध्वनियों का वर्गीकरण चार प्रकार से किया गया है–

   (i) ***बाह्य प्रयत्न के आधार परः*** इस आधार पर सभी वर्ण, श्वास तथा नाद तथा अल्पप्राण एवं महाप्राण में विभक्त है।

   (ii) ***आन्तरिक प्रयत्न के आधार परः*** इस आधार पर संवत, अर्द्ध–संवत, विवत एंव अर्द्ध–विवत के रूप में ध्वनियाँ विभक्त हैं।

(iii) ***उच्चारण की प्रकृति के आधार पर:*** उच्चारण की प्रकृति के आधार पर स्वर, ह्रस्व, दीर्घ में तथा अन्य वर्ण, स्पर्श, पार्श्विक, अनुनासिक, ऊष्म, अन्तःस्थ, लुंठित एवं उत्क्षिप्त स्वरूप में विभक्त हैं।

(iv) ***उच्चारण स्थल के आधार पर:*** इस आधार पर वर्ण– कंठ्य, तालव्य, मूर्द्धन्य, दन्त्य, ओष्ठ्य, दन्तोष्ठ्य एवं वर्त्स्य के रूप में विभक्त हैं।

बालकों को वही अध्यापक इनका स्पष्ट विवरण दे सकता है, जिसे स्वयं इनके बारे में शतप्रतिशत जानकारी हो। इनकी शिक्षा बालकों 12–13 वर्ष की उम्र से 18 वर्ष की उम्र तक देनी चहिए। इसके उपरान्त उनमें उच्चारण सम्बन्धी दोष नहीं आ पायेगा।

6. **हिन्दी की कतिपय विशेष ध्वनियों का अभ्यास:** प्रायः हिन्दी भाषा में स, श एवं ष, न एवं ण, व तथा ब, ड तथा ड़, क्ष तथा छ आदि का उच्चारण दोष बालकों में पाया जाता है जैसे विकास का उच्चारण 'विकाश', महान का उच्चारण 'महाण', वन का उच्चारण 'बन' आदि। अध्यापक को इस संदर्भ में विशेष जागरूक रहना चाहिए और इस संदर्भ में भूल होते ही निराकरण कर देना चहिए।

7. **बल, विराम तथा सस्वर पाठ का अभ्यास:** अक्षरों या शब्दों का उच्चारण ही पर्याप्त नहीं है, वरन् पूरे वाक्य को उचित बल, विराम तथा सुस्वर वाचन के आधार पर पढ़ने का अभ्यास डालना भी आवश्यक है। शब्दों पर उचित बल देकर पढ़ने से अर्थभेद एवं भावभेद का ज्ञान होता है। विराम के माध्यम से लय, प्रवाह एवं गति का पता लगता है। इसलिये इन पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है। इससे उच्चारण सम्बन्धी दोषों का निवारण भी होता है।

8. **पुस्तकों के शुद्ध वाचन (पाठ) पर बल:** उच्चारण सम्बन्धी दोषों के निवारण के लिए पुस्तकों का शुद्ध वाचन आवश्यक हैं पहले अध्यापक आदर्श वाचन प्रस्तुत करे, इसके उपरान्त वह छात्रों से शुद्ध वाचन करावे। वाचन में सावधानी रखे तथा अशुद्धियों का सम्यक निवारण करावे।

9. **उच्चारण प्रतियोगिताएं:** कक्षा शिक्षण में मुख्यतया भाषा के कालांश में उच्चारण की प्रतियोगिताएँ करानी चाहिएँ। कठिन शब्द श्यामपट पर लिखकर उनका उच्चारण कराना चाहिए। सर्वथा शुद्ध उच्चारण करने वाले छात्रों को पुरस्कृत किया जाना चाहिए।

10. **भाषण एवं संवाद प्रतियोगिताएँ:** भाषण एवं संवाद प्रतियोगिताओं से उच्चारण शुद्ध होते हैं। निर्णायक मंडल को पुरस्कार देते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि शुद्ध उच्चारण करने वाले छात्रों को ही पुरस्कार या प्रोत्साहन मिले।

11. **विश्लेषण विधि का प्रयोग:** कठिन एवं बड़े–बड़े शब्दों व ध्वनियों के उच्चारण में विश्लेषण विधि का प्रयोग किया जाये। इससे अशुद्ध उच्चारण की संभावना कम हो जाती है। पूरे शब्दों को अक्षरों में विभक्त करने से संयुक्ताक्षारों व कठिन शब्दों को सहज एवं सहजग्राह्य बनाया जा सकता है, जैसे सम्मिलित शब्द को सम्+मि+लि+त, उत्तम शब्द को उत्+त+म आदि–आदि।

12. **अनुकरण विधि का प्रयोग:** उच्चारण का सुधार अनुकरण विधि से किया जा सकता है। अध्यापक कठिन शब्दों का उच्चारण स्वयं पहले करे तथा पुनः कक्षा के बालकों को उसका अनुकरण करने को कहे। अनुकरणशील छात्रों के हाव–भाव, जिह्वा संचालन, मुखावयव तथा स्वरों के उतार–चढ़ाव का पूर्ण ध्यान रखा जाना आवश्यक है, ताकि उच्चारण में प्रत्याशित सुधार लाया जा सके।

13. **मानसिक संतुलन हेतु प्रयास:** जो छात्र भय व संकोच के कारण अशुद्ध उच्चारण करने लगें, उन्हें पूर्ण प्रोत्साहन देना चाहिए; ताकि उनमें आत्मविश्वास का भाव जगे और उनका मानसिक संतुलन बना रहे। ऐसे छात्रों को प्रेरणा एवं सहानुभूति चाहिए। उनकी भूलों पर बिगड़ने या डाँटने की आवश्यकता नहीं है। इस विधि से क्रमशः धीरे–धीरे उनका उच्चारण सुधरने लगेगा।

14. **सभी विषयों के शिक्षण में उच्चारण पर ध्यानः** उच्चारण पर ध्यान देना केवल भाषा–शिक्षक का ही कार्य नहीं है। सभी विषयों के शिक्षण में उच्चारण पर अगर ध्यान दिया जाये, तो उच्चारण में सुधार शीघ्रता से होगा। प्रायः यह कार्य भाषा के अध्यापक का ही माना जाता हे, जो एक भूल है। सभी विषयों के अध्यापकों को इस पहलू पर बल देना चाहिए।

15. **वैयक्तिक एवं सामूहिक विधि का प्रयोगः** उच्चारण–सुधार के लिए दोनों ही विधियां प्रयुक्त की जायें। बालक विशेष के उच्चारण संबंधी दोष के परिष्कार के लिए वैयक्तिक विधि उपयोगी है। जब कक्षा के अधिक छात्र कठिन शब्दों का उच्चारण नहीं कर पाते हैं तो ऐसी स्थिति में सामूहिक विधि द्वारा निराकरण किया जाना चाहिए, जैसे स्कूल कहने की आदत का परिष्कार, स्त्री को इस्त्री कहने की आदत का परिष्कार।

16. **स्वराघात पर बलः** कब किस शब्द पर बल देना है, इसका उच्चारण में बड़ा महत्त्व है। यह भावभेद एवं अर्थभेद की जानकारी कराता है। इसलिए उच्चारण में स्वराघात पर विशेष ध्यान देना चहिए। स्वराघात का अभ्यास वाचन के समय, संवाद, नाटक, सस्वर वाचन व भावानुकूल वाचन के रूप में कराया जा सकता है। स्वर के उतार–चढ़ाव पर ध्यान देने से स्वराघात का अभ्यास हो जाता है।

### अपनी प्रगति जांचिए-3

1. कायमोग्राफ से आप क्या समझते हैं?
2. लिंग्वाफोन क्यों उपयोगी है?

## 1.10 सारांश

उच्चारण शिक्षण पढ़ने के पश्चात् आप यह जान चुके हैं कि हिन्दी भाषा की लिपि देवनागरी का ध्वनितत्त्व बड़ा ही वैज्ञानिक है। यहाँ जैसा बोला जाता है, वैसा ही लिखा जाता है। शुद्ध उच्चारण के अभाव में मौखिक भाषा प्रभावहीन व अस्वाभाकिव हो जाती है। बिना उच्चारण ज्ञान के भाषा का ज्ञान नहीं हो सकता। उच्चारण बाल्यावस्था से ही बनता–बिगड़ता है। अतः उच्चारण को सुधारने हेतु बाल्यावस्था में ध्यान देना चाहिए। अगर उच्चारण अंगों में दोष है तो यथाशीघ्र ही चिकित्सा करवानी चाहिए।

बारह–खड़ी का अभ्यास करवाया जाए। अतः अन्त में कहा जा सकता है मौखिक अभिव्यक्ति को प्रभावशाली बनाने के लिए शुद्ध उच्चारण का ज्ञान आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है।

### मॉडल उत्तर

1.1 दो रूप हैं–1. मौखिक

2. लिखित

2.1 1. मनोवैज्ञानिक कारण

2. स्थानीय प्रभाव

3. शारीरिक कारण

4. अक्षरों एवं मात्राओं का अस्पष्ट ज्ञान

3.1 अल्पप्राण–महाप्राण, घोष–अघोष, स्पर्श–संघर्षों की मात्रा आदि के शिक्षा के लिए यह उपकरण बड़ा ही उपयोगी है।

3.2 शुद्ध उच्चारण की शिक्षा के लिए

## 1.11 मुख्य शब्द

1. वैयक्तिक–एक व्यक्ति का
2. सामूहिक–सभी का
3. सहवास–साथ निवास करना
4. विकृत–बिगड़ा हुआ
5. सटीक–एकदम सही, सधा हुआ

## 1.12 सन्दर्भ ग्रन्थ


1. के०के० सुखिया — हिन्दी ध्वनियाँ और उसका शिक्षण
2. नरेश मिश्र — भाषा विज्ञान 1996
3. भोलानाथ तिवारी — भाषा–विज्ञान, किताब महल, इलाहाबाद
4. भगवती प्रसाद शुक्ल — हिन्दी उच्चारण और वर्तनी, आर्य बुक डिपो, करोल बाग, नई दिल्ली
5. हरदेव बाहरी — अच्छी हिन्दी कैसे सीखें, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद

# इकाई-1

# अध्याय-4: मौखिक अभिव्यक्ति कौशल शिक्षण

**उद्देश्यः**

प्रस्तुत पाठ के अध्ययन के पश्चात छात्रों में निम्नांकित परिवर्तन देखे जा सकते हैं।

- छात्र सुश्रव्य वाणी में बोलता है।
- वह शुद्ध उच्चारण व उचित स्वराघात, बलाघात व स्वर के उत्तर चढ़ाव के साथ बोल सकेगा।
- छात्र प्रसंगानुसार उचित गति के साथ बोलता है।
- वह प्रवाह व गति साथ बोल सकते हैं।
- वह मौखिक अभिव्यक्ति की विशेषताएँ बताने में समर्थ है।
- वह मौखिक अभिव्यक्ति की शिक्षण प्रविधियाँ का प्रत्याभिज्ञान करते है।

**संरचनाः**

1.1 मौखिक अभिव्यक्ति की भूमिका
1.2 मौखिक अभिव्यक्ति का अर्थ
1.3 मौखिक अभिव्यक्ति : महत्व
1.4 मौखिक भाषा शिक्षण के उद्देश्य
1.5 मौखिक भाषा शिक्षण के विशेषताएँ
1.6 मौखिक अभिव्यक्ति की शिक्षण विधियाँ
1.7 मौखिक भाव–प्रकाशन से सम्बन्धित शिक्षक की सावधानियाँ
1.8 सारांश
मॉडल उत्तर
1.9 मुख्य शब्द
1.10 संदर्भ ग्रन्थ

## 1.1 मौखिक अभिव्यक्ति की भूमिका

मानव प्रधानतः अपनी अनुभूतियों तथा मनोवेगों की अभिव्यक्ति उच्चरित अथवा मौखिक भाषा में ही करता है प्रिय छात्रो! लिखित भाषा तो गौण तथा उसकी प्रतिनिधि मात्र है, क्योंकि भावों की अभिव्यक्ति का साधन साधारणतः उच्चरित भाषा ही होती है। भावों के आदान–प्रदान का एक ही साधन है– भाव या वाणी।

आधुनिक जनतांत्रिक युग में जीवन की सफलता के लिए मौखिक भाव–प्रकाशन या वाणी उतना ही आवश्यक और अनिवार्य है जितना कि स्वयं हमारा जीवन। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में व्यक्ति को प्रतिपल मौखिक आत्माभिव्यक्ति की शरण लेनी पड़ती है।

## 1.2 मौखिक अभिव्यक्ति का अर्थ

मनुष्य सामाजिक प्राणी है, एकान्तवासी साधक नहीं। अतः उसे प्रति क्षण प्रत्येक पग पर समाज में अपनी स्थिति बनाये रखने के लिए सभी प्रकार के मनुष्यों से व्यवहार करना पड़ता है। अपनी जीविकापार्जन तथा उसके साधनों की उपलब्धि के लिए,

विभिन्न क्रिया–प्रतिक्रियाओं के लिए वाणी की सहायता लेनी पड़ती है। इसके साथ ही, प्राणीजगत की यह प्रवत्ति है, कि वह अपने भावों, अर्न्तद्वन्द्वों तथा उद्वेगों को दूसरों पर प्रकट करना चाहता है, तथा दूसरों की प्रकृति, आदतों, विचारों को जानने का इच्छुक रहता है। सम्प्रेषण के माध्यम के रूप में मौखिक ढंग से भाषा का व्यवहार मानव की अपनी विशेषता है।

अन्य जीवों में जटिल मानसिक क्रियाओं का अभाव है। अतः भाषा के प्रतीकात्मक व्यवहार में वे अक्षम हैं। विभिन्न प्रकार की जटिल मानसिक प्रक्रियाएं परोक्ष रूप से प्रत्येक भाषायी व्यवहार में अन्तर्निहित रहती है, जिसका केवल अनुमान लगाया जा सकता है।

## 1.3 मौखिक अभिव्यक्ति का महत्त्व

1.3.1. मौखिक भाषा ही अभिव्यक्ति का सहज व सरलतम माध्यम है।

1.3.2. भाषा की शिक्षा मौखिक भाषा से प्रारम्भ होती है।

1.3.3. मौखिक अभिव्यक्ति में अनुकरण और अभ्यास के अवसर बराबर मिलते रहते हैं।

1.3.4. मौखिक भाषा के प्रयोग में कुशल व्यक्ति, अपनी वाणी से जादु जगा सकता है, लोकप्रिय नेताओं के भाषण इसी बात का प्रमाण है।

1.3.5. मौखिक भाषा के द्वारा विचारों के आदान–प्रदान से नई–नई जानकारियाँ मिलती है।

1.3.6. अशिक्षित व्यक्ति बोलचाल के द्वारा ही ज्ञान–अर्जित करता है।

1.3.7. रोजमर्रा के कार्यकलापों में मौखिक भाषा प्रयुक्त होती है।

1.3.8. सामाजिक सम्बन्धों के सुदढ़ बनाने में एवं सामाजिक जीवन में सामजस्य स्थापित करने में मौखिक भाषा की प्रमुख भूमिका होती है।

**अपनी प्रगति जांचिए-1**

1. मौखिक अभिव्यक्ति से आप क्या समझते हैं?
2. मौखिक भाव–प्रकाशन की महत्ता बताईये?

## 1.4 मौखिक भाव-प्रकाशन शिक्षण के उद्देश्य

1. बालकों का उच्चारण शुद्ध एवं परिमार्जित हो।
2. छात्रों को शुद्ध उच्चारण, उचित स्वर, उचित गति के साथ बोलना सिखाना।
3. छात्रों को निस्संकोच होकर अपने विचार व्यक्त करने के योग्य बनाना।
4. छात्रों को व्याकरण सम्मत भाषा का प्रयोग करना सिखाना।
5. छात्र सरल एवं मुहावरेदार भाषा का प्रयोग करते हैं।
6. बोलने में विराम चिन्हों का ध्यान रखना सिखाना।
7. विषयानुकूल व प्रसंगानुकूल शैली का प्रयोग करना सिखाना।
8. छात्रों में स्वाभाविक ढंग से परस्पर वार्तालाप करने की आदत विकसित करना।
9. छात्रों को धाराप्रवाह, प्रभावोत्पादक वाणी में बोलना सिखाना।
10. छात्रा क्रमबद्धता बनाये रखेगा।
11. वह विषय की योग्यता को अक्षण्णु बनायेगा।

## 1.5 मौखिक अभिव्यक्ति की विशेषताएं

1. **स्वाभाविकताः** बोलने में स्वाभाविकता हो, बनावटी बोली का प्रयोग हास्यास्पद हो सकता है। अस्वाभाविक भाषा वक्ता को अविश्वसनीय बना देती है। स्वाभाविक भाषा विश्वसनीय होती है।
2. **स्पष्टताः** मौखिक अभिव्यक्ति का दूसरा गुण है– स्पष्टता। बोलने में स्पष्टता होना अति आवश्यक है। जो बात कही जाए वह स्पष्ट व साफ होनी चाहिए।
3. **शुद्धताः** बोलते समय शुद्ध उच्चारण होना चाहिए अशुद्ध उच्चारण से अर्थ का अनर्थ हो जाता है।
4. **बोधगम्यः** मौखिक अभिव्यक्ति में सरल व सुबोध भाषा का प्रयोग करना चाहिए।
5. **सर्वमान्य भाषाः** मौखिक भाव–प्रकाशन में सर्वमान्य भाषा का प्रयोग करना चाहिए। अप्रचलित शब्दों के प्रयोग से वार्तालाप नीरस हो जाता है।
6. **शिष्टताः** वार्तालाप करते समय शिष्टाचार का ध्यान रखना चाहिए। अशिष्टता सम्बन्धों को बिगाड़ देती है। शिष्टता मौखिक भाव–प्रकाशन का एक अन्य गुण है।
7. **मधुरताः** मौखिक भाव प्रकाशन का अन्य गुण है मधुरता। कहा भी गया है– 'कोयल काको देत है कागा काको लेत, वाणी के कारणेन मन सबको हर लेत।' मीठी वाणी का प्रयोग कर मनुष्य किसी (दुश्मन) को भी अपना बना सकता है।
8. **प्रवाहमयताः** विराम चिन्हों के उचित प्रयोग से अभिव्यक्ति में सम्यक् गति आ जाती है। अतः मौखिक भाव–प्रकाशन में उचित प्रवाहमयता होनी चाहिए।
9. **अवसरानुकूलः** मौखिक भाव–प्रकाशन की अन्य विशेषता है अवसरानुकूल भाषा का प्रयोग। हर्ष, उल्लास, सुख दुःख, दया, करूणा, सहानुभूति प्यार आदि भावों को अवसर के अनुकूल व्यक्त करते हैं।
10. **श्रोताओं के अनुकूल भाषाः** मौखिक अभिव्यक्ति की अन्य महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि सुनने वाले कौन है, किसस्तर के हैं, के अनुकूल ही भाषा का प्रयोग करना चाहिए।

**अपनी प्रगति जांचिए-2**

1. मौखिक अभिव्यक्ति के उद्देश्यों पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखों?
2. मौखिक अभिव्यक्ति के गुण या विशेषताओं पर प्रकाश डालिए?

## 1.6 मौखिक अभिव्यक्ति कौशल की शिक्षण विधियाँ

जैसाकि हम पहले बता चुके है कि मौखिक कार्य ही भाव शिक्षण का प्रमुख आधार है। मौखिक भाषा के बिना सीखना व सिखाना दोनों ही असम्भव कार्य है। इसके लिए शिक्षक निम्नांकित शिक्षण–विधियों का प्रयोग करता है–

1. **वार्तालापः** शिक्षण सामग्री या पाठ्य विषय पढ़ाते हुए या अन्य मौकों पर छात्रों के साथ अध्यापक वार्तालाप करते हैं। अतः शिक्षक को चाहिए कि वह प्रत्येक छात्र को वार्तालाप में भाग लेने के लिए प्रेरित करें। वार्तालाप का विषय छात्रों के मानसिक, बौद्धिक स्तर के भीतर ही होनी चाहिए।
2. **सस्वर वाचनः** पाठ पढ़ाते समय पहले शिक्षक को स्वयं आदर्श वाचन करना चाहिए, बाद में कक्षा के छात्रों से अनुकरण वाचन या सस्वर वाचन कराना चाहिए। सस्वर वाचन करने से छात्रों की झिझक, व संकोच खत्म होता है।
3. **प्रश्नोत्तरः** सामान्य विषयों पर या पाठ्य–पुस्तकों से सम्बन्धित पाठों पर प्रश्न पूछने चाहिए। अगर छात्रों का उत्तर अपूर्ण या अशुद्ध है तो सहानुभूति पूर्ण ढंग से उत्तर को पूर्ण व शुद्ध कराया जाये।
4. **कहानी सुनानाः** मौखिक भाव–प्रकाशन विकसित करने की एक विधि कहानी सुनाना भी है। छोटे बच्चे कहानियां सुनना पसन्द करते हैं। अतः अध्यापक को पहले स्वयं कहानी सुनानी चाहिए। बाद में छात्रों से कहानी सुननी चाहिए।

5. **चित्र-वर्णनः** प्रायः छोटी कक्षाओं के बच्चे चित्र देखने में रूचि लेते हैं। उदाहरणार्थ 'गाय' का चित्र दिखा कर गायों के बारे में छात्रों से पूछा जा सकता है व छात्रों को बताया जाता है। इसी प्रकार चित्र की सहायता से कहानी भी सुनायी जा सकती है।

6. **कविता सुनना व सुनानाः** छोटे बच्चे कविता या बालोचित गीत सुनाने व सुनने में काफी रूचि लेते हैं अतः कविताएं कंठस्थ कराके उन्हें कविता पाठ के लिए प्रेरित करना चाहिए। अतः कविता पाठ मौखिक भाव–प्रकाशन की शिक्षा देने का अन्य उपयोगी साधन है।

7. **वाद-विवादः** बालकों के मानसिक स्तर व बौद्धिक स्तर को ध्यान में रखकर वाद–विवाद करवाया जा सकता है। अपने विचारों का तर्कपूर्ण प्रतिपादन करने का प्रशिक्षण देने के लिए वाद–विवाद एक उत्तम साधन है।

8. **सत्संगः** सत्संग का हमारे मौखिक भाव–प्रकाशन पर बहुत प्रभाव पड़ता है। साधारणतः बालक जैसे वातावरण में रहेगा। उसका इसी प्रकार का भाव प्रकाशन होगा।

9. **पाठ का सारः** पाठ्य–पुस्तक के किसी पाठ या रचना को पढ़ कर छात्र से उस पाठ का सार सुनना मौखिक अभिव्यक्ति का अन्य उपयोगी साधन है।

10. **भाषणः** 'भाषण' भाव–प्रकाशन का एक सशक्त साधन है परन्तु **'भाषण'** छात्रों के मानसिक एवं बौद्धिक स्तर के अनुकूल होना चाहिए।

11. **नाटक-प्रयोगः** नाटक द्वारा भावभिव्यक्ति का अच्छा अभ्यास हो जाता है। रंगशाला में बालक को आंगिक वाचिक एवं भावों के अभिनय की दीक्षा सफलतापूर्वक मिल सकती है।

12. **स्वतंत्र आत्मप्रकशनः** बालकों को विभिन्न घटनाओं दश्यों या व्यक्तिगत जीवन से जुड़े अनुभव सुनाने का अवसर देकर अध्यापक मौखिक भाषा का अभ्यास करा सकता है।

## 1.7 मौखिक भाव-प्रकाशन से सम्बन्धित शिक्षक की सावधानियाँ

1. बच्चों की त्रुटियों को ठीक कराने के लिए स्वर यन्त्रों को साधा जाए।
2. यदि प्राकृतिक कारणों से बालक शुद्ध उच्चारण नहीं कर पाता है, तो उसके माता–पिता को सूचित करना चाहिए एवं डॉक्टरों से उचित चिकित्सा करवानी चाहिए।
3. शिक्षक स्वयं बोलने का दष्टान्त पेश करें, जिसमें तेजी, शीघ्रता व क्रोध न हो।
4. बालकों में किसी प्रकार का संकोच न आने पाये।
5. बोलने में कठिनाई अनुभव करने वाले छात्रों को अधिक से अधिक बोलने व पढ़ने का अवसर मिलना चाहिए। जिससे उनमें धीरे–धीरे साहस व स्वावलम्बन का विकास हो। कई बार बच्चा मनोवैज्ञानिक कारणों से भी हकलाने लगता है और अशुद्ध उच्चारण की आदत पड़ जाती है।

   अतः बच्चे के मन से भय, झिझक की भावना निकाल कर अभ्यास द्वारा यह कठिनाई दूर की जा सकती है।
6. भाषा क्षेत्रीयता प्रान्तीयता व व्याकरण दोषों से रहित हो।
7. बोलते समय सस्वरता व भावानुसार वाणी के उतार चढ़ाव पर भी ध्यान देना चाहिए।

## 1.8 सारांश

उपर्युक्त विवेचन के आलोक में कहा जा सकता है कि जीवन के क्षेत्र में सफलता अर्जित करने हेतु मौखिक अभिव्यक्ति का महत्त्व असंदिग्ध है। क्योंकि हम प्रतयेक कार्य को लिखकर नहीं करते, अनेकों कार्य हम मौखिक अभिव्यक्ति द्वारा ही सम्पन्न करते हैं। उदाहरणार्थ बड़े नेता अपने लच्छेदार भाषणों से ही जनता को गुमराह या बेवकूफ बना कर वोट हासिल करते हैं। मौखिक अभिव्यक्ति में पारंगत व्यक्ति हर स्थान व प्रत्येक समय पर अपनी बात को बच्चों के साथ प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करके मनवा लेता है।

**मौखिक अभिव्यक्ति**

अर्वाचीन समय में हम अधिकतर कार्य मौखिक रूप से ही सम्पन्न करते हैं। टेलिफोन सेदूर–दराज क्षेत्रों में बैठे अपने प्रियजनों की कुशल क्षेम जान लेते हैं, कम्प्यूटर के द्वारा हम ने केवल बातचीत ही नहीं करते अपतु सामने स्क्रीन पर उसकी तस्वीर भी देखते हैं। अतः मौखिक अभिव्यक्ति की महत्ता निश्चित रूप में असंदिग्ध है।

**मॉडल उत्तर**

1.1 मनुष्य की प्रायः अपने मनोवेगों एवं अनुभूतियों की अभिव्यक्ति करना ही मौखिक अभिव्यक्ति है।

1.2 भाषा की शिक्षा मौखिक भाषा के द्वारा ही प्रारम्भ होती है मौखिक अभिव्यक्ति में अनुकरण और अभ्यास के बराबर अवसर मिलते हैं। सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि अशिक्षित व्यक्ति बोलचाल के आध्यम से ही ज्ञान अर्जित कर लेता है।

2.1 बालकों का उच्चारण शुद्ध एवं स्पष्ट हो, बोलते वक्त व्याकरण सम्मत भाषा का प्रयोग करें। धारा प्रवाह व गतिमय में बोलते वक्त विराम चिन्हों का ध्यान रखें। अर्थ का अनर्थ ना बनाये।

2.2 मौखिक अभिव्यक्ति में शुद्धता, स्पष्टता व स्वाभाविकता का गुण होना अनिवार्य है। अवसरों के अनुकूल बोलना चाहिए, श्रोताओं या सुनने वालों के अनुरूप भाषा का प्रयोग करें। मधुरता मौखिक अभिव्यक्ति में चार चाँद लगा देती है।

## 1.9 मुख्य शब्द

**मौखिक अभिव्यक्ति**–वह माध्यम जिसके द्वारा हम अपने भावों विचारों को दूसरे के सामने प्रकट करें व दूसरे के मनोवेगों व अनुभूतियों को सुने, वही मौखिक अभिव्यक्ति है।

**अग्रांकित**–जो आगे अंकित किया जाए, वही अग्रांकित है।

**बोधगम्य**–जिसको साधारण जन भी समझ सके, बोधगम्य है।

## 1.10 सन्दर्भ ग्रन्थ


1. उमा मंगल (डॉ०) हिन्दी शिक्षण, आर्य बुक डिपो, करोल बाग, नई दिल्ली, 2000-20003
2. सावित्री सिंह हिन्दी शिक्षण, लायल बुक डिपो, मेरठ
3. Lado, Robert Language Teaching-A Scientific
4. विजय सूद हिन्दी शिक्षण विधियाँ, टण्डन पब्लिकेशन, लुधियाना 1995
5. सीताराम चतुर्वेदी भाषा की शिक्षा, हिन्दी साहित्य कुटीर, वाराणसी

# इकाई-1

# अध्याय-5 : वाचन – कौशल शिक्षण

**उद्देश्यः**

उपर्युक्त अध्याय के अध्ययन के उपरान्त छात्रों से अपेक्षा की जाती है कि वे (वाचन पठन) कौशल शिक्षण के उपरान्त वे–

- पठन कौशल शिक्षण के अर्थ को भली प्रकार समझते हैं।
- पठन कौशल शिक्षण के महत्त्व से भली प्रकार परिचित होंगें।
- पठन कौशल शिक्षण के उद्देश्यों को प्रत्यास्मरण करते हैं।
- पठन कौशल की विशेषताएं समझते हुए उसके आधार पर चर्चा करते हैं।
- पठन–कौशल की प्रणालियां को समझते हुए इनका प्रत्याभिज्ञान करते हैं।
- पठन कौशल की त्रुटियों को समझते हुए उनका निवारण करने का प्रयत्न करते हैं।
- वाचन–कौशल के प्रकार पर प्रकाश डालते हैं।

**संरचनाः**

1.1 पठन/वाचन कौशल शिक्षण की भूमिका
1.2 पठन/वाचन कौशल शिक्षण का अर्थ
1.3 पठन/वाचन कौशल शिक्षण का महत्त्व
1.4 पठन/वाचन कौशल शिक्षण के उद्देश्य
1.5 पठन/वाचन कौशल शिक्षण के आधार
1.6 पठन/वाचन कौशल शिक्षण के गुण या विशेषताएँ
1.7 पठन/वाचन कौशल शिक्षण की प्रणाली
1.8 पठन/वाचन कौशल शिक्षण की त्रुटियाँ
1.9 पठन/वाचन कौशल शिक्षण : शिक्षण दोषः निवारण
1.10 वाचन के प्रकार
1.11 सारांश
मॉडल उत्तर
1.12 मुख्य शब्द
1.12 सन्दर्भ ग्रन्थ

## 1.1 पठन/वाचन कौशल की भूमिका

भाषा शब्द से ही ज्ञात होता है कि भाषा का मूल रूप उच्चरित रूप है। इसका दष्टिकोण प्रतीक लिपिबद्ध होता है। मुद्रित रूप लिपिबद्ध रूप का प्रतिनिधि है। जब हम बच्चे को पढ़ाना आरम्भ करते हैं तो अक्षरों के प्रत्यय हमारे मस्तिष्क के कक्ष भाग में क्रमबद्ध होकर एक तस्वीर बनाते हैं, और हम उसे उच्चरित करते हैं। यह क्रिया जिसमें शब्दों के साथ अर्थ ध्वनि भी निहित है। वाचन कहलाती है।

## 1.2 पठन कौशल का अर्थ

**कैथरीन ओकानर के मतानुसार**– "वाचन/पठन वह जटिल अधिगम प्रक्रिया है, जिसमें दश्य, श्रव्यों सर्किटों का मस्तिष्क के अधिगम केन्द्र से सम्बन्ध निहित है।"

लिखित भाषा के ध्वन्यात्मक पाठ को मौखिक पठन कहते हैं। पर बिना अर्थ ग्रहण किए गए पढ़ने को पठन नहीं कहा जा सकता। पठन की क्रिया में अर्थ ग्रहण करना आवश्यक होता है। अर्थ ग्रहण किस सीमा तक होता है, यह तो पठनकर्त्ता के ज्ञान एवं कौशल पर निर्भर है।

## 1.3 वाचन/पठन का महत्त्व

वाचन की जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आवश्यकता होती है। वाचन की योग्यता न रखने से व्यक्ति संसार की सांस्कृतिक महानता में अपने अस्तित्व का आनन्द नहीं ले पाता। वाचन–योग्यता के बिना मनुष्य के जीवन में कई प्रकार की बाधाएं खड़ी हो जाती है। निम्नांकित तथ्यों से वाचन के महत्त्व को आंका जा सकता है–

1. वाचन शिक्षा प्राप्ति में सहायक है।
2. वाचन कौशल ज्ञानोपार्जन का साधन है, क्योंकि पाठ्य–पुस्तक पढ़ने से तो केवल ज्ञान के दर्शन होते हैं। संदर्भ ग्रंथ पढ़ने से ज्ञान की पिपासा कुछ हद तक शान्त होती है।
3. आधुनिक युग 'विशिष्टताओं' का युग है, व्यक्ति जिस भी व्यवसाय में है वह विशिष्टता प्राप्त करना चाहता है, नवीनतम जानकारी प्राप्त करना चाहता है, यह जानकारी उसे पुस्तकों से मिलती है।
4. सामाजिक दष्टिकोण से भी वाचन बहुत महत्वपूर्ण है। सामाजिक कार्यों तथा दैनिक कार्यों में मनुष्य को कहीं कुछ पढ़कर सुनाना पड़ता है। कहीं अभिनन्दन पत्र पढ़ना होता है, कहीं किसी महापुरुष या नेता का संदेश पढ़ कर सुनाना होता है। कहीं पत्र–लिखने पढ़ने होते हैं अतः इस प्रकार के अनेकों सामाजिक कार्यों में वाचन की आवश्यकता से उसकी सामाजिक उपयोगिता बढ़ जाती है।
5. लोकतन्त्रात्मक युग में वाचन का महत्त्व और भी बढ़ गया है। चुनावों के दौरान राजनीतिक दलों के घोषणा प्रकाशित होते रहते हैं, उन्हें अच्छी प्रकार से समझने के लिए वाचन की योग्यता का होना आवश्यक है। अतः लोकतन्त्रात्मक प्रवत्ति के विकास में वाचन महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।
6. 'वाचन' मनोरंजन का महत्वपूर्ण साधन है। घर में, उपवन में, यात्रा में व्यक्ति कहीं भी अपनी बोरियत को दूर करने के लिए, कहानी, पत्रिका इत्यादि पढ़कर समय का सदुपयोग कर सकता है।
7. सामाजिक, राजनैतिक, साहित्यिक तथा सांस्कृतिक विकास के लिए आलोचनात्मक दष्टिकोण का विकसित होना आवश्यक है। आलोचनात्मक दष्टिकोण के विकास के लिए अध्ययन अति आवश्यक है। और 'अध्ययन' वाचन का ही एक रूप है।

**अपनी प्रगति जांचिए-1**

1. पठन कौशल का अर्थ बताईये?
2. पठन कौशल के महत्त्व पर प्रकाश डालिए?

## 1.4 वाचन/पाठन कौशल के उद्देश्य

1. बालकों के स्वर में आरोह–अवरोह का ऐसा अभ्यास करा दिया जाए कि वे यथावसर भावों के अनुकूल स्वर में लोच देकर पढ़े।
2. बालकों को वाचन के माध्यम से शब्द–ध्वनियों का पूर्ण ज्ञान कराया जाता है वाचन की इस कला से छात्र मुँह व जिह्वा के उचित स्थान से ध्वनि उच्चरित करते रहेंगें।
3. वाचन के माध्यम से शब्दों पर उचित बल दिया जाता है।

4. छात्र पढ़कर उसका भाव समझें तथा दूसरों को भी समझाएं वाचन का यह एक उद्देश्य है।
5. वाचन से अक्षर, उच्चारण, ध्वनि, बल, निर्गम, सस्वरता आदि को सम्यक् संस्कार प्राप्त होता है।
6. वाचन के द्वारा छात्र विराम, अर्द्धविराम आदि चिन्हों का प्रयोग समझ जाता है
7. वाचन का उद्देश्य पठित अंश का भाव ग्रहण करना है।
8. वाचन का अन्य उद्देश्य त्रुटियों का निवारण भी है।
9. वाचन शब्द भण्डार में वद्धि करता है।
10. वाचन से स्वाध्याय की प्रवत्ति जागत होती है।

## 1.5 वाचन/पाठन के आधार

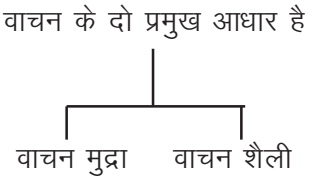


1. वाचन मुद्रा का अर्थ है बैठने, खड़े होने का ढंग, वाचन सामग्री, हाथ में ग्रहण करने की रीति तथा भावानुसार हाथ, पैर, नेत्र आदि अन्य अंगों का संचालन।
2. भावानुसार स्वर के उचित आरोह–अवरोह के साथ पढ़ना वाचन शैली है। प्रत्येक वाचक को वाचन करते समय बाएं हाथ में पुस्तक को इस प्रकार बीच में पकड़ना चाहिए कि ऊपर उसके बीच में मोड़ पर बाएँ हाथ का अँगुठा आ जाए और दूसरा हाथ भावाभिव्यक्ति के लिए खुला छुटा रहे। बड़ी पुस्तक को दोनों हाथों से पकड़ा जा सकता है। पढ़ते समय दष्टि पुस्तक पर ही ना रहे, वरन् छात्रों की ओर भी देख लेना चाहिए।

## 1.6 पाठन/वाचन के गुण या विशेषताएं

सुन्दर वाचन में निम्न गुणों का होना जरूरी है–

1. प्रत्येक अक्षर को शुद्ध तथा स्पष्ट उच्चरित करना
2. वाचन में सुन्दरता के साथ प्रवाह बनाये रखना
3. मधुरता, प्रभावोत्पादकता तथा चमत्कारपूर्ण ढंग से आरोह–अवरोह के साथ वाचन होना चाहिए।
4. प्रत्येक शब्द को अन्य शब्दों से अलग करके उचित बल तथा विराम के साथ पढ़ना।

**अपनी प्रगति जांचिए-2**

1. वाचन में कौन–कौन से गुण अपेक्षित है, बताईये?
2. वाचन के प्रमुख आधार क्या हैं?

## 1.7 वाचन/पठन कौशल की शिक्षण विधियाँ

**(क) शब्द तत्व पर आधारित विधियाँ**

(i) ***वर्णबोध विधिः*** इस विधि में पहले छात्रों को वर्णों का ज्ञान कराया जाता है। वर्णों में भी स्वर पहले और व्यंजन बाद में सिखाए जाये। फिर मात्राओं का ज्ञान कराया जाए। मात्राओं के उपरान्त संयुक्ताक्षरों की जानकारी दी जाए।

यह विधि मनोवैज्ञानिक नहीं है। इस का आधार यह है कि जब तक बालक को अक्षर का ज्ञान नहीं होगा, तब तक वह उच्चारण या वाचन नहीं सीख सकता है।

(ii) ***ध्वनि साम्य विधिः*** यह विधि वर्णबोध विधि का संशोधित रूप है। इसमें समान उच्चारण वाले शब्दों को साथ–साथ सिखाए जाएं यथा।

राम, नाम, काम, शाम

गर्म, धर्म, कर्म, चर्म

केला, ठेला, मेला, रेला

उपर्युक्त विधि में ध्वनियों पर विशेष ध्यान दिया जाता है। इसी कारण वाक्यांश, वाक्य की अर्थ व शब्द गौण हो जाते हैं।

**(ख) स्वरोच्चारण विधिः** इस विधि में अक्षरों एवं शब्दों को उनकी स्वर ध्वनि के अनुसार पढ़ाया जाता है। इसमें बारहखड़ी को आधार माना जाता है, जैसे– क, का, कि, की, कु, कू, के, कै, को, कौ, कं कः। इसमें स्वर के बिना व्यंजन नहीं सिखा सकते। यह विधि प्रगतिशील एवं मनोवैज्ञानिक नहीं है।

**अर्थ ग्रहण पर आधारित विधियां**

(i) ***देखो और कहो विधिः*** इस विधि में शब्द से सम्बन्धित वस्तु या चित्र दिखाकर पहले शब्द का ज्ञान कराया जाता है। चित्र के नीचे वस्तु का नाम लिखा होता है। चित्र परिचित होने के कारण बच्चे आसानी से शब्द से साहचर्य स्थापित कर लेते हैं अध्यापक का अनुकरण करते हुए बच्चे शब्द का उच्चारण करते हैं। कई बार देखने–सुनने और बोलने से वर्णों के चित्र मस्तिष्क पर अंकित हो जाते हैं।

***गुणः*** यह विधि मनोवैज्ञानिक है। इसमें पूर्ण से अंश की ओर ज्ञात से अज्ञात की ओर सरल से जटिल की ओर आदि शिक्षण सूत्रों का पालन होता है।

***दोषः*** इस विधि में सभी शब्दों के चित्र उपस्थित करना असम्भव है। बच्चे चित्र से साहचर्य स्थापित कर लेते हैं। चित्र के अभाव में शब्द पढ़ना कठिन हो जाता है।

(ii) ***वाक्य विधिः*** इस मत के प्रतिपादकों का मत है कि बालक वाक्य या वाक्यांशों में बोलता है। इसकी इकाई वाक्य है शब्द नहीं। इसलिए प्रारम्भ से ही बालकों को वाक्यों से ही वाचन शुरू कराना चाहिए।

यह विधि मनोवैज्ञानिक है। पहले वाक्य फिर शब्द, फिर वर्ण – इस क्रम से बच्चों को वाचन का अभ्यास कराया जाता है।

(iii) ***कहानी विधिः*** इस विधि में छोटे–छोटे वाक्यों से निर्मित कहानी चार्ट व चित्रों के माध्यम से बच्चों के समक्ष प्रस्तुत की जाती है। शिक्षक इस कहानी को कक्षा में कहता है। इसके बाद शिक्षक कहानी को श्यामपट्ट पर लिखता है व वाचन कराता है। विद्यार्थी शिक्षक का अनुकरण करते हैं। वाक्य के विश्लेषण के माध्यम से छात्र शब्द एवं वर्णों का ज्ञान प्राप्त करते हैं।

***गुणः*** यह वाक्य विधि का परिष्कृत रूप है।

(iv) ***अनुकरण विधिः*** यह विधि **'देखो और कहो'** विधि का दूसरा स्वरूप है। इसमें अध्यापक एक–एक शब्द बालकों के समक्ष कहता है और छात्र उसे दुहराते हुए अनुकरण करते हैं। इस प्रकार छात्र शब्द–ध्वनि का उच्चारण एवं वाचन सीखते हैं।

(v) ***सम्पर्क विधिः*** इस विधि का प्रचार माण्टेसरी ने किया था। इसमें पहले बालकों को चित्र, खिलौने, वस्तुएं आदि से परिचित कराते हैं। उनके आगे उन वस्तुओं के कार्ड रखते हैं। फिर कार्डों को आपस में मिला देते हैं और बच्चों को कहा जाता है, जो कार्ड जिस वस्तु से सम्पर्क रखते हैं, उसके आगे पुनः रख दें। इस सम्पर्क प्रणाली के अभ्यास से धीरे–धीरे छात्र शब्द व वर्ण से परिचित हो जाते हैं।

हिन्दी वाचन में ये विधि विशेष सहायक नहीं है।

**ग. उपयुक्त विधिः** वाचन के लिए उपयुक्त विधि में निम्न तथ्यों पर ध्यान दिया जाये–

(i) बालकों के समक्ष उपयुक्त वातावरण प्रस्तुत किया जाए उपयुक्त वातावरण में तीन बातें रहें–

(i.i) बालकों को प्रवाहपूर्ण ढंग से बोलना सिखाना।

(i.ii) स्वरों का अन्तर समझावें।

(i.iii) कहानी आदि सुनाकर वाचन के प्रति उत्सुकता पैदा करें।

(ii) वर्णों की समानता के चित्र दिखायें, किसी असमान चित्र को पहचानने का अभ्यास करावें।

(iii) दष्टि का अभ्यास आवश्यक है।

(iv) मौखिक कार्य पर अधिक बल दें।

(v) बालकों से आकृतियां बनवाकर उनमें रंग भरवाए, गिनना सिखाए आदि।

(vi) जहां जो विधि उपयुक्त हो, उसका आश्रय लेकर छात्रों को वाचन का अभ्यास कराना चाहिए।

## 1.8 पाठन/वाचन सम्बन्धी त्रुटियां

1. अटक–अटक कर पढ़ना।
2. वाचन के समय अनुचित मुद्रा, पुस्तक को आँखों के सन्निकट या दूर रखना।
3. अशुद्ध उच्चारण।
4. वाचन में गति का न होना।
5. दष्टि दोष से अक्षरों का ठीक दिखाई न देना।
6. पाठ्य सामग्री का कठिन होना।
7. अक्षर या संयुक्ताक्षरों सम्बन्धी त्रुटियाँ।
8. भावानुकूल आरोह–अवरोह का अभाव।
9. वाचन सम्बन्धी मार्ग–दर्शन का अभाव
10. अध्यापक का व्यवहार।

## 1.9 पाठन/वाचन सम्बन्धी दोषों का निवारण

1. **आवत्ति-पुनरावत्तिः** इसका अभिप्राय यह है कि बार–बार आवत्ति या पुनरावत्ति के माध्यम से अभ्यास कराकर उच्चारण सम्बन्धी दोषों का निवारण किया जा सकता है।
2. स्थान–परिवर्तन
3. अस्पष्टता निवारण
4. चिकित्सा विधि
5. वाचन सम्बन्धी उचित मार्गदर्शन
6. कक्षा का आकर्षक वातावरण
7. छात्रों के मानसिक स्तर के अनुकूल पाठ्य–सामग्री का चुनाव।

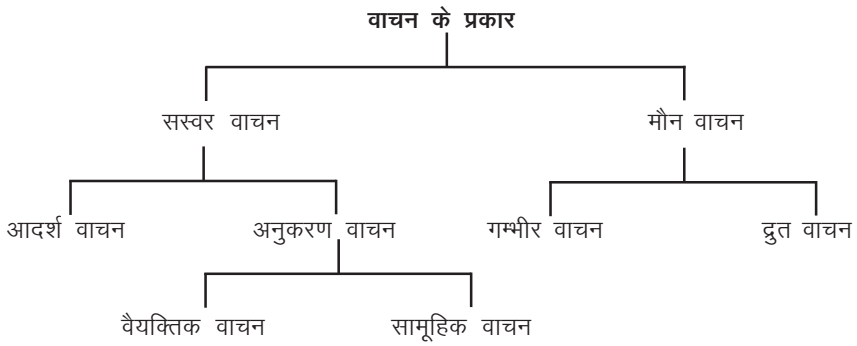

**अपनी प्रगति जांचिए**

1. पठन कौशल शिक्षण की प्रणालियों का वर्णन करो?
2. वाचन सम्बन्धी त्रुटियों पर संक्षिप्त नोट लिखों?
3. वाचन सम्बन्धी त्रुटियों का निराकरण आप कैसे करेंगे। बताईये?

## 1.10 वाचन के प्रकार

वाचन को मूलतः दो भागों में विभक्त कर सकते हैं।

1. **सस्वर वाचनः** स्वर सहित पढ़ते हुए अर्थ ग्रहण करने को सस्वर वाचन कहा जाता है। यह वाचन की प्रारम्भिक अवस्था होती है। वर्णमाला के लिपिबद्ध वर्णों की पहचान सस्वर वाचन के द्वारा ही करायी जाती है।

**सस्वर वाचन में ध्यान रखने योग्य बातें**

(i) सस्वर वाचन भावानुकूल करना चाहिए।

(ii) सस्वर वाचन आदि करते समय विराम चिन्हों का ध्यान रखना चाहिए।

(iii) सस्वर वाचन करते शुद्धता एवं स्पष्टता का ध्यान रखना चाहिए।

(iv) स्वर में यथा सम्भव स्थानीय बोलियों का पुट नहीं होना चाहिए।

(v) सस्वर वाचन में आत्मविश्वास का होना आवश्यक है।

**सस्वर वाचन में गुण**

(i) शुद्ध उच्चारण

(ii) उचित ध्वनि निर्गम

(iii) उचित लय एवं गति

(iv) उचित बल–विराम

(v) उचित हाव–भाव

(vi) उचित वाचन मुद्रा

(vii) स्वर माधुर्य

(viii) प्रभावोत्पादकता

(ix) अंग संचालन

(x) स्वाभाविकता

(xi) अर्थ–प्रतीति

(xii) स्वर में रसात्मकता, वाचन की मुद्रा

(i) ***आदर्श वाचनः*** जब अध्यापक कक्षा में छात्रों के समक्ष स्वयं वाचन प्रस्तुत करता है, उसे आदर्श वाचन कहते हैं। अध्यापक अपने वाचन को गति, यति, आरोह–अवरोह, स्वराघात व बलाघात को ध्यान में रखकर कक्षा में प्रस्तुत करता है।

(ii) ***अनुकरण वाचनः*** आदर्श वाचन के पश्चात् छात्रों द्वारा कक्षा में अनुकरण वाचन किया जाता है। अनुकरण वाचन के निम्न उद्देश्य है–

(a) शिक्षक द्वारा किए गए आदर्श वाचन का अनुकरण करना

(b) उच्चारण को शुद्ध बनाना

(c) वाचन में गति एवं प्रवाह का ध्यान रखना

(d) वाचन करते समय अर्थ–ग्रहण की योग्यता का विकास करना।

(e) पाठ के भावानुसार वाचन पैदा करने की क्षमता विकसित करना तथा वीर–रस की शिक्षण सामग्री का वाचन, ओजपूर्ण एवं उच्च स्वर से, श्रंगार रस की शिक्षण का वाचन, स्नेहयुक्त एवं मधुर स्वर से, करूण रस में द्रयार्द्र स्वर से, भक्ति रस की शान्त एवं गंभीर स्वर से वाचन करना।

**वाचनकर्त्ता के अनुसार पुनः सस्वर वाचन का विभाजनः** जैसा कि प्यारे बच्चों पीछे चित्र के माध्यम से दर्शाया गया है–

(a) *वैयक्तिक वाचनः* एक व्यक्ति द्वारा आवाज किए जाने सस्वर वाचन को व्यक्तिगत वाचन कहते हैं। माध यमिक कक्षाओं में वाचन प्रायः वैयक्तिक ढंग से होता है, शिक्षक सुनकर छात्रों की उच्चारण सम्बन्धी त्रुटियों का निवारण करता है। इस विधि में वाचन दोषों का निदान सरलता से हो जाता है और उपचारात्मक शिक्षण के लिए व्यक्तिगत ध्यान देने में शिक्षक को सरलता होती है।

(b) *सामूहिक वाचनः* दो या दो से अधिक छात्रों द्वारा आवाज सहित किए जाने वाले वाचन को सामूहिक वाचन कहते हैं। इस वाचन से बच्चों (छात्रों) की झिझक दूर होती है। उनमें मौखिक अभिव्यक्ति के लिए आत्मविश्वास का संचार पैदा होता है। सामूहिक वाचन 13–14 वर्ष की आयु तक के बालकों के लिए ही किया जाए। छात्रों की संख्या बहुत अधिक ना हो, ताकि पड़ोसी कक्षा की शान्ति भंग न हो।

2. **मौन वाचनः** लिखित सामग्री को चुपचाप बिना आवाज निकाले पढ़ना मौन वाचन कहलाता है।

**मौन वाचन का महत्त्व**

(i) मौन वाचन में थकान कम होती है, क्योंकि इस में वाग्यन्त्रों पर जोर नहीं पड़ता।

(ii) मौन वाचन में नेत्र तथा मस्तिष्क सक्रिय रहते हें।

(iii) मौन वाचन के समय पाठक एकाग्रचित्त, होकर, ध्यान केन्द्रित कर पढ़ता है।

(iv) मौन वाचन अवकाश का सदुपयोग करता है।

(v) मौन वाचन में समय की बचत होती है। श्रीमती ग्रे एवं रीस के एक परीक्षण द्वारा यह पता चलता है कि कक्ष छह के बालक एक मिनट में सस्वर वाचन मे 17० शब्द बोलते हैं और मौन वाचन में इतने समय में 21० शब्द बोलते हैं।

(vi) मौन वाचन कक्षा में अनुशासन बनाये रखने में सहायक है।

(vii) चिन्तन करने में मौन वाचन सहायक है।

(viii) स्वाध्याय की रूचि जागत करने में मौन वाचन सहायक है। गहन अध्ययन वही व्यक्ति कर सकता है, जिसे मौन वाचन का अभ्यास हो।

**मौन वाचन के उद्देश्य**

मौन वाचन शिक्षार्थियों के वाचन की गति के विकास के लिए है। मौन वाचन के मूल उद्देश्य अग्रांकित है।

(i) पठित सामग्री के केन्द्रीय भाव को समझना

(ii) अनावश्यक स्थलों को छोड़ते हुए, मूल तथ्यों का चयन करना।

(iii) पठित सामग्री का निष्कर्ष निकालना।

(iv) पठित सामग्री पर पूछे गए प्रश्नों का उत्तर दे सकना।

(v) भाषा एवं भाव सम्बन्धी कठिनाईयाँ सामने रख सकना।

(vi) शब्दों का लक्ष्यार्थ और व्यंग्यार्थ जान लेना।

(vii) अनुक्रमणिका, परिशिष्ट, पुस्तक–सूची आदि के प्रयोग की योग्यता प्राप्त कर लेना।

(viii) उपसर्ग, प्रत्यय, सन्धि–विच्छेद द्वारा शब्द का अर्थ जान लेना।

**मौन वाचन के भेद**

(i) गम्भीर वाचन (ii) द्रूत वाचन

जैसा कि पिछले चित्र में बताया जा चुका है।

**(i) गम्भीर वाचन**

(i.i) भाषा पर आधिकार करना

(i.ii) विषय–वस्तु पर अधिकार करना

(i.iii) नवीन सूचना एकत्र करना

(i.iv) केन्द्रीय भाव की खोज करना

**(i) द्रुत वाचन**

(ii.i) सीखी हुई भाषा का अभ्यास करना

(ii.ii) साहित्य से परिचय प्राप्त करना

(ii.iii) आनन्द प्राप्त करना

(ii.iv) खाली समय का सदुपयोग

(ii.v) द्रुत वाचन के माध्यम से सूचनाएं एकत्रित करना।

## 1.11 सारांश

अब तक आप समझ चुके हैं कि पठन कौशल से महता को नकारना असम्भव ही नहीं दुष्कर कार्य है। आज जहाँ प्रत्येक क्षेत्र में ज्ञान का विस्फोट हो रहा है वहाँ पठन कौशल में पारंगत होना अनिवार्य है। लिखित भाषा के धवन्यात्मक पाठ को पठन कहते हैं। लेकिन बिना अर्थ ग्रहण किए पढ़ने का पठन नहीं कहा जा सकता पढ़ने की क्रिया में अर्थ ग्रहण करना आवश्यक है। पढ़ कर किसी भी प्रकार का ज्ञानार्जन किया जा सकता है, पढ़ने के लिए सब प्रकार के समचारों से युक्त अखबार सबसे सस्ता व सुलभ साधन है, जहां से हम देश–विदेश की, आस–पास की, खेल–जगत की, आध्यात्मिक जगत की, रहस्य–रोमांच की जितनी चकाचौंध की विज्ञापन जगत की, उद्योग बाजार से यानि सभी प्रकार की अनौपचारिक जानकारियां हमें मिलती है। औपचारिक शिक्षा हेतु भी पठन–कौशल अनिवार्य है, उद्देश्य गुण या विशेषताएं प्रणाली वाचन कौशल में दक्ष बनाती है।

## वाचन कौशल

### मॉडल उत्तर

1.1 पठन कौशल के अर्थ को हम कैथरीन ओकानर के शब्दों में जान सकते हैं–''वाचन/पठन वह जटिल अधिगम प्रक्रिया है, जिसमें दश्यों, श्रवयों, सर्किटों का मस्तिष्क के अधिगम केन्द्र से सम्बन्ध निहित है।

1.2 पठन कौशल एक प्रकार से तो ज्ञानार्जन का साधन है, लेकिन जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में इसकी (पठन–कौशल) की महत्ता असंदिग्ध है। आज के विशिष्टताओं के युग में व्यक्ति जिस की व्यवसाय में विशिष्टतया प्राप्त करना चाहता है। तो वह जानकारी उसे पुस्तकों से मिलती है।

2.1 वाचन करते समय आरोह–अवरोह, स्वराघात व बलाघात का ध्यान रखना चाहिए व विराम चिन्हों को भी ध्यान में रखें।

2.2 वाचन के दो आधार है वाचन मुद्रा व वाचन शैली। वाचन मुद्रा का अर्थ है, बैठना, खड़े होने का ढंग, हाथ में शिक्षण सामग्री को पकड़ना, भावानुसार अंग संचालन आदि।

2.3 भावानुसार पढ़ना उचित वाचन शैली है। वाचन शैली के नियमों को नजर में रखते हुए वाचन करें।

3.1 पठन कौशल की शिक्षण प्रणालियां निम्नांकित हैं–

1. शब्द तत्त्व पर आधारित विधियां/प्रणाली
    - 1.1 वर्ण बोध विधि
    - 1.2 ध्वनि साम्य विधि
    - 1.3 स्वरोच्चारण विधि
2. अर्थ ग्रहण पर आधारित विधियां
    - 2.1 देखो और कहो विधि
    - 2.2 वाक्य विधि
    - 2.3 कहानी विधि
    - 2.4 अनुकरण विधि
    - 2.5 सम्पर्क विधि
3. उपयुक्त विधि
    - 3.1 स्वरों का अन्तर समझाना।
    - 3.2 प्रवाहपूर्ण ढंग से बोलना सिखाना।
    - 3.3 मौखिक कार्य पर बल।
    - 3.4 आकृतियाँ बनाना
    - 3.5 दष्टि का अभ्यास आदि

3.2 दष्टि दोष, अशुद्ध उच्चारण, अटक–अटक कर पढ़ना, आरोह–अवरोह का अभाव, विराम चिन्हों का गलत प्रयोग, निर्देशन की कमी आदि।

3.3 चिकित्सा विधि, वाचन सम्बन्धी निर्देशन या मार्ग दर्शन, स्थान परिवर्तन, मनोवैज्ञानिक सहायता मानसिक स्वरानुमूल पाठय–सामग्री

## 1.12 मुख्य शब्द

**कौशल**—किसी भी कार्य में कुशलता अर्जित करना

**वर्ण बोध**—वर्णों की जानकारी क्रमशः पहले स्वर बाद में व्यजन

**वाचन दोषों का निवारण**—वाचन में की जाने वाली गलतियों को अभ्यास से दूर करना।

## 1.13 सन्दर्भ ग्रन्थ


| | | |
|---|---|---|
| 1. | के० क्षत्रिया | मातभाषा शिक्षण, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा 1995 |
| 2. | के०के० सुखिया | हिन्दी ध्वनियाँ और उसका शिक्षण, रामनारायण लाल, इलाहाबाद |
| 3. | एम०एम० भाटिया एवं डी०के० वर्मा | हिन्दी शिक्षण, टण्डन पब्लिकेशन्ज किताब बाजार, लुधियाना |
| 4. | Strang and others | The Improvement of Reding, NewYork McGrow Hill, 1961 |

# इकाई-1

# अध्याय-6: लेखन-शिक्षण

**उद्देश्यः**

- छात्र लेखन–कौशल शिक्षण के अर्थ एवं महत्त्व को समझ सकेंगे।
- लेखन–शिक्षण के उद्देश्य को अपने शब्दों में बता सकेंगे।
- लेखन–शिक्षण के गुणों का प्रत्यास्मरण करेंगे।
- छात्र लेखन–शिक्षण की प्रविधियों का प्रत्याभिज्ञान कर सकेंगे।
- भाषा को शुद्ध रूप से लिखने की योग्यता प्राप्त कर सकेंगें।
- शुद्ध वर्तनी लिखने की गति में वद्धि कर पायेंगें।

**संरचनाः**

1.1 लेखन शिक्षण की भूमिका
1.2 लेखन शिक्षण का अर्थ
1.3 लेखन शिक्षण का महत्त्व
1.4 लेखन शिक्षण के उद्देश्य
1.5 लेखन शिक्षण के गुण
1.6 लेखन शिक्षण की प्रविधियाँ
1.7 लिखना सिखाने में ध्यान रखने योग्य बातें
1.8 सारांश
मॉडल उत्तर
1.9 मुख्य शब्द
1.10 संदर्भ ग्रन्थ

## 1.1 भूमिका

प्राचीन समय से ही मानव सष्टि–जगत में विचरण करता हुआ प्रकृति के नाना रूपों एवं व्यापारों से कहीं मेल खाता, कहीं टकराता जीवन में संचरण करता रहा होगा। इन रूपों एवं व्यापारों के प्रति कभी उदासीन कभी आनंदित होता हुआ, अपने हृदय स्थित भावों को बाह्य रूप में प्रकट करने की अभिलाषा करता रहा होगा, जिनकों वह क्रियाओं संकेतों, भाव–भंगिमाओं, अव्यवस्थित अपरिमार्जित बोली द्वारा अभिव्यक्त करता रहा है। वहीं क्रिया–कलाप अपरिमार्जित एवं अव्यवस्थित भाषा लिपि का वरदान पाकर सभ्यता और संस्कृति का संरक्षण करती है।

## 1.2 लेखन शिक्षण का अर्थ

आधुनिक समय में व्यक्ति अपने मनोभावों का प्रकटीकरण भाषा के माध्यम से दो रूपों में करता है।

1. मौखिक भाषा के माध्यम से
2. लिखित भाषा के माध्यम से

मौखिक रूप के अन्तर्गत भाषा का ध्वन्यात्मक रूप एवं भावों की मौखिक अभिव्यक्ति है। जब इन ध्वनियों को प्रतीकों के

रूप में व्यक्त किया जाता है, और इन्हें लिपिबद्ध करके स्थायित्व प्रदान करते हैं, तो वह भाषा का लिखित रूप कहलाता है। भाषा के इस प्रतीक रूप की शिक्षा, प्रतीकों को पहचान कर उन्हें बनाने की क्रिया अथवा ध्वनि को लिपिबद्ध करना लिखना है।

## 1.3 लेखन शिक्षण के उद्देश्य

प्यारे छात्रों लेखन–शिक्षण का अर्थ जानने के पश्चात् यह जरूरी हो जाता है कि हम लेखन शिक्षण के उद्देश्यों को भली–भाँति जाने।

1. छात्र सोचने एवं निरीक्षण करने के उपरान्त भावों को क्रमबद्ध रूप में व्यक्त कर सकेगा।
2. छात्र सुपाठ्य लेख लिख सकेगा।
3. शब्दों की शुद्ध वर्तनी लिख सकेगा।
4. छात्र ध्वनि, ध्वनि समूहों, शब्द, सूक्ति, मुहावरों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
5. विराम–चिन्हों का यथोचित प्रयोग कर सकेगा।
6. अनुलेख, अतिलेख, तथा श्रतुलेख लिख सकेगा।
7. व्याकरण सम्मत भाषा का प्रयोग करने में सक्षम होंगे।
8. वह वाक्यों में शब्दों, वाक्यांशों तथा उपवाक्यों का क्रम अर्थानुकूल रख सकेगा।
9. विभिन्न रचना वाले वाक्यों का शुद्ध गठन करेगा।
10. छात्र अभीष्ट सामग्री ही प्रस्तुत करेंगे।
11. क्रमबद्धता बनाये रखेंगे।
12. छात्र भाव की दष्टि से अभिव्यक्ति में संक्षिप्तता ला सकेंगें।
13. विद्यार्थी लिखित अभिव्यक्ति के विभिन्न रूपों की तकनीक का विधिवत् पालन करने में समर्थ होंगे।
14. वह लिखित अभिव्यक्ति के विभिन्न रूपों के माध्यम से अभिव्यक्ति कर पाने में सक्षम होंगे।

**अपनी प्रगति जांचिए-1**

1. मनुष्य अपने भावों का प्रकटीकरण किन साधनों से करता है।

## 1.4 लेखन शिक्षण के गुण

1. लेखन, सुन्दर, स्पष्ट एवं सुडौल हो।
2. उसमें प्रवाहशीलता एवं क्रमबद्धता हो
3. विषय (शिक्षण) सामग्री उपयुक्त अनुच्छेदों में विभाजित हो।
4. भाषा एवं शैली में प्रभावोत्पादकता हो।
5. भाषा व्याकरण सम्मत हो।
6. अभिव्यक्ति संक्षिप्त, स्पष्ट तथा प्रभावोत्पादक हो।

## 1.5 लेखन शिक्षण की प्रविधियाँ

लेखन शिक्षण कब से प्रारम्भ किया जाये, शिक्षाशास्त्रियों में मतैक्य नहीं है। प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री फ्रोबेल ने पढ़ने की क्रिया पहले और लिखने की क्रिया को बाद में रखने का सुझाव दिया है। वहीं दूसरी तरफ श्रीमती मारिया माण्टेसरी ने 'लिखाने सिखाने को पहले, तत्पश्चात् पढ़ना सिखाने का समर्थन किया है।' इन दोनों मतों से भिन्न एक तीसरा मत भी है। इसे दोनों मतों का समन्वयक कह सकते हैं क्योंकि अधिकांश शिक्षाविशारदों का मत है कि पढ़ना–लिखना साथ साथ चलना चाहिए।

अतः कहा जा सकता है, लेखन–शिक्षा अन्तिम सोपान है,। जब भाषा शिक्षक को यह विश्वास हो जाये कि बच्चे (छात्र) की हाथ की मांसपेशियाँ सुदढ़ हो चुकी है, और वह लिखने में सक्षम है, तब थोड़े–थोड़े समय लेखन का अभ्यास कराना चाहिए।

**अपनी प्रगति जांचिए-2**

1. लेखन शिक्षण के विषय में फ्रोबेल का मत क्या है?

## 1.6 लेखन की शिक्षण विधि

1. **माण्टेसरी विधिः** मान्टेसरी ने लिखना सिखाने में आँख, कान और हाथ– तीनों के समुचित प्रयोग पर बल दिया है। उनके मतानुसार पहले बालक को लकड़ी अथवा गत्ते या प्लास्टिक के बने अक्षरों पर ऊँगली फेरने को कहा जाये, फिर उन्हें पेंसिल को उन्हीं अक्षरों पर घुमवाना चाहिए। पेंसिल प्रायः रंगीन होनी चाहिए। इसी प्रकार बालक अक्षरों के स्वरूप से परिचित होकर उन्हें लिखना सीख जाता है।
2. **रूपरेखानुकरण विधिः** इस विधि में शिक्षक श्यामपट्ट या स्लेट पर चाँक या पेंसिल से बिन्दु रखते हुए शब्द या वाक्य लिख देता है और छात्रों से उन निशानों पर पेंसिल से लिखने के लिए बोलता है, जिससे शब्द, वाक्य या वर्ण उभर आये। इस प्रकार अभ्यास के माध्यम से वह वर्णों को लिखना सीख जाता है।
3. **स्वतंत्र अनुकरण विधिः** शिक्षक इस प्रविधि में श्यामपट्ट, अभ्यास पुस्तिका, या स्लेट पर अक्षरों को लिख देता है। छात्रों का कहा जाता है कि उन अक्षरों को देखकर उनके नीचे स्वयं इसी प्रकार के अक्षर बनाये। प्रारम्भ में बच्चे इस विधि से लिखना सीखते है।
4. **जेकॉटॉट विधिः** इस प्रणाली (विधि) में शिक्षक बालकों द्वारा पढ़े हुए वाक्य को स्वयं लिखकर छात्रों को लिखने के लिए दे देता है। छात्र एक–एक शब्द लिखकर अध्यापक द्वारा लिखित शब्द से मिलाते हुए स्वयं संशोधन करते चलते है। और पूरा वाक्य लिखने के पश्चात् शिक्षक मूल वाक्य को बिना देखे हुए उन्हें लिखने को कहता है, छात्र स्वयं लिखते हैं।

## 1.7 लिखना सिखाने में ध्यान देने योग्य बातें

छात्रों को लिखना सिखाते वक्त अध्यापक को निम्न तथ्यों को ध्यान में रखना चाहिए।

1. **बैठने का ढ़ंगः** लिखते समय छात्रों की रीढ़ की हड्डी सीधी रहे। झुक्कर लिखने की आदत न पड़ने पाये।
2. **अभ्यास पुस्तिका की आँखों से दूरीः** छात्र अभ्यास पुस्तिका को आँखों से लगभग 1 फुट की दूरी पर रखकर लिखें।
3. **कलम पकड़ने की विधिः** पहली और दूसरी ऊँगली के बीच में कलम रखकर उसे अँगूठे से पकड़ना चाहिए, कलम की निब को लगभग एक इंच से ऊपर पकड़ना चाहिए।
4. **पढ़नाः** लिखने के साथ–साथ पढ़ना भी हो, नहीं तो लिखना निरर्थक हो जायेगा।
5. **उपयुक्त वातावरणः** समय, स्थान आदि की उपयुक्तता पर शिक्षक को ध्यान रखना चाहिए।
6. **सुडौल अक्षरः** छात्र अक्षरों को सुन्दर बनाने का प्रयत्न करे। अक्षर पूरे लिखे जाये, तभी वह सुडौल होंगे।
7. **शिरारेखाः** शिरारेखा अक्षर का आवश्यक अंग है। अतः इस का प्रयोग किया जाना चाहिए।
8. **बायें से दायेंः** सभी वर्णों, वाक्यों के लिखने का क्रम बायें से दायें रहे।
9. **सीधी लिखाईः** अध्यापक को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वर्णों की खड़ी रेखाएं तिरछी ना होकर सीधी हो।
10. **नमूना उपयुक्त होः** अध्यापक द्वारा बनाए गए शब्द व अक्षर (मॉडल) आदर्श हो, जिनके आधार पर छात्र लिख सके।
11. **लिपि-प्रतीकः** अनुस्वार, विसर्ग, हलन्त, मात्राओं के प्रयोग में सावधानी रखनी चाहिए। छोटे–छोटे लिपि प्रतीकों की भूल से लेख विकृत हो जाता है।
12. **अभ्यासः** लिखना एक कला है, अतः छात्रों के बौद्धिक एवं मानसिक स्तर को ध्यान में रखते हुए अभ्यास करवाये।

**अभ्यास को आगे तीन श्रेणियों में विभाजित किया जाता है–**

1. सुलेख
2. अनुलेख
3. श्रुतलेख

1. **सुलेखः** सुन्दर लेख को सुलेख कहते हैं। लिखना सिखाते वक्त इस बात का ध्यान रखना चाहिए, छात्रों की लिखावट खराब न होने पाये। सुलेख शिक्षित व्यक्ति का आवश्यक लक्षण है।
2. **अनुलेखः** सुन्दर लिखावट के लिए प्रतिलेख और अनुलेख का भी आश्रय लिया जाता है। अनुलेख का अर्थ है– किसी लिखावट के पीछे या बाद में लिखना अनुलेख के लिए अभ्यास पुस्तिका की प्रथम पंक्ति में मोटे और सुन्दर ढंग के अक्षर, शब्द या वाक्य लिखे होते हैं, उनके नीचे की पंक्तियाँ रिक्त रहती है। इस विधि में छात्र छपे हुए अक्षरों के नीचे देखकर स्वयं अक्षर बनाता है। अनुलेख का प्रारम्भिक कक्षाओं में विशेष महत्त्व है। कक्षा तीन तक अनुलेख का अभ्यास कराना चाहिए।
3. **श्रुतलेखः** 'श्रुतलेख' सुना हुआ लेख है। इस विधि में अध्यापक बोलता जाता है, छात्र सुनकर अभ्यास–पुस्तिका या तख्ती पर लिखता जाता है। श्रुतलेख में सुन्दर लिखावट का महत्त्व नहीं हैं। महत्ता भाषा की शुद्धता का हो जाता है।

   श्रुतलेख वर्तनी–शिक्षण के लिए आवश्यक है। सुनकर लिखने में एक निश्चित गति से लिखना का अभ्यास हो जाता है।

**अपनी प्रगति जांचिए-3**

1. लेखन की शिक्षण विधियों के नाम बताइए
2. अभ्यास को कितने भागों में बांटा जा सकता है?

## 1.8 सारांश

अभी तक आप समझ चुके होंगे किन भाषायी कौशलों में लेखन कौशल अन्तिम परन्तु महत्वपूर्ण सोपान हैं लेखन कौशल के बगैर शिक्षण की कल्पना नहीं की जा सकती। परन्तु बच्चों को लेखन कौशल का अभ्यास तभी करवाया जाए, जब शिक्षक को यह विश्वास हो जाए कि वह (आगे) प्रथम तीनों, कौशलों का ज्ञान रखता है एवं उसकी मांसपेशियां कुछ सुदढ़ हो गई है। जब शिक्षक लेखन का अभ्यास करा सकता है। शिक्षक लेखन कौशल के उद्देश्य, गुण, शिक्षण विधियों का ध्यान रखते हैं। लिखना सिखाने के महत्वपूर्ण तथ्यों या महत्वपूर्ण बातों को ध्यान में रखकर शिक्षार्थियों को लेखन कौशल का अभ्यास करवाता है। औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने हेतु भी लेखन कौशल में दक्ष होना आवश्यक है। क्योंकि तीन घंटों की लिखित अभिव्यक्ति ही छात्रों की सफलता का आधार बनती है।

**मॉडल उत्तर**

1.1 व्यक्ति अपने भावों विचारों का प्रकटीकरण दो माध्यमों से करता है–

1. मौखिक भाषा के माध्यम से
2. लिखित भाषा के माध्यम से।

2.1 प्रसिद्ध शिक्षा–शास्त्री फ्रोबेल के मतानुसार पढ़ने की क्रिया को पहले और लिखने की क्रिया को बाद में रखने का सुझाव देते हैं।

3.1 लेखन कौशल की शिक्षण विधियों के नाम इस प्रकार है

1. मोण्टेसरी विधि
2. रूपरेखानुकरण विधि

3. स्वतन्त्र अनुकरण विधि
4. जेकाटॉट विधि

3.2 लेखन कौशल शिक्षण में अभ्यास को तीन भागों में वर्गीकृत किया हुआ है–

1. सुलेख
2. अनुलेख
3. प्रतिलेख आदि।

## 1.9 मुख्य शब्द

**रूपरेखा**–शिक्षक श्यामपट्ट पर या तख्ती व स्लेट पर चॉक व पैंसिल की सहायता से बिन्दुओं के माध्यम से वर्ण शब्द या वाक्य लिख देता है व छात्र उन पर निशानों पर पैंसिल से लिखते हैं, यह रूपरेखानुकरण है।

**सुडौल अक्षर**–जो सुन्दर अक्षर हो अर्थात् प्रत्येक अक्षर को पूरा लिखना–

**उदाहरणार्थ**–प्रचलित ढंग सही ढंग

| प्रचलित ढंग | सही ढंग |
|---|---|
| ꣷ | इ |
| ꣸ | ह |

## 1.10 सन्दर्भ ग्रन्थ

1. उमा मंगल (डॉ०) हिन्दी शिक्षण, आर्य बुक डिपो, करोल बाग नई दिल्ली 2003
2. भाई योगेन्द्र जीत हिन्दी भाषा शिक्षण, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।
3. हरिदेव बाहरी व्यावहारिक हिन्दी व्याकरण, लोक भारती प्रकरशन, इलाहाबाद
4. Freeman F.N. Teaching Handwriting: Washinton, America Education Research Association 1954

# इकाई-1

# अध्याय-7: उच्चारण–शिक्षण

**उद्देश्य:**

छात्रों से यह अपेक्षा की जाती है कि प्रस्तुत पाठ के अध्ययन के उपरान्त छात्रों में निम्न परिवर्तन आयेंगे।

- छात्र उच्चारण के अर्थ एवं महत्त्व को भली प्रकार समझते हैं।
- उच्चारण के विभिन्न सोपानों से परिचित हैं।
- छात्र उच्चारण स्थल की दष्टि से हिन्दी ध्वनियों के वर्गीकरण का प्रत्यास्मरण करते हैं।
- छात्र उच्चारण शिक्षा की महत्ता पर बल डालते हैं।
- उच्चारण दोष के विभिन्न प्रकारों से भली प्रकार परिचित हैं।
- उच्चारण दोषों का निराकरण हेतु अनेक साधनों तकनीक एवं विधियों का प्रयोग करते हैं।

**संरचना:**

1.1 उच्चारण शिक्षण की भूमिका
1.2 उच्चारण शिक्षण का अर्थ
1.3 उच्चारण शिक्षण का महत्त्व
1.4 उच्चारण शिक्षण के सोपान
1.5 उच्चारण स्थल की दष्टि से हिन्दी ध्वनियों का वर्गीकरण
1.6 उच्चारण शिक्षा की आवश्यकता
1.7 उच्चारण दोष के कारण
1.8 उच्चारण दोष के विभिन्न प्रकार
1.9 उच्चारण दोषों का निराकरण
1.10 सारांश
मॉडल उत्तर
1.11 मुख्य शब्द
7.12 संदर्भ ग्रन्थ

## 1.1 उच्चारण शिक्षण की भूमिका

हिन्दी भाषा का ध्वनितत्व वैज्ञानिक है, नागरी भाषा में प्रत्येक ध्वनि के लिए निश्चित अक्षर हैं और उनका सटीक उच्चारण है। उच्चारण पर बल न देने पर उच्चारण दोष उत्पन्न होता है और भाषा का रूप विकृत होता है, उसका निश्चित रूप नहीं बन पाता है।

भाषा के दो रूप हैं–

1. मौखिक भाषा
2. लिखित भाषा

शुद्ध उच्चारण के अभाव में मौखिक भाषा अस्वाभाविक एवं प्रभावहीन हो जाती है। प्रायः हम जैसा उच्चारण करते हैं या बोलते हैं वैसा ही लिखते हैं। अतः लिखित भाषा में भी वे दोष आ जाते हैं। शब्दों की वर्तनी की अशुद्धता के कारण हमारा उच्चारण अशुद्ध हो जाता है। इस प्रकार शुद्ध उच्चारण का बड़ा महत्व है। वही भाषा का स्वरूप निखारता है।

## 1.2 उच्चारण शिक्षण का अर्थ

भावों एवं विचारों की अभिव्यक्ति व आदान–प्रदान के लिए हम भाषा के दो रूपों का प्रयोग करते हैं मौखिक और लिखित रूप। मौखिक भाषा के प्रयोग का आधार ध्वनियां है, तथा प्रत्येक ध्वनि के लिए एक निश्चित अक्षर है, और उसका उच्चारण स्थान भी निश्चित है। यदि हम विचारों एवं भावों की अभिव्यक्ति के समय ध्वनि का उच्चारण उसके निश्चित स्थान से नहीं करेंगे तो हमारी अभिव्यक्ति दोषपूर्ण और मौखिक भाषा निरर्थक एवं प्रभावहीन हो जायेगी।

## 1.3 उच्चारण शिक्षण का महत्त्व

प्राचीन भारत में शिक्षा मौखिक रूप से प्रदान की जाती थी। अतः उस समय उच्चारण पर विशेष बल दिया जाता था। शुद्ध उच्चारण के संदर्भ में प्राचीन ग्रन्थों में विशेष रूप से लिखा गया है – यथा–

"प्रकृतिर्यस्य कल्याणी दन्ताष्ठौ यस्य शोभनौ।

प्रगल्भश्च विनीतश्च स वर्णनं वक्तुमहंति।।"

अभिप्राय यह है कि "जिसकी प्रकृति अच्छी है, जिसके दांत और ओष्ठ अच्छे हैं, जो वार्तालाप में प्रगल्भ और विनीत है, वही वर्णों का ठीक–ठीक उच्चारण कर सकता है।"

'याज्ञवल्कय शिक्षा' में उच्चारण के संदर्भ में विस्तारपूर्वक विवरण दिया गया है। **न्यायसूत्र** उच्चारण पर विशेष बल देता है– "जब बोलने वाले के मन में बोलने की इच्छा पैदा होती है, तो आत्मा से हृदयस्थ वायु को प्रेरणा मिलती है, जिससे कण्ठ, तालु आदि स्थानों पर एक प्रकार का आघात होता है।"

**महर्षि पाणिनि** के मतानुसार– "शब्दोच्चारण से पूर्व बुद्धि के साथ मिलकर आत्मा पहले अर्थ का ज्ञान कराती है, तब मन में बोलने की प्रेरणा प्राप्त होती है।"

आचार्य प्रवर पंडित सीताराम चतुर्वेदी उच्चारण के बारे में कहते हैं– "जैसे मतवाला हाथी एक पैर रखने के पश्चात् दूसरा पैर रखता है, उसी प्रकार एक–एक पद और पदान्त को अलग–अलग स्पष्ट करके बोलना चाहिए।"

**अपनी प्रगति जांचिए-1**

1. भाषा के कितने रूप हैं

## 1.4 उच्चारण शिक्षण के सोपान

1. उच्चारण करने से पूर्व मन में विचारों का जन्म होता है। विचारों की अभिव्यक्ति शब्दों के माध्यम से होती है। शब्द किसी अर्थ के परिचायक होते हैं। "शब्द और अर्थ एक ही सिक्के के दो पार्श्व हैं।"

   वाक्यप्रदीप में भी कहा गया है– "एकस्यैवात्मनौ भेदौ शब्दार्थो पथक स्थितौ।"
2. स्वर यंत्र में श्वास के आघात से पूर्ण ध्वनियों का जन्म होता है।
3. उच्चारण बोलकर करते हैं। बोलने के पूर्व मनमें बोलने की इच्छा बलवती होती है, तब कहीं जाकर उच्चारण किया जाता है।
4. उच्चारण करने के प्रयास में हृदयस्थल पर वायु में प्रकम्पन्न पैदा होता हे। इसका मतलब यह है कि वायु फेफड़े से निकलकर गले में तरंगित होकर उच्चारण को जन्म देती हैं।
5. वायु जब गले में तरंगित होती है, तो उस तरंगण से ध्वनियाँ उत्पन्न होती है।

6. ध्वनि मुख के विभिन्न भागों से टकरा कर अपना विभिन्न स्वरूप धारण करती है। यही स्वरूप उच्चारण की ध्वनियाँ है।

7. ध्वनि स्वर यंत्र से बाहर निकलती है। स्वर यंत्र से ध्वनियाँ तीन प्रकार से बाहर निकलती है।

   (i) स्वरों के उच्चारित करने के प्रयास में मुख का रूप बदल–बदलकर

   (ii) व्यजनों को उच्चारित करते समय जीभ, ओष्ठ, दांत तथा तालु का प्रयोग होता है।

   (iii) स्वर की प्रभावपूर्णता के लिए कम्पन यंत्रों का प्रयोग।

## 1.5 उच्चारण स्थल की दष्टि से हिन्दी ध्वनियों का वर्गीकरण

उच्चारण–स्थल की दष्टि से हिन्दी ध्वनियों का वर्गीकरण निम्न है–

| स्वर | व्यंजन | उच्चारण-स्थल |
|---|---|---|
| अ, आ, ऑ | क, ख, ग, घ, ङ, ह | कण्ठ |
| – | क, ख, ग | जिह्वामूल |
| इ, ई | च, छ ज, झ, ा, य, श | तालु |
| ऋ | ट, ठ, ड, ढ, ण, ड़, ढ़, ष | मूर्धा |
| – | त, थ, द, ध | दन्त |
| – | न, र, ल, स, ज | वर्त्स (ऊपरी दाँत के अन्दर के मसूड़े से) |
| उ, ऊ | प, फ, ब, भ, म | ओष्ठ |
| ए, ऐ | – | कण्ठ तालु |
| ओ, औ | – | कण्ठोष्ठय |
| – | व, फ | दन्त–ओष्ठ |

## 1.6 उच्चारण की शिक्षा की आवश्यकता

हिन्दी भाषा में उच्चारण सम्बन्धी अनेक दोष प्रचलित है। उच्चारण में ध्वनियों का विशेष महत्व है। ध्वनियों के अभाव में शब्दों का अस्तित्व नहीं है और न ही भाषा का। इसलिए ध्वनियों के उच्चारण पर विशेष बल देने की आवश्यकता है। उच्चारण की शिक्षा की आवश्यकता के निम्नलिखित कारण हैं–

1. अशुद्ध उच्चारण भाषा का स्वरूप बिगड़ता है। अशुद्ध उच्चारण उसका सुसंस्कृत स्वरूप विकृत करता है।

2. बिना उच्चारण ज्ञान के भाषा का ज्ञान नहीं हो सकता है। उच्चारण ध्वनियों के आधार पर किया जाता है। ध्वनियों के अभाव में न भाषा ठीक ढंग से समझी जा सकती है, न ही उसका सम्यक ज्ञान ही हो पाता है।

3. उच्चारण बाल्यावस्था से ही बनता–बिगड़ता है। इस कारण बालकों के उच्चारण पर विशेष बल देना चाहिए। बचपन से ही भ्रष्ट उच्चारण से बचाया जाना चाहिए।

4. हिन्दी भाषा–भाषी क्षेत्रों में अनेक बोलियाँ–उपबोलियाँ प्रचलित हैं, यथा ब्रज, अवधी, भोजपुरी, छत्तीसगढ़ी, बांगरी, मालवी, बुन्देली आदि। इन बोलियों का प्रभाव खड़ी बोली पर पड़ा है। इस कारण उसमें ग्रामीण भाषा का पुट मिल गया है। अध्यापक को सावधानीपूर्वक ग्रामीण बोलियों के उच्चारण के प्रभाव से बच्चों को मुक्त करना चाहिए। दुर्भाग्यवश अध्यापक भी इस दुष्प्रभाव से वंचित नहीं हैं। इसलिए अशुद्ध उच्चारण प्रचलित है।

5. अहिन्दी–भाषी क्षेत्रों के बालकों पर प्रांतीय भाषाओं का प्रभाव पड़ता है। वहाँ के बालकों को हिन्दी के उच्चारण में इन प्रांतीय भाषाओं के प्रभाव से बचाना चाहिए।

इस प्रकार हिन्दी में उच्चारण सम्बन्धी अनेक दोष एवं कठिनाइयाँ हैं। सावधानीपूर्वक इनका निराकरण करना चाहिए। इसके लिए छात्रों को उच्चारण दोष से मुक्त करना आवश्यक है।

## 1.7 उच्चारण दोष के कारण

उच्चारण सम्बन्धी दोष अनेक कारणों से होते हैं। क्षेत्र विशेष एवं व्यक्ति विशेष के कारण ये दोष उच्चारण के विकृत स्वरूप को जन्म देते हैं। उच्चारण दोष के निम्नलिखित कारण हैं–

1. **शारीरिक कारणः** उच्चारण यन्त्रों के विकार के कारण उच्चारण सम्बन्धी दोष आ जाते हैं। कुछ लोगों के कण्ठ, तालु, होंठ, दाँत, आदि उच्चारण–अंगों में दोष होते हैं। इसलिए वे सम्बद्ध ध्वनियों का सही उच्चारण नहीं कर पाते हैं।
2. **वर्णों के उच्चारण का अज्ञानः** हिन्दी भाषा की एक विशेषता यह भी है कि उसका जैसा अक्षर–विन्यास है, ठीक वैसे ही उच्चारित भी की जाती है। इसके बावजूद अज्ञानवश वर्णों व शब्दों के सही रूप कुछ लोग उच्चारित नहीं कर पाते हैं जैसे आमदनी को आम्दनी कहना, खींचने को खेंचना कहना, प्रताप को परताप कहना, वक्ष को व्रक्ष कहना, वीरेन्द्र को वीरेन्दर कहना आदि।
3. **क्षेत्रीय बोलियों का प्रभावः** कहावत है कि 'कोस–कोस पर पानी बदले, दस कोस पर बानी।' अर्थात् प्रत्येक दस कोस (बीस मील) पर बानी अर्थात् वाणी बदल जाती है। वास्तव में भाषा का रूप विभिन्न क्षेत्रों में परिवर्तित नजर आता है। इसका मूल कारण क्षेत्रीय भाषाओं का खड़ी बोली पर भोजपुरी प्रभाव है। क्षेत्र के लोग 'ने' का प्रयोग कम करते हैं, तो पंजाबी क्षेत्र के लोग उसका अनावश्यक प्रयोग भी करते हैं, यथा, हमने जाना है।' 'ने' के बदले कहीं 'ण' का प्रयोग, कहीं 'स' के बदले 'ह' का प्रयोग तो कहीं 'ए', 'औ' और 'न' के बदले 'ए', 'ओ', 'ण' का प्रयोग आदि।
4. **अन्य भाषाओं का प्रयोगः** हिन्दी भाषा पर अन्य भाषाओं का भी प्रभाव पड़ता है, जिससे उसके उच्चारण पर प्रभाव पड़ता है। उर्दू के कारण हिन्दी का क, ख, ग – क़, ख़, ग़ हो गया है। अंग्रेजी के कारण कालेज, प्लेटफार्म आदि अनेक शब्द जुड़ गये हैं। अंग्रेजी के कारण ही 'आ' का उच्चारण 'ऑ' होने लगा है।
5. **भौगोलिक कारणः** विभिन्न परिस्थितियों में रहने से स्वर–यंत्र में भी थोड़ी–बहुत विभिन्नता आ जाती है, इससे उच्चारण प्रभावित होता है। अरबवासी धूप आदि से बचने के कारण सिर पर कपड़ा बाँधते हैं, गला कस–सा जाता है, इस कारण वहाँ क, ख, ग – क़, ख़, और ग़ हो जाता है। हिन्दी में भी विभिन्न राज्यों में हिन्दी का उच्चारण इससे किंचित प्रभावित हुआ है।
6. **मनोवैज्ञानिक कारणः** उच्चारण पर मनोवैज्ञानिकता का प्रभाव पड़ता है। भय, संकोच, शीघ्रता, बिलम्ब आदि से उच्चारण में दोष आ जाते हैं। इससे तुतलाना, लापरवाही आदि का विकास होता है और उच्चारण प्रभावित होता है।
7. **स्थानीय प्रभावः** जिस क्षेत्र विशेष में बालक निवास करता है, वहां की भाषा बच्चे के उच्चारण को प्रभावित करती है– कहा भी जाता है– "चार कोस पर पानी बदले आठ कोस पर वाणी" स्थानीय बोली के प्रभाव से उच्चारण अशुद्ध हो जाता है।
8. **अध्यापक की अयोग्यताः** उच्चारण सुधार में अध्यापक का महत्त्वपूर्ण योगदान है। अगर अध्यापक उच्चारण में सतर्कता नहीं रखता या शुद्ध उच्चारण करने में असमर्थ है, तो छात्र उसका अनुकरण करके अशुद्ध उच्चारण करना प्रारम्भ कर देते हैं ओर यह दोष सदा के लिए उनमें घर कर जाता है।
9. **प्रयत्न-लाघवः** ध्वनियों व शब्दों के उच्चारण में पूर्ण सावधानी न रखने पर दोष का आना स्वाभाविक है। शब्दों एवं ध्वनियों का उच्चारण पूर्णरूप से किया जाना चाहिए। प्रयत्न–लाघव (short cut) विधि को अपनाने से उच्चारण सम्बन्धी दोष आ जाते हैं, यथा परमेश्वर को 'प्रमेसर', 'मास्टर साहब' को 'म्मासाब' आदि।
10. **दोषपूर्ण आदतेंः** वैयक्तिक दोषपूर्ण आदतें भी अशुद्ध उच्चारण का कारण बन जाती हैं। अनुस्वरों का अधिक उच्चारण इसका प्रचलित रूप है, जैसे 'कहा' को 'कहाँ' कहना या अनुस्वरों का लोप जैसा 'हैं' को 'है' कहना आदि। रुक–रुक कर बोलना, शीघ्रता में बोलना, किसी की नकल करके बोलना भी उच्चारण दोष लाने के कारण है।
11. **शुद्ध भाषा के वातावरण का अभावः** भाषा अनुकरण द्वारा सीखी जाती है। अगर भाषा के शुद्ध रूप का वातावरण

नहीं मिला तो अशुद्ध उच्चारण स्वाभाविक है। अशुद्ध उच्चारण के बीच पलने वाला बालक शुद्ध उच्चारण नहीं कर पाता है।

12. **अक्षरों एवं मात्राओं का अस्पष्ट ज्ञानः** जिन छात्रों को अक्षरों एवं मात्राओं का स्पष्ट ज्ञान नहीं दिया जाता, उनमें उच्चारण–दोष होता है। संयुक्ताक्षरों के संदर्भ में यह भूल अधिक होती है; जैसे स्वर्ग को सरग कहना, कर्म को करम कहना, धर्म को धरम कहना आदि।

13. **नागरी ध्वनियों का अनिश्चित उच्चारणः** नागरी ध्वनियों में 'ङ' 'ा'; 'ऋ', 'ष' 'क्ष' 'ज्ञ' आदि का प्रयोग बहुत कम होता है। इस कारण इनका उच्चारण अनिश्चित–सा हो गया है। इस कारण इनके उच्चारण में बहुधा भूल की संभावना रहती है।

14. अति शीघ्रता, असावधानी से भी उच्चारण अशुद्ध हो जाता है

**अपनी प्रगति जांचिए-2**

1. उच्चारण दोष के चार कारण बताओ।

## 1.8 उच्चारण दोष के विभिन्न प्रकार

उच्चारण दोष के विभिन्न प्रकार नीचे दिये जा रहे हैं:

1. **स्वर-लोपः** यथा 'क्षत्रिय' का 'छत्री', 'परमात्मा' का 'प्रमात्मा', 'ईश्वर' का 'इस्सर'।
2. **स्वर-भक्तिः** यथा 'बजेन्द्र' को बढ़ाकर 'बरजेन्दर', 'श्री' को 'सिरी', 'शक्ति' को 'सकती'।
3. **स्वरागमः** यथा 'स्नान' में 'अ' का आगम होकर होकर 'अस्नान्', 'स्कूल' में 'इ' का आगम होकर 'इस्कूल'।
4. **ऋ का अशुद्ध उच्चारणः** यथा 'अमत' का 'अम्रित', पंजाब में 'अम्रत', मराठी में 'अम्रत'।
5. **इ, उ का ई, ऊ के साथ भ्रमः** यथा 'कवि' का 'कवी', 'हिन्दू' का 'हिन्दु', 'ईश्वर का ईसवर', 'किन्तु' का 'किन्तू'।
6. **न और ण का भ्रमः** यथा 'रणभूमि' का 'रनभूमि', 'प्रणय' का 'प्रनय', 'कर्ण' का 'करन' आदि।
7. **क्ष और छ का झमेलाः** यथा लक्ष्मण को लछमन, अक्षर का अछर, क्षत्री का छत्री।
8. **श और ष का भ्रमः** यथा प्रकाश का प्रकाष, निष्काम का निश्काम।
9. **व और व का भ्रमः** यथा 'वन' (जंगल) का 'बन', वचन का 'बचन' वसंत का 'बसंत'।
10. **ड और ड़ का भ्रमः** जैसे गुड़ का गुड।
11. **ढ और ढ़ का भ्रमः** यथा पढ़ाई का पढाई, कढ़ाई का कढाई।
12. **चन्द्रबिन्दु और अनुस्वार का भ्रमः** यथा गंगा का गँगा और चाँद का चांद कहना।
13. **य और ज का भ्रमः** यथा यमराज को 'जमराज' लिखना, यज्ञ का 'जज्ञ' उच्चारित करना।
14. **अनुनासिकता का भ्रमः** यथा सोचने को सोंचना लिखना, बच्चा को बंच्चा लिखना।
15. **अल्पप्राण और महाप्राण सम्बन्धी भ्रमः** यथा बुढ़ापा को बुडापा, घूमना को गूमना, घर को गर।
16. **शब्द विपर्ययः** यथा लिफ़ाफा को लिलाफा कहना, आदमी को आमदी कहना।
17. **शब्दांश विपर्ययः** यथा 'बाल की खाल निकालने' को 'खाल की बाल निकालना'।
18. **हड़बड़ाहट या तुतलाहटः** यथा 'ततत तुम्मामारा घघरर कहाँ है'?
19. **न्यूनाधिक गतिः** शब्द या वाक्य या वाक्य खंड को शीघ्रता में बोलना या देर तक खींचकर बोलने से भी उच्चारण सम्बन्धी दोष आ जाते हैं।

20. **शारीरिक दोषः** जिह्वा, ओष्ठ, तालु आदि में दोष आने से उच्चारण सम्बन्धी दोषों का आना स्वाभाविक है।

21. **मनोवैज्ञानिक कारणः** भय, दुर्व्यवहार, शंका आदि से जिह्वा, तालु, ओष्ठ आदि लड़खड़ाने लगते हैं और उच्चारण सम्बन्धी दोष आ जाते हैं।

22. **ध्वन्यात्मक दोषः** यथा उलटा–पलटा को उल्टा–पल्टा लिखना।

इसी प्रकार हिन्दी भाषा में उच्चारण सम्बन्धी अन्य कई दोष विद्यमान हैं।

## 1.9 उच्चारण सम्बन्धी दोषों का निराकरण

शैशवावस्था एवं बाल्यावस्था से ही उच्चारण पर ध्यान देना चाहिए, ताकि बालक अशुद्ध उच्चारण न करें। बाल्यावस्था से से ही इस पहलू पर ध्यान देने से बालक भविष्य में कभी भी उच्चारण के दोषी नहीं होंगे। अशुद्ध उच्चारण के निराकरण के लिए निम्न उपाय किये जायें–

1. **उच्चारण अंगों की चिकित्साः** अगर उच्चारण करने वाले अंगों में कोई दोष हो तो चिकित्सक से चिकित्सा करानी चाहिए। उच्चारण करने में श्वास नलिका, कण्ठ, जीभ, वर्त्स, नाक, ओष्ठ, तालु, मूर्धा, दाँत आदि की सहायता ली जाती है। इन अंगों में दोष आने पर उच्चारण के प्रभावित होने की संभावना रहती है। इसलिए इन अंगों में दोष आने पर तत्काल चिकित्सा करानी चाहिए। उच्चारण करने वाले अंगों का चित्र सामने पष्ठ पर दिया गया है।

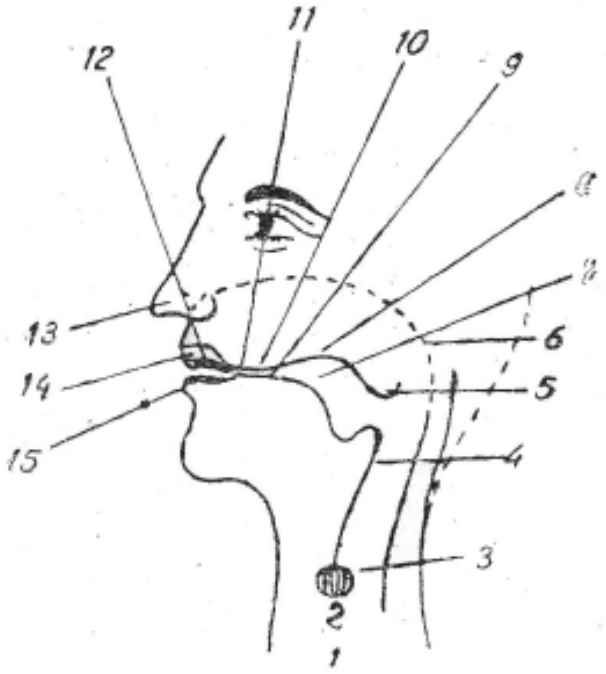


**उच्चारण स्थल**

1. श्वास नलिका (Wind pipe)
2. कंठपिटक (Larynx)
3. स्वरतंत्री (Vocal chords)
4. अभिकाकल (Epiglottis)
5. काकल (कौवा) (Uvula)
6. नासिका विवर (Nasal cavity)
7. कण्ठ (Guttur)
8. कोमल तालु (Soft Palate)
9. जीभ (Tongue)
10. मूर्धा (Hard Palate)
11. वर्त्स (Teeth ridge alveola)
12. ऊपर के दाँत (Upper teeth)
13. नाक (Nose)
14. ऊपर के ओष्ठ (Upper lip)
15. निचला ओष्ठ (Lower lip)

2. **शुद्ध उच्चारण वाले लोगों का सहवासः** बालक में अनुकरण की अपूर्व क्षमता होती है। वह अनुकरण के माध्यम से कठिन से कठिन तथ्य समझ लेता है। अगर उसे शुद्ध उच्चारण करने वाले लोगों, विद्वानों आदि के साथ रखा जाये तो उसमें उच्चारण दोष का भय नहीं रहेगा। उसका उच्चारण रेडियो, ग्रामोफोन, टेपरिकार्डर आदि के माध्यम से इसी पद्धति पर सुधारा जा सकता है।

3. **नागरी ध्वनितत्त्व को समझानाः** अध्यापक को ध्वनितत्त्वों का विशेषज्ञ होना चाहिए। उसे बालकों को वर्णमाला के स्वर, व्यंजन से लेकर कठिन उच्चारणों की शिक्षा विधिवत् देनी चाहिये, ताकि उनका उच्चारण सुधर जाये। उसे अर्द्ध–स्वरों एवं अर्द्ध–व्यंजनों, संयुक्ताक्षरों, संयुक्त ध्वनियों आदि का विशेष ध्यान रखकर उच्चारण सिखना चाहिए।

4. **ध्वनियंत्रों का सम्यक ज्ञान करानाः** बालकों को यह बताना अनिवार्य है कि ध्वनियाँ कैसे बनती है? ध्वनियों के उच्चारण में जीभ, ओष्ठ, कण्ठ, काकली आदि का क्या योगदान है। अल्पप्राण एवं महाप्राण ध्वनियों में क्या अन्तर है? स्वर और व्यंजन में क्या अन्तर है? इन तथ्यों को उसे उदाहरण देकर शिक्षा प्रदान करनी चाहिए। इस संदर्भ में उसे निम्न ध्वनियंत्रों एवं दश्य–श्रव्य उपकरणों की सहायता लेनी चाहिए–

   (i) ध्वनियंत्रों का चित्र।

   (ii) सिर एवं ग्रीवा का माडल, जिसमें उच्चारण स्थल दर्शाये गये हों।

   (iii) दर्पण (जिसमें उच्चारण करते समय बालक अपने उच्चारण–स्थल देख सके)।

   (iv) ग्रामोफोन (शुद्ध उच्चारण के लिए)।

   (v) लिंग्वाफोन (शुद्ध उच्चारण की शिक्षा के लिये)।

   (vi) टेपरिकार्डर (कठिन उच्चारणों के आदर्श उच्चारण के अभ्यास के लिए)।

   इसके अतिरिक्त कुछ मूल्यवान वैज्ञानिक यंत्र इस संदर्भ में बड़े उपयोगी हैं। पर निर्धनता के कारण इनकी उपयोगिता से हम वंचित हैं। ये उपकरण निम्न हैं–

   (i) ***कायमोग्राफः*** अल्पप्राण महाप्राण, घोष–अघोष, स्पर्श–संघर्षों की मात्रा आदि की शिक्षा के लिये यह उपकरण बड़ा ही उपादेय है।

   (ii) ***कृत्रिम तालुः*** ध्वनियों के शुद्ध एवं स्टीक उच्चारण के लिए यह उपकरण जीभ के ऊपरी तालु पर रखा जाता है।

   (iii) ***एक्सरेः*** स्वरों एवं व्यंजनों के उच्चारण में जीभ की सही स्थिति का पता एक्सरे के माध्यम से लगाया जा सकता है।

   (iv) ***लैरिंगोस्कोपः*** स्वरतंत्रियों की गतिविधियों के अध्ययन में इस यंत्र की उपयोगिता जगत विख्यात है।

   (v) ***अन्य उपयोगी यंत्रः*** इन्द्रीस्कोप, आटोफोनोस्कोप, नेमोग्राफ, फ्लास्क स्टेथोग्राफ आदि उपकरण विदेशों में उच्चारण सम्बन्धी सुधार के लिए प्रयुकत किये जा रहे हैं।

5. **हिन्दी ध्वनियों का वर्गीकरण सिखानाः** हिन्दी ध्वनियों के वर्गीकरण की सच्ची शिक्षा दिये बिना छात्रों का उच्चारण दोष कदापि दूर नहीं किया जा सकता है। ध्वनियों का वर्गीकरण चार प्रकार से किया गया है–

   (i) ***बाह्य प्रयत्न के आधार परः*** इस आधार पर सभी वर्ण, श्वास तथा नाद तथा अल्पप्राण एवं महाप्राण में विभक्त है।

   (ii) ***आन्तरिक प्रयत्न के आधार परः*** इस आधार पर संवत, अर्द्ध–संवत, विवत एंव अर्द्ध–विवत के रूप में ध्वनियाँ विभक्त हैं।

(iii) ***उच्चारण की प्रकृति के आधार पर:*** उच्चारण की प्रकृति के आधार पर स्वर, ह्रस्व, दीर्घ में तथा अन्य वर्ण, स्पर्श, पार्श्विक, अनुनासिक, ऊष्म, अन्तःस्थ, लुंठित एवं उत्क्षिप्त स्वरूप में विभक्त हैं।

(iv) ***उच्चारण स्थल के आधार पर:*** इस आधार पर वर्ण– कंठ्य, तालव्य, मूर्द्धन्य, दन्त्य, ओष्ठ्य, दन्तोष्ठ्य एवं वर्त्स्य के रूप में विभक्त हैं।

बालकों को वही अध्यापक इनका स्पष्ट विवरण दे सकता है, जिसे स्वयं इनके बारे में शतप्रतिशत जानकारी हो। इनकी शिक्षा बालकों 12–13 वर्ष की उम्र से 18 वर्ष की उम्र तक देनी चहिए। इसके उपरान्त उनमें उच्चारण सम्बन्धी दोष नहीं आ पायेगा।

6. **हिन्दी की कतिपय विशेष ध्वनियों का अभ्यास:** प्रायः हिन्दी भाषा में स, श एवं ष, न एवं ण, व तथा ब, ड तथा ड़, क्ष तथा छ आदि का उच्चारण दोष बालकों में पाया जाता है जैसे विकास का उच्चारण 'विकाश', महान का उच्चारण 'महाण', वन का उच्चारण 'बन' आदि। अध्यापक को इस संदर्भ में विशेष जागरूक रहना चाहिए और इस संदर्भ में भूल होते ही निराकरण कर देना चहिए।

7. **बल, विराम तथा सस्वर पाठ का अभ्यास:** अक्षरों या शब्दों का उच्चारण ही पर्याप्त नहीं है, वरन् पूरे वाक्य को उचित बल, विराम तथा सुस्वर वाचन के आधार पर पढ़ने का अभ्यास डालना भी आवश्यक है। शब्दों पर उचित बल देकर पढ़ने से अर्थभेद एवं भावभेद का ज्ञान होता है। विराम के माध्यम से लय, प्रवाह एवं गति का पता लगता है। इसलिये इन पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है। इससे उच्चारण सम्बन्धी दोषों का निवारण भी होता है।

8. **पुस्तकों के शुद्ध वाचन (पाठ) पर बल:** उच्चारण सम्बन्धी दोषों के निवारण के लिए पुस्तकों का शुद्ध वाचन आवश्यक हैं पहले अध्यापक आदर्श वाचन प्रस्तुत करे, इसके उपरान्त वह छात्रों से शुद्ध वाचन करावे। वाचन में सावधानी रखे तथा अशुद्धियों का सम्यक निवारण करावे।

9. **उच्चारण प्रतियोगिताएं:** कक्षा शिक्षण में मुख्यतया भाषा के कालांश में उच्चारण की प्रतियोगिताएँ करानी चाहिएँ। कठिन शब्द श्यामपट पर लिखकर उनका उच्चारण कराना चाहिए। सर्वथा शुद्ध उच्चारण करने वाले छात्रों को पुरस्कृत किया जाना चाहिए।

10. **भाषण एवं संवाद प्रतियोगिताएँ:** भाषण एवं संवाद प्रतियोगिताओं से उच्चारण शुद्ध होते हैं। निर्णायक मंडल को पुरस्कार देते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि शुद्ध उच्चारण करने वाले छात्रों को ही पुरस्कार या प्रोत्साहन मिले।

11. **विश्लेषण विधि का प्रयोग:** कठिन एवं बड़े–बड़े शब्दों व ध्वनियों के उच्चारण में विश्लेषण विधि का प्रयोग किया जाये। इससे अशुद्ध उच्चारण की संभावना कम हो जाती है। पूरे शब्दों को अक्षरों में विभक्त करने से संयुक्ताक्षारों व कठिन शब्दों को सहज एवं सहजग्राह्य बनाया जा सकता है, जैसे सम्मिलित शब्द को सम्+मि+लि+त, उत्तम शब्द को उत्+त+म आदि–आदि।

12. **अनुकरण विधि का प्रयोग:** उच्चारण का सुधार अनुकरण विधि से किया जा सकता है। अध्यापक कठिन शब्दों का उच्चारण स्वयं पहले करे तथा पुनः कक्षा के बालकों को उसका अनुकरण करने को कहे। अनुकरणशील छात्रों के हाव–भाव, जिह्वा संचालन, मुखावयव तथा स्वरों के उतार–चढ़ाव का पूर्ण ध्यान रखा जाना आवश्यक है, ताकि उच्चारण में प्रत्याशित सुधार लाया जा सके।

13. **मानसिक संतुलन हेतु प्रयास:** जो छात्र भय व संकोच के कारण अशुद्ध उच्चारण करने लगें, उन्हें पूर्ण प्रोत्साहन देना चाहिए; ताकि उनमें आत्मविश्वास का भाव जगे और उनका मानसिक संतुलन बना रहे। ऐसे छात्रों को प्रेरणा एवं सहानुभूति चाहिए। उनकी भूलों पर बिगड़ने या डाँटने की आवश्यकता नहीं है। इस विधि से क्रमशः धीरे–धीरे उनका उच्चारण सुधरने लगेगा।

14. **सभी विषयों के शिक्षण में उच्चारण पर ध्यानः** उच्चारण पर ध्यान देना केवल भाषा–शिक्षक का ही कार्य नहीं है। सभी विषयों के शिक्षण में उच्चारण पर अगर ध्यान दिया जाये, तो उच्चारण में सुधार शीघ्रता से होगा। प्रायः यह कार्य भाषा के अध्यापक का ही माना जाता हे, जो एक भूल है। सभी विषयों के अध्यापकों को इस पहलू पर बल देना चाहिए।

15. **वैयक्तिक एवं सामूहिक विधि का प्रयोगः** उच्चारण–सुधार के लिए दोनों ही विधियां प्रयुक्त की जायें। बालक विशेष के उच्चारण संबंधी दोष के परिष्कार के लिए वैयक्तिक विधि उपयोगी है। जब कक्षा के अधिक छात्र कठिन शब्दों का उच्चारण नहीं कर पाते हैं तो ऐसी स्थिति में सामूहिक विधि द्वारा निराकरण किया जाना चाहिए, जैसे स्कूल कहने की आदत का परिष्कार, स्त्री को इस्त्री कहने की आदत का परिष्कार।

16. **स्वराघात पर बलः** कब किस शब्द पर बल देना है, इसका उच्चारण में बड़ा महत्त्व है। यह भावभेद एवं अर्थभेद की जानकारी कराता है। इसलिए उच्चारण में स्वराघात पर विशेष ध्यान देना चहिए। स्वराघात का अभ्यास वाचन के समय, संवाद, नाटक, सस्वर वाचन व भावानुकूल वाचन के रूप में कराया जा सकता है। स्वर के उतार–चढ़ाव पर ध्यान देने से स्वराघात का अभ्यास हो जाता है।

### अपनी प्रगति जांचिए-3

1. कायमोग्राफ से आप क्या समझते हैं?
2. लिंग्वाफोन क्यों उपयोगी है?

## 1.10 सारांश

उच्चारण शिक्षण पढ़ने के पश्चात् आप यह जान चुके हैं कि हिन्दी भाषा की लिपि देवनागरी का ध्वनितत्त्व बड़ा ही वैज्ञानिक है। यहाँ जैसा बोला जाता है, वैसा ही लिखा जाता है। शुद्ध उच्चारण के अभाव में मौखिक भाषा प्रभावहीन व अस्वाभाकिव हो जाती है। बिना उच्चारण ज्ञान के भाषा का ज्ञान नहीं हो सकता। उच्चारण बाल्यावस्था से ही बनता–बिगड़ता है। अतः उच्चारण को सुधारने हेतु बाल्यावस्था में ध्यान देना चाहिए। अगर उच्चारण अंगों में दोष है तो यथाशीघ्र ही चिकित्सा करवानी चाहिए।

बारह–खड़ी का अभ्यास करवाया जाए। अतः अन्त में कहा जा सकता है मौखिक अभिव्यक्ति को प्रभावशाली बनाने के लिए शुद्ध उच्चारण का ज्ञान आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है।

### मॉडल उत्तर

1.1 दो रूप हैं–1. मौखिक

2. लिखित

2.1 1. मनोवैज्ञानिक कारण

2. स्थानीय प्रभाव

3. शारीरिक कारण

4. अक्षरों एवं मात्राओं का अस्पष्ट ज्ञान

3.1 अल्पप्राण–महाप्राण, घोष–अघोष, स्पर्श–संघर्षों की मात्रा आदि के शिक्षा के लिए यह उपकरण बड़ा ही उपयोगी है।

3.2 शुद्ध उच्चारण की शिक्षा के लिए

## 1.11 मुख्य शब्द

1. वैयक्तिक–एक व्यक्ति का
2. सामूहिक–सभी का
3. सहवास–साथ निवास करना
4. विकृत–बिगड़ा हुआ
5. सटीक–एकदम सही, सधा हुआ

## 1.12 सन्दर्भ ग्रन्थ


1. के०के० सुखिया — हिन्दी ध्वनियाँ और उसका शिक्षण
2. नरेश मिश्र — भाषा विज्ञान 1996
3. भोलानाथ तिवारी — भाषा–विज्ञान, किताब महल, इलाहाबाद
4. भगवती प्रसाद शुक्ल — हिन्दी उच्चारण और वर्तनी, आर्य बुक डिपो, करोल बाग, नई दिल्ली
5. हरदेव बाहरी — अच्छी हिन्दी कैसे सीखें, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद

# इकाई-1

# अध्याय-8: अक्षर–विन्यास

**उद्देश्य:**

प्रस्तुत अध्याय के अध्ययन के पश्चात् छात्रों में निम्न परिवर्तन दष्टिगोचर होते हैं–

- छात्र अपने शब्दों में अक्षर–विन्यास के अर्थ बताते हैं।
- वह अक्षर–विन्यास के महत्त्व को रेखांकित करते हैं।
- छात्र अक्षर–विन्यास सम्बन्धी अशुद्धियों का प्रत्यास्मरण करते हैं।
- छात्र अशुद्धियों का कारण समझ कर उनके निराकरण के उपाय करते हैं।
- अक्षर–विन्यास के सुधार नियमों का प्रत्याभिज्ञान करते हैं।

**संरचना:**

1.1 अक्षर–विन्यास की भूमिका
1.2 अक्षर–विन्यास का अर्थ
1.3 अक्षर–विन्यास का महत्त्व
1.4 अक्षर–विन्यास की अशुद्धियाँ
1.5 अक्षर–विन्यास अशुद्धियों के कारण
1.6 अक्षर–विन्यास अशुद्धियों का निराकरण
1.7 अक्षर–विन्यास के सुधार नियम
1.8 सारांश
मॉडल उत्तर
1.9 मुख्य शब्द
1.10 सन्दर्भ ग्रन्थ

## 1.1 अक्षर-विन्यास की भूमिका

अक्षर–विन्यास अथवा वर्तनी की शुद्धता भाषा का अनिवार्य अंग है। अभिव्यक्ति में विचारों की क्रमिकता एवं सुसम्बद्धता कितनी ही सुव्यवस्थित क्यों न हो परन्तु यदि विचारों को व्यक्त करने वाली भाषा शद्ध नहीं हो तो उसका असर नगण्य होकर रह जाएगा। भाषा की शुद्धता तो मुख्यतः शुद्ध अक्षर–विन्यास पर निर्भर करती है। शुद्ध वाक्य विन्यास भी बहुत आवश्यक है, परन्तु वाक्य विन्यास का शुद्धता शुद्ध अक्षर–विन्यास पर ही निर्भर करता है। अक्षर–विन्यास हमारी लिखित अभिव्यक्ति को ही प्रभावित नहीं करता वरन् मौखिक अभिव्यक्ति को भी प्रभावित करता है।

## 1.2 अक्षर-विन्यास का अर्थ

हिन्दी भाषा देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। देवनागरी लिपि संसार की वैज्ञानिक लिपि मानी जाती है, जिसकी विशेषता यह है कि एक प्रतीक के लिए एक ही ध्वनि को व्यक्त करने की पूर्ण सामर्थ्य हैं। इसमें जैसा बोला जाना है, वैसा ही लिखा

जाता है, इस कारण इस लिपि में त्रुटियों की सम्भावना कम हो जाती हैं। आश्चर्य इस में यह है कि आज हिन्दी लिखने में सर्वाधिक अशुद्धियाँ पाई जाती है।

अक्षर–विन्यास की शिक्षा के लिए यह आवश्यक है कि अध्यापक छात्रों द्वारा की जाने वाली सामान्य त्रुटियों से परिचित होकर उन्हें यथासम्भव दूर करने का प्रयास करें।

## 1.3 अक्षर–विन्यास का महत्त्व

भाषा में अक्षर–विन्यास का अपना विशिष्ट महत्त्व है अक्षरों के स्पष्ट ज्ञान के बिना भाषा शिक्षा अधूरी है। शुद्ध अक्षरों के स्पष्ट ज्ञान के बिना भाषा शिक्षा अधूरी है। शुद्ध अक्षरों के बिना भाषा नहीं लिखी जा सकती। अक्षरों का ज्ञान स्मरण शक्ति पर आधारित है। छात्र स्मरण करके अक्षरों का ज्ञान प्राप्त करते हैं। **रायबर्न** महोदय ने शब्दों के अक्षरों को स्मरण करने के तीन ढ़ंग बताए हैं–

1. देखकर
2. सुनकर
3. क्रिया द्वारा

रायबर्न के मतानुसार "अक्षरों की सीखने की सर्वोत्तम विधि वह है जिसमें तीनों का योग हो, तीनों नहीं तो कम से कम दो विधियाँ अवश्य अपनाई जाए।"

अक्षरों का कितना महत्त्व है, इसे उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया जा रहा है **यथा- परिणाम** एवं **परिमाण,** एक अक्षर के हेर फेर से दोनों का अर्थ बदल गया। एक का अर्थ 'फल, 'निष्कर्ष' एवं 'नतीजा' हो गया। दूसरे का अर्थ 'माप' हो गया। इससे अक्षरों का महत्त्व विदित होता है। इसीलिए अक्षरों का शुद्ध ज्ञान नितान्त आवश्यक है।

1. कुछ शब्दों की वर्तनी मानक होती है। एकाधिक मानक वर्तनी की सूची बनाकर सीखने वालों के सामने प्रस्तुत उपयोगी होता है जैसे– संबंध– सम्बन्ध, आनंद–आनन्द, स्वयं–स्वयम् आदि ऐसे ही शब्द है।
2. प्रत्येक भाषा में कुछ शब्द ऐसे होते हैं जो एक से लगते हुए भी अर्थों में विभिन्नता रखते हैं जैसे कोश– **शब्दकोश** कोष – **खजाना**। जरा– **थोड़ा**– जरा – **बुढ़ापा**। **काफी – एक पेय,** काफी – **पर्याप्त**। इनकी ओर लेखन सीखने वालों के ध्यान को आकृष्ट करना चाहिए।
3. कुछ शब्द ऐसे हैं– जिनके हिन्दी में अर्थ भिन्न होते हैं और गुजराती व मराठी में उनके अर्थ अलग हो जाते हैं यथा – हिन्दी में आंगन – मराठी में आँगण, हिन्दी का मुक्का, मराठी में बुक्का। हिन्दी में जहाँ चन्द्रबिन्दु लगता है वहां मराठी में केवल बिन्दी लगती है।

   हिन्दी का 'कृपण' गुजराती में 'कुशन' और 'महल', 'महेल' हो जाता है।
4. अंग्रेजी भाषा में But 'बट' 'Put' पुट वर्तनी उच्चारण के अनुरूप नहीं है हिन्दी में जैसे बोलते 'पाणी' है लिखते 'पानी' हैं। ऐसे अनुस्तरित शब्दों की सूची बनाकर सीखने वालों के समक्ष प्रस्तुत करना विशेष उपयोगी होता है।

**अपनी प्रगति जांचिए-1**

1. रायबर्न के शब्दों के अक्षरों को याद करने के कौन से तरीके सुझाए हैं?

## 1.4 अक्षर-विन्यास की अशुद्धियाँ

(i) मात्राओं की अशुद्धि

| शुद्ध | अशुद्ध | शुद्ध | अशुद्ध |
|---|---|---|---|
| गुरु | गुरू | उनके | ऊनके |
| शिशिर | शिसीर | निशि | निसी |

(ii) **रेफ सम्बन्धी अशुद्धि**

| **शुद्ध** | **अशुद्ध** | **शुद्ध** | **अशुद्ध** |
|---|---|---|---|
| पर्चा | पर्चा | ग्रह | ग्रह |
| निर्माण | निरमाण | स्वर्ग | स्र्वग |

(iii) **संयुक्ताक्षरों की अशुद्धियां**

| **शुद्ध** | **अशुद्ध** | **शुद्ध** | **अशुद्ध** |
|---|---|---|---|
| प्रताप | परताप | वीरेन्द्र | वरीन्द्र |
| ज्ञान | ग्यान | रविन्द्र | रवीन्द्र |

(iv) **अनुनासिक एवं अनुस्वरों की अशुद्धि**

| **शुद्ध** | **अशुद्ध** | **शुद्ध** | **अशुद्ध** |
|---|---|---|---|
| हँसी | हंसी | अंक | अन्क |
| उनमें | उनमे | संस्कृति | सँस्कृति |

(v) **ह्रस्व एवं दीर्घ अनुस्वरों की भूलें**

| **शुद्ध** | **अशुद्ध** | **शुद्ध** | **अशुद्ध** |
|---|---|---|---|
| गिरि | गिरी | निशि | निसी |
| हेतु | हेतू | हिन्दी | हिन्दि |
| कवि | कवी | छवि | छवी |
| शक्ति | शक्ती | पीली | पीलि |
| नूपुर | नुपुर | उलूक | ऊलूक |

(vi) **चन्द्र बिन्दु/अनुस्वार सम्बन्धी भूलें**

| **शुद्ध** | **अशुद्ध** | **शुद्ध** | **अशुद्ध** |
|---|---|---|---|
| कंधा | कँधा | संस्कृति | सँस्कृति |
| हँसी | हंसी | प्रांत | प्राँत |

(vii) **'न' और 'ण' सम्बन्धी भूलें**

| **शुद्ध** | **अशुद्ध** | **शुद्ध** | **अशुद्ध** |
|---|---|---|---|
| कारण | कारन | गुण | गुन |
| रण | रन | शरण | शरन |

(viii) **'व' तथा 'ब' सम्बन्धी भूलें**

| **शुद्ध** | **अशुद्ध** | **शुद्ध** | **अशुद्ध** |
|---|---|---|---|
| वसंत | बसंत | वन (जंगल) | बन |
| विविध | बिबिध | विशेष | बिशेष |

(ix) **अन्य भूलें**

| **शुद्ध** | **अशुद्ध** | **शुद्ध** | **अशुद्ध** |
|---|---|---|---|
| स्नान | अस्नान | स्कूल | ईस्कूल |
| हिमालय | हिमालया | भूख | भूक |

| | | | |
|---|---|---|---|
| बुढ़ापा | बुड़ापा | ऋषि | रिसी |
| कष्ट | कश्ट | वर्षा | वर्शा |
| क्रीड़ा | कीड़ा | ऋतु | रितु |

(x) **'ठ' के स्थान पर ट लिख देना; जैसे-**

| **शुद्ध** | **अशुद्ध** | **शुद्ध** | **अशुद्ध** |
|---|---|---|---|
| षष्ट | षष्ठ | पृष्ट | पृष्ठ |
| बलिष्ट | बलिष्ठ | | |

(xi) **ऋ के स्थान पर रि लिख देना; जैसे-**

| **अशुद्ध** | **शुद्ध** | **अशुद्ध** | **शुद्ध** |
|---|---|---|---|
| रिषि | ऋषि | रितु | ऋतु |
| रिण | ऋण | | |

(xii) **ऋ की मात्रा के स्थान पर अर्ध र लिख देना अथवा इसका उल्टा कर देना; जैसे-**

| **अशुद्ध** | **शुद्ध** | **अशुद्ध** | **शुद्ध** |
|---|---|---|---|
| प्रथ्वी | पृथ्वी | पृथा | प्रथा |
| ग्रह—कार्य | गृह—कार्य | उपगृह | उपग्रह |

(xiii) **अर्द्ध र ( र्) के स्थान पर पूरा र लिख देना; जैसे-**

| **अशुद्ध** | **शुद्ध** | **अशुद्ध** | **शुद्ध** |
|---|---|---|---|
| परव | पर्व | दरपण | दर्पण |
| करकश | कर्कश | | |

(xiv) **पूरे र के स्थान पर आधा र ( र्) लिख देना; जैसे-**

| **अशुद्ध** | **शुद्ध** | **अशुद्ध** | **शुद्ध** |
|---|---|---|---|
| नर्क | नरक | गर्ल | गरल |
| गर्ल | गरल | मर्ण | मरण |

(xv) **द्य के स्थान पर ध्य अथवा ध लिख देना, जैसे-**

| **अशुद्ध** | **शुद्ध** | **अशुद्ध** | **शुद्ध** |
|---|---|---|---|
| विध्यमान | विद्यमान | विघ्यार्थी | विद्यार्थी |
| मध | मद्य | | |

(xvi) **भ के स्थान पर म लिख देना; जैसे-**

| **अशुद्ध** | **शुद्ध** | **अशुद्ध** | **शुद्ध** |
|---|---|---|---|
| मक्ति | भक्ति | तमी | तभी |
| कमी | कभी | | |

(xvii) **क्त (क्त) के स्थान पर त्त लिख देना, जैसे-**

| **अशुद्ध** | **शुद्ध** | **अशुद्ध** | **शुद्ध** |
|---|---|---|---|
| संयुत्त | संयुक्त | भत्त | भक्त |
| वियुत्त | वियुक्त | | |

(xviii)**ध के स्थान पर घ लिख देना; जैसे-**

| **अशुद्ध** | **शुद्ध** | **अशुद्ध** | **शुद्ध** |
|---|---|---|---|
| घनुष | धनुष | घैर्य | धैर्य |

(xix) **श, ष तथा स की अशुद्धि जैसे-**

| **अशुद्ध** | **शुद्ध** | **अशुद्ध** | **शुद्ध** |
|---|---|---|---|
| मनुश्यता | मनुष्यता | आकर्शक | आकर्षक |
| विसेस, विषेश, विशेस | विशेष | विसय | विषय |
| सेस | शेष | शंकट | संकट |
| शुशील | सुशील | शुशोभित्त | सुशोभित |
| कैलाश | कैलास | कोशल | कोसल |

(xx) **क्ष के स्थान पर छ लिख देना; जैसे-**

| **अशुद्ध** | **शुद्ध** | **अशुद्ध** | **शुद्ध** |
|---|---|---|---|
| लछ्मण | लक्ष्मण | छत्री | क्षत्री |
| परीच्छा | परीक्षा | छति | क्षति |
| छेत्र | क्षेत्र | छितिज | क्षितिज |
| छीर | क्षीर | छीण | क्षीण |
| मड़ना | मढ़ना | टेड़ी | टेढ़ी |

(xxi) **ण के स्थान पर ड़ लिख देना; जैसे-**

| **अशुद्ध** | **शुद्ध** | **अशुद्ध** | **शुद्ध** |
|---|---|---|---|
| गड़ित | गणित | गौड़ | गौण |
| कोड़ | कौण | गड़ना (गिनती करना) | गणना |

(xxii) **ड़ अथवा ढ़ के स्थान पर ण लिख देना, जैसे-**

| **अशुद्ध** | **शुद्ध** | **अशुद्ध** | **शुद्ध** |
|---|---|---|---|
| प्रौण | प्रौढ़ | गरुण | गरुड़ |

(xxiii)**ड़ तथा ढ़ के नीचे बिन्दी न लगाना[1]; जैसे-**

| **अशुद्ध** | **शुद्ध** | **अशुद्ध** | **शुद्ध** |
|---|---|---|---|
| गढ | गढ़ | गडना | गड़ना |
| पेड | पेड़ | गाडी | गाड़ी |

(xxiv)**ये तथा ए का अन्तर न समझना; जैसे-**

| **अशुद्ध** | **शुद्ध** | **अशुद्ध** | **शुद्ध** |
|---|---|---|---|
| चाहिये | चाहिए | लिये (परसर्ग) | लिए |

**विशेष**– क्रिया–पद के रूप 'लिये' (प्राप्त किए) शुद्ध है; यथा – राम ने मुझसे फल लिये।

**पंचम वर्ण सम्बन्धी अशुद्धियाँ**

(xxv) बहुत से विद्वान् इस पक्ष में हैं कि वर्णों (कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग तथा पवर्ग) का पंचम वर्ण ही अनुस्वार के स्थान पर प्रयुक्त किया जाय, जैसे–

| अशुद्ध | शुद्ध | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| अंक | अङ्क | पंचम | पचम |
| खंड | खण्ड | पुरंदर | पुरन्दर |

1. संस्कृत में ड, ढ के नीचे बिन्दी नहीं लगती। वहाँ जड़, नीड़, चूड़ामणि की जगह जड, नीड, चूडामणि ही लिखा जाता है।

**अपनी प्रगति जांचिए-2**

1. शुद्ध–अशुद्ध अलग–अलग कीजिए।

   1. छेत्र–क्षेत्र 2. गरूण–गरुड़ 3. विशेष–विसेस

   4. करकश–कर्कश 5. ग्यान–ज्ञान 6. नरक–नर्क

## 1.5 अक्षर-विन्यास अशुद्धियों के कारण

अक्षर सम्बन्धी अशुद्धियों के अनेक कारण है, जिनमें मुख्य निम्नांकित है–

1. अशुद्ध उच्चारण
2. लिपि का अधूरा ज्ञान
3. लिखने में शीघ्रता करना
4. लिखने में असावधानी बरतना
5. प्रान्तीयता
6. मात्राओं का ठीक से ज्ञान नहीं होना
7. शब्द लाघव प्रवत्ति
8. शारीरिक विकार
9. पुस्तकों मुद्रण सम्बन्धी अशुद्धियाँ
10. व्याकरण के नियमों के ज्ञान का अभाव
11. अन्य भाषाओं का प्रभाव
12. चन्द्र बिन्दु एवं अनुस्वार का भ्रम

## 1.6 अक्षर-विन्यास सम्बन्धी अशुद्धियों का निराकरण

1. **शुद्ध उच्चारण की शिक्षाः** रायबर्न ने लिखा है– "शुद्ध उच्चारण की शिक्षा, बालकों को शुद्ध वर्ण–विन्यास सीखने में अत्याधिक सहायता करती है।" अतः शिक्षकों को शुद्ध उच्चारण पर बल देना चाहिए।
2. **लिपि का पूर्ण ज्ञानः** हिन्दी के अक्षरों के सुधार एवं परिशुद्धता के लिए यह आवश्यक हैं कि छात्रों को लिपि का पूर्ण ज्ञान देना चाहिए 'रफ' और 'रकार' सम्बन्धी भूलों के परिष्कार के लिए लिपि का ज्ञान आवश्यक है, ताकि छात्र गह को ग्रह न लिखें, अन्यथा वह 'घर' के बदले 'नक्षत्र' लोक में पहुँच जायेगा।
3. **पढ़ने के अवसरः** अक्षरों एवं वर्णों के सुधार के लिए यह आवश्यक है कि छात्रों के पढ़ने को अधिक से अधिक अवसर दिये जाए। इससे उनका अधिकतम शब्द, अक्षरों, मात्राओं से परिचय होगा और उनका अभ्यास बढ़ेगा।
4. **लिखने के अधिक अवसरः** अधिक लिखने से छात्रों का परिचय अधिक अक्षरों एवं शब्दों से होगा। छात्रों के लिखित कार्य का संशोधन अध्यापक द्वारा सावधानीपूर्वक होना चाहिए इससे उनका वर्ण–विन्यास सुधरता है।
5. **अनुलेख, प्रतिलेख व श्रुतलेखः** छात्रों को लिखने का अभ्यास कराना अनिवार्य है। लिखना ध्यानपूर्वक होना चाहिए लिखते समय उच्चारण भी कराना चाहिए।

6. **अनुस्वार, अनुनासिक एवं चन्द्रबिन्दु का स्पष्ट ज्ञानः** छात्रों को अनुस्वरों, अनुनासिक शब्दों एवं चन्द्रबिन्दु के बारे में स्पष्ट एवं ठोस जानकारी प्रदान करनी चाहिए। क्योंकि इनसे सम्बन्धित भूलें अधिक होती हैं। अतः छात्रों से इनका निरन्तर अभ्यास कराया जाना चाहिए।
7. **विश्लेषण विधि का प्रयोगः** संयुक्ताक्षरों एवं कठिन शब्दों को सरल बनाने के लिए विश्लेषण विधि प्रयुक्त की जानी चाहिए **यथा कवयित्री** (क + व + यि + त्री), वैयक्तिक (वै + यक् + तिक्)। इससे छात्रों को अक्षर बोध होता है।
8. **शब्दकोष का प्रयोगः** छात्रों को शब्दकोष का प्रयोग करना सिखाए, ताकि कठिन शब्दों के बारे में आवश्यकता पड़ने पर उनकी जानकारी प्राप्त कर लें। इससे अक्षर का ठोस ज्ञान प्राप्त हो जाता है और भूल की सम्भावना नहीं रहती।
9. **अक्षर-विन्यास का अर्थ के साथ सम्बन्धः** केवल शब्द–ज्ञान ही पर्याप्त नहीं। अक्षरों के साथ उसका सम्बन्ध जोड़ने से छात्रों को सब–कुछ स्पष्ट हो जाता है। सब कुछ स्थायी हो जाता है।
10. **अशुद्धियों का वर्गीकरणः** अक्षरों व वर्णों की बुनियादी भूलों का वर्गीकरण कर लेना चाहिए **यथा** मात्रा सम्बन्धी अशुद्धियाँ, अल्पप्राण एवं महाप्राण सम्बन्धी अशुद्धियां, रेफ सम्बन्धी अशुद्धियाँ आदि। वर्गीकरण करने पर कक्षा के छात्रों के समक्ष श्यामपट्ट पर इन अशुद्धियों को क्रमशः विधिवत समझाना चाहिए।
11. **खेल द्वारा शिक्षणः** खेल द्वारा शिक्षण के माध्यम से शिक्षक अक्षर–विन्यास कर सकता है। इस सन्दर्भ में निम्न विधियों का सहारा लेना चाहिए–
    (i) अक्षरों की लिखित प्रतियोगिता करानी चाहिए।
    (ii) शब्द–विन्यास प्रतियोगिता छात्रों को दलों में बाँट कर करानी चाहिए।
    (iii) रिक्त स्थानों की पूर्ति कराए।
    (iv) निरर्थक शब्दों से सार्थक शब्द बनवाएं।
    (v) श्यामपट्ट पर शब्दों की प्रतियोगिता कराई जाए।
    (vi) रचना सम्बन्धी प्रतियोगिता कराई जाए

    उपरोक्त तरीकों से वर्तनी में सुधार किया जा सकता है।

## 1.7 अक्षर-विन्यास के सुधार नियम

1. जिन शब्दों के अन्त में 'ए' अथवा 'ये' आयेगा; उससे पूर्व आने वाली ह्रस्व होगी जैसे– पीजिए, दीजिए, जाईये आदि।
2. जिन शब्दों के अन्त में 'का' आयेगा उनसे पूर्व आने वाली 'इ' ह्रस्व होगी। **यथाः-** चन्द्रिका, मुद्रिका, गायिका आदि।
3. जिन शब्दों के अन्त में 'ल' होगा, उससे पूर्व आने वाली 'इ' ह्रस्व हो जायेगी। जैसे– धूमिल, कुटिल आदि।
4. जिन शब्दों के अन्त में 'ओं' आयेगा, उससे पूर्व आने वाला 'उ' ह्रस्व होगा। जैसे– शत्रुओं, हिन्दुओं आदि।
5. जिन शब्दों के आदि वर्ण पर ' ँ ' हो उसमें दीर्घ ' ऊ ' की मात्रा लगेगी। जैसे मूँगफली, मूँछ, गूँज इत्यादि।
6. जिन शब्दों के अन्त में 'ए' आयेगा उसके पूर्व आने वाला 'उ' ह्रस्व होगा जैसे– बहुएं, वस्तुएं आदि।

## 1.8 सारांश

यह तो आप जान चुके हेंकि वर्तनी की शुद्धता भाषा का जरूरी अंग है। अक्षर–विन्यास केवल लिखित अभिव्यक्ति को ही प्रभावित नहीं करता अपितु मौखिक अभिव्यक्ति को भी प्रभावित करता है, क्योंकि अशुद्ध वर्तनी सेहमारा उच्चारण भी अशुद्ध हो जाता है। अशुद्ध लिखना जहाँ उच्चारण को अशुद्ध बना देता है, वही उसके भी अर्थ को भी परिवर्तित कर देता है यथा सामान को समान कहें। सम्मान को समान कहें तो अर्थ का अनर्थ हो जाता है। हम कई प्रकार की अशुद्धियां करते हैं, मात्राओं की अशुद्धि रेक की अशुद्धि, संयक्ताक्षरों र, रि ऋ, अनुनासिक, अनुस्वार इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ठ, ट व, ब, श, ष, अल्पप्राण और महाप्राण की स्वर लोप, स्वरागम, वर्ण लोप की अशुद्धियां मुख्य है। जो हमारी अभिव्यक्ति, मौखिक व लिखित दोनों को प्रभावित करती है। अतः इसके लिए ऊपर बनाए गए वर्तनी सुधार के नियमों को प्रयोग में लाना होगा।

**मॉडल उत्तर**

1.1 देखकर

1.2 सुनकर

1.3 क्रिया द्वारा

2.1 क्षेत्र

2.2 गरुड़

2.3 विशेष

2.4 कर्कश

2.5 ज्ञान

2.6 नरक

## 1.9 मुख्य शब्द

जरा–थोड़ा सा, बुढ़ापा

कोश–खजाना, शब्दकोश

## 1.10 सन्दर्भ ग्रन्थ


| | | |
|---|---|---|
| 1. | अनन्त चौधरी | नागरी लिपि और हिन्दी वर्तनी, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना |
| 2. | के०के० सुखिया | हिन्दी ध्वनियाँ और उनका शिक्षण, रामनारायण लाल पब्लिकेशन्ज, इलाहाबाद |
| 3. | जयनारायण कौशिक | शुद्ध हिन्दी लेखन, आर्य बुक डिपो, करोल बाग, नई दिल्ली |
| 4. | नरेश मिश्र | भाषा विज्ञान |
| 5. | भोलानाथ तिवारी | भाषा विज्ञान, किताब महल, इलाहाबाद |
| 6. | Mohrmann Chiristine | Trends in Modern Linguestions |
| 7. | Zwirmer E Strenvens | New Trends in Linguistic Research, stransbourg,1963 |

# इकाई-1

# अध्याय-9: विराम–चिन्ह

**उद्देश्यः**

प्रस्तुत पाठ के अध्ययन के फलस्वरूप छात्रों में निम्न अपेक्षित परिवर्तन होते हैं–

- छात्र वाचन करते समय विराम चिन्ह के अर्थ महत्त्व को समझते हैं और विराम चिन्हों के अनुसार वाचन करते हैं।
- छात्र विराम चिन्हों के प्रकार को प्रत्यास्मरण करते हैं।
- छात्र विराम–चिन्हों के प्रयोग को वाचन करने एवं लिखने में समाविष्ट करते हैं।

**संरचनाः**

1.1 भूमिका
1.2 विराम चिन्ह का अर्थ
1.3 विराम चिन्ह के प्रकार
1.4 विराम चिन्ह के प्रयोग
1.5 सारांश
मॉडल उत्तर
1.6 मुख्य शब्द
1.7 सन्दर्भ ग्रन्थ

## 1.1 भूमिका

पठन करते समय गति, प्रवाह व स्पष्टता लाने हेतु कुछ नियमों का पालन किया जाता है, अगर हम उन नियमों का पालन ना करें तो अर्थ का अनर्थ हो जाता है। हमें कब, कहां, और कैसे बोलना है ताकि हमारी भाषा व मनोभाव व विचार ठीक तरह से सम्प्रेषणीय हो इसके लिए विराम चिन्हों का प्रयोग करना पड़ता हैं यथा–हम किसी को रोके रखना चाहते हैं परन्तु उच्चारित ऐसे करते हैं, रोको मत, जाने दो ठीक उच्चारित करने के लिए रोको, मत जाने दो ऊपर वाला वाक्य अर्थ को अनर्थ कर रहा है।

## 1.2 विराम चिन्ह का अर्थ

बोलते, पढ़ते या लिखते समय हमें रूकने की आवश्यकता होती है– कभी श्वास लेने के लिए तो कभी अर्थ बोध के लिए। इस रूकने को विराम कहते हैं। अर्थ बोध के लिए जहाँ हम रूकते हैं वहां विराम–चिन्हों का प्रयोग किया जाता है। विराम–चिन्हों के प्रयोग से अर्थ में स्पष्टता आती है, उच्चारण में सुविधा मिलती है। हिन्दी भाषा–शिक्षण में निम्न विराम चिन्हों का प्रयोग किया जाता है।

## 1.3 विराम चिन्ह के प्रकार

1. **पूर्ण विरामः** प्रत्येक वाक्य की समाप्ति पर पूर्ण विराम ( । ) लगाया जाता है– यथा 'राम दिल्ली जाता है।'
2. **अल्पविरामः** जहाँ भावभिव्यक्ति करते समय बहुत कम रूकना पड़ता है, वहाँ अल्प विराम ( , ) लगाया जाता है– 'मोहन, सोहन दोनों एक कक्षा में पढ़ते हैं।'

   राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुधन राजा दशरथ के पुत्र थे।

3. **अर्द्ध विरामः** जहाँ अल्पविराम से अधिक और पूर्ण विराम से कम रूकना पड़े वहाँ अर्द्ध विराम ( ; ) का प्रयोग होता है। इसका प्रयोग उदाहरण सूचक 'जैसे' शब्द से पूर्व प्रायः किया जाता है– "कोई शब्द व्यक्ति, वस्तु या स्थान आदि का बोध कराए उसे संज्ञा कहते हैं; जैसे – राम, मोहन, पुस्तक, दिल्ली आदि।"

4. **प्रश्न सूचक विरामः** प्रश्नसूचक (?) वाक्य के अन्त में प्रयुक्त होता है। यथा "क्या तुम कल विद्यालय गये थे?"

5. **विस्मयादि बोधकः** हर्ष, विषाद, घणा, आश्चर्य, भय, चिन्ता प्रकट करने वाले वाक्यों या वाक्यांशों के अन्त में वाह! बहुत सुन्दर लड़की है। विस्मयः ऐ! वह फेल हो गया।

   किसी व्यक्ति विशेष को सम्बोधित किया जाता है, उसमें विस्मयादि बोधक! लगता है– सुनीता! इधर आओ!

6. **अपूर्ण विरामः** किसी बात या उक्ति को अलग करके बताना हो तब अपूर्ण विराम ( : ) का चिन्ह लगाया जाता है– उदारणार्थ 'किसी ने ठीक कहा हैः 'पराधीन सपनेहु सुख नाहीं।'

7. **रेखिकाः** शीर्षक या उपशीर्षक के आगे रेखिका का प्रयोग होता है– यथा – अध्यापक ने कहा– बच्चों, खेलने के लिए बाहर मैदान में चलो!

   किसी अवतरण को उद्घत करते समय लेखक के नाम से पूर्व। – यथा –

   **'नारी तुम केवल श्रद्धा हो।'' प्रसाद जी।**

8. **द्वि-बिन्दु रेखिकाः** किसी बात को समझाने के लिए क्या कोई उदाहरण देना हो तो द्वि–बिन्दु (:–) रेखिका का प्रयोग करते हैं। उदाहरणार्थः– 'जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता का बोध कराए, उसे विशेषण कहते हैं।

   जैसेः– कोयल काली है

   आम पीला है

   फूल लाल है

9. **योजक एवं विभाजकः** युग्म रूप में जिन शब्दों का प्रयोग हो यथा धीरे–धीरे, जल्दी–जल्दी जहाँ शब्दों को जोड़ा जाए यथा माता–पिता, भाई–बहन, राजा–प्रजा।

10. **संक्षेपकः** किसी व्यक्ति, वस्तु या संगठन के नाम को संक्षेप में लिखने के लिए संक्षेपक ( 0 ) का प्रयोग होता है–

    यथा उत्तर प्रदेश–उ0 प्र0

    आचार्य रामचन्द्र शुक्ल–आ0 रा0 शु0

    अटल बिहारी वाजपेयी–अ0वि0वा0

11. **त्रुटिपूरक या हंस पदः** लिखते समय जब कोई पद छूट जाता है, तब उसके उचित स्थान यह चिन्ह (^) लगाकर छुटा हुआ अंश ऊपर लिख दिया जाता है यथा 'रमा ने अपने भाई को पत्र लिखा।'

12. **अवतरण चिन्हः** लेखक या कवि का कथन उसी के शब्दों में उद्घत करने में अवतरण चिन्ह (" ") का प्रयोग होता है– तिलक ने कहा – "स्वतंत्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है।"

    सुभाष ने कहा–''तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा।''

13. **कोष्ठकः** इस में वह सामग्री जो वाक्य का अंग नहीं होती एवं नाम इत्यादि को स्पष्ट करने के लिए कोष्ठक चिन्ह ( ) का प्रयोग किया जाता है।

    तथागत (भगवान बुद्ध) के उपदेश मानने योग्य है।

    बापू (महात्मा गांधी) ने सदैव सत्य व अहिंसा का पालन किया।

14. **इति श्रीः** इस चिन्ह का ( – 0 – ) प्रयोग किसी लेख या रचना के अन्त में किया जाता है।

## अपनी प्रगति जांचिए-1

1. विराम चिन्ह का क्या अर्थ है?

2. पूर्ण विराम किसे कहते हैं व उस का प्रयोग कहां होता है?
3. विस्यमादि बोधक क्या है?

## 1.5 सारांश

बच्चों! अब तक तो आप समझ चुके होंगे कि विराम चिन्हों के बगैर हम शुद्ध, परिमार्जित भाषा की कल्पना नहीं कर सकते। लिखित भाषा, मौखिक भाषा दोनों के ही प्रयोग में हम विराम चिन्हों के बगैर अनेकों गलती करके अर्थ का अनर्थ करेंगे। शुद्धता, स्पष्टता लाने हेतु भी विराम चिन्हों का प्रयोग आवश्यक है।

**मॉडल उत्तर**

1. जब पहले रूकते हैं, श्वास लेने के लिए या अर्थ बोध के लिए, अर्थ की स्पष्टता हेतु। वहां विराम चिन्हों का प्रयोग किया जाता है।
2. पंक्ति पूरी होने के पश्चात् अर्थ बोध हेतु जो चिन्ह (अंकित) लगाया जाता है (।) उसे पूर्ण विराम कहते हैं।

   यथा–राम एक होनहार लड़का है।

   श्याम आज दिल्ली गया।
3. विस्यमादि बोधक का अर्थ है जहां हम कोई आश्चर्य व्यक्त करें, या जैसा हम सोचे, उसके विपरीत फल मिले तो विस्यमादि होता है और उसका चिन्ह (!) है।

   हाय! वह मर गया।

   ऐ! राम को गोल्ड मेडल मिला है।

## 1.6 शब्दावली

1. **विराम**–1. विश्राम 2. अटकाव
2. **कोष्ठक**–1. ब्रैकेट 2. छोटा कोठा
3. **योजक एवं विभाजक**–जोड़ना एवं अलग करना

## 1.7 सन्दर्भ ग्रन्थ

1. उमा मंगल हिन्दी शिक्षण, आर्य बुक डिपो, करोल बाग, नई दिल्ली 2003
2. बाबू राम सक्सेना सामान्य भाषा विज्ञान
3. रमन बिहारी लाल हिन्दी शिक्षण, रस्तोगी पब्लिकेशन्ज मेरठ।

# इकाई–2

# अध्याय-12: अनुदेशनात्मक सामग्री

## दश्य एवं श्रव्य साधन एवं हिन्दी शिक्षण

**उद्देश्यः**

प्रस्तुत पाठ को पढ़ने के बाद छात्रों में निम्न परिवर्तन दष्टिगोचर होते हैं।

- सहायक सामग्री का अर्थ एवं महत्त्व को वह भली प्रकार जानते हैं।
- सहायक सामग्री का विभाजन करते हैं।
- सहायक सामग्री के प्रयोग एवं उपयोगिता को छात्र भली प्रकार समझते हैं।
- शिक्षक द्वारा बरती गई सावधानियों का प्रत्याभिज्ञान करते हैं।

**संरचनाः**

2.1 अनुदेशनात्मक सामग्री की आवश्यकता एवं महत्त्व
2.2 अनुदेशनात्मक सामग्री का विभाजन
2.3 अनुदेशनात्मक सामग्री का प्रयोग एवं उपयोगिता
2.4 अनुदेशनात्मक सामग्री और हिन्दी शिक्षक
2.5 अनुदेशनात्मक सामग्री के प्रयोग में सावधानी
2.6 सारांश
मॉडल उत्तर
2.7 मुख्य शब्द
2.8 सन्दर्भ ग्रन्थ

## 2.1 आवश्यकता एवं महत्व

आधुनिक युग विज्ञान का युग है। अर्वाचीन काल में विज्ञान के महत्त्व को सभी स्वीकारते हैं। विज्ञान ने समाज के प्रत्येक पक्ष को प्रभावित किया है, तो शिक्षण उससे अछूता रहेगा, ऐसी कल्पना हम नहीं कर सकते।

दश्य–श्रव्य साधनों को हम **'श्रवण नेत्रोपकरण'** के नाम से भी जानते हैं।

प्रोफेसर वैबर के मतानुसार 40% ज्ञान हम आँखों के अनुभव से 25% श्रवण के माध्यम से 17% स्पर्श के द्वारा प्राप्त करते हैं। अतः सिद्ध होता है कि श्रव्य व दश्य साधनों के द्वारा हम अधिकाधिक ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

प्यारे छात्रो। भाषा–शिक्षण में दश्य–श्रव्य साधनों का प्रयोग करके हम शिक्षण को सरस रूचिकर ग्राह्य, बोधगम्य एवं प्रभावशाली व प्रेरक बना देते हैं।

## 2.2 अनुदेशनात्मक सामग्री का विभाजन

प्यारे बच्चों! अनुदेशनात्मक सामग्री को हम मुख्यतः तीन भागों में विभाजित कर सकते हैं–

1. **दश्य साधनः** दश्य का अर्थ है, देखने योग्य। इसका अभिप्राय यह हुआ कि ये वे उपकरण है, जिन्हें छात्र देख सकते हैं। इसका सम्बन्ध नेत्रों से है। श्यामपट्ट, चित्र, मानचित्र, मूकचित्र, चित्र विस्तारक यन्त्र आदि।

2. **श्रव्य साधनः** इनका सम्बन्ध श्रवणेन्द्रिय (कानों) से है। इन्हें श्रवण कर छात्र ज्ञान प्राप्त करते हैं। मुख्य उपकरण यह है– रेडियो, ग्रामोफोन, टेलीफोन, टेप रिकार्ड आदि।

3. **दश्य-श्रव्य उपकरणः** इन उपकरणों का सम्बन्ध छात्रों की आँखों एवं कानों दोनों से है। इसमें दश्येन्द्रिय एवं श्रवणेन्द्रिय दोनों का एक साथ प्रयोग करके छात्र ज्ञान प्राप्त करते हैं। यह उपकरण इस प्रकार है– टेलीविजन चलचित्र, नाटक इत्यादि।

## 2.3 अनुदेशनात्मक साधन एवं उनकी हिन्दी शिक्षण में उपयोगिता

आज के वैज्ञानिक युग में शिक्षण केवल मात्र पाठ्य–पुस्तकों पर आधारित नहीं है। उनका शिक्षण करते समय अनेक सहायक साधनों का प्रयोग किया जाता है ताकि शिक्षण सरस सहज ग्राह्य हो जाये। अतः छात्रों अब यह बताना जरूरी हो जाता है कि वह साधन कौन–कौन से है। अनुदेशनात्मक सामग्री के प्रयोग से जुड़ी कतिपय महत्त्वपूर्ण जानकारी अग्रलिखित है।

1. **श्यामपट्टः** श्यामपट्ट के बगैर हिन्दी–शिक्षण की कल्पना नहीं की जा सकती है। हिन्दी–शिक्षण में शब्दों के उच्चारण, स्पष्टीकरण, विषय को रूचिकर बनाने, कठिन अंशों को सरल करने, लिखावट में सुधार लाने, व्याकरण शिक्षण में परिभाषा लिखने उदाहरण बताने अभ्यासार्थ प्रश्न देने में श्यामपट्ट की आवश्यकता होती है।

   (P.C. Wren) पी0 सी0 रेन के मतानुसार– "चित्र की अपेक्षा श्यामपटांकित तथ्य एक उत्तम व बेहतर उपकरण है।"

2. **सूचनापटः** बुलेटिन बोर्ड या सूचनापट के द्वारा छात्रों को राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, साहित्यिक व समसामयिक आदि पक्षों की जानकारी से सम्बन्धित सूचना दी जाती है। साथ यह बात भी ध्यान में रखने योग्य है कि सूचनापट की सूचनाएँ छात्रों की रूचि प्रवत्ति व योग्यता के अनुरूप होनी चाहिए।

3. **चित्रः** प्यारे बच्चों! अनुदेशनात्मक सामग्री के तहत अगला साधन चार्ट या चित्र है। सूक्ष्म व अमूर्त तथ्यों को सहजग्राह्य एवं सम्प्रेषणीय बनाने के लिए चित्रों व चार्ट की भूमिका सराहनीय है। हिन्दी–शिक्षण में गद्य एवं पद्य का शिक्षण करते हुए प्राकृतिक दश्यों साहित्यकारों के चित्रों से अधिक सहायक और कुछ नहीं हो सकता। बच्चो ध्यान रहे। चित्र रंगीन, आकर्षक व आकार में बड़े होने चाहिए।

4. **मानचित्रः** ऐतिहासिक, भौगोलिक वैज्ञानिक आदि पक्षों के स्पष्टीकरण के लिए मानचित्र सर्वथा उपयोगी है। उदाहरणार्थ हिन्दी शिक्षण में **'सतपुड़ा के जंगल'** नामक कविता का शिक्षण करवाते समय शिक्षक मानचित्र की सहायता से 'सतपुड़ा के जंगलों' को दर्शा कर छात्रों के अधिगम को प्रभावशाली व बोधगम्य कर सकता है।

5. **मॉडलः** माण्टेसरी व अन्य शिक्षण पद्धतियों में नमूनों (मॉडलों) का महत्त्वपूर्ण स्थान है। उदाहरणार्थ कक्षा में **'भाखड़ा बाँध'** के बारे में पढ़ाना हो तो शिक्षण को रूचिकर बनाने हेतु 'भाखड़ा बाँध' का मॉडल कक्षा में लाकर दिखाया जा सकता है। जबकि भाखड़ा बाँध दिखाने हेतु, शैक्षिक भ्रमण आयोजित करना व्यय साध्य व समय साध्य होगा, जोकि तर्क संगत नहीं है।

6. **प्रक्षेपण** (Projector) (चित्र दर्शक) प्रक्षेपण के माध्यम से स्लाइड के द्वारा चित्र प्रभावशाली ढ़ंग से छात्रों को दिखाए जा सकते हैं। फिल्म स्ट्रिप प्रोजेक्टर पर चित्रों को बड़ा करके परदे पर दिखाने से छात्र आकृष्ट होते हैं।

7. **चित्र विस्तारक यंत्रः** बच्चो! अनुदेशनात्मक सामग्री का अन्य सहायक साधन चित्र विस्तारक यंत्र है चित्र विस्तारक यंत्र में बिना स्लाइडस के छपी आकृति चित्र मानचित्र, पुस्तक के पष्ठ, पांडुलिपियों के पष्ठ दिखाये जा सकते हैं।

8. **नाटकः** नाटक दश्य एवं श्रव्य दोनों प्रकार की विद्या है। नाटक के रंगमंच पर अभिनीत कर पाठकों, दर्शकों व अनपढ़ या जनसाधारण के लिए भी ग्राह्य एवं सम्प्रेषणीय बनाया जा सकता है। छात्रों को नाटक देखने के पश्चात् हाव, भाव, उतार चढ़ाव, भाषा में संवाद अदायगी, शुद्ध उच्चारण की शिक्षा प्राप्त होगी।

**अपनी प्रगति जांचिए-1**

1. दश्य–श्रव्य स ामग्री से आप का क्या अभिप्राय है?

2. अनुदेशनात्मक सामग्री का विभाजन आप कैसे करेंगे।

प्यारे बच्चो आगे दी जा रही अनुदेशनात्मक सामग्री को हम 'प्रौद्योगिकी' (हार्डवेयर) के अन्तर्गत समाविष्ट करते हैं। क्योंकि इनका सम्बन्ध तकनीकी विज्ञान से है। वे निम्नांकित है।

1. **ग्रामोफोनः** बच्चो! हिन्दी, शिक्षण में ग्रामोफोन बड़ा ही उपयोगी है। छात्र इन्हें सुनकर कविता, कहानी को याद कर लेते हैं एवं उच्चारण को शुद्ध कर लेते हैं।
2. **लिंग्वाफोनः** विदेशों में लिंग्वाफोन के माध्यम से भाषा–शिक्षण कार्य चल रहा है। शुद्ध उच्चारण एवं वाचन के लिए इससे उपयोगी साधन कोई नहीं है कविता पाठ, अनुकरण पाठ के लिए यह साधन सर्वाधिक आकर्षक है।
3. **रेडियोः** बच्चो, यह तो आप जानते ही हैं कि विज्ञान में आजकल रेडियो की उपयोगिता बढ़ रही है। उच्चारण, व्याकरण, गद्य, पद्य आदि के नित्यप्रति कार्यक्रम रेडियों के द्वारा प्रस्तुत किए जा रहे हैं। रेडियो पर साहित्यकारों, शिक्षाविदों व कवियों की वार्ता (प्रस्तुत) सीधी सुनवाई जाती है। विशेष कक्षा शिक्षण कार्यक्रम के भी रेडियो पर सीधे प्रसारित किये जाते हैं।

### दूरदर्शन

दूरदर्शन पर शिक्षा–सम्बन्धी अनेक प्रभावशाली कार्यक्रम दिखाये जाते हैं। आजकल बच्चों, बुढ़ों, व किशोरों व प्रौढ़ों के लिए सभी प्रकार के प्रोग्राम पेश कर रहा है। Animal Planet, National Geography, Discovery आदि।

### चलचित्र

प्यारे छात्रो! अनुदेशनात्मक सामग्री में हम चलचित्र को भी समायोजित करते हैं। चलचित्र द्वारा छात्रों की श्रवणन्द्रिय एवं दश्येन्द्रिय दोनों का सम्यक् विकास होता है। डाक्यूमेंट्री फिल्में छात्रों के ज्ञान व धर्म के लिए बनाई जाती है।

### टेपरिकार्डर

छात्रों! भाषा शिक्षण के लिए टेपरिकार्डर एक उपयोगी उपकरण है। लब्ध प्रतिष्ठत विद्वानों वे साहित्यकारों की वार्ता रिकार्ड कर के टेपरिकार्डर पर सुनवा कर छात्रों के उच्चारण को शुद्ध किया जा सकता है। कविता, कहानी को रिकार्ड कर छात्रों को सुनाया जाये। वार्ता, कविता, कहानी के एक बार रिकार्ड करने के पश्चात् यह हजारों बार के लिए स्थायी हो जाता है।

**अपनी प्रगति जांचिए-2**

1. दूरदर्शन पर दिखाए जाने वाले कार्यक्रमों का क्या महत्त्व है? बताइये
2. लिंग्वाफोन से आप क्या समझते हैं?

## 2.4 हिन्दी शिक्षक एवं अनुदेशनात्मक सामग्री

प्यारे विद्यार्थियो! हिन्दी शिक्षण अनुदेशनात्मक सामग्री की सहायता से हिन्दी साहित्य एवं भाषा का ठोस ज्ञान छात्रों को दे सकता है। भाषा, भावों एवं विचारों को व्यक्त करती है। लेकिन अनुदेशनात्मक सामग्री इन भावों एवं विचारों के सूक्ष्म स्वरूप को ठोस बनाती है। सरस, सरल व रूचिकर बनाती है।

अतः अनुदेशनात्मक सामग्री को प्रयुक्त करते वक्त शिक्षक को अग्रांकित बातें ध्यान में रखनी चाहिए।

1. शिक्षक को ठोस जानकारी हो, तभी इन साधनों का प्रयोग करें।
2. शिक्षक मनोविज्ञान का ज्ञाता हो।
3. अध्यापक छात्रों के अधिगम को प्रभावशाली बनाने के लिए एक समय में कई साधनों का प्रयोग नहीं करे।
4. उपकरणों के चयन में शिक्षक पर्याप्त सावधानी बरतें।
5. शिक्षक को यह महत्त्वपूर्ण तथ्य ध्यान में रखना होगा कि उपकरण साधन है, साध्य नहीं।

## 2.5 अनुदेशनात्मक सामग्री के प्रयोग में सावधानी

कहना समीचीन होगा कि अनुदेशनात्मक सामग्री का प्रयोग करते वक्त शिक्षक को कुछेक बातों का ध्यान रखना होगा।

1. **उपयुक्त स्थानः** अनुदेशनात्मक सामग्री का प्रयोग वातावरण एवं परिस्थिति के अनुसार सही स्थान पर होना चाहिए।
2. **उचित तैयारीः** सहायक–सामग्री के प्रयोग में अति शीघ्रता नहीं करनी चाहिए क्योंकि शीघ्रता में उद्देश्य पूर्ण नहीं होता। सामग्री का प्रयोग पूर्ण तैयारी के आधार पर सटीक होना चाहिए।
3. **उचित प्रयोगः** अनुदेशनात्मक सामग्री का प्रयोग उचित ढंग से होना चाहिए। यूनेस्को के प्रकाशन 'टीचिंग ऑफ माडर्न लेंग्वेंज' में लिखा है कि शिक्षक के लिए किसी सहायक साधन को गलत और बुरी तरह प्रयोग करने से अच्छा उसे प्रयोग नहीं करना अच्छा है।
4. **उचित सुरक्षाः** प्रायः दश्य–श्रव्य उपकरण मूल्यवान होते हैं, अतः उनकी उचित सुरक्षा आवश्यक है।

## 2.6 सारांश

यह तो आप जान एवं समझ चुके होंगे कि शिक्षण को सरल, ग्राह्य एवं प्रभावशाली बनाने हेतु अगरहम कुछ अनुदेशनात्मक सामग्री का इस्तेमाल करें तो शिक्षण अवश्य ही ग्राह्य रुचिकर एवं ज्ञानवर्धक होगा दश्य श्रव्य साधन से शिक्षण कार्य में कक्षा–कक्ष की अनेक समस्याएँ स्वतः ही समाप्त हो जाती है क्योंकि छात्रों की एक से अधिक इन्द्रिय क्रियाशील होती है, तभी इस को 'श्रवणनेत्रोपरकण' से भी अभिहित किया गया है।

दश्य–सामग्री के अन्तर्गत चार्ट, चित्र, मानचित्र, श्यामपट्ट बुलेटिन बोर्ड, फ्लैनल बोर्ड, मॉडल इत्यादि आते हैं। जिन्हें हम साफ्टवेयर के अन्तर्गत भी रखते हैं। रेडियो, लिंग्वाफोन, दूरदर्शन, चल–चित्र, टेपरिकार्डर, कम्प्यूटर यह दश्य–श्रव्य सामग्री के अन्तर्गत समाविष्ट हैं, जिन्हें तकनीकी या प्रौद्योगिकी के आधार पर रख सकते हैं।

कहना समीचीन (उचित) है शिक्षक को इन का प्रयोग करते वक्त सावधानी रखनी होगी। जैसा कि उसे (इन) दश्य–श्रव्य सामग्री का उचित प्रयोग करना आना चाहिए। सुरक्षा की दष्टि से भी इन उपकरणों का रख–रखाव अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि दश्य–श्रव्य उपकरण मूल्यवान होते हैं।

### मॉडल उत्तर

1. इसका अभिप्राय यह है कि यह शिक्षण को सरस, सरल व रूचिकर बनाती है।

1.2. इस सामग्री का विभाजन हम जतन प्रकार से करते हैं।

   1. **दश्य साधन**– दश्य का अर्थ है देखने योग्य, चार्ट, चित्र, मानचित्र, श्यामपट्ट, बुलेटिन बोर्ड आदि इसके अन्तर्गत हैं।
   2. **श्रव्य साधन**–जिस का सम्बन्ध सुनने से है यथा, ग्रामोफोन, रेडियो, टेपरिकार्डर आदि।
   3. **दश्य-श्रव्य**– जिसका सम्बन्ध देखने, सुनने दोनों से है नाटक, चलचित्र, दूरदर्शन, कम्प्यूटर आदि इसी श्रेणी में आते हैं।

2.1 दूरदर्शन पर दिखाये जाने वाले कार्यक्रम, रोचक, ज्ञानवर्द्धक होते हैं, हिनमें हम नेशनल ज्योग्राफी, डिस्कवरी, नीमल प्लेनेट को शामिल कर रहे हैं।

2.2 लिंग्वाफोन की सहायता से भाषा शिक्षण का कार्यक्रम विदेशों में अत्यन्त लोकप्रिय हो रहा है। कविता पाठ व अनुकरण पाठ के लिए यह सर्वाधिक उपयुक्त साधन है।

## 2.7 मुख्य शब्द

1. **मॉडल**—किसी बड़ी वस्तु का छोटा प्रतिरूप
2. **अग्रलिखित**—जो आगे लिखा गया है।
3. **अर्वाचीन**—आधुनिक जो अब हो रहा है।
4. **टेपरिकार्डर**—एक ऐसा मशीनी यंत्र, जिस पर टेप रख कर प्रत्येक सहायक—सामग्री को सुरक्षित रखा जाए।

## 2.8 सन्दर्भ ग्रन्थ


1. केशव प्रसाद — हिन्दी शिक्षण, धनपत राय एण्ड सन्स नई सड़क, दिल्ली—6, 1995
2. उमा मंगल (डॉ०) — हिन्दी शिक्षण, आर्य बुक डिपो, करोल बाग 2003
3. विजय सूद — हिन्दी शिक्षण विधियां, टण्डन पब्लिकेशन्ज 1995

# इकाई–3
# हिन्दी की विभिन्न विधाओं का शिक्षण

# अध्याय-13: कविता शिक्षण

**उद्देश्यः**

- प्रस्तुत पाठ को पढ़ने के पश्चात् प्रिय छात्रों आप काव्य क्या है, के बारे में बता सकेंगे।
- कविता के अर्थ एवं परिभाषा को अपने शब्दों में बता सकेंगे।
- कविता के तत्त्व जान सकेंगे।
- कविता के रस पाठ एवं बोध पाठ में अन्तर भली–भाँति समझ सकने में समर्थ होंगे।
- कविता शिक्षण के उद्देश्यों के द्वारा उनके व्यवहार मे अपेक्षित परिवर्तन हो सकेंगी।
- कविता–शिक्षण प्रणालियाँ का प्रत्यास्मरण कर सकेंगे।
- छात्र कविता शिक्षण के सोपानों का प्रत्यास्मरण करते हैं।
- छात्रों की कविता में रूचि जागत करने के लिए शिक्षक उन्हें कविताएं कण्ठस्थ कराता है।

**संरचनाः**

3.1 कविता क्या है व भूमिका
3.2 कविता अर्थ एवं परिभाषा
3.3 कविता तत्त्व रसपाठ एवं बोध पाठ में अन्तर
3.4 कविता की शिक्षण प्रणाली
3.5 कविता शिक्षण सोपान
3.6 कविता में अभिरूचि जागत करना
3.7 सारांश
मॉडल उत्तर
3.8 मुख्य शब्द
3.9 सन्दर्भ ग्रन्थ

## 3.1 भूमिका

कविता क्या है– हिन्दी में काव्य, पद्य और कविता के पर्यायवाची शब्दों के रूप में प्रयोग किए जाते हैं, पर इनमें थोड़ा भेद होता है। काव्य शब्द संस्कृत भाषा का अपना शब्द है और उसमें इस शब्द का प्रयोग साहित्य के लिए होता है संस्कृत में साहित्य के दो भेद किए गए है– पद्य काव्य और गद्य काव्य/पद्य का अर्थ छन्दोबद्ध रचना से होता है। पद्य से कविता उस अर्थ में भिन्न होती है कि कविता छन्दोबद्ध हो सकती है और छन्द रहित भी। एक अन्य काव्य भी है जिसे 'चम्पू' काव्य कहते हैं। इस में गद्य और पद्य दोनों शामिल होते हैं।

## 3.2 कविता का अर्थ एवं परिभाषा

मनुष्य संवेदनशील एवं चेतना सम्पन्न प्राणी है। इसका मन प्रकृति में प्रतिफल होने वाले सौम्य, मनोरम एवं विकराल परिवर्तनों से भी भाव ग्रहण करता है, आस–पास होने वाले दुःख–सुख, आशा–निराशा, प्रेम–घणा, दया–क्रोध से चलायमान रहता है। मनुष्य की इसी प्रवत्ति की प्रेरणा से ज्ञान एवं आनन्द के उस भण्डार का सजन, संचय एवं संवर्द्धन होता रहा है। जिसे साहित्य कहते हैं। उसी साहित्य का एक अंग कविता है। सुख–दुःख की भावावेशमयी अवस्था का स्वर–साधना के उपयुक्त पदों में प्रकाशन ही कविता है।

कविता को अनेक भारतीय एवं पश्चिमी विद्वानों ने परिभाषित करने का प्रयास किया है।

आचार्य कुन्तक ने 'वक्रोक्ति काव्यजीवितम्' कहकर कविता को परिभाषित किया है, वहीं दूसरी तरफ आचार्य वामन ने रीतिरात्मा काव्यस्य' कहकर अर्थात् रीति के अनुसार रचना ही काव्य है,

आचार्य विश्वनाथ 'वाक्यम् रसात्मकम् काव्यम्' अर्थात् रस युक्त वाक्य ही काव्य है, कह कर परिभाषित किया है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार "जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञानदशा कहलाती है, हृदय की इसी मुक्ति साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द–विधान करती आई है, उसे कविता कहते है।"

मैथ्यू आर्नोल्ड के अनुसार– "कविता के मूल में जीवन की आलोचना है।"

शैले के मतानुसर "कविता कल्पना की अभिव्यक्ति है।"

प्रिय बच्चों उपर्युक्त परिभाषाएं हिन्दी कविता के स्वरूप को स्पष्ट करती है, उसमें छन्द व अलंकार पर बल नहीं दिया है, केवल एक बात पर बल दिया गया है, वह अभिव्यक्ति की हृदयस्पर्शी प्रभावोत्पादकता पर जिससे यथाभाव की गूढ़तम अनुभूति हो सके। कविता का मुख्य लक्षण है।

## 3.3 कविता के तत्त्व

प्यारे बच्चों कविता के अर्थ एवं परिभाषा के बारे में जाने के पश्चात् यह अनिवार्य हो जाता है कि आप कविता के तत्त्वों के बारे में जानकारी ग्रहण करें।

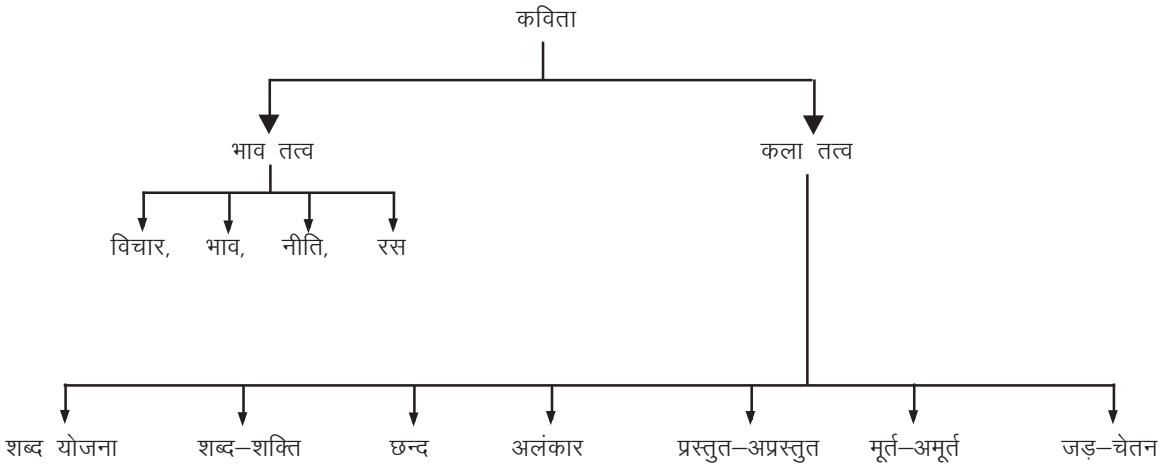


बच्चों जैसा कि ऊपर दर्शाया गया है, कि कविता भाव प्रधान के माध्यम से मनुष्य अपनी हृदयगत अनुभूतियों को व्यक्त करता है, कविता के द्वारा जिन विचार, भाव, नीति, रस की अभिव्यक्ति होती है, वह कविता का भाव तत्व कहलाता है। जिसे अनुभूति तत्व भी कहते हैं। कविता के माध्यम से अभिव्यक्त विचार एवं भावों की गूढ़तम अनुभूति तभी सम्भव है, जब कविता की भाषा–शैली उपयुक्त हो, भाव विशेष की अभिव्यक्ति के लिए छन्द–विशेष का चयन किया गया है। कविता में कल्पना का योग आवश्यक है। कल्पना के योगय से अलंकार योजना, प्रस्तुत–अप्रस्तुत, मूर्त–अमूर्त, जड़–चेतन के विधान से कविता

कामिनी में चार चाँद लग जाते हैं। अतः यह सब कविता का कला तत्त्व कहलाता है, कला तत्त्व को अभिव्यक्ति तत्त्व भी कहते हैं। जिस कविता में भाव तत्त्व व कला तत्त्व का जितना अधिक, पर समुचित योग होता है, वह कविता उतनी ही अच्छी होती है।

**अपनी प्रगति जांचिए-1**

1. कविता के तत्त्व कितने हैं?
2. क्या ये तत्त्व एक–दूसरे के पूरक है?
3. यदि एक तत्त्व प्रबल होगा तो कविता कैसी होगी?

**कविता के रसपाठ एवं बोध पाठ में अन्तर**

प्रिय विद्यार्थियों कविता के तत्वों के बारे में जानकारी हासिल करने के पश्चात् यह अनिवार्य हो जाता है कि हम कविता के रसपाठ एवं बोध पाठ के अन्तर को जाने।

अर्थानुभूति, भावानुभूति, सौन्दर्यानुभूति, रसानुभूति परमानन्दानुभूति ये पांच सोपान कविता शिक्षण में पाये गए है। प्रथम दो सोपान अर्थानुभूति, भावानुभूति जिनका सम्बन्ध केवल बोध पाठ से है। अन्तिम तीन सोपान रसपाठ से जुड़े हैं। कविता में प्रयुक्त शब्दार्थ छन्द, अलंकार की व्याख्या, कविता का बोध पाठ है छात्रों में बोध–पाठ की योग्यता विकसित किए बिना हम रस–पाठ की ओर अग्रसर नहीं हो सकते।

**अपनी प्रगति जांचिए-2**

रसपाठ एवं बोधपाठ में क्या अन्तर है?

रसपाठ से आप क्या समझते है।

## 3.4 कविता की शिक्षण (विधियाँ) प्रणाली

प्यारे बच्चो, कविता पढ़ाने की अनेक विधियाँ प्रचलन में है। शिक्षक अपने शिक्षण को प्रभावशाली बनाने के लिए छात्रों के मानसिक एवं बौद्धिक स्तरानुरूप किसी भी प्रणाली को अपना सकता है। यह प्रणाली निम्नलिखित है–

1. गीत प्रणाली
2. अभिनय प्रणाली
3. व्याख्या प्रणाली
4. शब्दार्थ
5. खण्डान्वय प्रणाली
6. व्यास प्रणाली
7. तुलना प्रणाली
8. समीक्षा प्रणाली
9. रसास्वादन प्रणाली

1. **गीत प्रणालीः** संगीत सभी को अच्छा लगता है। निर्झरों में कल–कल की ध्वनि से बहता जल, प्रकृति की सुरम्य एवं मनोरम, वादियों की गोद, मन्द–मन्द गति से चलने वाली समीर सभी को सहज आकर्षित करती है।

   बच्चे भी जन्म से गीत प्रिय होते हैं। अगर इन गीतों का प्रयोग शिक्षा में किया जाये तो शिक्षा सरल, सरस, सहज ग्राह्य, रूचिकर हो जाती है। शिक्षक कक्षा में गीत का सस्वर वाचन करता है तथा छात्र शिक्षक के वाचन के पीछे–पीछे उसे स्वर वाचन में लय, ताल गति–यति के साथ प्रस्तुत करते हैं।

   यह प्रणाली छोटी कक्षाओं के लिए बड़ी ही आकर्षक एवं उपयोगी है। शिशु खेल–खेल में गा–गाकर बहुत सारी उपयोगी बातें सीख जाते हैं। अतः यह विधि मनोवैज्ञानिक है।

   लेकिन गीत सरल एवं आकर्षक होना चाहिए–

   जैसे–

   "मछली जल की रानी है,

जीवन उस का पानी है।
हाथ लगाओ डर जायेगी,
बाहर निकालो मर जायेगी।"

यह बालोचित तुकबन्दी ही बालक को सहज आकर्षित करती है।

2. **अभिनय प्रणालीः** इस प्रणाली में गीतों के साथ–साथ अभिनय भी किया जाता है। यह बालोचित गीत या तुकबन्दी अभिनय प्रधान होती है।

जैसे–

राहुल – "माँ कह एक कहानी
यशोधरा – समझ लिया क्या बेटा तुने
मुझको अपनी नानी।"

इस गीत में राहुल एवं यशेधरा द्वारा कथित सामग्री का अभिनय प्रस्तुत करा–कर उसको छात्रों के प्रत्यक्ष रूप से दर्शाया जा सकता है।

अतः छोटी कक्षाओं में यह प्रणाली उपयोगी है। पर गीत सरल, आसान एवं अभिनय योग्य हो, तभी यह विधि प्रयुक्त की जा सकती है।

3. **अर्थ कथन प्रणालीः** आजकल विद्यालयों में इस प्रणाली का अधिक प्रचलन है, इसी प्रणाली के सहारे शिक्षक कविता का स्वयं वाचन करते हुए, स्वयं उनका अर्थ बताते हुए चलता है। इस प्रणाली में छात्र केवल श्रोता है। यह प्रणाली अर्थ तो समझा देती है, लेकिन भावानुभूति एवं रसानुभूति नहीं करवा पाती। जोकि कविता शिक्षण का मुख्य उद्देश्य है। अतः यह प्रणाली मनोवैज्ञानिक नहीं है।

4. **व्याख्या प्रणालीः** इस प्रणाली में अध्यापक स्वयं या छात्रों से कविता का सस्वर वाचन करवा लेता है। परन्तु शब्दार्थ बताते हुए, प्रासंगित कथाओं की चर्चा करते हुए, छन्द अलंकार आदि की चर्चा करता है। इस प्रणाली के माध्यम से शिक्षक छात्रों व कवि के बीच रागात्मक सम्बन्ध स्थापित करने की कोशिश करता है। यह प्रणाली उच्च माध्यमिक कक्षाओं के लिए उपयोगी है, छोटी कक्षाओं के लिए नहीं। इस प्रणाली में छात्र निष्क्रिय है, शिक्षक ही सक्रिय है। अतः यह प्रणाली मनोविज्ञान की तुलना पर खरी नहीं उतरती।

5. **खण्डान्वय प्रणालीः** यह प्रणाली महाकाव्यों और लम्बी कविताओं के लिए उपयोगी है। क्योंकि इस विधि में सम्पूर्ण पाठ का खण्डान्वय कर लिया जाता है। इस प्रणाली में शिक्षक ही सक्रिय है। इस प्रणाली का दूसरा नाम प्रश्नोत्तर प्रणाली भी है, इसमें प्रश्नोत्तर के माध्यम से छात्रों को पढ़ाया जाता है। परन्तु यह विधि मनोवैज्ञानिक नहीं है।

6. **व्यास प्रणालीः** प्रिय बच्चों यह प्रणाली व्याख्या प्रणाली का विस्तत रूप है। कथावाचक (व्यास) जब कथा बाँचते हैं, जब भावों, विचारों, नीतियों को स्पष्ट करने के लिए मुख्य कथा के साथ–साथ कई (गौण कथा) अन्तर्कथाओं का विवरण प्रस्तुत करते हैं। अन्तर्कथाओं के उदाहरणों से, व्याख्याओं से कथा में नवजीवनी का संचार करते हैं। छात्रों के बौद्धिक स्तर, मानसिक स्तर अभिरूचि क्षमता को देखते हुए भी यह प्रणाली उच्च माध्यमिक कक्षाओं के लिए उपयोगी है।

7. **तुलना प्रणालीः** इस विधि में शिक्षक पाठ्य–कविता की तुलना उसी भाव को व्यक्त करने वाली अन्य कविताओं के साथ करके पाठ्य–कविता के भावार्थों को स्पष्ट करने का प्रयास करता है। तुलना निम्न प्रकार से की जा सकती है–

जैसे– राष्ट्रीय कवि, मैथिलीशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद निराला आदि कवि की कविताओं का तुलनात्मक अध्ययन करूणा एवं वेदना के लिए महादेवी वर्मा की ही रचनाओं का तुलनात्मक अध्ययन।

व्यास विधि की तरह तुलना प्रणाली भी उपयोगी है परन्तु अध्यापक का ज्ञान गहन, गम्भीर एवं गहरा हो समान भावों वाली, भाषा–शैली वाली तत्सम्बन्धी अनेक पद्य रचनाएं कण्ठस्थ हो, वहीं न्याय कर सकता है।

8. **समीक्षा प्रणालीः** यह प्रणाली उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं के छात्रों के लिए हितकारी है। उच्च श्रेणी तक पहुँचते–पहुँचते छात्रों का मानसिक एवं बौद्धिक विकास पर्याप्त रूप से हो चुका होता है साथ ही काव्य के तत्त्वों का ज्ञान भी वे ग्रहण कर चुके होते हैं। इस प्रणाली में काव्य के गुण–दोषों का विवेचना करके उनके यथार्थ को आँका जाता है।

   इस प्रणाली में शिक्षक केवल सहायक का ही कार्य करता है, वह पुस्तकों के नाम, संदर्भ–ग्रंथों के नाम एवं कुछ तथ्यों से छात्रों को परिचित करा देते हैं। इस प्रणाली में तीन तथ्यों की समीक्षा की जाती है– भाषा की समीक्षा, काव्यगत भावों की समीक्षा, कविता पर पड़ने वाले प्रभावों की समीक्षा। यह प्रणाली मनोवैज्ञानिक है, क्योंकि छात्र इसमें स्वयं सक्रिय है।

9. **रसास्वादन प्रणालीः** इस प्रणाली में शिक्षक का उद्देश्य छात्रों को कविता का अर्थ बलताना नहीं होता वरन् वह छात्रों को कविता का आनन्द लेने की क्षमता प्रदान करता है। शिक्षक कवि के परिचय, विशेष प्रसंग, प्रेरक स्थल, अति आवश्यक व्याख्या आदि की तरफ छात्रों का ध्यान आकृष्ट करते हुए छात्रों को रसानुभूति की प्रबल प्रेरणा देता है, वह छात्रों का कवि के साथ तादात्मय स्थापित करता है। यह विधि केवल बड़ी कक्षाओं में ही सम्भव है।

### कौन सी शिक्षण प्रणाली किस स्तर पर अपनाए

प्यारे बच्चों वैसे तो हमने साथ–साथ प्रत्येक शिक्षण प्रणाली की उपयोगिता–अनुपयोगिता स्पष्ट कर दी है। प्राथमिक स्तर की कक्षाओं में जहाँ बच्चों को बालोचित गीतों को रटाना होता है, वहां गीत एवं अभिनय प्रणाली दोनों का ही प्रयोग किया जाए। कक्षा चार से आठ तक अर्थ बोध एवं व्याख्या प्रणाली को अपनाये जाए। कक्षा नौ से बारह तक व्यास प्रणाली, प्रश्नोत्तर प्रणाली, तुलना प्रणाली, समीक्षा प्रणाली आदि छात्रों के मानसिक एवं बौद्धिक स्तर को ध्यान में रखकर पढ़ाई जाए साथ–साथ कविता में निहित विचारों एवं भावों का बोध कराया जाये तो फिर क्रमशः रसानुभूति सौन्दर्यानुभूति परमानन्दानुभूति की ओर बढ़ाना चाहिए। यदि कविता शिक्षण द्वारा हम बच्चों की रूचि और अभिवत्तियों को सामाजिक आदर्शोनुकूल विकसित कर सके तो, कविता शिक्षण सार्थक समझिए।

**अपनी प्रगति जांचिए-3**

1. कविता शिक्षण–प्रणालियों से आपका क्या तात्पर्य है?
2. उच्च स्तर के लिए कौन सी शिक्षण प्रणली उपयोगी है।
3. प्राथमिक स्तर पर कौन सी शिक्षण प्रणाली अपनाये?

## 3.5 कविता-शिक्षण के सोपान

प्यारे छात्रों अभी आप ने कविता की शिक्षण–विधियों के बारे में जाना, साथ ही जरूरी हो जाता है कि कविता शिक्षण के लिए कौन–कौन से सोपान है।

साहित्य की विधाएँ गद्य व पद्य शिक्षण के लिए निम्न सोपानों को अपनाया जाता है।

1. **प्रस्तावना**

   1.1 कवि परिचय द्वारा इस प्रणाली में कवि का जीवन वत्त बता दिया जाता है। साथ ही उन परिस्थितियों का उल्लेख किया जाता है जिससे कवि को कविता लिखने की प्रेरणा मिली हो।

   1.2 पूर्व सूचना देकर–इस विधि में छात्रों को पहले ही सूचित कर दिया जाता है कि आज हम जिस कविता को पढ़ेंगे उसमें अमुक रस एवं अलंकारों का निर्वाह हुआ है।

   1.3 ***कविता के अनुकूल वातावरण उत्पन्न करकेः*** कक्षा में अध्यापक चित्र, प्रश्नों आदि के द्वारा, प्राकृतिक दश्य यथा झरनों के बहने की कल–कल ध्वनि, पर्वतों की विशालता आदि का चित्रण कक्षा में उपस्थित करके विषय को रोचक एवं ग्राह्य बना सकता है।

   1.4 ***प्रश्नोत्तर द्वाराः*** अधिकांश अध्यापक तो प्रश्नोत्तर के माध्यम से बच्चों को कविता पढ़ने के लिए तैयार करते हैं।

1.5 ***सारांश प्रणाली:*** इस शिक्षण सोपान में अध्यापक कक्षा में सारांश को प्रसंग सहित बता देता है। कहीं–कहीं इस प्रणाली का प्रयोग करना आवश्यक हो जाता है। कुछ कविताएँ ऐसी होती हैं जिनके पढ़ने से पहले यदि कुछ न कहा जाए तो उन्हें समझने में कठिनाई होती है।

1.6 ***उसी कविता के द्वारा:*** कई बार उसी कविता के सस्वर वाचन से प्रस्तावना की जाती है

1.7 ***समानान्तर कविता के द्वारा:*** प्रस्तावना के लिए समानान्तर कविता की पंक्तियां भी प्रयुक्त की जा सकती है। ध्यातव्य है कि पढ़ी हुई कवितओं की पंक्तियाँ ही सुनाई जाये।

2. **उद्देश्य कथन:** प्रस्तावना के माध्यम से मूल विषय की तरफ आकर्षित करने के पश्चात् अध्यापक अपने उद्देश्य की घोषणा करता है। अतः अध्यापक को रूचि पूर्ण तरीके से उद्देश्य की घोषणा करनी चाहिए।

**प्रस्तुति:**–कविता शिक्षण का अगला सोपान 'प्रस्तुतीकरण' है। इसके अन्तर्गत मूल शिक्षण–सामग्री पढ़ाई जाती है।

(क) ***आदर्श पठन:*** कविता शिक्षण का महत्त्वपूर्ण भाग आदर्श पठन है। कक्षा चाहे कोई भी हो, शिक्षक कविता सस्वर वाचन गति–यति, आरोह–अवरोह को ध्यान में रखते हुए करें।

(ख) ***अनुकरण वाचन (पठन):*** शिक्षक के आदर्श वाचन के बाद छात्रों से अनुकरण वाचन करवाया जाये। छात्रों का उच्चारण सम्बन्धी संशोधन भी कविता पाठ के बाद यथा सम्भव छात्रों की सहायता से कराया जाये।

(ग) ***शब्दार्थ कथन एवं विचार विश्लेषण:*** प्रिय बच्चों कविता में आये कठिन शब्दार्थ बताते हुए शिक्षक प्रयत्नशील रहता है कि उन्हीं शब्दों के अर्थों को समझाया जाये जो कविता के भाव एवं सौन्दर्य को निखारते हो। कविता को अच्छी प्रकार से समझाने के लिए विचार–विश्लेषण या प्रश्नोत्तर आमंत्रित भी किए जाते है।

(घ) ***सौन्दर्यानुभूति:*** कविता आनन्दानुभूति का विषय है। साथ ही वह ज्ञानवर्द्धन का विषय भी है। यदि कविता–शिक्षण से छात्रों को आनन्द की अनुभूति होती है, तो उसे सफल मानना चाहिए। आनन्दानुभूति के लिए अर्थानुभूति एवं भावानुभूति आवश्यक है, क्योंकि भाव ही कविता की आत्मा है। अर्थानुभूति और भावानुभूति के अभाव में कविता के संगीत पक्ष का आनन्द तो लिया जा सकता है परन्तु उसकी आत्मा अर्थ अथवा भाव का नहीं।

पर कविता के भाव पक्ष की पूर्ण अनुभूति तब तक नहीं की जा सकती, जब तक उसके भाव स्पष्ट करने वाले कला–पक्ष की अनुभूति न की जा सके। कविता के कला–पक्ष में शब्द योजना (प्रतीकात्मक, ध्वन्यात्मक, लाक्षणिक) शैली (छन्द, अलंकार) और कल्पना (प्रस्तुत–अप्रस्तुत, मूर्त–अमूर्त एवं जड़–चेतन) आदि की मुख्य रूप से व्याख्या होनी चाहिए।

(ङ) ***द्वितीय आदर्श पठन:*** कविता के अर्थ एवं भाव विश्लेषण के पश्चात् उन्हें पूर्ण रसास्वादन कराने के लिए शिक्षक को भावानुसार सस्वर पठन करना चाहिए।

(च) ***पुनः अनुकरण वाचन:*** यह जानने के लिए कि छात्रों ने कविता के सौन्दर्य को कहाँ तक ग्रहण किया है, छात्रों से अनुकरण पठन करवाना चाहिए।

3. **अर्थग्रहण एवं सौन्दर्य बोध परीक्षण:** शिक्षक को छोटे–छोटे प्रश्नोत्तर के माध्यम से यह पता लगा लेना चाहिए कि छात्रों ने कविता के अर्थ, भाव व सौन्दर्य को कहाँ तक ग्रहण किया है और वे कविता की व्याख्या करने में कहाँ तक समर्थ है।

4. **रचनात्मक कार्य:** कक्षा में काव्यात्मक वातावरण की अक्षुण्णता स्थिर व बनाये रखने के लिए अपने शिक्षण की समाप्ति पर अध्यापक बच्चों से कविता के मार्मिक स्थलों या कविता से सम्बन्धित भाव की अन्य कविताओं को कण्ठस्थ करने के लिए कह सकता है।

### अपनी प्रगति जांचिए-4

प्रश्न 1. कविता शिक्षण में प्रयुक्त सोपानों के बारे में बतलाओं?

2. क्या कविता में रचनात्मक कार्य दिया जाना आवश्यक है, या नहीं?

## 3.6 कविता में अभिरूचि जागत करना

प्यारे छात्रों, किसी कार्य करने के लिए, उसके अच्छे परिणाम के लिए रूचि का होना अनिवार्य है। अतः हमारे लिए यह आवश्यक हो जाता है कि बच्चों की काव्य में रूचि उत्पन्न करने के लिए हम किन–किन साधनों को अपना सकते हैं।

कविता का मानव–मानव मन व हृदय पर सीधा प्रभाव पड़ता है, वह मानव–मन को झकृंत करती है, अपनी संगीतात्मकता के कारण निम्न साधनों से हम कविता में छात्रों की रूचि जागत कर सकते हैं।

1. **प्रभावशाली पठनः** कविता श्रव्य–काव्य है, जितना आनन्द कविता का श्रवण साधन से किया जा सकता है, उतना किसी अन्य साधन से नहीं बशर्ते कविता का प्रभावशाली पठन किया जाए। अध्यापक का कण्ठ भी पठन के उपयुक्त हो तो सोने में सुहागा है। प्रभावशाली एवं सस्वर पठन से छात्रों की काव्य में अभिरूचि जागत होती है।
2. **कविता कंठस्थ करनाः** अध्यापकों को चाहिए कि वे छात्रों को अधिक से अधिक कविताएँ कंठस्थ करने के लिए प्रेरित करें। बच्चे कंठस्थ कविताओं के सहारे अपनी बात को प्रभावशाली ढ़ंग से कहने में सफल होते हैं, तो उन्हें प्रसन्नता होती है, और उन्हें अधिक कविताएं कंठस्थ करने के लिए प्रेरणा मिलती है।
3. **कविता संग्रहः** बच्चों की कविता में रूचि जागत करने का अन्य उपाय है कविताओं का संग्रह कराना। बच्चों में कविता संग्रह की भावना पैदा होगी तभी साहित्य से जुड़ी सामाजिक, ऐतिहासिक, पौराणिक व नैतिकता के बारे में सीख सकेंगे।
4. **कवि जयन्तीः** हिन्दी अध्यापक को चाहिए कि वह अपने विद्यालय कार्यक्रमों में कवि जयन्ती का आयोजन कर कवि के जीवन पर प्रकाश डाल कर साहित्य से बच्चों को रूबरू करवा सकता है।
5. **कवि दरबारः** अतीत को वर्तमान में उपस्थित करने का तथा छात्रों का कविता में रूझान पैदा करने की यह अच्छी विधि है, कि विद्यालय में कवि दरबार आयोजित किये जाए। छात्र किसी युग–विशेष के कवियों की वेशभूषा से सुसज्जित होकर अभिनय के साथ उनकी रचनाओं को पढ़कर सुनाये।
6. **कवि समादरः** समय–समय पर आस–पास के कवियों को आमंत्रित करके उनका आदर करना कविता में रूचि पैदा करने का एक अन्य तरीका है।
7. **कवि गोष्ठीः** स्कूलों में साहित्य–परिषदों द्वारा कवि गोष्ठियों का आयोजन किया जाए। इसमें छात्र कवियों की जीवनी एवं उनकी विशेषता का ही वर्णन करें।
8. **कवि सम्मेलनः** कवि सम्मेलनों का आयोजन भी कविता में रूचि जागत करने में सफल होते हैं। इन कवि सम्मेलनों में हम नगर विशेष के कवि बुलाए, जिले के कवि बुलाए, प्रांत के कवि बुलाए। यह विद्यालय पर निर्भर करता है।
9. **कविता प्रतियोगिताः** कविता में रूचि जागत करने का यह अच्छा माध्यम है। विद्यालय में साहित्यिक कार्यक्रमों के तहत कविता प्रतियोगिता आयोजित की जा सकती है। यह प्रतियोगिताएं निम्न प्रकार से आयोजित की जा सकती है।
   (i) निश्चित विषय पर कविता पठन
   (ii) अन्त्याक्षरी
   (iii) सुभाषित प्रतियोगिता
10. **विभिन्न अवसरों पर कविता पाठः** विद्यालय में अनेक ऐसे अवसर आते हैं जैसे किसी महापुरूष का जन्म दिन कोई त्यौहार, आदि ऐसे अवसरों पर कविताओं का सस्वर पाठ आयोजित किया जा सकता है।

## 3.7 सारांश

यहां तक आते–आते आप यह सब जान चुके होंगे कि भाषा शिक्षण में कविता शिक्षण अलग स्थान रखता है। कविता जो

प्रायः लयात्मक या संगीतात्मक होती है। संगीत कर्ण प्रिय होता है। अतः सभी को यथा बालकों, किशोर, प्रौढ़ कोई भी कविता शिक्षण के महत्व को नकार नहीं सकता। कविता को परिभाषित करते हुए, आर्नोल्ड ने कहा है–'कविता के मूल में जीवन की आलोचना है।' इसी एक पंक्ति में जिन्दगी समा जाती है। कविता हमें बोध पाठ कराते हुए रसपाठ की ओर अग्रसर करती है, जब मानव–जीवन की समस्त दुःशचिन्ताओं को भूल कर परमानन्दानुभूति प्राप्त करता है। छोटी कक्षाओं में प्रायः बालोचित गीत या तुकबन्दी सिखाई जाती है। बड़ी कक्षाओं में साहित्यिक कविताएं पढ़ाई जाती है कवि दरबार, कवि समादर, कवि गोष्ठी, कवि जयन्ती आदि का आयोजन कर बालकों में सर्जनात्मक योग्यता का विकास किया जा सकता है।

अन्त में कहा जा सकता है कि भाषा–शिक्षण में कविता शिक्षण का महत्व असंदिग्ध है।

**मॉडल उत्तर**

1.1 कविता के दो तत्व हैं। 1. भाव तत्व 2. कला तत्व

1.2 यह दोनों तत्व एक दूसरे के पूरक हैं, एक के बगैर दूसरे की कल्पना नहीं की जा सकती।

1.3 एक तत्व प्रबल होने से कविता ज्यादा अच्छी नहीं होगी।

2.1 रसपाठ में परमानन्दानुभूति होती है, जबकि बोध पाठ में केवल अथानभूति होती है।

2.2 रसानुभूति, सौन्दर्यानुभूति, परमानन्दानुभूति।

3.1 पढ़ाने की विधि, प्रभावशाली अधिगम करने की विधि

3.2 समीक्षा प्रणाली, रसास्वादन प्रणाली

3.3 गीत प्रणाली, अभिनय प्रणाली

## 3.8 मुख्य शब्द

1 **कण्ठस्थ**–पूरी तरह से रहना, याद करना।

2. **खण्डान्वय**–हिस्सों में करना, बराबर भागों में बांटना।

3. **सौन्दर्यानुभूति**–सुन्दरता का अनुभव करना।

4. **रसानुभूति**–रस का अनुभव करना।

## 3.9 सन्दर्भ ग्रन्थ


1. के०के० सुखिया — हिन्दी ध्वनियां और उनका शिक्षण, रामनारायण लाल पब्लिकेशन्ज, इलाहाबाद
2. जयनारायण कौशिक — हिन्दी शिक्षण, हरियाणा साहित्य अकादमी चण्डीगढ़
3. लज्जाशंकर ओझा — भाषा–शिक्षण पद्धति
4. शूर एवं शर्मा — हिन्दी कविता पठन
5. सीताराम चतुर्वेदी — भाषा की शिक्षा, हिन्दी साहित्य कुटीर वाराणासी

# इकाई–3

# अध्याय-14: गद्य–शिक्षण

**उद्देश्यः**

इस पाठ का अध्ययन करने के पश्चात् आप निम्न उद्देश्यों की प्राप्ति में समर्थ हो सकेंगे।

- छात्र बता सकते हैं कि गद्य क्या है, एवं उसका अर्थ अपने शब्दों में बताते हैं।
- गद्य शिक्षण की विधाओं पर प्रकाश डालते हैं।
- गद्य शिक्षण के महत्त्व को रेखांकित करते हैं।
- गद्य शिक्षण के उद्देश्यों का प्रत्यास्मरण करते हैं।
- गद्य की शिक्षण–प्रणालियों की व्याख्या करते हैं।
- गद्य शिक्षण के सोपानों का प्रत्यास्मरण करते हैं।

**संरचनाः**

3.1 गद्य क्या है
3.2 गद्य शिक्षण की विधाएं
3.3 गद्य शिक्षण का महत्त्व
3.4 गद्य शिक्षण के उद्देश्य
3.5 गद्य की शिक्षण प्रणाली
3.6 गद्य शिक्षण के सोपान
3.7 सारांश
मॉडल उत्तर
3.8 मुख्य शब्द
3.9 सन्दर्भ ग्रन्थ

## 3.1 गद्य क्या है

गद्य साहित्य का महत्त्वपूर्ण अंग है, जिसमें छन्द अलंकार योजना रस विधान आदि का निर्वाह करना आवश्यक नहीं। गद्य की विशेषता तथ्यों को सर्वमान्य भाषा के माध्यम से, ज्यों का त्यों प्रस्तुत करने में होती है।

गद्य साहित्य की अनेक विधाएँ है– कहानी नाटक, उपन्यास निबन्ध, जीवनी, संस्मरण, आत्मचरित रिपोर्ताज व्यंग्य आदि।

## 14.2 गद्य शिक्षण का महत्त्व

1. **दैनिक जीवन में:** हमारे अनेक लेन–देन व्यापार गद्य के माध्यम से सम्पन्न होते हैं। विद्यालयों में करवाया जाने वाला गद्य–शिक्षण इन कार्य–व्यापारों को कुशलता पूर्वक सम्पन्न करवाने में सहायक होता है।
2. **ज्ञानार्जन के रूप में:** आज गद्य ज्ञानार्जन का मुख्य साधन है। समाचार पत्र, पत्र–पत्रिकाएँ, ज्ञान–विज्ञान की बातें हमें गद्य रूप में विपुल मात्रा में उपलब्ध है।
3. **भाषिक तत्त्वों की जानकारी:** भाषा के तत्त्वों की जानकारी का सुगम तरीका गद्य है कविता नहीं। उच्चारण बलाघात, वर्तनी, शब्द, रूपान्तरण, उपसर्ग प्रत्यय, सन्धि, समास, मुहावरे, लोकोक्ति पद, पदबन्ध, तथा वाक्य संरचनाएं आदि भाषिक तत्त्वों का ज्ञान गद्य के माध्यम से सुगमतापूर्वक दिया जा सकता है।

4. **व्याकरण-सम्मत भाषाः** गद्य कवीनां निकवं वर्दान्त अर्थात् साहित्यकार की कसौटी गद्य मानी गई है। गद्यकार को व्याकरण के समस्त नियमों का पालन करते हुए लिखना पड़ता है।

   उसकी भाषा परिमार्जित एवं परिनिष्ठत होती है। विद्यार्थी जिस समय गद्य को पढ़ता है, उसकी अपनी भाषा भी व्याकरण सम्मत हो जाती है।

6. **भावात्मक विकासः** संस्कारों का परिमार्जन गद्य के माध्यम से ही संभव है। आज गद्य के क्षेत्र में इस प्रकार का प्रचुर साहित्य उपलब्ध है जिसके द्वारा छात्रों का भावात्मक विकास सम्भव है। सन् 1986 में घोषित 'नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति' में विद्यार्थियों के भावात्मक विकास पर विशेष बल दिया गया है।

## 3.4 गद्य शिक्षण के उद्देश्य

**(कक्षा एक से आठ तक के लिए)**

1. व्याकरण सम्मत भाषा का प्रयोग करना।
2. शब्दों का प्रभावशाली प्रयोग करना।
3. शब्द भण्डार की वद्धि करना।
4. संक्षिप्त जीवनी लिख सकना।
5. सभाओं व उत्सवों का प्रविवेचन तैयार करना।
6. लेखन में सजनात्मकता व मौलिकता का विकास करना।

**(कक्षा 8 से 10 तक)**

1. लिपि के मानक रूप का व्यवहार करना
2. रूप विज्ञान तथा ध्वनि विज्ञान के आधार पर शब्दों की वर्तनी का ज्ञान होना
3. शब्दकोश को देखने की योग्यता का विस्तार करना
4. विराम चिन्हों का सही प्रयोग करना
5. शब्दों, मुहावरों और पदबन्धों का उपयुक्त प्रयोग करना
6. उपयुक्त अनुच्छेदों में बाँट कर लिखना
7. देखी हुई घटनाओं का वर्णन करना
8. सार, संक्षेपीकरण, भावार्थ, व्याख्या लिखना

**कक्षा 11-12 के लिए**

1. अपठित रचना का सारांश लिख सकना
2. किसी विषय की वर्णनात्मक तथा भावात्मक शैली में अभिव्यक्ति कर सकना
3. पठित रचना की व्याख्या करना
4. वर्णात्मक, विवेचनात्मक, भावात्मक शैलियों में निबन्ध लिखने की क्षमता का विकास करना
5. विभिन्न साहित्यिक विधाओं के माध्यम से अपने भाव, विचार, अनुभव, प्रतिक्रिया व्यक्त करना।

## 3.5 गद्य-शिक्षण की विधियाँ/प्रणाली

प्यारे छात्रो! कविता कब और कैसे पढ़ाई जाए, इस विषय पर बहुत विचार मंथन हुआ है, परन्तु गद्य कब और कैसे पढ़ाया जाये, इस पर अपेक्षाकृत कम विचार हुआ है। गद्य शिक्षण की जिन प्रणालियों का अब तक विकास हुआ है, उनका सामान्य परिचय प्रस्तुत है–

1. **अर्थकथन प्रणालीः** इस प्रणाली में अध्यापक गद्यांशों का पठन करता चलता है और साथ–साथ कठिन शब्दों के अर्थ बताता चलता है। बाद में शिक्षक वाक्यों के सरलार्थ बताता है एवं जहां कही आवश्यक होता है वहाँ भावों को स्पष्ट करने के लिए व्याख्या भी कर देता है। इस विधि में सारा कार्य केवल अध्यापक ही करता है, छात्रों को सोचने–विचारने का कुछ मौका नहीं मिलता। अतः यह प्रणाली अमनोवैज्ञानिक है।

2. **व्याख्या प्रणालीः** यह विधि अर्थ कथन विधि का ही विकसित रूप है। इस प्रणाली में अध्यापक शब्दार्थ के साथ–साथ शब्दों और भावों की व्याख्या भी करता है।

   वह शब्दों की व्युत्पति की चर्चा करता है, उनके पर्याय बताता है, उन पर्यायों में भेद करता है। उपसर्ग प्रत्यय, सन्धि व समास की व्याख्या करता है। शिक्षण सामग्री को स्पष्ट करने के लिए अनेक उदाहरण देता है एवं अपनी बात के समर्थन में उद्धरण देता है। इस प्रणाली में अधिकांश कार्य स्वयं शिक्षक करता है, छात्र कम सक्रिय रहते हैं।

3. **विश्लेषण प्रणालीः** इस प्रणाली को प्रश्नोत्तर प्रणाली भी कहा जाता है। इस प्रणाली में अध्यापक शब्द एवं भावों की व्याख्या के लिए प्रश्नोत्तर का सहारा लेता है, और छात्रों को स्वयं सोचने और निर्णय निकालने के अवसर प्रदान करता है। इस विधि में अध्यापक बच्चों के पूर्व ज्ञान के आधार पर नए ज्ञान का विकास करता है। इस विधि में छात्र एवं शिक्षक दोनों ही क्रियाशील रहते हैं। अतः प्रणाली उत्तम है।

4. **समीक्षा प्रणालीः** यह प्रणाली उच्च कक्षाओं में प्रयुक्त की जाती है। इस विधि में गद्य के तत्त्वों का विश्लेषण कर उसके गुण–दोष परखे जाते हैं। गद्य शिक्षण प्रणाली का मुख्य उद्देश्य भाषायी ज्ञान एवं कौशल में वद्धि करना है और उनकी वद्धि के लिए शिक्षक संदर्भ ग्रंथ एवं रचनाओं के बारे में भी बताता है, जिनका अध्ययन कर छात्र पाठ्य–वस्तु के गुण–दोषों का विवेचन कर सकें। इस विधि में छात्रों का स्वयं काफी कार्य करना पड़ता है, यह विधि बच्चों में स्वाध याय की आदत विकसित करने में विशेष रूप से सहायक होती है।

5. **संयुक्त प्रणालीः** माध्यमिक स्तर पर इन सभी प्रणालियों का आवश्यकतानुसार मिश्रित रूप से प्रयोग करके हम गद्य शिक्षण को प्रभावशाली बना सकते हैं। भाषायी कौशल एवं ज्ञान प्रदान करने के लिए व्याख्या एवं विश्लेषण–प्रणाली को संयुक्त रूप से अपनाया जाये। इस संयुक्त प्रणाली के माध्यम से गद्य पाठों की शिक्षा रोचक, आकर्षक एवं प्रभावशाली ढ़ंग से दी जा सकेगी।

**अपनी प्रगति जांचिए-1**

1. गद्य क्या है, बताईये?
2. गद्य–शिक्षण का दैनिक जीवन में क्या महत्त्व है?

## 3.6 गद्य शिक्षण में प्रयुक्त सोपान

गद्य साहित्य ज्ञानवर्द्धक साहित्य है। गद्य–शिक्षण में चयन की गई वस्तु को अन्वितियों में विभाजित कर लेना चाहिए क्योंकि गद्य में कभी पाठ छोटे होते हैं, कभी बहुत लम्बे। अतः अन्वितियों में विभाजित करके पाठ को पढ़ाया जाना आवश्यक हो जाता है। प्रायः सभी शिक्षा–शास्त्री हरबर्ट की पंचपद प्रणाली में थोड़ा सा परिवर्तन करके अपनाने पर बल देते है। इसके लिए निम्न सोपानों को अपनाया जा सकता है।

1. प्रस्तावना → पूर्वज्ञान परीक्षा
   प्रस्तावना → उद्देश्यकथन

2. विषय प्रवेश → वाचन आदर्श वाचन, अनुकरण
   विषय प्रवेश → व्याख्या – वाचन, मौन वाचन
   विषय प्रवेश → विचार–विश्लेषण

3. कक्षा कार्य निरीक्षण

4. आवत्ति
5. गहकार्य

1. **प्रस्तावना**
   (i) प्रश्नोत्तर द्वारा
   (ii) लेखक परिचय द्वारा
   (iii) शिक्षण–उपकरण द्वारा
   (iv) समस्या द्वारा
   (v) पूर्वकथा द्वारा
   (vi) समभावी कविता पंक्तियों द्वारा

**वाचन**

जैसा कि पिछले चित्र में दर्शाया गया है कि वाचन क्रिया के तीन सोपान है।

1. **आदर्श वाचनः** शिक्षक कक्षा में आदर्श वाचन प्रस्तुत करता है, शुद्ध उच्चारण, विराम–चिन्हों, उचित हाव–भाव एवं उतार–चढ़ाव का ध्यान रखते हुए स्वभाविक एवं प्रफुल्लित मुख–मुद्रा में शिक्षक को गधांश का सस्वर वाचन करना चाहिए।
2. **अनुकरण वाचनः** कक्षा में शिक्षक के वाचन के उपरान्त छात्रों से करवाया जाने वाला वाचन अनुकरण वाचन कहलाता है। एक अनुच्छेद का अनुकरण वाचन तीन–चार छात्रों से करवाना चाहिए।

   **उच्चारण संशोधनः** अनुकरण वाचन करते समय छात्र जो गलती करते हैं, उनका संशोधन यथासम्भव छात्रों की सहायता से ही करवाया जाये।
3. **मौन वाचनः** मौन–वाचन का तीसरा प्रकार है। मौन वाचन करवाने से पहले शिक्षक को यह ध्यान रखना चाहिए कि छात्र गद्यांश के भाव व अर्थ को अच्छी तरह से समझ रहे हैं। मौन वाचन के समय शिक्षक को सारी कक्षा पर दष्टिपात करते रहना चाहिए कि सभी छात्र कि गद्यांश को पढ़ रहे या नहीं पठन पूरा होने के उपरान्त छात्रों से प्रश्न पूछने चाहिए।

**व्याख्याः** प्यारे बच्चो! आगे आने वाले पेज 106 पर जैसा कि चित्र में दर्शाया गया है, व्याख्या क्रिया को आगे कई सोपानों में बाँटा गया है।

1. **प्रत्यक्ष प्रदर्शनः** उच्चप्राथमिक कक्षाओं में दश्य सामग्री का प्रदर्शन करके कतिपय शब्दों के अर्थ छात्रों को बताये जा सकते हैं। 'जलज' का अर्थ कमल का फूल दिखाकर बताया जा सकता है।
2. **प्रतिमूर्ति द्वाराः** कुछ चीजें ऐसी होती है, जिन्हें कक्षा में लाकर प्रत्यक्ष नहीं दिखाया जा सकता है, केवल उनकी प्रतिमूर्ति को कक्षा में प्रदर्शित किया जा सकता है, जैसे, भगत सिंह, आजाद, गांधी के बारे में पढ़ाना हो तो उनकी तस्वीर ही प्रस्तुत की जा सकती है। या भाखड़ा बाँध का मॉडल ही कक्षा में दिखाया जा सकता है।
3. **अंग संचालनः** कतिपय शब्द जैसे, घूरना, त्यौरी चढ़ाना, मुस्काना आदि की व्याख्या अंग संचालन द्वारा की जाती है।
4. **चित्र, रेखाचित्रः** जैसे पर्णकुटी का अर्थ बताने के लिए पत्तों से बनी कुटिया, त्रिकोण, धनुष आदि शब्दों के लिए क्रमशः त्रिकोण एवं धनुष का रेखाचित्र श्यामपट्ट पर बनाकर अर्थ बताया जा सकता है।
5. **वाक्य प्रयोग द्वाराः** कुछ शब्दों का अर्थ स्पष्ट करने के लिए वाक़्य में प्रयोग करना आवश्यक हो जाता है।
6. **पर्यायवाचीः** पथ्वी, गगन, शैल आदि शब्दों के सरल समानार्थी शब्दों का प्रयोग कर नवीन अर्थ निकलवाया जा सकता है। जैसे – पथ्वी के लिए भू–धरा आदि, गगन के लिए अम्बर व्योम, शैल के लिए पर्वत, पहाड़ आदि शब्दों का प्रयोग किया जा सकता है।

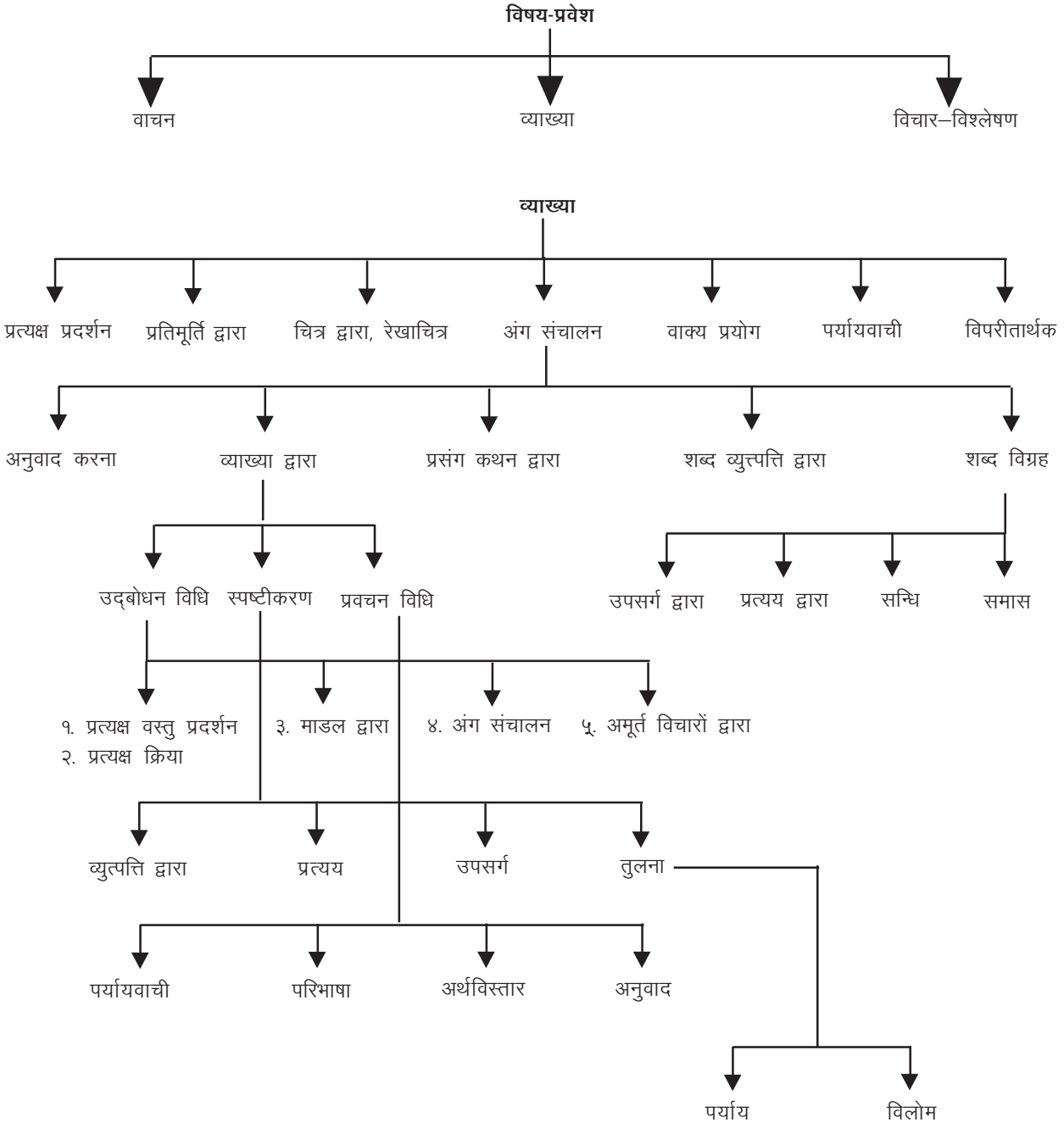


7. **विपरीतार्थकः** कतिपय शब्दों के स्पष्टीकरण के लिए विपरीत शब्दों का प्रयोग किया जा सकता है जैसे 'सज्जन' के लिए 'दुर्जन', 'प्रकाश' के लिए तिमिर 'निशा' के लिए 'दिवस' शब्द को प्रस्तुत किया जा सकता है
8. **शब्द विग्रह द्वाराः** हिन्दी भाषा में दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से भी अनेक शब्दों का निर्माण हुआ है।
   (क) उपसर्ग को अलग करना
   (ख) प्रत्यय को अलग करके
   (ग) सन्धि को अलग करके
   (घ) समास विग्रह द्वारा

9. **शब्द -व्युत्पत्ति द्वाराः** कभी–कभी शब्द के स्पष्टीकरण के लिए उसकी व्युत्पत्ति भी बतानी पड़ सकती है जैसे 'विद्या' विद्या शब्द की उत्पत्ति के लिए 'विद्' धातु का सहारा लेकर उसके अर्थ 'जानना', 'ज्ञान प्राप्त करना। आदि को स्पष्ट किया जा सकता है।

10. **प्रसंग कथन द्वाराः** कुछ शब्द हिन्दी में ऐसे प्रयोग किए जाते हें जिनके लिए पौराणिक या ऐतिहासिक घटनाओं को बताना आवश्यक हो जाता है तभी वह शब्द सम्प्रेषणीय होते हैं, जैसे– पार्थ, तथागत आदि अर्जुन एवं बुद्ध को पार्थ एवं तथागत क्यों कहते हैं, प्रसंग बताना जरूरी हो जाता है।

11. **व्याख्या द्वाराः** शब्दों की व्याख्या के लिए हमने चित्र में तीन विधियों का प्रयोग किया है।

(i) ***उद्‌बोधन विधिः*** इस प्रक्रिया में अध्यापक कठिन शब्दों का अर्थ स्वयं नहीं बताकर उद्‌बोधन प्रणालियों का प्रयोग करता है। वह इस विधि में सहायक सामग्री, प्रत्यक्ष प्रदर्शन श्यामपट्ट आदि की सहायता लेता है। उद्‌बोधन विधि में वह निम्न तरीके अपनाता है–

1. प्रत्यक्ष वस्तु प्रदर्शन 2. प्रत्यक्ष क्रिया द्वारा 3. माडल द्वारा

4. अंग संचालन द्वारा 5. अमूर्त विचारों द्वारा

उद्‌बोधन विधि को संक्षेप में जानने के लिए पीछे देखिए

(ii) ***स्पष्टीकरण विधिः*** स्पष्टीकरण विधि तब अपनाई जाती है, जब उद्‌बोधन द्वारा शब्दार्थ स्पष्ट न हो, इसके निम्न तरीके हैं–

1. व्युत्पत्ति 2. प्रत्यय 3. उपसर्ग

4. तुलना।

(iii) ***प्रवचन विधिः*** इस विधि के लिए निम्न तरीके प्रचलन में है–

1. पर्यायवाची 2. विपरीतार्थक 3. अर्थ–विस्तार

4. अनुवाद इत्यादि

**विचार-विश्लेषण या बोधात्मक प्रश्न**

भाषा–शिक्षण के दो मूल उद्देश्य है–

1. भाषा ज्ञान में वद्धि
2. विचार ग्रहण करने की क्षमता में वद्धि

वाचन एवं व्याख्या के माध्यम से छात्रों के भाषा ज्ञान में वद्धि होती है, परन्तु विचार–ग्रहण करने की क्षमता विचार–विश्लेषण के माध्यम से विकसित होती है। विचार–ग्रहण करने के लिए अध्यापक छात्रों के मन को मस्तिष्क को विश्लेषित करके विचार ग्रहण कराता है विचारों के विश्लेषण के लिए प्रश्नोत्तर, कथोपकथन उदाहरण, प्रदर्शन, तुलना दष्टान्त जटिल विचारों का स्पष्टीकरण आदि करना होता है। विश्लेषणात्मक प्रश्नों से अभिप्राय है– पाठ के विचारों का स्पष्टीकरण। सजातीय एवं पूरक प्रश्न यहीं पर पूछे जा सकते हैं। काल्पनिक प्रश्न पूछने का भी यही स्थल है। विचार–विश्लेषण का अन्तिम सोपान बोधात्मक प्रश्न है, जिस के द्वारा यह पता लगता है कि छात्रों ने कितना ग्रहण किया है।

**कक्षाकार्य एवं निरीक्षण**

छात्र अपनी अभ्यास पुस्तिका में श्यामपट्ट पर अंकित शब्दार्थों व अन्य परिभाषा व उदाहरण को लिखते हैं, तब शिक्षक कक्षा में घूम–घूम कर छात्रों का निरीक्षण करता है, यथा सम्भव प्रत्येक छात्र के समीप जाकर उनके लिखित कार्य का सुधार करेगा एवं सुझाव देगा। यहाँ पर यह भी ध्यान रखना चाहिए कि सभी छात्र श्यापट्टांकित तथ्यों को अपनी अभ्यास–पुस्तिका पर लिखें।

**आवत्यात्मक प्रश्न**

पढ़ाई गई शिक्षण–सामग्री को आधार बना कर छात्रों ने कितना ग्रहण किया है, उनकी प्रगति संतोषजनक हुई है या नहीं यह जांचने–परखने के लिए शिक्षक उनसे कुछ प्रश्न पूछता है। सभी अन्वितियों का समन्वय करके पूरे पाठ से चार–पांच प्रश्न पूछे जा सकते हैं।

**गहकार्य**

यह शिक्षण प्रक्रिया का अन्तिम सोपान है। कक्षा–शिक्षण में सम्पूर्णता लाने के लिए गहकार्य दिया जाता है। छात्रों के मानसिक एवं बौद्धिक स्तर एवं रूचि एवं क्षमता को ध्यान में रखकर ही गहकार्य दिया जाना चाहिए।

**अपनी प्रगति जांचिए-2**

1. भाषा शिक्षण के मूल उद्देश्य क्या है?
2. प्रवचन विधि तरीके प्रचलन में हैं?

## 3.7 सारांश

आधुनिक काल यानि कि 1900 से आज तक गद्य का उत्तरोत्तर विकास हुआ है। गद्य में अनेक विधाएं हमारे सामने आ रही है। गद्य तो सर्वाधिक लोकप्रिय विद्या है। उपन्यास, कहानी तो बहुत ही लोकप्रिय विद्या है, जो प्रत्येक घर में पढ़ी जा रही है। गद्य शिक्षण प्रायः कक्षा तीन से प्रारम्भ की जाती है। गद्य तो समय का सदुपयोग भी कर रहा है, यात्रा में, खाली समय में आदि। गद्य का शिक्षण करते समय लगभग पांच प्रणालियों का प्रयोग किया जा रहा है, अर्थ कथन प्रणाली, व्याख्या प्रणाली विश्लेषण प्रणाली, समीक्षा प्रणाली, संयुक्त प्रणाली आदि।

अन्त में कहा जा सकता है कि गद्य सर्वाधिक लोकप्रिय विद्या है।

**मॉडल उत्तर**

1.1 छन्द, अलंकार योजना का निर्वाह किए बिना की गई रचना गद्य कहलाती है।

1.2 दैनिक कार्य कलापों में, ज्ञानार्जन के विकास में, व्याकरण भाषा के प्रयोग में।

2.1 भाषा ज्ञान में वद्धि।

2.2 विचार ग्रहण करने की क्षमता में वद्धि।

## 3.8 मुख्य शब्द

1. **ज्ञानार्जन**–ज्ञान गहण करने का साधन
2. **सजनात्मक**– कुछ नया कार्य करना
3. **मौलिक**–मूल सम्बन्धी, असली, वास्तविक
4. **शब्द-विग्रह**–शब्दों को अलग करना

## 3.9 सन्दर्भ ग्रन्थ

1. रमन बिहारी लाल रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ 1980-81
2. रघुनाथ सफाया हिन्दी शिक्षण, पंजाब किताब घर, जालन्धर 1979
3. सावित्री सिंह हिन्दी शिक्षण, लायल बुक डिपो, मेरठ।

# इकाई–3

# अध्याय-15: व्याकरण–शिक्षण

**उद्देश्यः**

छात्र प्रस्तुत पाठ को पढ़ने के पश्चात् आप निम्न उद्देश्यों को ग्राह्य बना सकेंगे।

- ध्वनि, ध्वनिसमूहों, ध्वनियों के अन्तर को समझ सकेंगे।
- शब्द–योजना, शब्द–शक्तियों छंद एवं अलंकार और रस का प्रत्याभिज्ञान कर सकेंगे।
- व्याकरण के तत्त्व (इकाई ) का प्रत्यास्मरण कर सकेंगे।
- व्याकरण–शिक्षण की विभिन्न प्रविधियों या प्रणाली का उल्लेख कर सकेंगे।
- छात्र शुद्ध वर्तनी लिखने, शुद्ध वाक्य रचने विराम चिन्हों का सही प्रयोग करना सीखेंगे।

**संरचनाः**

3.1 व्याकरण : भूमिका एवं अर्थ
3.2 व्याकरण : परिभाषा
3.3 व्याकरण : महत्त्व
3.4 व्याकरण : उद्देश्य
3.5 व्याकरण : तत्त्व
3.6 व्याकरण : शिक्षण–प्रणाली
3.7 व्याकरण : रूचिकरण एवं सरस शिक्षण
3.8 सारांश
मॉडल उत्तर
3.9 मुख्य शब्द
3.10 सन्दर्भ ग्रन्थ

## 3.1 भूमिका एवं अर्थ

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, विचारों के आदान–प्रदान के लिए कुछ सार्थक ध्वनि–प्रतीकों को अपनाया। ये ध्वनि प्रतीक ही भाषा कहलाए। कालान्तर में भाषाओं के सर्वमान्य रूपों का विश्लेषण कर उनमें कुछ नियम निकाले गए। ये नियम ही भिन्न–भिन्न भाषाओं के अपने व्याकरण के अंग है। यहाँ हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि पहले भाषा का विकास हुआ, फिर व्याकरण बना।

व्याकरण ऐसा शास्त्र है जो हमें यह बताता है कि किस वाक्य में कौन सा शब्द कहाँ रहना चाहिए।

व्याकरण तो भाषा के सर्वमान्य रूप का संरक्षण करता है, लेकिन भाषा तो फिर भी व्याकरण के नियमों से इधर–उधर हो ही जाती है।

## 3.2 परिभाषा

महिर्ष पतजलि ने अपने महाभाष्य में इसे **'शब्दानुशासन'** कह कर परिभाषित किया है। **डॉ. स्वीट के मतानुसार**–

'व्याकरण भाषा का व्यावहारिक विश्लेषण अथवा उसका शरीर विज्ञान है।'

जैगर महोदय के विचारानुसार– "प्रचलित भाषा सम्बन्धी नियमों की व्याख्या ही व्याकरण है।"

## 3.3 महत्त्व

छात्रों! यहाँ हमें यह बात समझ लेनी चाहिए कि भाषा परिवर्तनशील है, विकासशील है। व्याकरण उसके इस विकास पर नियंत्रण का कार्य करता है। व्याकरण भाषा को अव्यवस्थित एवं उच्श्रंखल होने से बचाता है। अतः भाषा के स्वरूप को शुद्ध रखने, उसको विकृतियों से बचाने के लिए व्याकरण की शिक्षा आवश्यक है। व्याकरण भाषा का सहचर है। भाषा रूप भवन की रचना शब्द रूपी ईंट व्याकरण रूपी सीमेंट के समुचित योग से सम्भव है।

## 3.5 व्याकरण के तत्त्व

किसी भाषा के व्याकरण के तीन मूल तत्त्व होते हैं– वाक्य → शब्द → अक्षर

**अपनी प्रगति जांचिए-1**

1. महर्षि पतजलि के व्याकरण को क्या कहा है?
2. व्याकरण के मूल तत्त्व कौन–कौन से हैं?

**उद्देश्य**

भाषा अनुकरण से सीखी जाती है पर भाषा को प्रभावशाली बनाने के लिए हमें उसके सर्वमान्य रूप को सीखना होता है। भाषा के सर्वमान्य रूप को जानने के लिए व्याकरण को जानना होता है। अतः व्याकरण शिक्षण के कुछ उद्देश्य है–

1. छात्रों को ध्वनियों, ध्वनियों के सूक्ष्म अन्तर शब्द–योजना, शब्द शक्तियों एवं शुद्ध वर्तनी का ज्ञान कराना।
2. छात्रों को वाक्य–रचना के नियम, विराम चिन्हों का शुद्ध प्रयोग आदि का ज्ञान कराना।
3. छात्रों को शब्द–सूक्ति, लोकोक्ति, मुहावरे आदि का प्रसंगानुकूल अर्थ निकालना और स्वराघात एवं बलाघात के अनुसार अर्थ बोध कराने के योग्य बनाना।
4. छात्रों में भाषा के गुण–दोष परखने की रूचि उत्पन्न करना।

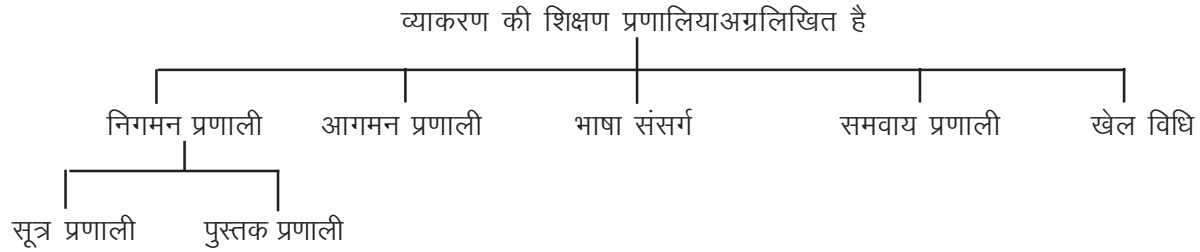


5. छात्रों में भाषा एवं साहित्य की समीक्षा करने की अभिवत्ति का विकास करना।

## 3.6 माध्यमिक स्तर पर व्याकरण की शिक्षण प्रणाली

3.6.1. **निगमन प्रणालीः** प्राचीन काल में जब छात्र आश्रमों में रह कर शिक्ष प्राप्त करते थे, जब उन्हें कुछ नियम, उपनियम बता दिये जाते थे, छात्र उन्हें रट लेते थे, इस प्रणाली को निगमन प्रणाली कहते है। जैसाकि पहले भी दर्शाया गया है इस प्रणाली के दो रूप है।

1.1 ***सूत्र प्रणालीः*** अध्यापक छात्रों को कुछ सूत्र बता देते हैं और शिक्षार्थी उन्हें समझे बिना ही कण्ठस्थ कर लेते हैं।

1.2 ***पुस्तक प्रणालीः*** यह सूत्र प्रणाली का ही परिवद्धित रूप है। इस विधि में नियमों का ज्ञान कराने हेतु छात्रों को व्याकरण की पुस्तक दे दी जाती है। छात्र उनमें से नियम रट लेते हैं।

अधिकांश विद्वान निगमन प्रणाली को अमनोवैज्ञानिक व अरूचिकर मानते हैं, क्योंकि इस प्रणाली के केवल नियम रटने होते हैं। इस प्रणाली में चिन्तन, निरीक्षण और नियमीकरण का अवसर नहीं मिलता। अतः यह विधि त्याज्य है।

3.6.2. **आगमन प्रणालीः** इस प्रणाली में छात्र उदाहरणों की सहायता से सामान्य सिद्धान्त निकालते हैं। आगमन प्रणाली में चार पदों का अनुसरण करके छात्र व्याकरण के नियम व उपनियम खुद निकालते हैं।

अ. ***उदाहरणः*** सर्वप्रथम बच्चों के सामने एक ही प्रकार के कई उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं।

ब. ***निरीक्षणः*** छात्र इन उदाहरणों को देखते हैं, इनका विश्लेषण करते हैं और इनमें जो समानता होती है उसका पता लगाते हैं।

स. ***सामान्यीकरणः*** इस समानता को वे नियम का रूप देते हैं।

द. ***परीक्षणः*** निकाले गए नियमों की सत्यता हेतु उनके परीक्षण करते हैं।

यह प्रणाली सरस, रूचिकरण व ग्राह्य है, क्योंकि इस प्रणाली में छात्रों को स्वयं सीखने का अवसर मिलता है, जिससे उनका मानसिक विकास होता है, इस प्रकार सीखा हुआ ज्ञान स्थायी होता है। अतः इस प्रणाली में कुछ शिक्षण सूत्रों 'ज्ञात और अज्ञात', 'मूर्त से अमूर्त' 'सरल से कठिन' आदि का पालन किया जाता है।

3.6.3. **भाषा संसर्ग प्रणालीः** यह प्रणाली उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी है। इस में भाषा पर अधि ाकार रखने वाले कतिपय लेखकों की कृतियाँ पढ़ाई जाती है, जिससे छात्र भाषा के सही रूप का ज्ञान प्राप्त करते है। लेकिन यह प्रणाली अपने आप में पूर्ण नहीं है। इसमें हम अग्रलिखित चार (बातों) तथ्यों का ध्यान में रखना पड़ता है।

***प्रथमः*** इस प्रणाली से केवल व्यावहारिक व्याकरण की शिक्षा दी जा सकती है। नियमित व्याकरण पढ़ाने के लिए हमें आगमन प्रणाली का ही सहारा लेना पड़ता है।

***दूसरेः*** इस प्रणाली में भाषा के शुद्ध रूप का ज्ञान देने में अधिक समय लगेगा।

***तीसरेः*** शुद्ध एवं अशुद्ध विवेचन करने का कोई आधार न होने के कारण शुद्धता में कमी स्वाभाविक होगी।

***चौथेः*** बिना विवेचन के आत्मविश्वास नहीं होगा और आत्मविश्वास के अभाव में भाषा पर अधिकार करने की कल्पना सार्थक नहीं।

अतः व्याकरण शिक्षण की यह प्रणाली अपने आप में पूर्ण न होने के कारण इस पर निर्भर नहीं रहा जा सकता।

3.6.4. **समवाय प्रणालीः** इस प्रणाली के प्रतिपादकों का मत है कि व्याकरण की शिक्षा स्वतन्त्र रूप से न देकर साहित्य के प्रतिष्ठत विद्वानों की रचनाएं पढ़ाई जाए। इसके अन्तर्गत मौखिक एवं लिखित कार्य कराते वक्त, गद्य की पुस्तक पढ़ाते, रचना कार्य कराते समय प्रासंगिक रूप से व्याकरण के नियमों का ज्ञान कराया जाता है।

यह विधि मनोवैज्ञानिक है, लार्ड मैकाले के अनुसार "बालक उस भाषा को शीघ्र सीखता है, जिसका व्याकरण वह नहीं जानता।" यह विधि उच्च कक्षाओं के अनुरूप है।

3.6.5. **खेल विधिः** इस प्रणाली से खेल–खेल में व्याकरण सिखाने से व्याकरण की नीरसता छात्रों के मार्ग में बाधक नहीं बनेगी। खेल विधि से छात्र (व्यक्तिगत तथा सामूहिक खेलों में) सिद्धान्तों को हृदयंगम कर लेंगे। खेल–खेल में, शब्द–भेद, लिंग भेद, वचन आदि का ज्ञान करा सकते हैं।

अन्त में प्रायः कहा जा सकता है कि व्याकरण नीरस विषय है; विषय के ठोस ज्ञान से अभाव से ग्रसित शिक्षकों के कारण यह विषय नीरस बन गया है। अध्यापक को जो विधि उपयुक्त लगे उसे प्रयुक्त करनी चाहिए। पी. सी. रेन ने ने लिखा है– 'व्याकरण का शिक्षण आगमन विधि से और प्रयोग निगमन विधि से होना चाहिए।'

### अपनी प्रगति जांचिए-2

1. निगमन प्रणाली से आप क्या समझते है?
2. निगमन प्रणाली में .....व ..... को रखते है।
3. पी०सी० रेन ने लिखा है व्याकरण शिक्षण ..... और प्रयोग ..... से होना चाहिए।

## 3.7 व्याकरण-शिक्षण को रुचिकर बनाने के उपाय

व्याकरण के अध्ययन और अध्यापन की दशा आजकल बड़ी शोचनीय है, इस ओर अध्यापकों को ठोस कदम उठाने चाहिए। बोलचाल और लिखित भाषा में जिन नियमों का प्रयोग होता है, उन्हें व्यावहारिक व्याकरण की संज्ञा दी जाती है। इन्हीं नियमों की सूक्ष्म विवेचन नियमित व्याकरण कहलाता है। व्याकरण शिक्षण को सरस एवं रूचिकर बनाने के लिए अग्रलिखित उपाय किये जा सकते हैं–

1. व्याकरण की पाठ्यचर्या छात्रों के स्तरानुकूल बनाई जाये।
2. प्रारम्भिक कक्षाओं में बच्चों को व्याकरण की व्यावहारिक शिक्षा दी जाये। व्यावहारिक व्याकरण की शिक्षा भाषा–संसर्ग विधि से दी जाये।
3. बच्चों के भाषा सम्बन्धी ज्ञान को ध्यान में रखते हुए उनके सामने उत्तरोत्तर कठिन रचनायें प्रस्तुत की जाये।
4. व्याकरण शिक्षण को दश्य–श्रव्य सामग्री के प्रयोग से रोचक बनाया जाये।
5. छात्रों को नियम व परिभाषायें रटने से हतोत्साहित किया जाये।
6. बच्चों को सिखाए गए नियमों का अभ्यास कराने के लिए रोचक एवं भिन्न–भिन्न प्रकार के अभ्यास कराये जाए।
    1. रिक्त स्थान पूर्ति
    2. वाक्य निर्माण
    3. वचन परिवर्तन
    4. लिंग परिवर्तन
    5. पयार्यवाची शब्द
    6. विलोम शब्द

    उपर्युक्त बातों को ध्यान में रखते हुए अध्यापक व्याकरण शिक्षण को सरल एवं सरस बना सकता है।

## 3.8 सारांश

व्याकरण–शिक्षण को पढ़ते समय आप यह तो समझ चुके हैं कि भाषा भी अपने कुछ नियम्रे प्रनियमों, विधियों सिद्धान्तों में बंध ाी है। हिन्दी का व्याकरण कठोर नियमों में नहीं बंधा हुआ है, कारण है कि संस्कृत कठोर नियमों में बंधा हुआ है। तभी हिन्दी ने इतनी प्रगति की है जबकि संस्कृत जो हिन्दी की जननी है उसका प्रचार–प्रसार ज्यादा नहीं हुआ है। व्याकरण भाषा का सारथी है जो उसे बेलगाम होने से बचाता हैं अतः भाषा के रूप के शुद्ध रखने, उसको विकृतियों से बचाने के लिए व्याकरण की शिक्षा आवश्यक है। भाषा रूपी भवन की रचना शब्द रूपी ईंट, व्याकरण रूपी सीमेंट केसमुचित योग से ही सम्भव है।

स्कूलों में व्याकरण को सिखाने के लिए प्रायः पुस्तक प्रणाली का सहारा लिया जाता है जिससे व्याकरण शिक्षण नीरस व अरूचिकर हो जाता हैं। प्रायः शिक्षक को चाहिए कि वह व्याकरण को पढ़ाते वक्त आगमन विधि का सहारा लेकर पढ़ाए ताकि छात्रों को व्याकरण शिक्षण नीरस ना लगे कहना समीचीन है व्याकरण शिक्षण के बगैर भाषा शिक्षण अधूरा एवं एकांगी है।

**मॉडल उत्तर**

1.1 'शब्दानुशासन' कहा है।

1.2 वाक्य, शब्द, अक्षर

2.1 इस विधि में नियम, उपनियम बना देते हैं, छात्र उन नियमों को रट लेते हैं, व्याकरण शिक्षण अरूचिकर हो जाता है।

2.2 पुस्तक प्रणाली व सूत्र प्रणाली

2.3 आगमन विधि, निगमन विधि

## 3.9 मुख्य शब्द

1. **शब्दानुशासन**–जो शब्दों को अनुशासन में रखे।
2. **स्वराघात**–शब्दाच्चारण में किसी व्यंजन या स्वर पर अधिक जोर देना
3. **बलाघात**–अक्षर पर पड़ने वाला उच्चारणगत बल
4. **निगमन प्रणाली**–इस प्रणाली में पहने लियम बना दिये जाते हैं, छात्र उन्हें रटते हैं।
5. **आगमन प्रणाली**–इस विधि में छात्रों को उदाहरणों की सहायता से नियम बताये जाते हैं। यह प्रणाली रटन्त विधि को हतोत्साहित करती है।

## 3.10 सन्दर्भ ग्रन्थ


| | | |
|---|---|---|
| 1. | के०पी० पांडेय | शिक्षा में क्रियात्मक अनुसंधान |
| 2. | गवेषणा (पत्रिका) | केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा |
| 3. | कामना प्रसाद गुरू | हिन्दी व्याकरण 1995 |
| 4. | भाषा (पत्रिका) | केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, दिल्ली 2000 |
| 5. | नया शिक्षक (भाषा विशेषांक पत्रिका) | शिक्षा विभाग राजस्थान, बीकानेर 1999 |
| 6. | हरिदेव बाहरी | व्यावहारिक हिन्दी व्याकरण, लोक भारती प्रकाशन इलाइाबाद |
| 7. | Jesberson OHO | Language Nature, Development and Origin, Allen and Unwin, 1922 |

# इकाई–3

# अध्याय-16: रचना–शिक्षण

**उद्देश्य:**

(इस) प्रस्तुत पाठ को पढ़ने के पश्चात् छात्रों से यह अपेक्षा की जाती है–

- रचना का अर्थ बताते हैं, प्रकार बताते हैं।
- मौलिक रचना व लिखित रचना के बारे में चर्चा करते हैं।
- मौलिक रचना के महत्त्व को जानते हैं व समझ सकते हैं।
- रचना के सोपान को व्याख्यायित करते हैं।
- रचना की शिक्षण प्रणालियों की विस्तत चर्चा करते हैं।
- रचना में मौलिकता लाने की सभी विधियों के बारे में जानते हैं।
- निबन्ध लिखने की पद्धति को जानते हैं।
- पत्र के अंग, प्रकार, व लेखन विधि से परिचित हैं।

**संरचना:**

3.1 रचना शिक्षण का अर्थ
3.2 रचना शिक्षण के प्रकार
3.3 मौलिक एवं लिखित
3.4 रचना शिक्षण में लेखन का महत्त्व
3.5 रचना शिक्षण के सोपान
3.6 रचना की शिक्षण प्रणालियाँ
3.7 रचना में मौलिकता लाना
3.8 रचना में संशोधन
3.9 रचना शिक्षण में निबन्ध लेखन, विधि, गुण
3.10 रचना शिक्षण में पत्र, अंग, प्रकार, शिक्षण विधि, लेखन विधि
3.11 सारांश
मॉडल उत्तर
3.12 मुख्य शब्द
3.13 सन्दर्भ ग्रन्थ

## 3.1 रचना की भूमिका

संसार के प्रत्येक व्यक्ति अपने भावों व विचारों को अभिव्यक्त करते हैं चाहे मौखिक या लिखित रूप में। मानव की इसी चाह में 'रचना' का अर्थ निहित है सीधे व सरल शब्दों में 'भाषागत प्रकाशन' ही रचना है। भाषा–क्षेत्र में इसका अर्थ है 'भाषा में विचारों का स्पष्टीकरण। भाषा–शिक्षण के विभिन्न उद्देश्यों में एक उद्दरेश्य विद्यार्थियों को अपने भावों, विचारों को प्रभावशाली ढंग से प्रकट करने की योग्यता विकसित करना है। अतः उन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति हेतु उसे शुरू से रचना कार्यों की ओर अग्रसर किया जाता है।

## 3.2 रचना का अर्थ

रचना शब्द 'composition' का हिन्दी रूपान्तरण है। भाषा के क्षेत्र में रचना के अन्तर्गत भावों व विचारों को शब्द–समूहों में सँवारते है। विचारों को क्रमबद्ध करके शब्द–समूह में व्यक्त करना, आत्माभिव्यक्ति का अभ्यास, भावों एवं विचारों की अभिव्यक्ति, तथा कलात्मक ढंग से विचार व्यक्त करना ही रचना है।

## 3.3 रचना के प्रकार

रचना के दो प्रकार है – 1. मौखिक रचना 2. लिखित रचना।

मौखिक रचना, व्यक्ति बोलकर अपने विचार प्रकट करता है।

लिखित रचना, जब व्यक्ति अपनी अभिव्यक्ति लिख कर सकता है।

## 3.4 मौलिक लेखन या लिखित रचना क्या है?

वस्तुकार या मूर्तिकार अपने स्थूल–साधनों के प्रयोग से विभिन्न कलाकृतियों का निर्माण करता है। चित्रकार तूलिका के सहारे अपने सूक्षम भावों को पटल पर अंकित करता है। ठीक इसी तरह लेखक वर्ण, शब्द, वाक्य लोकोक्ति मुहावरों का आश्रय लेकर व्याकरण सम्मत नियमों में आबद्ध होकर लेखन के सहारे अपने आंतरिक मनोभावों को साकार करता है। मूर्तिकार, वास्तुकार, चित्रकार तथा लेखक का एक ही उद्देश्य है– 'रचना करना, अपने व्यक्तित्व की छाप कृति पर अंकित करना।'

## 3.5 रचना शिक्षण में लेखन का महत्त्व

प्रिय बच्चो! जैसाकि आप जानते हैं कि शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य की अन्तर्निहित भावनाओं और शक्तियों को सुअवसर देकर उनका पूर्ण विकास करना है। भाषा इन शक्तियों के विकास में महत्वपूर्ण आधार प्रदान करती है। बोलचाल और लेखन की शिक्षा का समुचित आयोजन किया जाये, तो मौलिक अभिव्यक्ति के लिए मार्ग प्रशस्त हो जाता है। लेखन में नवीनता या मौलिकता लाने के लिए कुछ महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं पर विचार करेंगे।

3.5.1. **सामाजिकता के क्षेत्र में:** आज परिवार की इकाईयां दूर–दूर स्थानों पर जा बसी है। इन्हीं बिखरे बिन्दुओं को केन्द्रित करने के लिए हर दिन सम्बन्धी के लिए या विदेशों में बसे मित्र के लिए, पत्र व्यवहार ही ऐसा माध्यम है। जिससे विचारों का आपसी आदान–प्रदान हो सकता है। अतः पत्र–व्यवहार की रचना महत्वपूर्ण स्थान ग्रहण करती जा रही है।

3.5.2. **व्यावसायिक व्यवहार के लिए:** हमारी नई शिक्षा नीति का उद्देश्य हर बालक को अपना स्वतंत्र व्यवसाय चुने को प्रोत्साहन देना है। परिणाम स्वरूप हमें व्यावसायिक और वाणिज्य से सम्बन्धित पत्र–व्यवहार, सार–लेखन टिप्पणी, विचार या भाव विस्तार आदि कुशलताओं के विकास पर बल देना होगा। अतः यह कार्य रचना के समुचित अभ्यास के माध्यम से ही यह सम्भव हो पायेगा।

3.5.3. **राष्ट्रीय जीवन के लिए:** हमारा संविधान, न्यायिक प्रक्रिया और शासकीय पद्धति लिखित रूप में है। इन पहलुओं में हर शब्द का अपना अर्थ है। विद्यालयों पर यह दायित्व है कि विद्यार्थियों को शब्द के भेदों–अभेदों के प्रति सचेत करें। उनका उचित प्रयोग करना सिखायें, ताकि वे अपने मत को सुस्पष्ट और सारगर्भित शब्दों में प्रकट कर सकें।

3.5.4. **साहित्य में सजनात्मकता:** विज्ञान के इस युग में मानव हृदय कठोर होता जा रहा है। मशीनीकरण के युग में उसके हृदय का स्पन्दन अपनी संवेदनशीलता खोता जा रहा है। भारतीय मनीषियों ने बिना स्टेथेस्कोप यन्त्र की सहायता से धरती के स्पन्दन का अनुभव किया था। आज ऐसी स्थिति में भावुक लेखक तैयार करने की आवश्यकता है, जो मौलिक लेखन द्वारा वैज्ञानिक के मन को गुदगुदा कर उन्हें अपनी भूल पर प्रायश्चित करने पर बाध्य कर सकें।

## 3.6 रचना की शिक्षा के सोपान

रचना शिक्षण के उन सोपानों को तीन भागों में बाँटा जा सकता है।

3.6.1. आरम्भिक सोपान

3.6.2. मध्य द्वितीय सोपान

3.6.3. उत्तर ततीय सोपान

1. **आरम्भिक या प्रथम सोपानः** प्रथम सोपान में सुलेख वर्णों की बनावट व सुडौलता, शब्दों की उचित दूरी पर ध यान दिया जाता है।

2. **मध्य या द्वितीय सोपानः** इस सोपान में वर्तनी की शुद्धता पर बल पर दिया जाता है। वाक्य–रचना आदि भी उसी सोपान के अन्तर्गत आते हैं। वाक्य रचना के विभिन्न रूपों जैसे प्रश्नार्थक, आज्ञार्थक, स्वीकारार्थक, नकारात्मक आदि के अभ्यास की आवश्यकता है। अतः ठीक उसी तरह अव्यवस्थित पदक्रम को व्यवस्थित करना, वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति करना, क्रियाओं के विविध रूपों का अभ्यास, काल परिवर्तन आदि वाक्य संरचना के अभ्यास क
उदाहरण है।

3. **अन्तिम या उत्तर सोपानः** वास्तविक मौलिक रचना का प्रारम्भ तो उत्तर सोपान ही है। इसके अन्तर्गत हम कई उपविषयों को रख सकते हैं। उदाहरणार्थ अनुच्छेद रचना, साहित्यिक विद्याओं की रचना, व्यावसायिक कार्यालयी पत्र व निजी या व्यक्तिगत पत्र–रचना इसमें समाविष्ट होते हैं।

## 3.7 रचना शिक्षण के प्रयोग में आने वाली शिक्षण-प्रणालियाँ

3.7.1. **प्रश्नोत्तर प्रणालीः** यह प्रणाली प्राचीनतम एवं सर्वाधिक प्रचलित है। अध्यापक को जिस विषय पर रचना–शिक्षण कराना हो, उससे सम्बन्धी प्रश्न छात्रों से पूछता है अध्यापक प्रश्नों को इस क्रम में पूछता है कि छात्रों को सम्बन्धित विषय पर क्रमबद्ध रूप से विचार करने का अवसर मिलता है। इस विधि में पहले मौखिक रचना बाद में लिखित रचना की जाती है। यह मनोवैज्ञानिक प्रणाली है इसमें छात्र व शिक्षक दोनों ही सक्रिय रहते हैं।

इस प्रणाली में अध्यापक को यह ध्यान रखना होता है कि रचना का विषय छात्रों के अनुभव सीमा के भीतर का हो, प्रश्न छोटे व स्पष्ट हो, प्रश्नों का उत्तर पूर्ण वाक्य में लिया जाये। एवं छात्रों के उत्तरों में त्रुटि होने पर उन्हीं की सहायता से दूर कराने का प्रयास किया जाए।

3.7.2. **चित्र-वर्णन प्रणालीः** इस विधि में जिस विषय पर रचना–कार्य कराना होता है, उससे सम्बन्धित चित्र कक्षा में छात्रों के समक्ष प्रस्तुत किये जाते हें। पहले इन चित्रों पर मौखिक रूप से चर्चा होती है और फिर उन्हें क्रमिक रूप से प्रदर्शित किया जाता है। विद्यार्थी इनका वर्णन अपनी सूझ–बूझ और कल्पना के अनुसार करता है। इस विधि का प्रयोग प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर पर सफलतापूर्वक किया जा सकता है। इस प्रणाली से छात्रों में मौलिक लेखन तथा स्वानुभूति प्रकट करने का अच्छा अवसर मिलता है।

3.7.3. **भाषायन्त्र प्रणालीः** इस प्रणाली में छोटे बच्चे खेल–खेल में रचना करना सीख जाते हैं। इस विधि में प्रायः चार उपकरणों की सहायता ली जाती है टेपिरिकार्डर, रचना का रिकार्ड या कैसेट, चित्र एवं सहायक पुस्तक। पहले टेपरिकार्डर पर रचना का कैसेट लगा कर उसे चालू कर दिया जाता है, दीवार पर सम्बन्धित चित्र टाँग कर अध यापक कैसेट से निकलने वाले वाक्यों के अनुसार संकेतक से चित्र पर संकेत करता चलता है। बच्चे चित्र देखते हैं, कैसेट सुनते है, छात्रों की एक से अधिक इन्द्रियां अर्थात आँख, कान, हाथ आदि सक्रिय रहते है और बच्चों की पाठ में रूचि बनी रहती है। लेकिन यह विधि खर्चीली है एवं छोटे बच्चे अपनी त्रुटियाँ स्वयं दूर करे, ऐसी आशा करना व्यर्थ है।

3.7.4. **रूपरेखा प्रणालीः** बच्चे को पैदल चलना सिखाने के लिए 'वाकर' आदि का आश्रय देकर पदसंचालन क्रिया को रोचक बनाया जाता है तथा उसे न गिरने या चोट लगने के लिए आश्वस्त किया जाता है। उसी प्रकार निबन्ध जैसे ग्लैशियर को पार करने के लिए स्केटिंग पादुका बना काम निबन्ध की रूपरेखा से लिया जाता है।

इस विधि के अनुसार निबन्ध का आरम्भ, मध्य तथा समापन वाक्यांशों को रूपरेखा के माध्यम से दे दिया जाता है। विद्यार्थी को कुछ वाक्यों का निर्माण करना पड़ता है। और कुछ वाक्यों से विषय के विस्तार में सहायता मिलती है।

यह विधि सभी स्तरों पर सफलतापूर्वक अपनाई जा सकती है।

3.7.5. **अनुकरण प्रणालीः** इस प्रणाली में छात्रों के सामने त्रुटि रहित कोई रचना प्रस्तुत की जाती है। छात्र उस रचना का अध्यनन एवं मनन करते हैं। फिर उसी रचना से मिलती–जुलती कोई दूसरी रचना छात्र स्वयं करते हैं जैसे– "यदि में मंत्री होता" रचना का अनुकरण कर 'यदि मैं मुख्यमंत्री होता' विषय पर रचना कार्य करते हैं।

3.7.6. **प्रवचन प्रणालीः** इस प्रणाली के अनुसार शिक्षक विषय के बारे में व्याख्यान द्वारा पूरी जानकारी छात्रों के सम्मुख रखता है। छात्र सुनते हैं तथा अपने सामर्थ्य के अनुसार रचना–कार्य करते हैं। यह विधि उच्च कक्षाओं में प्रयुक्त की जा सकती है।

3.6.7. **स्वाध्याय प्रणालीः** शिक्षक एवं शिक्षार्थी दोनों को इस प्रणाली में सक्रिय रहना पड़ता है। इस विधि से छात्रों के ज्ञान में वद्धि होती है तथा विषया सामग्री के स्वाध्याय के समय उनका विभिन्न लेखन–शैलियों से परिचय हो जाता है। इस विधि से लेखन की अपनी शैली का निर्माण होता है, क्योंकि शिक्षार्थी को मधुमक्षि वत्ति का आश्रय लेना पड़ता है।

3.6.8. **परिचर्चा विधिः** स्वाध्याय विधि का अगला चरण परिचर्चा प्रणाली है। पहले तो शिक्षार्थी विवेच्च विषय के बारे में स्वाध्याय करें तथा फिर सामूहिक चर्चा करें।

लेखन मौखिक अभिव्यक्ति का लिपिबद्ध रूप है। चर्चा करने से विचारों में स्पष्टता आती है और विषय के प्रति प्रतिबद्धता होती है। इस शैली का प्रयोग उच्च कक्षाओं के लिए उत्तम है।

3.6.9. **वाद-विवाद प्रणालीः** उच्च कक्षाओं में इस प्रणाली का प्रयोग किया जाता है। 'सहशिक्षा' 'सती प्रथा', 'दहेज प्रथा' आदि विषयों पर रचना कार्य कराने के लिए छात्रों को दो भागों में बाँट कर रचना के पक्ष एवं विपक्ष में विचार प्रस्तुत करने के लिए कहा जाता है। छात्र रचना के पक्ष या विपक्ष में बोलते हुए अपने विचारों को सत्य सिद्ध करने के लिए तर्क प्रस्तुत करते हैं। इस प्रकार वाद–विवाद पूरा होने के पश्चात् छात्रों को विषय पर रचना–कार्य करने के लिए कहा जाता है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि छात्रों के बौद्धिक एवं मानसिक स्तर को ध्यान में रखते हुए किसी भी उपयुक्त प्रणाली का प्रयोग कर छात्रों को रचना करने में प्रशिक्षित किया जा सकता है। ये शिक्षण प्रणालियाँ रचनात्मक योग्यता को विकसित करने के लिए साधन है, साध्य नहीं।

**अपनी प्रगति जांचिए-1**

1. रचना कितनी प्रकार की होती है?
2. रचना शिक्षण के कितने सोपान हैं?
3. मौलिक रचना का महत्त्व बताईये?
4. रचना में प्रयुक्त शिक्षण प्रणालियों में अनुकरण प्रणाली के बारे में बताईये?

## 3.8 रचना में मौलिकता कैसे लाये?

1. छात्रों के मन से भय, झिझक, संकोच दूर किया जाये, ताकि उनमें आत्मविश्वास उत्पन्न हो।
2. छात्रों को लिखित कार्य के अधिक अवसर प्रदान किए जाएं।
3. छात्रों में स्वाध्याय की रूचि जागत की जाये। उन्हें अध्ययन चिन्तन, मनन एवं अभिव्यक्ति के अधिक से अधिक अवसर प्रदान किये जाएं।
4. उन्हें (छात्रों) के विभिन्न घटनाओं, दश्यों, वस्तुओं आदि का निरीक्षण करने, कल्पना करने और विचार करने के अधिक से अधिक अवसर प्रदान किये जाएं।
5. छात्रों को अपने विचारों की अभिव्यक्ति की पूर्ण छूट दी जाये।
6. विद्यालय पत्रिका का आयोजन भी मौलिक रचना का एक अच्छा अवसर है।

## 3.9 लिखित रचना में संशोधन

### लिखित रचना सम्बन्धी अशुद्धियों के कारण

छात्रों में प्रायः भाषा लिपि एवं व्याकरण समबन्धी अशुद्धियां पाई जाती है अशुद्धियों में सुधार के अभाव में रचना–कार्य का कोई लाभ नहीं है। अतः इस संदर्भ में निम्नांकित बातों का ध्यान रखना चाहिए।

1. लिखित कार्य का संशोधन अवश्य होना चाहिए। जो अशुद्धियां छात्र सामूहिक रूप से करते हैं वह श्यामपट्ट का प्रयोग करके ठीक कराई जा सकती है।
2. छात्रों की अशुद्धियों के प्रति शिक्षक का दष्टिकोण सहानुभूतिपूर्ण होना चाहिए। छात्रों की गलतियों पर नाराज होने से उनके बाल सुलभ मन को ठोस पहुंचती है।
3. छात्रों की ओर व्यक्तिगत ध्यान देना आवश्यक है, अशुद्धियों के निराकरण के लिए।
4. संशोधन कार्य के बाद यह देखना आवश्यक है कि छात्रों ने गलतियों को ठीक किया है या नहीं।
5. अशुद्धियों को धीरे–धीरे धैर्य के साथ ठीक करना चाहिए।
6. रचना के लिए अभ्यास पुस्तिका होनी चाहिए।
7. विचार सम्बन्धी अस्पटता को छात्र को व्यक्तिगत रूप से बुलाकर सहानुभूति पूर्वक ठीक करनी चाहिए।
8. छात्रों में सावधानी से लिखने की आदत डालनी चाहिए।
9. लिखित रचना कराने से पहले मौखिक रचना अवश्य करवानी चाहिए।
10. लिखित कार्य का निरीक्षण विधिवत व सावधानीपूर्वक हो।

### रचना सम्बन्धी अशुद्धियों के कारण

1. लिखने में असावधानी
2. स्वाध्याय का अभाव
3. लिखित कार्य में संशोधन का अभाव
4. रूचि न होना
5. गह लिखित गह कार्य का नहीं दिया जाना
6. केवल भाषा में वर्तनी का सुधार करना

11. जांच कार्य के लिए कुछ संकेत चिन्ह बना लेने चाहिए, जिससे छात्र एवं अध्यापक दोनों के लिए संशोधन आसान हो जाए, वह चिन्ह निम्नलिखित है–
    1. वर्तनी की अशुद्धि–व
    2. विराम–चिन्ह की अशुद्धि–वि
    3. व्याकरण की अशुद्धि–व्या
    4. अप्रसांगिक तथ्यों के लिए–अ
    5. निरर्थक शब्दों के लिए–नि
    6. अस्पष्टता के लिए–?
    7. अनावश्यक शब्द व वाक्य के लिए–×
    8. भाषा की अशुद्धि के लिए–भा
    9. वाक्य में कुछ छूटता है–न
12. लापरवाह छात्रों का पता लगाकर उन पर विशेष ध्यान दियाजाए इस प्रकार से अध्यापक धीरे–धीरे सावधानी के साथ छात्रों की रचना सम्बन्धी अशुद्धियों को दूर करने का प्रयास करना चाहिए।

# 3.10 निबंध लेखन

## निबंध लेखन का अर्थ

नि+बन्ध अर्थात् भली प्रकार से बँधा हुआ। निबन्ध एक ऐसी रचना है, जिसने विषय विशेष पर व्यक्ति अपने विचार सुनियोजित विधि से लिखित रूप में अभिव्यक्ति करता है। यह आत्मप्रकाशन जितना सरल, स्वतंत्र और सजीव होगा, उतना ही सराहा जायेगा। निबन्ध कई प्रकार के होते हैं– वर्णनात्मक, विवरणात्मक, विचारात्मक, भावात्मक आदि।

निबंध के तीन अंग हैं– 1. आरम्भ 2. मध्य या प्रसार 3. अंत या उपसंहार

1. **आरम्भ या भूमिकाः** निबन्ध के आरम्भ में शीर्षक के भाव को स्पष्ट किया जाता है। निबन्ध का आरम्भ किसी सुन्दर लोकोक्ति, मुहावरें अथवा आकर्षक वाक्य से हो, तो अच्छा है, ताकि पाठक इसे पढ़ने को लालायित हो सकें।
2. **मध्य या प्रसारः** यह निबन्ध का मूल भाग है। इस भाग में ही निबन्ध के सभी विचारों का स्पष्टीकरण किया जाता है।
3. **उपसंहारः** इसमें समस्त निबन्ध का सार होता है। यह स्वाभाविक, संक्षिप्त एवं संगत होना चाहिए। विषय से होने वाले लाभ या हानि की प्रस्तुति इसी भाग में की जाती है।

## निबंध के गुण

निबन्ध रचना करते समय निम्न बातों का ध्यान रखना होता है।

1. कला पक्ष
2. भाव पक्ष

**1. कला पक्ष**

- 1.1 विषयानुसार शब्दावली का प्रयोग
- 1.2 सरल वाक्य रचना
- 1.3 भावानुकूल भाषा
- 1.4 विचारों की क्रमबद्धता
- 1.5 रचना की सरलता तथा सजीवता
- 1.6 विषयान्तर त्याग
- 1.7 पुनरावत्ति का बहिष्कार

**2. भाव पक्ष**

- 2.1 विचारों की नूतनता
- 2.2 व्यक्तित्व की छाप
- 2.3 मौलिकता
- 2.4 प्रभावोत्पादकता
- 2.5 कल्पना प्रवणता।

**अपनी प्रगति जांचिए-2**

1. निबन्ध को मुख्यतः कितने भागों में बाँटा जा सकता है?
2. निबन्ध के कला पक्ष के बारे में बताईये?

# 3.11 पत्र-लेखन

पत्रों का जहाँ व्यक्तिगत, सामाजिक तथा व्यावसायिक महत्त्व है, वहां यह साहित्य की भी एक सशक्त विद्या है। इस विधि की समुन्नति के लिए अध्यापक का सचेत रहना चाहिए। इसके शिक्षण में सुनियोजित वैज्ञानिक प्रणाली अपनानी चाहिए।

### पत्र के प्रकार

1. व्यक्तिगत पत्र
2. कार्यालय पत्र

### पत्र के अंग

पत्र लेखन शिक्षण के लिए विद्यार्थियों को पत्र के विभिन्न अंगों के बारे में जानकारी देना आवश्यक है। सामान्यतः पत्र के अंग अग्रलिखित है–

1. **पत्र के प्रेषक का पताः** पत्र के ऊपर दाएं तरफ कोने में पत्र लिखने वाले का पता लिखा जाता है।
2. **तिथिः** पत्र के प्रेषक के पते के नीचे दिनांक लिखा जाता है।
3. **प्रशस्तिः** पत्र आरम्भ करने से पूर्व दाई ओर लेखक के सम्बन्ध के अनुसार सम्बोधन का प्रयोग करना चाहिए। यथा आदरणीय पिता जी आदि। सम्बोधन के बाद अर्द्धविराम का चिन्ह लगाना चाहिए।
4. **शिष्टाचारः** प्रशस्ति के नीचे की पंक्ति में कुछ दाई ओर सम्बन्ध के अनुसार शिष्टाचार का शब्द लिखना होता है। जैसे– सादर प्रणाम, चरण स्पर्श इत्यादि।
5. **पत्रारम्भः** सामान्य कुशलता आदि से पत्र को प्रारम्भ किया जाता है।
6. **कलेवरः** जिस उद्देश्य से पत्र लिखा जा रहा है उससे सम्बन्धित सभी बातों को क्रमानुसार अलग–अलग अनुच्छेदों में बाँटकर लिखा जाता है।
7. **पत्र समाप्तिः** पत्र लिखने के उपरान्त एक–दो वाक्य शिष्टाचार सम्बन्धी लिखे जाते हैं। यथा– शेष सब ठीक है, त्रुटियों को क्षमा करें, पत्रोत्तर शीघ्र दें, आदि।
8. **आत्मनिर्देशः** पत्र के अन्त में दाई तरफ अपने लिए निर्देश लिखा जाता है। जैसे– शुभेच्छु, शुभांकाक्षी, भवदीय, प्रार्थी, निवेदक आदि।
9. **हस्ताक्षरः** आत्मनिर्देश के उपरान्त पत्र लिखने वाला अपने हस्ताक्षर करता है या नाम लिखता है।
10. **पताः** लिफाफे पर, जिसे पत्र भेजना है, उसका पूरा नाम तथा पता लिखना होता है। पिनकोड लिखने से डाक–विभाग को बहुत सुविधा होती है, तथा पत्र गन्तव्य पर शीघ्र पहुँचता है।

### पत्र-लेखन शिक्षण विधि

पत्र–लेखन प्रायः प्रार्थना के रूप में तीसरी या चौथी कक्षा से प्रारम्भ होता है। और विषय भिन्नता के साथ उच्च कक्षाओं तक इसका अभ्यास कराया जाता है।

1. **आदर्श विधिः** इस विधि में छात्रों के समक्ष पत्र का नमूना प्रस्तुत किया जाता है। विद्यार्थी आदर्श पत्र के नमूने को लिखित रूप में श्यामपट्ट पर देखते हैं, उसकी नकल कर लेते हैं। शिक्षक हर पंक्ति लिखने की विधि की ओर उनका ध्यान दिलाया जाता है। यह पत्र प्रायः प्रधानाध्यापक के नाम विद्यालय से अवकाश लेने के लिए प्रार्थनापत्र के रूप में लिखवाया जाता है। शुरू में इस प्रणाली के प्रयोग करने में कोई हानि नहीं है।
2. **खंडशः पत्र लेखन विधिः** इस प्रणाली में छात्रों के सामने पत्र के एक–एक खंड पर विचार किया जाता है। अध्यापक छात्रों से प्रश्न पूछता है–

   ***प्रश्न***– यह प्रार्थना पत्र किसके नाम लिखना है?

   ***प्रश्न***– उस अधिकारी के पद का क्या नाम है?

   छात्र एक–एक प्रश्न का उत्तर देता है और शिक्षक उसे उचित स्थान पर श्यामपट्ट पर लिखता जाता है। इस प्रकार छात्र के सामने पत्र का एक–एक खंड स्पष्ट रूप से उभर कर आता है।

तत्पश्चात् प्रशस्ति खंड आता है, यहां भी शिक्षक प्रश्न पूछता है–

***प्रश्न***–उस अधिकारी को हम किस सम्मानजनक शब्द से सम्बोधित करते हैं? अध्यापक स्वयं इस प्रश्न का उत्तर देता है। यथाः– महोदय, श्रीमान् आदि।

इसके बाद पत्र का मूल विषय प्रारम्भ होता है यहाँ भी अध्यापक प्रश्नोत्तर की सहायता लेता है।

(i) हमारे निवेदन का विषय क्या है?

(ii) हमें निवेदन की क्यों आवश्यकता है?

(iii) हमें अवकाश कब से कब तक चाहिए?

ध्यातव्य है, प्रश्न कक्षा के स्तरानुसार पूछे जाए। उत्तरों को श्यामपट्ट पर लिखने से मूल विषय का नमूना छात्रों के सम्मुख उभर कर आ जायेगा। इस विधि में छात्र सक्रिय रहते हैं।

इसी तरह पत्र के समाप्ति खंड पर प्रश्न पूछे जा सकते हैं। खंडश पत्र लेखन विधि से विद्यार्थियों के समक्ष सारा नमूना आदर्श रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है।

3. **खंडशः पत्र विश्लेषण विधिः** ऊपर पत्र के विभिन्न खंडों की चर्चा की गई है। पत्र के हर एक खंड पर एक–एक कर चर्चा की जा सकती है यथा–

| | **सम्बोधन** | **प्रशस्ति** | **समाप्ति स्वनिर्देश** |
|---|---|---|---|
| (i) | अपने से बड़े, अध्यापक आदि के लिए | सादर प्रणाम | भवदीय |
| | श्रद्धेय आचार्य जी, आदरणीय गुरु जी | सादर प्रणाम | आपका आज्ञाकारी |
| (ii) | अपने से बड़े सम्बन्धियों के लिए | | |
| | आदरणीय पिता जी | सादर प्रणाम | आपका प्यारा पुत्र |
| | आदरणीय भाई साहब | सादर प्रणाम | आपका अनुज |
| (iii) | समान आयु वालों के लिए | सप्रेम नमस्ते | तुम्हारा स्नेही सखा |
| | प्रिय | सप्रेम नमस्ते | |
| (iv) | अपने से छोटों के लिए | सदा सुखी रहो | तुम्हारा शुभेच्छु |
| | चिरंजीव प्रिय पुत्र | सदा प्रसन्न रहो | तुम्हारा हितैषी |

इस प्रकार खण्डशः विश्लेषण से पत्र के सभी खण्डों का उद्देश्य छात्रों के सम्मुख स्पष्ट हो जाता है। आवश्यकता पड़ने पर थोड़े परिवर्तन के साथ वह पत्र का नमूना स्वयं बना सकता है।

**अपनी प्रगति जांचिए-3**

1. पत्र के प्रकार बताइये?
2. पत्र के कितने अंग होते हैं?

## 3.12 सारांश

प्यारे बच्चों! निष्कर्षतः आप यह जान चुके होंगे कि भाषा–शिक्षण में रचना कार्य का सर्वोपरि स्थान है। रचना कार्यों के द्वारा ही बच्चों में मौलिक चिन्तन एवं सजनात्मक योगयता का विकास होता है। पहले छात्र को मौखिक रचना करनी सिखाई जाए तत्पश्चात् मौखिक रचना को आधार बना कर लिखित रचना करवाई जाए। पत्र लिखना, अर्जी लिखना, गाय, स्कूल, बस्ता, अध्यापक, मेज इत्यादि पर कुछ पंक्तियां लिखवाई जाए। जैसे–जैसे छात्र का मानसिक एवं बौद्धिक विकास होता है उसी तरह उससे वर्णनात्मक विवरणात्मक भावात्मक एवं साहित्यिक रचनाएं करवाई जाए। साथ–ही रचना कार्य में की जाने वाली त्रुटियों का संशोधन अवश्य हो, ताकि छात्र बारम्बार उन्हीं त्रुटियों को करने से बचें।

**मॉडल उत्तर**

1.1 रचना दो प्रकार की होती है–1. मौखिक रचना, 2. लिखित रचना

1.2 तीन सोपान हैं–

1. आरम्भिक सोपान
2. मध्य सोपान
3. उत्तर सोपान

1.3 मनुष्य के अन्तर्निहित भावों, विचारों, शक्तियों को सुअवसर देकर लेखन में लाना ही मौलिक रचना है।

2.1 तीन भागों में बांटा गया है–

1. आरम्भ
2. मध्य या प्रसार
3. उपसंहार

2.2 सरल वाक्य रचना, विचारों की क्रमबद्धता, विषयान्तर त्याग, भावानुकूल भाषा आदि।

3.1 पत्र के दो प्रकार हैं–

1. व्यक्तिगत पत्र
2. कार्यालय पत्र

पत्र के दस अंग होते हैं।

## 3.13 मुख्य शब्द

1 **कलेवर**–मूल विषय

2. **स्वाध्याय**–अपना अध्ययन, अध्ययन की प्रवत्ति

## 3.14 सन्दर्भ ग्रन्थ

उमा मंगल (डॉ०) हिन्दी शिक्षण, आर्य बुक डिपो, करोल बाग नई दिल्ली 2003

योगेन्द्र जीत हिन्दी शिक्षण, विनोद पुस्तक मन्दिर

रमन बिहारी लाल हिन्दी शिक्षण, रस्तोगी पब्लिकेशन मेरठ 1980-81

रघुनाथ सफाया हिन्दी शिक्षण, पंजाब किताब घर जालन्धर 1979

# इकाई–4

# अध्याय-17: हिन्दी–पाठ्यक्रम निर्माण एवं समीक्षा

**उद्देश्यः**

प्रस्तुत अध्याय के अध्ययन के पश्चात छात्रों में निम्नांकित परिवर्तन दष्टिगोचर होते हैं–

- छात्र पाठ्यक्रम का अर्थ अपने शब्दों में बताते हैं।
- छात्र पाठ्यक्रम की आवश्यकता को समझते हैं।
- छात्र पाठ्यक्रम के सिद्धान्तों का प्रत्याभिज्ञान करते हैं।
- छात्र पाठ्यक्रम की समीक्षा करते हैं।
- (छात्र) वह पाठ्यक्रम के गुण दोषों की पहचान करने में सक्षम हैं।

**संरचनाः**

4.1 पाठ्यक्रम की भूमिका
4.2 पाठ्यक्रम का अर्थ
4.3 पाठ्यक्रम की आवश्यकता
4.4 पाठ्यक्रम के सिद्धान्त
4.5 पाठ्यक्रम के गुण
4.6 पाठ्यक्रम के दोष
4.7 सारांश
मॉडल उत्तर
4.8 मुख्य शब्द
4.9 सन्दर्भ ग्रन्थ

## 4.1 भूमिका

पाठ्यक्रम शिक्षा पद्धति का आवश्यक अंग है। शिक्षक किसी भी शिक्षण विधि का प्रयोग करें, किसी भी शिक्षण पद्धति का अनुसरण करे एवं कोई भी विषय पढ़ाए, उसे एक निश्चित पाठ्यक्रम के अनुसार कार्य करना पड़ता है। पाठ्यक्रम के बिना न तो वह शिक्षण को व्यवस्थित कर पाता है और ना ही शिक्षाके व्यापक तथा तात्कालिक उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक हो सकता है। अब प्रश्न उत्पन्न होता है पाठ्यक्रम क्या है पाठ्यक्रम दो शब्दों के योग से बना है। पाठ्य + क्रम अर्थात् पढ़ने योगय सामग्री का क्रम

## 4.2 पाठ्यक्रम का अर्थ

'curriculum' शब्द का हिन्दी रूपान्तरण पाठ्यक्रम है। यह शब्द लैटिन के शब्द 'currer' शब्द से बना है। जिस का अर्थ है– 'दौड़ का पथ'। अतः पाठ्यक्रम का शाब्दिक अर्थ है– 'शिक्षा–सम्बन्धी दौड़ का वह मार्ग जिस पर दौड़ कर बालक अपने व्यक्तित्व विकास लक्ष्य को प्राप्त करता है।

पाठ्यक्रम को और अधिक स्पष्ट करते हुए कनिंधम कहते हैं– "पाठ्यक्रम कलाकार (शिक्षक) के हाथों में एक औजार (साधन) है जिससे वह अपनी वस्तु (छात्र) को अपने कक्षाकक्ष (विद्यालय) में अपने आदर्शों के अनुसार ढालता है।"

बालक के व्यक्तित्व के विकास के लिए अध्यापक विद्यालय के पूर्ण शिक्षण–सत्र में एक निश्चित विषय सामग्री तथा अनुभवों को अपनी शिक्षण–प्रक्रिया के माध्यम से छात्रों के समक्ष प्रस्तुत करता है। ये अधिगम–अनुभव ही किसी विषय–विशेष का पाठ्यक्रम बनाते हैं।

## 4.3 पाठ्यक्रम की आवश्यकता

1. पाठ्यक्रम के द्वारा ही स्पष्ट किया जाता है कि विद्यालय में विभिन्न स्तरों पर किस–किस विषय का ज्ञान छात्रों को दिया जायेगा। इस प्रकार पाठ्यक्रम से पाठ्यसामग्री का निर्धारण होता है। जिससे शिक्षण–प्रक्रिया को सुनियोजित करने में सहायता मिलती है।
2. पाठ्यक्रम के निश्चित होने से अध्यापक को यह पता लगता है कि पूरे शिक्षण–सत्र के दौरान उसे किस कक्षा विशेष को क्या व कितना पढ़ाना है।
3. छात्रों को भी यह पता चल जाता है कि किसी कक्षा विशेष में उन्हें पूरे शिक्षण–सत्र के दौरान क्या–क्या पढ़ना व सीखना है।
4. पाठ्यक्रम माता–पिता का मार्गदर्शन करता है।
5. पाठ्यक्रम की सहायता से अध्यापक कक्षा शिक्षण के दौरान अपने शिक्षण–लक्ष्यों से नहीं भटकता है।
6. पाठ्यक्रम की सहायता से छात्रों की योग्यता का मूल्यांकन एक निश्चित समय के पश्चात् किया जा सकता है।
7. पाठ्यक्रम पूरे समाज व देश में शिक्षा के सामान्य स्तर को बनाए रखने में सहायक है।
8. परीक्षण के प्रश्नपत्र का निर्माण करने हेतु पाठ्यक्रम एक मार्गदर्शक की भूमिका निभाता है।
9. पाठ्यपुस्तकों का निर्माण पाठ्यक्रम के आधार पर ही होता है।
10. पाठ्यक्रम की सहायता से मुख्याध्यापक या निरीक्षक अपने विद्यालय की शैक्षिक प्रगति का निरीक्षण कर सकते हैं।

## 4.4 पाठ्यक्रम निर्माण के सिद्धान्त

पाठ्यक्रम का निर्माण बहुत सोच–चिन्तन रखने वाले विद्वानों द्वारा ही करवाना चाहिए क्योंकि विद्यालय की सभी शैक्षिक क्रियाएं पाठ्यक्रम पर ही आधारित होती है।

4.4.1. **पाठ्यक्रम शैक्षिक उद्देश्यों के अनुकूल हो:** पाठ्यक्रम ऐसा हो जो शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायक हो। पाठ्यक्रम की प्रत्येक इकाई अनेक उद्देश्यों पर आधारित हो। यथा विषय का उद्देश्य छात्रों का सजनात्मक विकास करना हैं तो पाठ्यक्रम में रचना–सम्बन्धी प्रकरणों को शामिल किया जाए जो बालक की सजनात्मकता को विकसित करने में सहायक हो।

4.4.2. **मानसिक स्तरानुकूल:** आज सम्पूर्ण शिक्षण प्रक्रिया बाल–केन्द्रित है। इस तथ्य को सभी स्वीकारते हैं कि बालक उस विषय को आसानी से आत्मसात कर सकता है जो उसकी रूचि, अधिगम क्षमता, मानसिक व बौद्धिक विकास को ध्यान में रखकर निर्मित किया जाता है। यदि बालक प्राकृतिक दश्यों या घटनाओं में रूचि रखता है तो पाठ्यक्रम में ऐसी सामग्री का चुनाव किया जाए जिसमें प्राकृतिक दश्यों आदि का चित्रण हो।

4.4.3. **क्रियाशीलता:** पाठ्यक्रम का आयोजन इस प्रकार से किया जाए जिसमें छात्र को स्वयं कार्य करने के अवसर प्राप्त हों। क्योंकि बच्चा हमेशा सक्रिय रहना चाहता है। स्वयं करके सीखा ज्ञान हमेशा स्थायी होता है।

4.4.4. **वातावरण के साथ एकीकरण:** शिक्षा बालक को जीवन के साथ सामजस्य करना सिखाती है। अतः पाठ्यक्रम में बच्चे के जीवन से सम्बन्धित घटनाओं को शामिल करें, ताकि वह अपने सामाजिक वातावरण के साथ तालमेल स्थापित कर सके।

4.4.5. **समवाय का सिद्धान्तः** ज्ञान स्वयं में पूर्ण इकाई है विभिन्न विषय ज्ञान की उप इकाई है और उनमें आपस में सहसम्बन्ध होता है। भाषा एक कौशल है, जिसमें हम बच्चों में सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने का कौशल विकसित करने का प्रयास करते हैं। इन सभी कौशलों को विकसित करने के लिए हिन्दी भाषा के पाठ्यक्रम में जो शिक्षण सामग्री ली जाती है वह विभिन्न विषयों से सम्बन्धित होनी चाहिए। जैसे किसी महान वैज्ञानिक के पाठ द्वारा हिन्दी व विज्ञान में समवाय स्थापित किया जा सकता है।

4.4.6. **उपयोगिता का सिद्धान्तः** भाषा का अध्ययन करने से ही बालक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में पदार्पण करने में समर्थ होता है। अतः भाषा के पाठ्यक्रम में ऐसे प्रकरणों को स्थान देना चाहिए जो बालक को भावी जीवन के लिए तैयार करके समाज का उपयोगी सदस्य बना सकें।

4.4.7. **निरन्तरता का सिद्धान्तः** पाठ्यक्रम निर्मित करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि परिचित व ठोस तथ्यों की सहायता से अपरिचित व सूक्ष्म तथ्यों को जानें, इससे अधिगम में निरन्तरता बनी रहती है।

4.4.8. **लचीलापन का सिद्धान्तः** पाठ्यक्रम में समाज की बदलती हुई परिस्थिति के अनुसार परिवर्तन करने की सुविधा होना जरूरी है ताकि पाठ्यक्रम में बच्चों की तात्कालिक आवश्यकताओं को स्थान देकर पाठ्यक्रम को रूढ़िवादी होने से बचा सकें।

4.4.9. **इकाईयों में विभाजितः** पाठ्यक्रम छोटी–छोटी इकाईयों में विभाजित होना चाहिए। प्रत्येक इकाई के उद्देश्य स्पष्ट होने चाहिए। इससे पाठ्यक्रम सुबोध, सुस्पष्ट तथा सुग्राह्य होता है।

4.4.10. **निर्देश एवं सूचनाएँः** पाठ्यक्रम में अध्यापक के लिए आवश्यक निर्देश एवं सूचनाएं हो। **यथा** प्रत्येक पाठ के सामान्य एवं विशिष्ट उद्देश्य, पौराणिक एवं ऐतिहासिक संदर्भों की व्याख्या, उचित शिक्षण साधन, विषय–सामग्री से सम्बन्धित सहायक–क्रियाएँ शिक्षण प्रक्रिया के दौरान आने वाली समस्याएं एवं उनका समाधान।

उपर्युक्त सिद्धान्तों को घ्यान में रखकर पाठ्यक्रम–निर्माण ऐसे हाथों में सौंपा जाए जिन्हें इन मूल–भूत सिद्धान्तों का ज्ञान हो क्योंकि पाठ्यक्रम निर्माण किसी एक व्यक्ति का कार्य नहीं अपितु इसके लिए विशेषज्ञों की समिति बनाई जाये। इस समिति को शिक्षण–कार्य कर रहे शिक्षकों से विचार–विमर्श करके शिक्षा के बदलते उद्देश्यों के अनुरूप उचित पाठ्यक्रम का निर्माण करना चाहिए। समय–समय पर पाठ्यक्रम का मूल्यांकन एवं समीक्षा होनी भी जरूरी है।

## 4.5 पाठ्यक्रम के गुण

1. पाठ्यक्रम में समवाय के सिद्धान्तों का पालन किया गया है।
2. पाठ्यक्रम में प्रजातान्त्रिक मूल्यों के विकास आदि का ध्यान रखा है।
3. पाठ्य सामग्री बच्चों के मानसिक एवं बौद्धिक स्तर के अनुकूल होती है।
4. पत्र एवं निबन्ध रचना के माध्यम से लिखित अभिव्यक्ति योग्यता को विकसित कर भावी जीवन के लिए तैयार किया जाता है।

## 4.6 पाठ्यक्रम के दोष

1. पाठ्यक्रम में उचित क्रम का अभाव है।
2. एक स्तर का पाठ्यक्रम दूसरे स्तर के पाठ्यक्रम से पूरी तरह से सम्बन्धित नहीं है। ,
3. बाल–मनोविज्ञान का पूरी तरह ध्यान नहीं रखा जाता।
4. पाठ्यक्रम में साहित्यिक क्रियाओं का उचित स्थान नहीं है।
5. पाठ्यक्रम को सामाजिक जीवन से सम्बन्धित नहीं किया गया है।
6. समवाय के सिद्धान्त का भी पूरी तरह पालन नहीं किया गया है।

**अपनी प्रगति जांचिए-1**

1. पाठ्यक्रम किन शब्दों से मिलकर बना है?
2. पाठ्यक्रम अभिभावकों का ..... करता है।
3. पाठ्य पुस्तकों का .....पाठ्यक्रम के आधार पर होता है।
4. पाठ्यक्रम की सहायता से निरीक्षक विधालय की ..... निरीक्षण कर सकते हैं।
5. पाठ्यक्रम में लचीलेपन के सिद्धान्त को क्यों अपनाया जाता है?
6. पाठ्यक्रम के कोई दो दोष बताए?

## 4.7 सारांश

बच्चों! यहां तक आते–आते आप यह जान चुके हैं कि पाठ्यक्रम शिक्षण प्रक्रिया का अपरिहार्य अंग है। पाठ्यक्रम की सहायता से ही अध्यापक को पता चलता है कि शिक्षण–सत्र के दौरान किसी विशेष कक्षा में उसे क्या व कितना पढ़ाना है, उसी के अनुसार शिक्षक अपना सत्र नियोजित करता है। ध्यातव्य है कि पाठ्यक्रम से अभिभावकों को भी यह पता चलता है कि किसी कक्षा विशेष में उनके बालकों को क्या–क्या पढ़ना है, विषय के किस भाग में वह कमजोर है कहां उसे अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है आदि। अच्छे पाठ्यक्रम प्रायः प्रान्तीय स्तर पर बनाया जाता है। अच्छे पाठ्यक्रम निर्माण के लिए सतत प्रयत्न करने की आवश्यकता होती है। पाठ्यक्रम एक बार बन गया सो बन गया ऐसा नहीं है। इसमें जीवन के परिवर्तनों व शिक्षा के क्षेत्र में हो रहे नए प्रयोगों का समावेश करना पड़ता है। इसे शिक्षा के व्यापक तथा सामाजिक उद्देश्यों के अनुकूल बनाना होता है।

**मॉडल उत्तर**

1.1 दो शब्दों से मिलकर बना है। पाठ्य + क्रम

1.2 मार्गदर्शन

1.3 निर्माण

1.4 शैक्षिक प्रगति

1.5 समाज की बदली हुई परिस्थिति को हम अपने पाठ्यक्रम में शामिल कर सकें इसीलिए लचीलापन जरूरी है।

1.6. 1. बाल–मनोविज्ञान का ध्यान नहीं रखा जाता।

2. पाठ्यक्रम में साहित्यिक क्रियाओं को उचित स्थान नहीं दिया जाता।

## 4.8 मुख्य शब्द

1. **पाठ्यक्रम**–किसी विद्यालय में होने वाली समस्त क्रियाएं पाठ्यक्रम के अन्तर्गत आती हैं, साहित्यिक गतिविधियां, खेल–कूद, इत्यादि अध्ययन क्रम भी पाठ्यक्रम का एक हिस्सा है।

## 4.9 सन्दर्भ ग्रन्थ

1. माध्यमिक शिक्षा आयोग की रिपोर्ट 1952
2. रघुनाथ सफाया हिन्दी शिक्षण, पंजाब किताब घर रोहतक, जालन्धर
3. रमन बिहारी लाल हिन्दी शिक्षण, रस्तोगी पब्लिकेशन्ज, मेरठ
4. सावित्री सिंह हिन्दी शिक्षण, लायल बुक डिपो, मेरठ
5. Laird Charlton Thinking about Language Holf, Rinehart, and Winston, NewYork.

# इकाई–4

# अध्याय-18: हिन्दी–पाठ्य-पुस्तक समीक्षा

**उद्देश्यः**

प्रस्तुत पाठ के अध्ययन के पश्चात् छात्रों में निम्नांकित परिवर्तन दष्टिगोचर होते हैं–

- बच्चे पाठ्य–पुस्तकों के अर्थ व भूमिका से परिचित है।
- छात्र पाठ्य–पुस्तक की परिभाषा को व्याख्यायित कर सकते हैं।
- छात्र पाठ्य–पुस्तक के उद्देश्यों को रेखांकित करने में सक्षम है।
- पाठ्य–पुस्तक की उपयोगिता व महत्त्व से भली प्रकार परिचित है।
- छात्र पाठ्य–पुस्तकों के प्रकार का प्रत्याभिज्ञान करते हैं।
- छात्र पुस्तक गुण व दोषों का प्रत्यास्मरण करते हैं।

**संरचनाः**

4.1 पाठ्य–पुस्तक की भूमिका
4.2 पाठ्य–पुस्तक क्या है
4.3 पाठ्य–पुस्तक की परिभाषा
4.4 पाठ्य–पुस्तक के उद्देश्य
4.5 पाठ्य–पुस्तक की ऽउपयोगिता
4.6 पाठ्य–पुस्तक के प्रकार
4.7 पाठ्य–पुस्तकों का विषय–वस्तु की दष्टि से विभाजन
4.7 पाठ्य–पुस्तक के गुण या विशेषताएँ
4.8 पाठ्य–पुस्तक में प्रचलित दोष
4.9 सारांश
मॉडल उत्तर
4.10 मुख्य शब्द
4.11 सन्दर्भ ग्रन्थ

## 4.1 भूमिका

अर्वाचीन शिक्षा पाठ्य–पुस्तकों पर आधारित है। प्राचीन काल में जब मुद्रणकाल का विकास नहीं हुआ था, तब समस्त विषयों की शिक्षा मौखिक रूप से हुआ करती थी। आधुनिक युग ज्ञान, विज्ञान एवं तकनीकी के अत्याधिक विकास के कारण मौखिक शिक्षा देना असम्भव ही नहीं, दुष्कर कार्य है यदि यह कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति न होगी कि भाषा की पुस्तकें तो साधन साध्य दोनों रूपों में प्रयोग की जाती है। बच्चों को उनके उच्चारण को शुद्ध करने, पठन कला में निपुण करने, उनकी बोध एवं कल्पना शक्ति का विकास करने, उनकी रचनात्मक वत्ति को सचेष्ट करने और उन्हें विविध विषयों का ज्ञान करा कर उनका चरित्र निर्माण करने के हेतु प्रयोग करते है।

## 4.2 पाठ्य-पुस्तक क्या है

प्राचील काल में भारत पाठ्य–पुस्तक के लिए ग्रन्थ शब्द का प्रचलन था। ग्रन्थ का शाब्दिक अर्थ है– 'गूँथना', 'बाँधना', क्रम से रखना आदि। गुरूकुलों में आचार्य लोग 'ताड़पत्र' या 'भोजपत्र' को अपने शिष्यों के समक्ष क्रम से रखते थे। उनमें बीच में छेद करके किसी धागे से गूँथ भी देते थे। इसीलिए इन्हें 'ग्रन्थ' कहा जाता था।

अंग्रेजी के 'Book' शब्द की व्युत्पत्ति जर्मन भाषा की 'वीक' 'Beach' शब्द से हुई है। जिसका अर्थ है– वक्ष। फ्राँसीसी भाषा में इसका सम्बन्ध वक्ष की छाल या तख्ती पर लिखने से है।

## 4.3 पाठ्य-पुस्तक की परिभाषा

पाठ्य–पुस्तक की संज्ञा प्रत्येक पुस्तक को नहीं दी जा सकती है, इसी तथ्य को मद्देनजर रखते हुए **गुड महोदय** के मतानुसार– "एक निश्चित पाठ्यक्रम के अध्ययन के प्रमुख साधन के रूप में एक निश्चित शैक्षिक स्तर पर प्रयुक्त करने के लिए एक निश्चित विषय पर व्यवस्थित ढंग से लिखी हुई पुस्तक पाठ्य–पुस्तक है।"

**क्रानबैक के विचारानुसार-** पाठ्यपुस्तक प्रायः अप्रौढ़ छात्रों के लिए लिखी जाती है।

## 4.4 पाठ्य-पुस्तकों के उद्देश्य

प्रिय छात्रो पाठ्य–पुस्तकों को साध्य मान लेने से इनको रटना एवं सम्पूर्ण शिक्षा को किताबी बना देना महत्त्वपूर्ण हो जाता है, किन्तु यहाँ पाठ्य–पुस्तकों का उद्देश्य रटना नहीं है। पाठ्य–पुस्तकों के उद्देश्य निम्नलिखित है–

1. छात्रों की काल्पनिक शक्ति को विकसित करना।
2. विषय विविधता के बारे में ज्ञान कराना।
3. स्वाध्याय के प्रति रूचि उत्पन्न करना।
4. पाठ्य–पुस्तकों के माध्यम से ज्ञान की सीमा को विस्तत करना।
5. ज्ञान को व्यावहारिक रूप देने की प्रेरणा प्रदान करना।
6. सत्य, असत्य का विर्वक कराना।
7. शुभ–अशुभ का ज्ञान कराना।

## 4.5 पाठ्य-पुस्तकों की आवश्यकता (उपयोगिता)

पाठ्य–पुस्तकों की आवश्यकताएं निम्नलिखित हैं।

1. पाठ्य–पुस्तकें शिक्षक का मार्गदर्शन करती है।
2. पुस्तकें ज्ञान–प्राप्ति का सशक्त साधन है, पुस्तकों के सहारे व्यक्ति बिना गुरू के भी अपना ज्ञानार्जन कर सकता है।
3. पुस्तकें अनेक सूचनाओं का संग्रह है।
4. ज्ञान प्राप्ति के लिए पुस्तकें सर्व–सुलभ एवं मितव्ययी साधन है।
5. पुस्तकें अर्जित ज्ञान का स्थायीकरण है।
6. पुस्तकें मौलिक चिन्तन की सशक्त पष्ठभूमि तैयार करती है।
7. पुस्तकों से छात्रों में स्वाध्याय की भावना जागत होती है।
8. उच्च कक्षाओं के लिए पुस्तकें अनिवार्य है।
9. छात्र व शिक्षक दोनों को ही पुस्तकों के माध्यम से पाठ्यक्रम का ज्ञान रहता है।
10. पुस्तकें ज्ञान के साथ–साथ मनोरंजन करती है।

12. भाषा पर पूर्ण अधिकार की प्राप्ति में पुस्तकों का बड़ा योगदान है।

## 4.6 हिन्दी पाठ्य-पुस्तकों के प्रकार

1. गम्भीर अध्ययन के लिए पुस्तकें
2. विस्तत अध्ययनार्थ पुस्तकें

1. गम्भीर एवं सूक्ष्म अध्ययन के लिए निर्धारित पुस्तकों का उद्देश्य शब्द भण्डार में वद्धि करना, उनका भाषा ज्ञान बढ़ाना, सूक्ति भण्डार एवं लोकोक्ति भण्डार में वद्धि करना है।
2. विस्तत अध्ययन के लिए सहायक–पुस्तकों को द्रुत पाठ्य–पुस्तकें कहते हैं। इसमें गहन अध्ययन न होकर पाठ का भाव ग्रहण करना होता है। सहायक पुस्तकों की भाषा सरल होती है।

**अपनी प्रगति जांचिए-1**

1. पाठ्य–पुस्तकों के प्रकार बताइये।
2. पुस्तकें ज्ञान के साथ–साथ ..... भी करती है।
3. पुस्तकें मौलिक ..... की सशक्त पष्ठभूमि तैयार करती है।

## 4.7 विषय-वस्तु की दष्टि से विभाजन

1. **मनोरंजन प्रधान पुस्तकें:** इनमें छात्रों के लिए रूचिकर, हितकारी, प्रेरणादायक एवं मनोरंजनक पाठ होते हैं।
2. **ज्ञानत्मक पुस्तकें:** इन पुस्तकों का उद्देश्य छात्रों का भाषा ज्ञान बढ़ाकर मानसिक विकास करना है।
3. **सामाजिक-समस्या प्रधान पुस्तकें:** सामाजिक बुराईयों एवं कुरीतियों, समस्याएं आदि से परिचित कराना इन पुस्तकों का उद्देश्य है।
4. **चरित्र प्रधान पुस्तकें:** बालकों के चारित्रिक एवं नैतिक विकास के लिए पुस्तकें होती है। इनमें बालकों के लिए आदर्श पाठ होते हैं।
5. **राष्ट्रीयता से युक्त पुस्तकें:** इन पुस्तकों का उद्देश्य छात्रों को राष्ट्रीयता की शिक्षा देना है। कक्षा आठवीं से बारहवीं तक के बालकों के लिए बड़ी उपयोगी होती है।
6. **सांस्कृतिक पुस्तकें:** ये पुस्तकें छात्रों को न केवल देश की वरन् विश्व की सभ्यता व संस्कृति का ज्ञान कराती है।
7. **आध्यात्मिक पुस्तकें:** जीवन में आध्यात्मिक मूल्यों का बड़ा स्थान है, ये पुस्तकें प्रौढ़ एवं बुजुर्गों के लिए अधिक उपयोगी होती है।
8. **प्रकृति की पुस्तकें:** प्रकृति सदा से मानव को आकर्षित करती रही है, प्रकृति के रम्य एवं मनोहारी रूप का वर्णन भी ये पुस्तकें करती हैं।
9. **शारीरिक शिक्षा की पुस्तकें:** छात्रों को स्वस्थ रहने की सम्यक् जानकारी देने वाली पुस्तकें इस श्रेणी के अन्तर्गत आती है।
10. **शोध-प्रबन्ध:** हिन्दी भाषा एवं साहित्य के क्षेत्र जो अनुसन्धान हुए हैं, उनका विवरण इन पुस्तकों में होता है।

## 4.8 हिन्दी पाठ्य-पुस्तकों के गुण या विशेषताएं

पाठ्य–पुस्तकों को हम मुख्यतः दो विशेषताओं के आधार पर विभाजित करते हैं।

1. आन्तरिक विशेषताएं
2. बाह्य विशेषताएं

1. आन्तरिक विशेषताओं को हम तीन भागों में विभाजित करते हैं।

(i) सामान्य विशेषताएं

(ii) भाषा सम्बन्धी विशेषताएं

(iii) शैली सम्बन्धी विशेषताएं

(i) ***सामान्य विशेषतायें:***

***(1) मनोवैज्ञानिक:*** *पुस्तकों को बाल–केन्द्रित होना चाहिए। बालकों की मनःस्थिति, रूचि, प्रवत्ति, क्षमता का ध्यान रखना चाहिए।*

***(2) रुचिकर:*** *पाठ्य–पुस्तक ऐसी हो कि छात्र उसमें रूचि लें। विषय–वस्तु रूचिकर होगी तो छात्र उसे पढ़ने के लिए लालयित रहेंगे।*

***(3) विविधता:*** नाटक, लेख, कहानी, संवाद, कविता, यात्रा विवरण जीवनकथा आदि पुस्तक से होने से पुस्तक सरस व विविधता पूर्ण हो जाती है। विविधता से ज्ञान में वद्धि होती है और पाठ में रोचकता बनी रहती है।

***(4) मौलिक:*** पुस्तक मौलिक होनी चाहिए। यदि सम्पादित हो तो संकलनकर्त्ता के व्यक्तित्व की अपेक्षा मूल लेखकों के व्यक्तित्व की स्पष्ट झाँकी परिलक्षित होनी चाहिए।

***(5) शिक्षाप्रद एवं प्रेरणादायक:*** पुस्तक की विषय–वस्तु शिक्षाप्रद एवं प्रेरणादायक होनी चाहिए। विषय का चयन इस प्रकार सम्पन्न किया जाए कि उनसे छात्रों का मानसिक विकास के साथ–साथ नैतिक एवं चारित्रिक विकास भी हो। पाठ का उद्देश्य निरा उपदेशात्मक नहीं होना चाहिए। पुस्तकें ज्ञानवर्धक, शिक्षाप्रद, प्रोत्साहन प्रदान करने वाली हों ताकि छात्रों का अपेक्षित विकास हो।

***(6) अन्य विषयों से सम्बन्ध:*** हिन्दी विषय का अन्य पुस्तकों से भी सम्बन्ध रहना चाहिए। हमें इतिहास, भूगोल, नागरिकशास्त्र सामान्य विज्ञान के साथ समंवय स्थापित करना चाहिए। विषयों का सह–सम्बन्ध बालक के समग्र ज्ञान के लिए विशेष उपयोगी होता है।

## भाषा सम्बन्धी विशेषताएं

पाठ्य–पुस्तकों की भाषा सम्बन्धी विशेषताएं अग्रलिखित हैं:

1. **स्तरानुकूल:** पुस्तक की विषय–वस्तु के अतिरिक्त भाषा भी बालकों की कक्षा रूचि उम्र एवं स्तरानुकूल होनी चाहिए मानसिक स्तर के अनुसार भाषा का स्वरूप पुस्तक की विशेष विशेषता होती है। बोधगम्यता के लिए भी उपयुक्त भाषा आवश्यक है।
2. **सरल:** भाषा चाहे मौखिक हो या लिखित, सरल अवश्य हो सरल भाषा कक्षा के सभी छात्रों के लिए सम्प्रेषणीय होती है।
3. **स्पष्ट:** भाषा मौखिक हो या लिखित स्पष्टता का होना उसका मुख्य गुण है। भाषा की स्पष्टता तथ्यों को बोधगम्य बना देती है।
4. **तत्सम शब्दावली:** प्रारम्भिक कक्षाओं की भाषा तद्भव शब्दों को लेकर प्रवाहित हो सकती है। माध्यमिक एवं उच्च कक्षाओं की भाषा तत्सम शब्दावली में हो। पुस्तकीय भाषा तद्भव से तत्सम की ओर उन्मुख होनी चाहिए।
5. **क्रमबद्ध व श्रंखलाबद्ध:** पुस्तकें क्रमबद्ध व श्रंखलाबद्ध हो पाठ विश्रंखल न हो। पाठों का आपस में तारतम्य हो। क्रमबद्ध पाठ के अभाव में क्रमबद्ध ज्ञान भी नहीं दिया जा सकता।
6. **संक्षिप्तता:** पुस्तक आकार–प्रकार में बड़ी होना, यह उसका दुर्गण है, पुस्तक में अनावश्यक तथ्यों का उल्लंघन हो। आवश्यक तथ्यों का क्रमबद्ध व संक्षिप्त विवरण ही पुस्तक को आदर्श पुस्तक की श्रेणी में लाती है।
7. **शब्दावली:** हिन्दी पुस्तकों के 75 से 80 प्रतिशत शब्द तो वहीं हो, जो पिछली कक्षाओं में प्रयुक्त हो चुके हों, 20 से 25 प्रतिशत नए शब्द हो और उनका प्रयोग बार–बार हो ताकि छात्रों का अनवरत अभ्यास हो जाए।

**एम. वेस्ट** नामक विद्वान के मतानुसार– "ज्यों–ज्यों बालक की उम्र एवं मानसिक स्तर विकसित होता जाए, त्यों–त्यों उनके लिए सरल से कठिन पर उपयोगी शब्दों की उनके पाठों में व्यवस्था की जाये।"

**शैली सम्बन्धी विशेषताएँ**:– अग्रलिखित है–

1. **भिन्नता:** पुस्तकों की शैली में विभिन्नता का होना आवश्यक है। इससे पदों में नवीनता एवं रूचि बनी रहती है, इस का यह लाभ है कि छात्र विभिन्न शैलियों की सम्यक् जानकारी प्राप्त कर लेते हैं।
2. **प्रभावोत्पादकता:** पुस्तकों में ऐसे अध्यायों का चयन होना चाहिए, जिनकी शैली आकर्षक एवं प्रभावोत्पादक हो।
3. **स्तरानुकूल:** पुस्तक की शैली कक्षा और बालकों के स्तरानुकूल होनी चाहिए। छोटी कक्षाओं की शैली विवरणात्मक, संवादात्मक, कथात्मक हो, एवं उच्च कक्षाओं की शैली भावात्मक एवं तर्क प्रधान हो।

**बाह्य विशेषताएं**

पुस्तकों की बाह्य विशेषताएं छात्रों को प्रभावित करती है। पुस्तकों की बाह्य विशेषताएं निम्न है–

1. **आवरण एवं आकार:** पुस्तक का नाम स्वरूप एवं आकार आकर्षक होना चाहिए। आकर्षक आवरण बालकों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करता है। रंग–बिरंगे चित्र छोटे–बालकों को प्रभावित करते हैं।
2. **कागज एवं मुद्रण:** पुस्तक को सुन्दर व आकर्षक बनाने में कागज एवं मुद्रण का विशिष्ट स्थान है। मजबूत एवं पतले कागज, जिनके एक पष्ठ की छपाई दूसरे पष्ठ को प्रभावित न करे, अच्छे माने जाते हैं। पाठ्य–पुस्तकें प्रायः 28 पौंड भार के कागज पर किन्तु प्रारम्भिक कक्षाओं की पुस्तकें 32 से 40 पौंड भार के कागज पर छपती है। मुद्रण भी आधुनिक हो। टाईप आकर्षक हो।
3. **सिलाई:** पुस्तक की सिलाई सशक्त होनी चाहिए, वहीं सिलाई उत्तम है जिसके सम्पादित होने पर भी भली–भाँति खुले एवं बंद हो जाये।
4. **चित्र:** छोटे बच्चों की पुस्तकों में चित्र व रंगीन चित्रों की अधिकता होने से पाठ के सहजग्राह्य होने की सम्भावना होती है। इसमें छात्र पुस्तक की ओर आकृष्ट होते हैं और रुचि पूर्वक पाठ तैयार करते हैं।
5. **सन्दर्भ:** पाठ्य–पुस्तकों में सन्दर्भों का होना आवश्यक है। पाठ को तैयार करने में सन्दर्भ के होने से छात्रों को अपेक्षित सहायता मिलती है।
6. **टिप्पणियां:** नवीन ज्ञान एवं शिक्षण सामग्री के स्पष्टीकरण के लिए टिप्पणियां दी जाती है। पुस्तकों के अध्याय को सरल एवं सुगम बनाने के लिए टिप्पणी से सहयोग प्राप्त होता है।
7. **शब्द-व्याख्या:** अभ्यास के प्रश्नों से पूर्व पुस्तकों में प्रयुक्त कठिन व गूढ़ शब्दों की व्याख्या दे दी जाती है ताकि छात्रों को अपेक्षित सहायता मिल सके।
8. **परिचय:** पुस्तकों के प्रत्येक अध्याय के प्रारम्भ में कवि व लेखक का संक्षिप्त परिचय अवश्य देना चाहिए। इससे बालकों को पाठ समझने में यथेष्ठ सहायता प्राप्त होती है।
9. **अभ्यासार्थ प्रश्न:** प्रत्येक अध्याय के अन्त में छात्रों के ज्ञान–परीक्षण के लिए अभ्यासार्थ प्रश्न पूछे जाते हैं। इससे पुनरावत्ति होती है, ज्ञानार्जन होता है, ग हकार्य सम्पादित होता है। परीक्षा के दष्टिकोण से छात्रों की तैयारी हो जाती है।
10. **विषय-सूची:** पुस्तक के प्रारम्भ में विषय–सूची दे दी जाती है, जिससे छात्रों को साल भर में होने वाली शिक्षण–क्रिया के बारे में पता रहता है।
11. **ग्रंथानुक्रमणिका:** पुस्तक के अन्त में ग्रंथानुक्रमणिका दी जाती है, जिससे छात्रों को यह पता चलता है लेखक ने पुस्तक लिखते समय किन–किन ग्रन्थों की सहायता से पुस्तक सम्पादित की है।
12. **मूल्य:** पुस्तक का मूल्य अधिक ना हो, जिससे सभी छात्र उसे सरलतापूर्वक खरीद सकें।

**अपनी प्रगति जांचिए-2**

1. हिन्दी पाठ्य–पुस्तकों की विशेषताएं बताईये?
2. आन्तरिक विशेषताओं को हम विभाजित करते हैं।

## 4.9 पाठ्य-पुस्तकों के प्रचलित दोष

पाठ्य–पुस्तकों के दोषों के रूप में निम्न तथ्यों का उल्लेख किया जा रहा है।

1. पाठ्य–पुस्तकें बालकों के बुद्धि–स्तर के अनुकूल नहीं है।
2. पाठ्य–पुस्तकों में कुछ पाठ सरल पर कुछ क्लिष्ट होते हैं।
3. पाठ्य–पुस्तकों को तैयार करते समय छात्रों की समस्याओं के व्यावहारिक पक्ष पर विचार नहीं किया जाता।
4. पाठ्य–पुस्तकों का चयन सम्बन्धित अधिकारी न करके सरकारी प्रतिनिधियों द्वारा सम्पादित होता है।
5. पाठ्य–पुस्तकों के अभ्यासार्थ हेतु उचित प्रश्न नहीं दिये जाते।
6. पाठ्य–पुस्तकों के चयन के लिए पर्याप्त समय ना दिये जाने के कारण, पुस्तक सम्पादन, भाषा, व्याकरण एवं मुद्रण के दष्टिकोण से दोषपूर्ण होती है।
7. प्रकाशक प्रायः आर्थिक लाभ की चाह में छात्रों की प्रगति, देश प्रेम, ज्ञानार्जन आदि को महत्त्व नहीं देते हैं।
8. पुस्तक में अनुपयुक्त सामग्री को भी रखा जाता है। जिससे छात्रों को कोई लाभ नहीं पहुँचता।
9. पाठ्य–पुस्तक जीवन के महत्त्वपूर्ण पक्षों से असम्बद्ध होती है।

## 4.10 सारांश

छात्रों! आप यह जान चुके हैं कि शिक्षक प्रक्रिया में पाठ्य–पुस्तकों की महत्ता असंदिग्ध है। प्रत्येक स्तर पर भाषाओं की कक्षाओं के पाठ्य–पुस्तक निर्धारित की जाती है। प्राचीनकाल में जब मुद्रणालय का विकास नहीं हुआ था, तब मौाकि रूप से शिक्षा दी जाती है, और आश्रमों और गुरुकुलों में रहने वाले छात्र उन्हीं नियमों को कण्ठास्थ कर लेते थे।

ज्ञान के विस्फोट ने हमारे सामने सभी प्रकार की पाठ्य–पुस्तकों, सहायक पुस्तकों के अम्बार से लगा दिए हैं। छात्र उच्च कक्षा में विषय की जानकारी लेते हुतु एक से अधिक पुस्ताकें का अध्ययन करता है। पुस्तकें अनेक सूचनाओं का संग्रह है, मितव्ययी साधन है, अर्जित ज्ञान का स्थायीकरण है, स्वाध्याय की प्रवत्ति पुस्तकों के द्वारा ही बच्चों में उत्पन्न होती है।

आज पुस्तकों का अथाह भण्डार है, यथा ज्ञानात्मक पुस्तकें, मनोरंजन की पुस्तकें, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, चरित्रप्रधान सब तरह की पुस्तकें हैं जो बालकों के मानसिक व बौथ्द्धक स्तर को ध्यान में रखकर ही लिखी जा रही हैं।

यदि यह कहा जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी कि आज के इस भौतिकवादी युग मे हम पुस्तकों के बगैर शिक्षा की कल्पना नहीं कर सकते।

**मॉडल उत्तर**

1.1 पाठ्य–पुस्तकें दो प्रकार की है–
   1. गम्भीर अध्ययन हेतु पुस्तकें
   2. विस्तत अध्ययनार्थ पुस्तकें

1.2 मनोरंजन

1.3 चिन्तन

2.1 1. आन्तरिक विशेषताएं 2. बाह्य विशेषताएं

2.2 तीन

## 4.11 मुख्य शब्द

1. **शोध**–रिसर्च, अनुसंधान
2. **ज्ञानात्मक**–ज्ञान से भरी हुई, ज्ञान से युक्त
3. **प्रेरणादायक**–प्रेरणा देने वाली, प्रेरणा किसी व्यक्ति, वस्तु घटना आदि से मिलती है।
4. **स्तरानुकूल**–स्तर के अनुसार
5. **बाह्य**–बाहरी
6. **आन्तरिक**–अन्दरूनी, भीतरी

## 4.11 सन्दर्भ ग्रन्थ


1. केशव प्रसाद — हिन्दी शिक्षण, धनपतराय एण्ड सन्स, नई सड़क, दिल्ली, 1990-91
2. देवेन्द्र कुमार कौशिक — पाठ्यक्रम एवं पाठ्य पुस्तक, पंजाब किताब घर, रोहतक, जालन्धर
3. योगेन्द्रजीत — हिन्दी भाषा शिक्षण, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा
4. रमन बिहारी लाल — हिन्दी शिक्षण, रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ 1980-81
5. विजय सूद — हिन्दी शिक्षण विधियां, टण्डन पब्लिकेशन्ज लुधियाना 1995

# इकाई–5

# अध्याय-19: हिन्दी में मूल्यांकन

**उद्देश्य:**

- प्रस्तुत पाठ के अध्ययन के पश्चात् प्रिय छात्रो! आप मूल्यांकन क्या है, के बारे में समझा सकेंगे।
- मूल्यांकन के अर्थ परिभाषा को अपने शब्दों में व्याख्यायित कर सकेंगे।
- मूल्यांकन के स्वरूप को समझने में छात्र सक्षम होंगे।
- हिन्दी की विभिन्न विधाओं की मूल्यांकन प्रक्रिया को समझते हुए छात्रों के व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन हो सकेंगें।
- छात्र मूल्यांकन में प्रयुक्त होने वाले साधनों का प्रत्यास्मरण कर सकेंगे।

**संरचना:**

5.1 मूल्यांकन की भूमिका
5.2 मूल्यांकन का अर्थ व परिभाषा
5.3 मूल्यांकन का स्वरूप
5.4 मूल्यांकन में प्रयुक्त तकनीक, साधन एवं विधियां
5.5 हिन्दी की विभिन्न–विधाओं में मूल्यांकन प्रक्रिया
5.6 सारांश
मॉडल उत्तर
5.7 मुख्य शब्द
5.8 सन्दर्भ ग्रन्थ

## 5.1 भूमिका

वर्तमान युग की भौतिक, तकनीकी परिस्थितियों के मकड़ जाल में उलझाा हुआ समाज जीवन की प्रत्येक गतिविधियों का मूल्यांकन करता है। वह किसी संस्था व्यक्ति से अपने क्रिया–कलापों का अनुमोदन चाहता है। **उदाहरणार्थ** – प्रिय बच्चों अगर हम बाजार से पेन (कलम) खरीदते हैं, तो उसकी कीमत, गुणवत्ता आदि की तुलना, उसकी कम्पनी के पेन (कलम) से करते हैं, रंग इत्यादि का समर्थन साथियों से करवाते हैं।

## 5.2 मूल्यांकन का अर्थ व परिभाषा

'मूल्यांकन' अंग्रेजी के 'इवेल्युशन' शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है। जिसका हिन्दी में अर्थ है– 'मूल्य आंकना'। शिक्षा के क्षेत्र में अध्यापक अध्यापन के उपरान्त छात्रों का मूल्यांकन करता है। मूल्यांकन के द्वारा छात्र एवं शिक्षक के समक्ष शिक्षण उद्देश्य

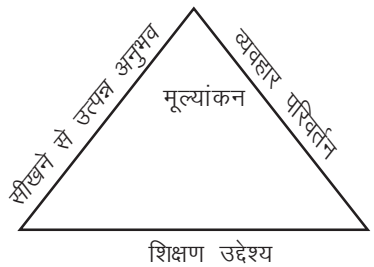

ही निर्धारित नहीं होते, अपितु छात्रों का मूल्यांकन भी होता है। मूल्यांकन की इस प्रक्रिया द्वारा केवल विद्यार्थियों का ही मूल्यांकन नहीं होता, वरन् पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तक, शिक्षक, शिक्षण विधि आदि का भी मूल्यांकन होता है। मूल्यांकन से ही पता लगता है कि शिक्षण में कहाँ कमी है और क्या सुधार अपेक्षित है, एवं छात्रों की उपलब्धि भी सदैव सामने रहती है।

मूल्यांकन के अर्थ को भली–भांति समझने के लिए प्रिय बच्चों। यह अपेक्षित है कि मूल्यांकन एक त्रिभुजी प्रक्रिया है जिसको चित्र के माध्यम से समझ सकते हैं–

उपरोक्त तीनों भुजाएं परस्पर सम्बद्ध है, पर आधार शिक्षण उद्देश्यों का है सारा नियंत्रण इसी से होता है।

प्यारे छात्रों किसी भी विषय–वस्तु को समझने के लिए परिभाषा को समझना अनिवार्य हो जाता है–

राइटस्टोन के विचारानुसार– "यह सम्पूर्ण व्यक्तिक तथा शैक्षिक कार्यक्रमों पर बल देता है, यह मात्र विषयों का ही मूल्यांकन नहीं करता, वरन् प्रवत्ति रूचि, सोचने–विचारने के आदर्श, कार्य तथा वैयक्तिक एवं सामाजिक अनुकूलन वत्ति का भी आकलन करता है।"

रॉस महोदय के मतानुसार– 'मूल्यांकन बालक का सही मानदण्ड स्थापित करता है, यह बालकों का सम्पूर्ण मापन करता है तथा सम्पूर्ण शैक्षिक परिस्थितियों का भी मूल्यांकन करता है।"

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि मूल्यांकन एक ऐसी प्रक्रिया है, जो छात्रों की उपलब्धियों, शिक्षण–विधियों की सफलता तथा शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति स्तर की जांच करता है।

**अपनी प्रगति जांचिए-1**

1. मूल्यांकन से आप क्या समझते हैं?
2. मूल्यांकन को परिभाषित कीजिए?

## 5.3 हिन्दी में मूल्यांकन स्वरूप

प्रिय बच्चों! शिक्षण प्रक्रिया के क्षेत्र में मूल्यांकन का स्वरूप निर्धारण करना आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है। यह तो बच्चों आप अच्छी तरह से जानते है कि मूल्यांकन का आधार परीक्षण है। परीक्षण के पश्चात् ही छात्रों का मूल्यांकन किया जाता है कि उन्होंने गद्य, पद्य, रचना, व्याकरण आदि में क्या–क्या सीखा है एवं उनका अधिगम अनुभव किस स्तर का है एवं किसी छात्र प्रथम, द्वितीय, ततीय आना भी मूल्यांकन का स्वरूप निर्धारित करता है।

हिन्दी शिक्षण को सुनियोजित एवं प्रभावशाली बनाने के लिए इन तथ्यों को प्राप्त करना होता है। हिन्दी भाषा–शिक्षण में मूल्यांकन को तीन वर्गों में विभाजित किया गया है।

5.3.1. पाठपूर्व प्रवेश मूल्यांकन

5.3.2. पाठ पढ़ाते समय किया जाने वाला मूल्यांकन

5.5.3. पाठ पढ़ाने के पश्चात् मूल्यांकन

1.1. **प्रवेश पाठ पूर्व मूल्यांकनः** यह मूल्यांकन हमें यह जानकारी प्रदान करता है, कि छात्रों की सीखने की भाषा, क्षमता अपेक्षित योग्यता विद्यार्थी में है या नहीं। इसके द्वारा छात्र का पाठ्यक्रम स्तर तय किया जाता है एवं उसी के अनुसार शिक्षण का आयोजन किया जाता है।

1.2. **अभिक्षमता मूल्यांकनः** इस प्रकार के मूल्यांकन द्वारा विद्यार्थियों के भाषा सम्बन्धी रूझान की जानकारी प्राप्त होती है।

1.3. **वर्ग निर्धारणः** इसकी सहायता से शिक्षक छात्रों का विभाजन कर पाता है। इससें विद्यार्थी के सम्प्राप्ति स्तर का पता चलता है, किस क्षेत्र में वह सक्षम है, किस में अक्षम।

2. **पाठ पढ़ाते वक्त किया जानेवाला मूल्यांकनः** इसके अन्तर्गत प्रायः निदानात्मक मूल्यांकन को रखते हैं। इसकी सहायता से यह निर्धारित किया जाता है कि वह हिन्दी की किस विधा में कमजोर है, ताकि उसका उपचार किया जा सके।

**पाठोपरान्त मूल्यांकन**

इसके अन्तर्गत उपलब्धि मूल्यांकन आता है। कक्षा–शिक्षण के उपरान्त विद्यार्थी ने किन अंशों को ग्रहण किया, किन को ग्रहण करने में वह असमर्थ है। इसके द्वारा छात्रों की उपलब्धि स्तर का पता लग जाता है।

**अपनी प्रगति जांचिए-2**

1. मूल्यांकन स्वरूप से आप क्या समझते है?
2. यह मूल्यांकन ..... प्रकार का है।

   दो, तीन, चार नीचें से देखकर खाली स्थान भरें।

## 5.4 हिन्दी में मूल्यांकन के लिए प्रयुक्त साधन एवं विधियाँ

प्यारे बच्चों शिक्षण–क्रिया को सम्पन्न करने के लिए सबसे पहले शिक्षण उद्देश्यों का निर्धारण किया जाता है। हिन्दी–शिक्षण में भी शिक्षण से पूर्व पाठ्यवस्तु को ध्यान में रखते हुए भाषा–शिक्षण के उद्देश्यों का निर्धारण होता है। छात्रों में हुए व्यवहारगत परिवर्तनों, रुचियों, आकांक्षाओं, रूझानों एवं योग्यता की जांच करने के लिए अध्यापक विभिन्न तकनीकों, साधनों का सहारा लेता है।

मूल्यांकन के लिए निम्नलिखित विधियां हो सकती है, जिन्हें चित्र के माध्यम से दर्शाया जा रहा है।

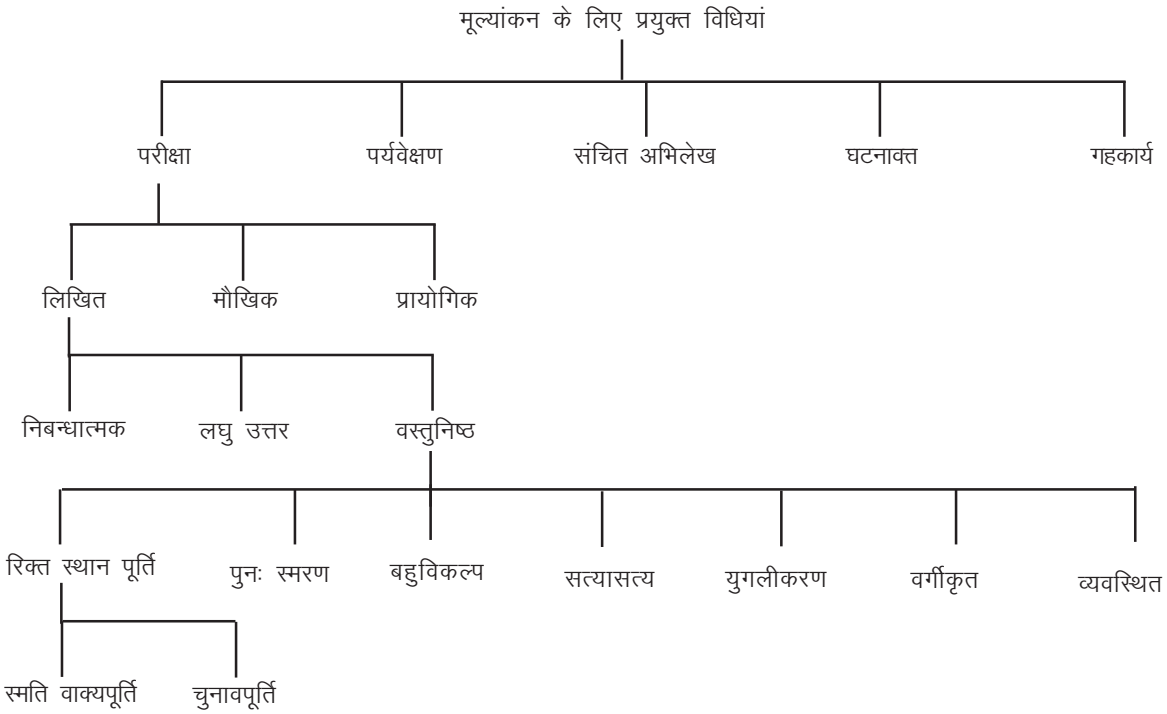


1. **परीक्षाः** मूल्यांकन की सबसे महत्त्वपूर्ण विधि परीक्षा है कक्षा में पढ़ाई गई शिक्षण–सामग्री के आधार पर छात्रों के समक्ष कुछ प्रश्न प्रस्तुत किये जाते हैं, उनके उत्तरों के आधार पर छात्रों की विषयगत योग्यता की जाँच होती है। यह प्रक्रिया ही परीक्षा है। यह (परीक्षा) प्रायः तीन प्रकार की होती है जैसाकि चित्र में दर्शाया गया है।

(i) **लिखित परीक्षाः** आज के युग में लिखित–परीक्षा ही सबसे अधिक लोकप्रिय है। इसमें एक समय में लाखों छात्रों को विभिन्न केन्द्रों पर प्रश्न–पत्र वितरित किए जाते हैं, वे उत्तर पुस्तिकाओं में उनके उत्तर देते हैं। बाद में परीक्षक सुविधानुसार उन उत्तर–पुस्तिकाओं की जाँच कर उनकी योग्यता का मापन करते हैं। इसका लिखित रूप में अभिलेख सुरक्षित रहता है।

लिखित परीक्षा प्रायः तीन प्रकार की है। पीछे चित्र में है।

(क) ***निबंधात्मकः*** इस विधि में छात्रों को उत्तर विस्तत रूप में देना होता है। प्रश्न पत्र 8–10 प्रश्न होते हैं जिनमें से 5 प्रश्नों के उत्तर छात्रों को एक निश्चित समयावधि में देने होते हैं। इस प्रकार की परीक्षा में छात्रों की लिखित अभिव्यक्ति योग्यता की जाँच होती है। इस विधि से छात्रों की समीक्षात्मक एवं सजनात्मक योग्यता की जाँच होती है। अक्षर–विन्यास विराम–चिन्ह आदि के शुद्ध प्रयोग की परख भी की जाती है।

इस विधि में निम्नलिखित प्रकार के प्रश्न पूछे जाते हैं जैसे–

1. कबीर जी भाषा के डिक्टेटर थे, उदाहरण सहित बाताओ।

2. जयशंकर प्रसाद द्वारा उचित 'कामायनी' महाकाव्य है। या प्रबन्ध काव्य, तर्क सहित उत्तर दीजिए?

(ख) ***लघु उत्तरः*** जिन प्रश्नों का उत्तर बहुत छोटा अर्थात् एक, दो, तीन या चार पंक्तियों में देना होता है, उन्हें लघुत्तर परीक्षा कहते हैं। इस में छात्रों से ज्यादा से ज्याद प्रश्न पूछे जाते हैं अतः यह पाठ्यक्रम के अधिक अंश से सम्बन्धित ज्ञान की जाँच करते हैं। इस विधि में छात्रों की बोध शक्ति एवं ज्ञान की जांच तो होती है, लेकिन यह न तो छात्रों की तर्क–विचार और न ही भाषा–शैली की जाँच करने में सक्षम है।

लघु उत्तर परीक्षा में निम्न प्रश्न पूछे जा सकते हैं।

1. विशेषण की परिभाषा बताईये?

2. कविता के कौन–कौन से तत्त्व हैं?

(ग) ***वस्तुनिष्ठ परीक्षाः*** निबन्धात्मक परीक्षा के दोषों को दूर करने के लिए वस्तुनिष्ठ परीक्षा का विकास हुआ है। इस विधि में उत्तर एक या दो शब्दों में दिये जाते हैं, अधिक–से–अधिक प्रश्न पूछे जाते हैं अतः प्रश्न पूरी पाठ्यचर्या से सम्बन्धित होते हैं। छात्रविषय का कोई अंश नहीं छोड़ सकते। उत्तर निश्चित होने के कारण हर परिस्थिति में परीक्षक को निश्चित अंक देने पड़ते हैं अर्थात् उत्तर सही है तो पूर्ण अंक गलत है तो शून्य। ये परीक्षाएं अधिक विश्वसनीय एवं प्रामणिक होती है।

इन गुणों के बावजूद भी वस्तुनिष्ठ परीक्षा पूर्णतः दोष मुक्त नहीं है। यह परीक्षा छात्रों की मानसिक शक्ति, विचार, तर्क, भाषा शैली आदि की जाँच नहीं कर पाती। यह केवल स्मरण शक्ति की जाँच करती है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न अनेक प्रकार के होते हैं–

1. **रिक्त स्थान पूर्तिः** इस विधि का दूसरा नाम वाक्यपूर्ति परीक्षा भी है। इसमें वाक्य लिख कर बीच में रिक्त स्थान छोड़ देते हैं, छात्र उनमें (रिक्त स्थान) उचित शब्द लिखते है। यह भी दो प्रकार के होते हैं।

   1.1 चुनाववाक्य–पूर्ति परीक्षाः इनमें वाक्य के आगे कुछ शब्द दिए होते हैं, छात्र उनमें से उचित शब्द का चुनाव कर रिक्त स्थान को पूरा करता है जैसे–

   क. गोदान ..... की प्रमुख रचना है। (धर्मवीर भारती, प्रेमचन्द, यशपाल)

   2.2 ज्ञान राशि के संचित कोष को ..... कहते हैं। (समाज, सभ्यता, साहित्य, संस्कृति)

2. **स्मतिवा क्य पूर्ति परीक्षा**

   जैसे–

   क. जयशंकर प्रसाद का महाकाव्य .....है।

   ख. हरियाणा की राजधानी का नाम ..... है।

2. **पुनः स्मरण परीक्षाः** इस प्रकार के प्रश्नों के माध्यम से छात्र अपनी स्मरण शक्ति का प्रयोग कर प्रश्नों के उत्तर देते हैं यथा–

   (i) आकाश के तीन पर्यायवाची लिखे।

   (ii) भूमि का विपरीतार्थक बताओं।

   (iii) रामायण की रचना किसने की।

3. **बहु-विकल्प परीक्षाः** इस विधि में एक प्रश्न के तीन–चार उत्तर लिख दिये जाते है।। छात्रों को सही उत्तर के आगे निशान लगाना होता है। जैसे–

   (i) पुस्तक शब्द व्याकरण में संज्ञा/सर्वनाम/क्रिया है।

   (ii) तुलसीदास ने प्रिय प्रवास/सूर सागर/रामचरितमानस की रचना की।

4. **सत्यासत्य परीक्षाः** इस में कुछ कथन प्रस्तुत किये जाते है जो सही या गलत हो सकते है। छात्रों को ठीक के सामने बने कोष्ठक में सही (√) की निशान लगाना होता है। और गलत के सामने (X) का निशान लगाना होता है।

   (i) भूषण श्रंगार रस के कवि है। ( )

   (ii) महादेवी वर्मा करूणा एवं वेदना की कवयित्री है। ( )

   (iii) मीरा वीर रस की कवियत्री है। ( )

5. **युगलीकरण परीक्षाः** इस विधि में प्रश्नों को दो भागों में बाँटा जाता है। प्रथम भाग में एक से अधिक कथन, शब्द या वाक्य दिये जाते हैं, दूसरे भाग में उनके उत्तर दिये जाते हैं। परन्तु उनका क्रम अव्यवस्थित प्रथम भाग वाले कथनों के क्रम में लिखना होता है– उदाहरणार्थ।

| **साहित्यकार** | **रचना** |
|---|---|
| जयशंकर प्रसाद | कर्मभूमि |
| प्रेमचन्द | मुआवजा |
| भीष्म साहनी | ध्रुवस्वामिनी |
| रामधारी सिंह दिनकर | कुरूक्षेत्र |

6. **वर्गीकृत परख प्रश्नः** इन प्रश्नों में लगभग पांच–छह शब्दों का एक समूह होता है। केवल एक शब्द को छोड़कर शेष सभी शब्द एक ही वर्ग के होते हैं, जो शब्द उस समूह का नहीं होता, छात्रों से उसे रेखांकित करने को कहा जाता है।

   (i) घणा, ईष्या, द्वेष, प्यार

   (ii) बिहारी, भूषण, सूरदास, महादेवी वर्मा,

7. **व्यवस्थीकरण परीक्षाः** इनमें वाक्यांशों या कथनों को अव्यवस्थित रूप में रख दिया जाता है, छात्रों उन शब्दों या वाक्यांशों को व्यवस्थित करते हैं, इससे छात्रों की भाषा–ज्ञान एवं विषय की परीक्षा ली जाती है।

   नीचे दिए शब्दों को उचित क्रम में रखिए–

   (i) निबन्ध, शब्द, वर्ण, वाक्य।

   (ii) का पाप भाग्यवाद आवरण।

   (i) ***मौखिक परीक्षाः*** प्यारे बच्चो हिन्दी भाषा के मूल्यांकन में मौखिक परीक्षा का बहुत महत्त्व है क्योंकि हिन्दी भाषा–शिक्षण में पढ़ने–लिखने की योग्यता का विकास करने से पहले छात्रों को सुनकर विचार ग्रहण करने एवं बोलकर विचारों को अभिव्यक्त करने के योग्य बनाना भाषा की शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य है। भाषा के दो रूपों मौखिक एवं लिखित में से व्यावहारिक जीवन में मौखिक रूप का अधिक प्रयोग होता है। अतः हिन्दी के

मूल्यांकन में मौखिक अभिव्यक्ति की योग्यता की जांच करना भी उतना ही आवश्यक है, जितना लिखित अभिव्यक्ति की योग्यता की जाँच करना।

मौखिक परीक्षा में छात्रों के उत्तर देने के ढंग से उनका मूल्यांकन कर लिया जाता है। मौखिक परीक्षा के द्वारा छात्रों का शुद्ध उच्चारण, उचित गति, हाव–भाव स्वर के आरोह–अवरोह के साथ बोलने की योग्यता जाँची जाती है। अध्यापक द्वारा पूछे गए प्रश्नों के आधार पर उनके श्रवण कौशल की योग्यता की जाँच भी होती है।

(iii) ***प्रायोगिक परीक्षा:*** वैसे तो प्रायोगिक परीक्षा विज्ञान, भूगोल, हस्तकौशलों आदि विषयों में ही होती है। अन्य विषयों में नहीं। लेकिन भाषा के कौशलों की जांच के लिए प्रायोगिक परीक्षा जरूरी है।

भाषा में सस्वर पठन, भाषण, वाद–विवाद, कविता पाठ निबन्ध लेखन आदि साहित्यिक क्रियाओं का आयोजन करवाकर भाषा सम्बन्धी विभिन्न योग्यताओं की जांच की जाती है। स्वतंत्र रूप में यह परीक्षा अपने–आप में पर्याप्त नहीं है, सहायक–परीक्षा के रूप में इसे अवश्य प्रयोग में लाया जा सकता है।

2. **पर्यवेक्षण:** प्यारे बच्चों। बच्चे के दैनिक व्यवहार एवं क्रियाओं को देखकर, उनको लेखा–जोखा रखने की क्रियाओं को ही पर्यवेक्षण कहा जाता है। कक्षा में छात्र की सक्रियता, विद्यालय के विभिन्न कार्यक्रमों में आयोजित भाषा एवं साहित्य सम्बन्धी क्रियाओं में उसकी सहभागिता एवं प्रदर्शन विद्यालयों के सभी शिक्षकों छात्रों व अन्य कर्मियों आदि के साथ वार्तालाप आदि का पर्यवेक्षण करते हुए छात्रों के भाषागत योग्यताओं के विकास एवं उपलब्धियों की जाँच की जा सकती है।

4. **संचित अभिलेख पत्र:** छात्रों के विभिन्न पक्षों में आए व्यवहार–परिवर्तनों एवं उपलब्धियों को एक ही प्रपत्र में लिखकर सुरक्षित रखा जाता है, इसे संचित अभिलेख पत्र कहते हैं। छात्र के विद्यालय प्रवेश से लेकर विद्यालय छोड़ने तक छात्र की स्वास्थ्य एवं शारीरिक विकास सम्बन्धी उपलब्धि, सहगामी, क्रियाओं में सहभागिता की स्थिति, मानसिक, बौद्धिक विकास एवं शैक्षिक उपलब्धियों से सम्बन्धित मूल्यांकन का पूरा–पूरा रिकार्ड रखा जाता है। इन सब बातों की यथार्थ जानकारी संचित अभिलेख पत्र द्वारा हो जाती है।

5. **घटनावृत्त:** विद्यालय में होने वाली दैनिक घटनाओं का विवरण भी बालकों के व्यवहार–परिवर्तन का मूल्यांकन करने में सहायता करता है।

6. **गृहकार्य:** गृहकार्य के रूप में लिखे गए प्रश्नों के उत्तर, पाठ के सार, शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कंठस्थ विषय–वस्तु को सुनाने आदि क्रियाओं के आधार पर छात्रों के व्यवहार–परिवर्तन या योग्यता विकास की जांच की जाती है, अतः मूल्यांकन में गृहकार्य भी एक तकनीक के रूप में कार्य करता है।

**अपनी प्रगति जांचिए-2**

1. हिन्दी–शिक्षण में मूल्यांकन के लिए प्रयुक्त की जाने वाली तकनीक घटनावत के बारे में बताईये?
2. इनके बगैर क्या हम मूल्यांकन की क्रिया कर सकते हैं?

## 5.5 हिन्दी की विभिन्न विधाओं का मूल्यांकन

प्यारे बच्चों। अभी तक हमने सीखा.... भाषा में मूल्यांकन के लिए अपनाई जाने वाली तकनीक या साधन कौन–कौन से है। अब यह जाना भी जरूरी हो जाता है कि हिन्दी की विभिन्न विधाओं की मूल्यांकन प्रक्रिया क्या है। हिन्दी केवल विषय ही नहीं है, वरन् विभिन्न विषयों को सीखने का एक माध्यम भी है। हिन्दी–शिक्षण द्वारा विद्यार्थियों को केवल ज्ञान ही नहीं दिया जाता बल्कि शुद्ध उच्चारण, शुद्ध अक्षर–विन्यास, भाषा का शुद्ध प्रयोग शुद्ध मौखिक व लेखन अभिव्यक्ति को विकसित करने का प्रयास किया जाता है। इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए बच्चों को भाषा के दोनों रूप गद्य एवं पद्य का अध्ययन कराया जाता है। गद्य की विभिन्न विधाओं को हिन्दी के अध्ययनक्रम में शामिल किया गया है। हिन्दी के ज्ञान विभिन्न कौशलों तथा सौंदर्य बोध के परीक्षण के लिए निम्नलिखित व्यवस्था की जा सकती है–

5.5.1. **श्रवण-कौशल का मूल्यांकन:** साहित्य की विभिन्न विधाओं का शिक्षण करते समय अध्यापक सम्बन्धित विषय वस्तु

की चर्चा छात्रों के सामने करता है। छात्रों ने विषय–वस्तु को ग्रहण किया या नहीं इसके लिए पाठ का सार पूछ कर विषय–वस्तु से सम्बन्धित प्रश्न पूछ कर छात्रों के श्रवण–कौशल की जाँच परख कर सकता है।

5.5.2. **मौखिक अभिव्यक्ति कौशलः** छात्र अपने भाव, विचारों अर्जित अनुभव को मौखिक रूप से अभिव्यक्त करने की योग्यता का विकास करना भाषा शिक्षण की विभिन्न विधाओं के शिक्षण का प्रमुख उद्देश्य है। मौखिक अभिव्यक्ति कौशल का विकास किस स्तर तक हुआ है, इसकी जाँच मौखिक परीक्षा एवं प्रायोगिक परीक्षा के द्वारा की जा सकती है। विभिन्न साहित्यिक कार्यक्रमों जैसे भाषण, कवितापाठ, वाद–विवाद प्रतियोगिता करवा कर उनके मौखिक अभिव्यक्ति कौशल की जांच की जा सकती है।

5.5.3. **उच्चारण कौशलः** मौखिक अभिव्यक्ति कौशल के विकास में शुद्ध उच्चारण का महत्वपूर्ण स्थान है। पाठ्य–पुस्तक का कोई परिच्छेद पढ़वा कर, विषय–वस्तु से सम्बन्धित प्रश्न पूछ कर शब्दों को श्यामपट्ट पर लिखकर उनका उच्चारण करवा कर, उच्चारण कौशल का मूल्यांकन किय जा सकता है।

5.5.4. **वाचन-कौशलः** साहित्य की सभी विधाएं छात्रों में वाचन कौशल विकसित करने का महत्त्वपूर्ण माध्यम है। छात्र गद्य–पद्य व महान साहित्यकारों की महान् रचनाओं को पढ़कर उनमें व्यक्त विचारों से परिचित होते हैं। अतः भाषा की शिक्षा में छात्रों में वाचन योग्यता का विकास करना भी आवश्यक हो जाता है। वाचन कौशल का मूल्यांकन करने के लिए पुस्तक से कोई पाठ, अनुच्छेद या पाठ का अंश पढ़ने के लिए कहा जाता है। छात्रों के पढ़ते समय उनकी गति–यति, उतार–चढ़ाव, बल, विराम का निरीक्षण कर वाचन कौशल के स्तर का मूल्यांकन किया जाता है।

5.5.5. **शब्द-सूक्ति, मुहावरे एवं लोकोक्ति का ज्ञानः** साहित्य की विभिन्न विधाओं के शिक्षण द्वारा छात्रों को शब्दों सुक्तियों, लोकोक्तियों का ज्ञान करा कर उनके शब्द भण्डार में वद्धि की जाती है। शब्द भण्डार कितना विकसित हुआ है, के मूल्यांकन के लिए शब्दार्थ पर्यायवाची, विपरीतार्थक, शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों का अर्थ पूछ कर शब्दावली के ज्ञान का मूल्यांकन किया जाता है।

5.5.6. **पाठ्य-सामग्री के ज्ञान का मूल्यांकनः** भाषा–शिक्षण में पाठ्य–पुस्तकों के माध्यम से विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों का ज्ञान दिया जाता है, उनके मूल्यांकन के लिए निबन्धात्मक, वस्तुनिष्ठ एवं लघुत्तर परीक्षाओं का प्रयोग किया जाता है।

5.5.7. **बौद्धिक शक्ति का मूल्यांकनः** साहित्य की विभिन्न विधाओं में व्यक्त भाव, अनुभव विचारों को छात्रों के समझने योग्य बनाना भाषा–शिक्षण का प्रमुख उद्देश्य है। मौखिक रूप से प्रश्न पूछ कर, लिखित परीक्षा के द्वारा प्यारे छात्रों। छात्रों की बौद्धिक शक्ति का मूल्यांकन होता है।

5.5.8. **व्याकरण-ज्ञान का मूल्यांकनः** बच्चे व्याकरण का कितना ज्ञान रखता है, व्याकरण की दष्टि से शुद्ध भाषा का प्रयोग कर सकते हैं या नहीं, इस की जांच के लिए वस्तुनिष्ठ परीक्षा का प्रयोग किया जाता है।

5.5.9. **सजनात्मक योग्यता का मूल्यांकनः** निबन्ध, कहानी, पत्र आदि की रचना द्वारा, किसी कहानी का सार लिखवाकर कहानी, नाटक आदि के पात्रों का चरित्र–चित्रण एवं उद्देश्य लिखवाकर छात्रों की सजनात्मक योग्यता का मूल्यांकन किया जा सकता है।

5.5.10. **समीक्षात्मक योग्यताओं का मूल्यांकनः** किसी भी विषय–वस्तु के गुण–दोष को परखने वाला व्यक्ति जीवन के हर मोड़ पर गुण–दोषों की परख कर सही दिशा–निर्धारण में समर्थ होता है। छात्रों की समीक्षात्मक योग्यता का मूल्यांकन करने के लिए लघुत्तरात्मक, निबन्धात्मक परीक्षा का प्रयोग करना चाहिए।

अन्त में कहा जा सकता है कि साहित्य की विभिन्न विधाओं और उसमें निहित विभिन्न शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति का मूल्यांकन करने के लिए मौखिक लिखित एवं प्रायोगिक परीक्षा तथा पर्यवेक्षण आदि का प्रयोग कर हम मूल्यांकन प्रक्रिया को सोद्देश्य, सार्थक एवं प्रभावशाली बना सकते हैं।

## 5.6 सारांश

बच्चों आपकोयह मालूम हो चुका है कि कक्षा शिक्षण के उपरान्त प्रभावशाली अधिगम हेतु उसी शिक्षण सामग्री को जो शिक्षक ने पढ़ाई है, मूल्यांकन करता है। मूल्यांकन से न केवल शिक्षक छात्रों की प्रगति को जान सकता है वरन् अपनी शिक्षण विधि जो उसने शिक्षण प्रक्रिया के दौरान अपनाई है, की जांच भी होती है। हिन्दी शिक्षण में तो कई तरह की विधाएं हैं, इसीलिए छात्र ने उनमें कितनी कुशलता अर्जित की है, का मूल्यांकन करना जरूरी हो जाता है। भाषायी कौशलों का भी मूल्यांकन किया जाता है यथा श्रवण कौशल का मूल्यांकन, उच्चारण कौशल का मूल्यांकन, वाचन कौशल का मूल्यांकन, सजनात्मक योग्यता आदि का मूल्यांकन। मूल्यांकन हेतु प्रयुक्त विभिन्न साधक लिखित परीक्षा प्रायोगिक परीक्षा, मौखिक परीक्षा, पर्यवेक्षक आदि शिक्षण प्रक्रिया को सोद्देश्य एवं सार्थक बनाते हैं।

**मॉडल उत्तर**

1.1 कक्षा में जो शिक्षक सामग्री पढ़ाई जाती है। उसको छात्रों ने कितना अत्मसात किया है, कितने अधिगम अनुभव ग्रहण किए हैं, की जांच करना, मूल्यांकन है।

1.2 रॉस के अनुसार–''मूल्यांकन बालक का सही मानदण्ड स्थापित करता है, यह बालकों का सम्पूर्ण मापन करता है तथा सम्पूर्ण शैक्षिक परिस्थितियों का भी मूल्यांकन करता है।

2.1 1. पाठ पढ़ाने से पहले किया जाने वाला मूल्यांकन

2. पाठ पढ़ाते समय किया जाने वाला मूल्यांकन

3. पाठ पढ़ाने के पश्चात् मूल्यांकन

2.2 तीन

3.1 विद्यालय में होने वाली दैनिक घटनाएं भी बालक के व्यवहार में परिवर्तन लाती है, क्योंकि विद्यालय में उन सब घटनाओं का रिकार्ड होता है।

3.2 छात्रों के अच्छी तरह से मूल्यांकन इनके बगैर नहीं किया जा सकता।

## 5.7 मुख्य शब्द

1 **मूल्यांकन**–मूल्य आंकना Evaluation

2. **वर्गीकृत परख प्रश्न**–जहां सभी शब्द एक समूह के होते हैं केवल एक अन्य होता है यथा केला, आम, अंगूर, अमरूद, मटर। मटर इनमें अलग है।

## 5.8 सन्दर्भ ग्रन्थ


| | | |
|---|---|---|
| 1. | केशव प्रसाद | हिन्दी शिक्षण, धनपत राय एण्ड सन्स, नई सड़क दिल्ली 1990-91 |
| 2. | उमा मंगल डॉ० | हिन्दी शिक्षण, आर्य बुक डिपो, करोल बाग, नई दिल्ली 2003 |
| 3. | पांडेय रामशुक्ल | हिन्दी सरंचना का शैक्षिक स्वरूप, विराट प्रकाशन आगरा, 1982 |
| 4. | तरंग जयपाल व मा०गो० चतुर्वेदी | पाठ्यक्रम असदेर्शिका, केन्द्रीय बोर्ड नई दिल्ली प्रकाशन 1985 |
| 5. | Carroll, John. B. | Ths Stdy of Language, Haward University, Press 1953 |

# इकाई–5

# अध्याय-20: हिन्दी में गहकार्य

**उद्देश्यः**

प्यारे बच्चो। प्रस्तुत पाठ को पढ़ने के पश्चात् आप गहकार्य का अर्थ अपने शब्दों में बता सकेंगे।

– गहकार्य की परिभाषा का छात्र प्रत्याभिज्ञान कर सकेंगे।

– गहकार्य के महत्त्व को समझ सकेंगे।

– गहकार्य के संशोधन तकनीक को अच्छी तरह से समझ सकेंगे।

**संरचनाः**

5.1 गहकार्य की भूमिका
5.2 गहकार्य का अर्थ
5.3 गहकार्य की परिभाषा
5.4 गहकार्य का महत्त्व
5.5 गहकार्य का संशोधन
5.6 गहकार्य की संशोधन विधि
5.7 संशोधन के लिए चिन्ह
5.8 सारांश
मॉडल उत्तर
5.9 मुख्य शब्द
5.10 सन्दर्भ ग्रन्थ

## 5.1 भूमिका

आधुनिक शिक्षा पद्धति के गहकार्य को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। शिक्षा संस्थाओं में गहकार्यों के बिना शिक्षण को अधूरा समझा जाता है। गहकार्य कक्षा शिक्षक का अन्तिम सोपान है। गहकार्य की भूमिका कक्ष ा–शिक्षण में हुए अधिगम–अनुभवों को दोहराने और उसको मन–मस्तिष्क में अर्जित योग्यता के आत्मसात करने की है।

## 5.2 अर्थ

गहकार्य का शाब्दिक अर्थ है– 'घर से करके लाने वाला कार्य।' कक्षा–शिक्षण के उपरान्त पढ़ाए गए पाठ के आधार पर जो कार्य छात्रों को मौखिक या लिखित रूप में घर से करके लाने को कहा जाता है, उसे गहकार्य कहते हैं। गह कार्य को कहीं (Assignment) एसाईनमेन्ट तो कहीं (Project work) प्रोजेक्ट वर्क की संज्ञा दी जाती है।

## 5.3 परिभाषा

गहकार्य वह साधन है, ज ो छात्रों को स्वयं अभ्यास करके सीखने के अवसर प्रदान करता है।

इन्दु मलिक के अनुसार "गहकार्य शिक्षक द्वारा उत्पन्न सुनियोजित सीखने की परिस्थिति है। प्रत्येक गहकार्य का मौलिक उद्देश्य यह होता है कि छात्रों के शुद्ध एवं प्रत्यक्ष प्रेरित करने वाले सीखने के अनुभव प्रदान करें। यह अधिगम की आगे चलने वाली प्रक्रिया का महत्त्वपूर्ण अंग है।

तात्पर्य यह है कि गहकार्य बच्चों की एक सुनियोजित अधिगम प्रक्रिया है, जो उनके समय का सदुपयोग करता है।

## 5.4 महत्त्व

बच्चों! निम्न उपयोगिताओं से गहकार्य के महत्त्व को आंका जा सकता है। गहकार्य के माध्यम से छात्र अधिगम अनुभव ग्रहण करते हैं। इसकी पुष्टि अधिगम के मनोविज्ञान से भी होती है।

1. तत्परत का नियम
2. प्रभाव का नियम
3. अभ्यास का नियम
4. स्वतंत्र अध्ययन में सहायक
5. चिन्तन में सहायक
6. समय का सदुपयोग
7. आत्मनिर्भरता का विकास
8. परीक्षण एवं मूल्यांकन में सहायक
9. विद्यार्थियों की गुप्त योग्यताओं का पहचानना
10. कक्षा–कार्य का पूरक
11. बच्चे की स्वयं से प्रतियोगिता या बच्चे के शैक्षणिक स्तर को ऊँचा उठाने में सहायक
12. अभिभावकों का मार्गदर्शक।

**अपनी प्रगति जांचिए-1**

1. गहकार्य का शाब्दिक अर्थ क्या है?
2. गहकार्य का महत्त्व बताईये?

## 5.5 गहकार्य संशोधन विधियां

जो भी गहकार्य दिया ज ाये, उसका संशोधन आवश्यक किया जाये। इससे अभ्यास शिक्षण का लाभ मिलता है, विद्यार्थी भी गहकार्य में रूचि लेता है एवं सीखने का निरंतर अभ्यास करता है।

1. **व्यक्तिगत संशोधन विधिः** इस विधि में अध्यापक प्रत्येक छात्र को अपने पास बुलाकर उसके गहकार्य का संशोधन करता है। इसमें शिक्षक–शिक्षार्थी का निकटता का सम्बन्ध होता है। विधि तो यह सर्वोत्तम है, परन्तु समय एवं श्रम साध्य है। कक्षा में प्रत्येक छात्र को पास बुलाकर संशोधन नहीं किया जा सकता।
2. **सामूहिक संशोधन विधिः** इस विधि में शिक्षक गहकार्य से सम्बन्धित सम्भावित अशुद्धियों को सारी कक्षा के सामने समझाता है और छात्र अपनी–अपनी अशुद्धियों का संशोधन कर लेते है। यह विधि समय व श्रम की दष्टि से तो उत्तम है, परन्तु व्यक्तिगत समस्याएं जस की तस रहती है।
3. **मिश्रित विधिः** इस में शिक्षक 3–4 विद्यार्थियों से क्रमपूर्वक एक–एक करके अपना गहकार्य कक्षा में खड़ा होकर पढ़ने के लिए कहा जाता है और स्वयं सुनकर उनकी अशुद्धियों को दूर करता है एवं अन्य छात्रों से भी अशुद्धियों का निराकरण करने के लिए कहता है। इसमें समय व शक्ति दोनों की बचत होती है।, परन्तु लापरवाह प्रकृति के छात्र इस विधि में अपनी त्रुटियाँ दूर नहीं कर पाते।

उपरोक्त विधियों से संशोधन–कार्य करते हुए अध्यापक को छात्रों के गहकार्य में होने वाली कमियों को ढूँढ़ना चाहिए छात्र गहकार्य में निम्न प्रकार की अशुद्धियाँ करते हैं–

1. लिपि की अशुद्धता

2. व्याकरण की अशुद्धियाँ
3. शब्दावली का अशुद्ध प्रयोग
4. शब्दों की व्यर्थ पुनरावत्ति
5. विचारों में क्रमबद्धता का अभाव
6. अनुचित अनुच्छेद

## 5.6 गहकार्य की संशोधन विधि

अध्यापक हर अशुद्धि के लिए कुछ विशेष चिन्हों का प्रयोग करता है, छात्रों को भी उन चिन्हों से परिचित करा देता है ताकि वे चिन्ह देखकर अपनी गलती समझ जाए। ये चिन्ह निम्न प्रकार से हो सकते हैं–

| | |
|---|---|
| लि | लिपि की अशुद्धि |
| अ | अक्षर–विन्यास की अशुद्धि |
| व | वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धि |
| व्या | व्याकरण सम्बन्धी अशुद्धि |
| वि | विराम–चिन्ह सम्बन्धी अशुद्धि |
| ? | अस्पष्ट है |
| x | शब्द अनावश्यक है |
| ^ | कुछ छुट गया है। |

इस प्रकार से किया गया संशोधन–कार्य गहकार्य को उपयोगी सार्थक एवं उद्देश्यपूर्ण बनाता है।

**अपनी प्रगति जांचिए-2**

1. संशोधन की कौन सी विधियां हैं?
2. छात्र कैसी त्रुटियां करते है?

## 5.7 सारांश

यहां तक आते–आते आप यह जान चुके हैं कि गहकार्य के महत्त्व को नकारा नहीं जा सकता। प्रि–प्राईमरी स्तर पर गहकार्य की आवश्यकता भले ही महसूस ना हो परन्तु बड़ी कक्षाओं में गहकार्य की आवश्यकता अनुभव होने लगती है। शिक्षा प्रबन्धक, अध्यापक, अभिभावक तीनों ही गहकार्य देने पर बल देते हैं। ध्यातव्य यह है कि गहकार्य रोचक, स्पष्ट, विविधतापूर्ण, सर्जनात्मक व छात्रों के मानसिक व बौद्धिक स्तरानुकूल हो। गहकार्य को स्वरूप की व्यवस्था के लिए आवश्यक है कि गहकार्य को नियोजित किया जाए। गहकार्य को शिक्षण का अन्तिम सोपान मानकर इस को नियोजित नहीं किया जाता तभी तो गहकार्य, बोझिल प्रेरणाहीन, अमनोवैज्ञानिक बनकर रह जाता है।

गहकार्य उपयोगी तभी सिद्ध एवं सार्थक हो सकता है जब उसका मूल्यांकन किया जाए। लिखित गहकार्य की जांच या संशोधन तो अत्यन्त आवश्यक है। क्योंकि जांच या संशोधन के द्वारा ही हम बालकों की अनेकों त्रुटियों का निराकरण कर सकते हैं। अतः अध्यापक को गहकार्य की उपयोगिताओं को स्वीकार करते हुए उसका सुनियोजन करना चाहिए।

**मॉडल उत्तर**

1.1 घर से करके लाने वाला कार्य

1.2 1. चिन्तन में सहायक
2. समय का सदुपयोग

3. स्वतन्त्र अध्ययन में सहायक
4. आत्मनिर्भरता का विकास
5. कक्षा–कार्य का पूरक
6. अभिभावकों का मार्गदर्शक

2.1 संशोधन की प्रथम विधि है व्यक्तिगत संशोधन विधि दूसरी विधि सामूहिक संशोधन विधि कहलाती है एवं तीसरी विधि मिश्रित विधि है।

2.2 विचारों में क्रमबद्धता का अभाव, वर्तनी की अशुद्धियां, व्याकरण की अशुद्धियां, लिपि की अशुद्धियां इत्यादि।

## 5.8 मुख्य शब्द

1. **मिश्रित**–मिली–जुली
2. **अस्पष्ट**–जो स्पष्ट नहीं है।
3. **महत्व**–श्रेष्ठता, गुरुता

## 5.9 सन्दर्भ ग्रन्थ


| | | |
|---|---|---|
| 1. | जयनारायण कौशिक | हिन्दी शिक्षण, हरियाणा साहित्य अकादमी चण्डीगढ़। |
| 2. | बैजनाथ शर्मा | हिन्दी शिक्षक, लक्ष्मीनारायण पब्लिकेशन्ज आगरा, 1976 |
| 3. | विजय सूद | हिन्दी शिक्षण विधियां, टण्डन पब्लिकेशन्ज लुधियाना, 1995 |
| 4. | एम०एम० भाटिया व डी०के० वर्मा | हिन्दी शिक्षण, टण्डन पब्लिकेशन्ज किताब बाजार, लुधियाना |

# इकाई–5

# अध्याय-21: पाठ-योजना

## (क) हिन्दी-पाठ्यवस्तु का शिक्षा-शास्त्रीय विश्लेषण

शिक्षक जब पाठ्य–वस्तु का शिक्षा–शास्त्रीय विश्लेषण करता है। तो उसे चार सोपानों का अनुसरण करना होता है–

– पाठ या प्रकरण की विशेष विषय–वस्तु का विश्लेषण
– अनुदेशात्मक उद्देश्यों का निर्धारण
– शिक्षण विधि एवं प्रक्रिया का निर्धारण
– मूल्यांकन तकनीक का निर्धारण

उपर्युक्त चारों सोपानों का अनुसरण करके हिन्दी विषय के किसी प्रकरण या पाठ के शिक्षण के लिए शिक्षक के द्वारा शिक्षाशास्त्रीय विश्लेषण को हम आगे स्पष्ट कर रहे हैं।

**पाठ–योजना**

| | |
|---|---|
| छात्राध्यापक का अनुक्रमांक/नाम | कक्षा |
| विषय – हिन्दी (गद्य) | दिनांक |
| उपविषय 'शिक्षक से राष्ट्रपति' | कालांश |
| | अवधि |

**प्रस्तुतीकरण मूल पाठ्य वस्तु**

पहले दो राष्ट्रपतियों को मैं जानती थी, परन्तु जाकिर हुसैन से व्यक्तिगत रूप से परिचित थी, उनको मैं तब से जानती थी, जब वे बिहार के राज्यपाल पद से निवत्त होकर भारत के उपराष्ट्रपति–पद पर नियुक्त हुए थे। समय–समय पर हमें उनसे किसी न किसी सम्बन्ध में मिलने जाने का सौभाग्य प्राप्त होता रहता था। जाकिर साहब की जन्मभूमि इटावा थी– उत्तर प्रदेश की भूमि, गंगा–यमुना की भूमि। शायद उनसे मिलते समय मेरे मन में जो प्यार उमड़ता था वह एक ही प्रदेश की मिट्टी बोलती थी। कुछ बातें हैं उनकी जो भूली नहीं जा सकती।

**पाठ्य-वस्तु का विश्लेषण**

| | | |
|---|---|---|
| **भाषा तत्वों का ज्ञान** | | श्रवण कौशल परीक्षण, अध्यापक के कठिन शब्दों का उच्चारण, प्रभावित, बुलेटिन, महिमा रूह, पदारूढ़, नस्ल, जनाजा। काया भीजत, अनूठी हस्ती। |
| वर्तनी का ज्ञान | | अनुसरण, बुनियादी तालीम, घनिष्ठ उद्घाटन, संक्षिप्त। |
| अरबी फारसी के शब्द | | एतराज, नापसन्द, जबान, सबूत, खुशहाली। |
| विलोम शब्द | | |
| **विषय-वस्तु का ज्ञान** | 1. | घटना 3 मई 1969 सवेरे साढ़े सात बजे |
| | 2. | राष्ट्रपति जाकिर हुसैन की मत्यु |
| | 3. | पहले दो राष्ट्रपतियों की लेख्कि से सिर्फ पहचान |

4. जाकिर साहब की जन्मभूमि इटावा।
5. गंगा–यमुना नदी की भूमि।
6. 13 मई 1967 को जाकिर हुसैन का राष्ट्रपति के रूप में पद संभालना।
7. पटियाला पंजाबी विश्वविद्यालय में गुरू गोबिन्द सिंह संस्थान की नींव।
8. रामलीला में रामचन्द्र जी को तिलक करना।
9. मुगल उद्यान में 400 नए किस्म के गुलाब लगाना।
10. गांधी जी की शिक्षाओं का अनुसरण।
11. अनुसरण करते हुए 'बुनियादी तालीम' के लिए 'जामिया मिलिया' की नींव रखना।
12. स्वयं जाकिर हुसैन के कथनानुसार कम बोलना अर्थात् 'ईश्वर ने बोलने के लिए एक ही जीभ दी, सुनने के लिए दो कान'।

---

**अनुदेशनात्मक उद्देश्यः** प्रस्तुत पाठ का अध्ययन करने के पश्चात् यह अपेक्षा की जाती है कि छात्रों में निम्नलिखित परिवर्तन दष्टिगोचर होंगे–

1. छात्र पाठ में आये कठिन शब्दों का शुद्ध उच्चारण करते हैं।
2. उपरोक्त शब्दों के शुद्ध रूप की पहचान करते हैं।
3. छात्र लिखते वक्त शब्दों की शुद्ध वर्तनी का प्रयोग करते हैं।
4. पाठ में आए नवीन शब्दों के अर्थ बताते हैं।
5. छात्र 'सु' व 'प्र' उपसर्ग का प्रयोग कर नवीन शब्द बनाते हैं।
6. छात्र विपरीतार्थक शब्दों को बताते हैं।
7. छात्र अध्यापक के आदर्श वाचन को ध्यान से सुनते हैं।
8. उचित स्वर में छात्र गद्यांश का सस्वर वाचन करते हैं।
9. छात्र अध्यापक द्वारा पूछे गए प्रश्नों का उत्तर अपने बोध के अनुसार देते हैं।
10. पाठ में आए कठिन शब्दों व अरबी–फारसी के शब्दों को ध्यानपूर्वक सुनकर उनके अर्थ का प्रत्याभिज्ञान करते हैं।
11. पूरे पाठ को पढ़ने के पश्चात् छात्र जाकिर हुसैन के व्यक्तित्व से परिचित व प्रभावित होते हैं।
12. छात्र अन्य राष्ट्रपतियों के बारे में भी जानना चाहते हैं।
13. छात्र पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखते हैं।
14. छात्र ने प्रस्तुत पाठ का पढ़कर साम्प्रदायिक–सद्भाव को अपने जीवन से आत्मसात करने की कोशिश करते हैं।

## ततीय सोपान

**शिक्षण–प्रक्रिया का निर्धारणः** उपर्युक्त दोनों सोपानों के बाद अध्यापक शिक्षण–प्रक्रिया का स्वरूप निर्धारित करता है। शिक्षक क्या करेगा, छात्र क्या करेंगे का निर्णय इसी सोपान में लिया जाता है। पाठ का सार व लेखक परिचय दिया जायेगा।

1. **आदर्श वाचनः** छात्रों को शुद्ध उच्चारण का ज्ञान कराने के लिए अध्यापक स्वयं निर्धारित पाठ का सस्वर वाचन करेगा। गति, यति, आरोह–अवरोह का ध्यान रखेगा। बच्चों को हस्तलिखित प्रतियां वितरित की जायेगी।
2. **अनुकरण वाचनः** छात्राध्यापकों को अनुकरण वाचन करने के लिए कहा जायेगा, उनका वाचन सस्वर होगा, गति–यति का ध्यान रखेंगे।
3. **अशुद्धि संशोधनः** छात्रों की अशुद्धियों का संशोधन यथा सम्भव छात्रों की सहायता से ही करवाया जायेगा, कठिन शब्दों को श्यामपट्ट पर लिखेगा।
4. **शब्दार्थः** पाठ में आये कठिन शब्दों का अर्थ बताया जायेगा। वाक्यों में प्रयुक्त किये जाएंगे, व्याख्या के लिए, उपसर्ग, प्रत्यय, विपरीतार्थक शब्दों की सहायता ली जायेगी।

| शब्द | अर्थ | वाक्य |
|---|---|---|
| बुलेटिन | संक्षिप्त सामाचार | पहले बुलेटिन में समाचार आया है कि राष्ट्रपति जाकिर हुसैन की मत्यु हो गई |
| **सुरूचि** | 'सु' उपसर्ग | 'रूचि' मूल शब्द |
| प्रबल | 'प्र' उपसर्ग | 'बल' मूल शब्द |
| अरबी–फारसी शब्दों को चार्ट पर लिखकर कक्षा में दिखाया जायेगा, साथ में अर्थ भी होंगे यथा | | |
| तनख्वाह – | वेतन | |
| एतराज – | आपत्ति | |
| नापसंद – | अरुचि | |
| जबान – | जिह्वा | |
| सबूत – | प्रमाण | |

5. **मौन वाचनः** गद्यांश में वर्णित विचारों को समझने हेतु मौन वाचन करवाया जायेगा, ध्यान रखा जाए, कि वह मौन वाचन शोर में परवर्तित ना हो।
6. **बोध परीक्षा व विचारः** विश्लेषण हेतु – प्रश्नोत्तर तथा व्याख्या विधि का प्रयोग किया जायेगा।
   – डॉ. जाकिर हुसैन की मत्यु कब हुई?
   – जाकिर साहिब की जन्म भूमि कहाँ थी।
   (राष्ट्रपति हुसैन का चित्र दिखाया जा सकता है, स्पष्टता के लिए)।
7. **अनौपचारिक रूप से व्याकरण अभ्यासः**
   उपसर्ग से बनने वाले शब्दों का चार्ट,
   प्रत्यय से बनने वाले शब्दों का मॉडल
   विलोम व पयार्यवाची शब्दों का चार्ट इत्यादि।

## चतुर्थ सोपान

**मूल्यांकन तकनीकः** मूल्यांकन की प्रक्रिया सम्पूर्ण शिक्षण प्रक्रिया के दौरान चलती रहती है तथा पाठ पूरा होने के बाद भी आवत्यात्मक क्रियाओं के द्वारा छात्रों का मूल्यांकन किया जाता है।

| | | |
|---|---|---|
| श्रवण कौशल परीक्षण | – | शिक्षक के आदर्श वाचन को छात्र ध्यापूर्वक सुनेंगे। |
| उच्चारण कौशल परीक्षण | – | अनुकरण वाचन को सुनकर |
| वर्तनी कौशल परीक्षण | – | वर्तनी लिखवाकर |
| नवीन शब्दों के अर्थ | – | शब्दार्थ पूछकर उन्हें वाक्य में प्रयोग करवा कर। |
| व्याकरण सम्बन्धी ज्ञान का परीक्षण | – | उपसर्ग से बनने वाले प्रत्ययों से बनने वाले शब्दों को पूछ कर विलोम, पयार्यवाची पूछ कर, काल लिंग पूछ कर, क्रिया, विशेषण आदि पूछ कर। |
| विषय–वस्तु के ज्ञान का परीक्षण | – | लघु उत्तरात्मक प्रश्न पूछ कर<br>आवत्यात्मक प्रश्न पूछ कर<br>गहकार्य देकर |

**गहकार्यः**

1. मौखिक, प्रयोगात्मक व लिखित रूपों में दिया जा सकता है। **यथा** छात्र – जाकिर हुसैन की जीवनी याद करके लायेंगे।
2. लेखिका के मन में डॉ. जाकिर हुसैन के प्रति प्यार उमड़ने का क्या कारण था?
3. जाकिर हुसैन की मत्यु .....हुई।
4. जाकिर साहब की जन्मभूमि ..... थी।
5. महात्मा गांधी ने हिन्दी फैलाने के क्या कारण दिये?

# (ख) पाठ योजना

छात्राध्यापक का अनुक्रमांक ..... कक्षाः ग्यारहवीं

विषय – हिन्दी (पद्य) अवधिः 40 मिनट

उपविषय– पश्चाताप दिनांकः

**अनुदेशनात्मक उद्देश्यः** प्रस्तुत अध्याय का अध्ययन करने के उपरान्त छात्रों निम्नांकित उद्देश्यों को प्राप्त करते हैं।

**लक्ष्य**

| **I. ज्ञान** | **व्यवहार में होने वाले अपेक्षित परिवर्तन** |
|---|---|
| 1. सिद्धि, व्याघात, पण उपालम्भ शब्दों का ज्ञान | छात्र इन शब्दों का प्रत्यास्मरण करते हैं। |
| 2. अनुप्रास अलंकार का ज्ञान | छात्र अनुप्रास अलंकार की परिभाषा बताते हैं। |
| 3. प्राचीन भरतीय नारियों की आदर्श पति भक्ति एवं वीरता | छात्र प्राचीन नारियों की वीरता एवं पति भक्ति की सार्थकता पर विचार करते हैं। |
| 4. यशेधारा के पति प्रेम एवं स्वाभिमान का ज्ञान | छात्र यशोधरा की तुलना सीता से करते हैं। |
| **II. कौशल** | |
| 1. कविता का श्रवण | वे धैर्य एवं मनोयोग से सुनते हैं। |
| 2. सुनकर अर्थ ग्रहण | छात्र शब्दों का प्रसांगानुकूल अर्थ निकालते हैं। |
| **III. भावानुभूति एवं रसानुभूति** | छात्र कविता का केन्द्रीय भाव ग्रहण करते हैं वे रसानुभूति करते हैं। |
| 1. पढ़कर अर्थ ग्रहण कविता का पठन | छात्र आरोह–अवरोह के साथ मौखिक पठन करते हैं। |
| 2. अर्थ ग्रहण भावानुभूति, रसानुभूति | वे शब्दों का प्रसांगानुकूल अर्थ का निकालकर पठित अंश के महत्वपूर्ण भाग का चयन कर सकते हैं। |
| 3. रुचि | पठित अंश का मूल भाव समझ कर रसानुभूति करने में सक्षम होते हैं। |
| मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित साहित्याध्ययन में रुचि | छात्र गुप्त की अन्य रचनाओं को रुचि से पढ़ते हैं। |
| प्राचीन आदर्शों से | छात्र पठित सामग्री का सम्बन्ध अपने जीवन से स्थापित करते हैं। |
| पूर्ण साहित्य में रुचि | छात्र आदर्शों से पूर्ण साहित्य को पढ़ने में रुचि रखते हैं। |
| 4. अभिवत्ति | छात्र सत साहित्य का अध्ययन करते हैं। |
| पतिव्रत धर्म पालन के संस्कार | वे सामाजिक आदर्शों में आस्था दर्शाते हैं। |
| कर्तव्य पालन की अभिवत्ति का विकास | वे सामाजिक कर्तव्यों का निर्वाह करते हैं एवं उनकी आचरण की विधियां समाज के आदर्शोंनुकूल होती है। |

**सहायक-सामग्री**—कक्षा–कक्ष, चॉक, झाड़न, डस्टर, गौतम बुद्ध का चित्र एवं कवि मैथिलीशरण गुप्त का चार्ट कविता की पंक्तियां चार्ट पर लिखी हुई।

**पूर्व ज्ञान**–छात्र महात्मा बुद्ध के बारे में जानते हैं।

**पूर्व ज्ञान परीक्षा**

1. महात्मा बुद्ध कौन थे?
2. उन्होंने राजमहल को क्यों छोड़ा?
3. महात्मा बुद्ध ने जब राजमहल छोड़ा तब उनकी पत्नी किस दशा में थी?
4. बुद्ध के चले जाने पर उनके पत्नी के दिल पर कैसे विचार आए

**उद्देश्य कथन**–अन्तिम प्रश्न का उत्तर संतोषजनक ना पाकर छात्राध्यापक घोषणा करता है कि बच्चों! आज हम मैथिलीशरण गुप्त विरचित 'पश्चाताप' नामक कविता का अध्ययन करेंगे।

**प्रस्तुतीकरण**–पाठ का विकास बच्चोंके सक्रिय सहयोग से किया जाएगा।

## मूल पाठ्य वस्तु

### खण्ड (क)

*सिद्धि-हेतु स्वामी गए, यह गौरव की बात,*
*पर-चोरी-चोरी गए, यही बड़ा व्याघात।*
*सखि, वे मुझ से कहकर जाते।।*
*वह, तो क्या मुझको दे अपनी-पथ-बाधा ही पाते?*
*मुझको बहुत उन्होंने माना,*
*फिर भी क्या पूरा पहचाना?*
*मैंने मुख्य उसी को जाना,*
*जो वे मन में लाते।*
*सखि, वे मुझसे कहकर जाते।।*
*जाएं सिद्ध पावें वे सुख से,*
*दुःखी न हो इस जन के दुःख से,*
*उपालम्भ दूं मैं किस मुख से?*
*आज अधिक वे आते।*
*सखि, वे मुझसे कहकर जाते।।*

| शिक्षण बिन्दु | छात्राध्यापक क्रियाएं | छात्र क्रियाएं | श्यामपट्ट कार्य |
|---|---|---|---|
| कवि–परिचय | छात्राध्यापक पश्चाताप कविता के रचयिता राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त का संक्षिप्त परिचय देगी। राष्ट्रपति का जन्म चिरगांव जिला झांसी में हुआ था। उन्होंने कई ग्रन्थों की रचना की जिनमें साकेत जयद्रथ वध भारतभारती, यशोधरा आदि प्रमुख हैं। | छात्र ध्यानपूर्वक सुनेंगे | **जन्म स्थानः** चिरगांव<br>**जिलाः** झांसी<br>**मुख्य ग्रन्थः** भारत–भारती, जयद्रथवध, यशोधरा, साकेत |
| कवितासार | राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त विरचित 'पश्चाताप' नामक कविता 'यशोधरा' से ली गई है। इस ग्रन्थ में उन्होंने यशोधरा | छात्र ध्यानपूर्वक सुनेंगे और अपनी अभ्यास पुस्तिका में लिखेंगे। | |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | के पश्चाताप को बड़े ही मार्मिक ढंग से चित्रित किया है जब बुद्ध उन्हें बिना सूचित किए एक रात को घर से चले गए तो उन्हें बड़ा पश्चाताप हुआ, यह पश्चाताप एक क्षत्राणी का पश्चाताप था जिसे गुप्त जी ने बड़े अच्छे ढंग से व्यक्त किया है। | | |
| आदर्श वाचन | छात्राध्यापक आदर्श वाचन प्रस्तुत करेगा, उसका वाचन सस्वर होगा, आरोह–अवरोह का ध्यान रखा जाएगा। | छात्र पाठ्य पुस्तक खोलते हैं। | |
| अनुकरण वाचन | कक्षा के दो–तीन, छात्रों से क्रमशः अनुकरण वाचन करवाया जाएगा। | दो–तीन छात्र क्रमशः अनुकरण वाचन करेंगे। | |
| अशुद्धि संशोधन | छात्राध्यापक अशुद्धियों का निराकरण यथासम्भव छात्रों की सहायता से ही करवाएगा। | छात्र अशुद्धियों का संशोधन करेंगे। | |
| शब्दार्थ | छात्राध्यापक कविता में आए कठिन शब्दों को श्यामपट्ट पर लिखेगा।<br>सखि–सहेली<br>स्वामी–पति<br>व्याघात–दुःख<br>आलम्भ–उलाहना<br>पथ–बाधा–रास्ते की रूकावट<br>सिद्ध–प्रसिद्धि | सभी छात्र कठिन शब्दों के अर्थ अपनी अभ्यास पुस्तिका में लिखेंगे। | शब्द–अर्थ<br>सखि–सहेली<br>स्वामी–पति<br>व्याघात–दुःख<br>उपालम्भ–उलाहना<br>पथ–बाधा–रास्ते की रूकावट<br>सिद्ध–प्रसिद्धि |
| भावानुभूति एवं सौंदर्य विश्लेषण | छात्राध्यापक प्रश्नों और कथनों की सहायता से छात्रों को भावानुभूति करवाएगा।<br>1. यशोधरा पति से क्या चाहती है<br>2. महात्मा बुद्ध के इस प्रकार चले जाने से यशोधरा को कैसा लगा<br>'पर–चोरी–चोरी गए'<br>इस पंक्ति में कौन सा अलंकार है | छात्र अपने बोध के अनुसार उत्तर देंगे जरूरी नहीं कि सभी उत्तर ठीक है।<br>छात्र सभी उत्तरों को अपनी अभ्यास पुस्तिका में लिखते हैं।<br>छात्र अभ्यास पुस्तिका मे लिखते हैं। | यशोधरा चाहती थी कि उसके पति अपने जीवन की हरेक बात को उसे बताएं महात्मा बुद्ध के इस प्रकार चले जाने से यशोधरा को अच्छा नहीं लगा।<br>अनुप्रास अलंकार है। |
| व्याख्या | प्रस्तुत कविता में राष्ट्रकवि गुप्त जी ने 'पश्चाताप' नामक कविता में यशोधरा के पश्चाताप को व्यक्त कियाहै। वह कहती है कि सखी अगर वह मुझे बता कर चले जाते तो मैं अपने आपको सौभाग्यशाली समझती किन्तु उन्होंनें मुझे अपनी रास्ते की रूकावट जानकर चुपचाप चला जाना श्रेयस्कर समझा जो कि उचित नहीं है। मैंने सदैव उनकी आज्ञा को शिरोधार्य किया | | |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | उन्हीं को मुख्य माना, फिर भी उन्होंने बगैर बताया जाना ही उचित समझा। मैं उनको कोई उलाहना नहीं देती पर एक बार मुझे कह कर चले जाते। | | |

**खण्ड 'ख'**

# मूल पाठ्य वस्तु

**पद्यांशः** ***स्वयं सुसज्जितम करके क्षण में***

***.....वह कहकर जाते***

| शिक्षण बिन्दु | छात्राध्यापक क्रियाएं | छात्र क्रियाएं | श्यामपट्ट कार्य |
|---|---|---|---|
| आदर्श वाचन | छात्राध्यापक दूसरे पद्यांश का आदर्श वाचन सस्वर व गति–यति का ध्यान रख कर करता है। | छात्र ध्यान से सुनेंगे | |
| अनुकरण वाचन | दो–तीन छात्रों से क्रमशः अनुकरण वचन करवाया जाता है। | दो–तीन छात्र क्रमशः अनुकरण वाचन करते हैं। | |
| अशुद्धि संशोधन | अशुद्धि संशोधन यथासम्भव छात्रों की सहायता से करवाया जाता है। | अशुद्धि संशोधन करते हैं। | |
| शब्दार्थ | क्षण–पल<br>पण–बाजी लगाना<br>अपूर्व अनुपन–जिसके समान दूसरा कोई ना हो।<br>क्षात्र–क्षत्रिय<br>रण–युद्ध<br>सुसज्जित–सजा कर | सभी छात्र कविता में आए कठिन शब्दों को अपनी अभ्यास–पुस्तिका में लिखेंगे। | क्षण–पल<br>पण–बाजी लगाना<br>अपूर्व अनुपम–जिसके समान दूसरा कोई ना हो।<br>क्षात्र–क्षत्रिय<br>रण–युद्ध |
| भाव–विश्लेषण एवं सौन्दर्यानुभूति | प्राचीनकाल में क्षत्राणियां अपने पतियों को युद्ध स्थल में किस प्रकार भेजती थी? | सभी छात्र अपने बोध के अनुसार उत्तर देंगे जरूरी नहीं कि वे सभी उत्तर ठीक हो। | प्राचीन समय में क्षत्राणियां स्वयं अपने पतियों को सजा संवार कर युद्ध भूमि में भेजती थी। |
| व्याख्या | प्रस्तुत कविता में गुप्त जी यशोधरा की मनःस्थिति का वर्णन करते हुए कहते हैं किहम अपने पतियों को स्वयं तैयार करके क्षत्रिय धर्म का पालन करने हेतु युद्ध भूमि में भेज देते हैं, ठीक उसी प्रकार मैं भी उन्हें जंगलों में मन की शान्ति प्राप्त करने हेतु भेज देती हे सखी! वे वापस भी आयेंगे और कुछ सिद्धि प्राप्त करके ही लौटेंगे। तब मैं उन का व्यथित मन से सत्कार करूंगी। क्योंकि वह मुझे बिना बताए ही चले गए हैं। | सभी छात्र व्याख्या को पूर्ण धैर्य एवं मनोयोग से सुनेंगे। | |

**आवत्यात्मक प्रश्न**

1. महात्मा बुद्ध राजमहल छोड़ कर वन में क्यों गए थे?
2. 'पर चोरी–चोरी गए' पंक्ति में कौन सा अलंकार है?
3. क्षत्रिय धर्म का पालन करने हेतु क्षत्रिणियों ने क्या–क्या त्याग किए हैं?
4. इस कविता से यशोधरा की मनःस्थिति के विषय में क्या पता चलता है?

**गहकार्य**

छात्र प्रस्तुत कविता का सार घर से लिखकर लायेंगे सभी छात्र कविता को कंठस्थ करेंगे।

# (ग) पाठ–योजना

| | |
|---|---|
| छात्राध्यापिका का अनुक्रमांक | कक्षा – नवीं |
| विषय–हिन्दी (रचना) | समय – 35 मिनट |
| उपविषय – दीपावली | दिनांक – |
| | कलांश |

**अनुदेशनात्मक उद्देश्यः** पाठ के अध्ययन पश्चात यह अपेक्षा की जाती है कि छात्रों में निम्नांकित परिवर्तन हुए हैं–

1. छात्र रचना के महत्त्व को समझते हैं।
2. छात्र रचना के माध्यम से सजन अभिव्यक्ति का लेखन में विकास करते हैं।
3. रचना की विभिन्न शैलियों से वह परिचित है।
4. पावन–पर्व दीपावली का अर्थ वह समझते हैं।
5. दीपावली से जुड़ी संदर्भ कथाओं का वह प्रत्यास्मरण करते हैं।
6. दीपावली पर गणेश–लक्ष्मी की पूजा का प्रत्याभिज्ञान करते हैं।
7. छात्र दीपावली की सांस्कृतिक महत्ता को स्वीकारते हैं।
8. छात्र दीपावली रचना को अपने शब्दों में बताते हैं।
9. छात्र शुद्ध वर्तनी की सहायता से शिक्षण बिन्दुओं के आधार पर निबन्ध रचना करते हैं।

**अनुदेशनात्मक सामग्रीः** लक्ष्मी–गणेश का चित्र, एक चार्ट जिस पर मोमबत्ती व दीये जल रहे हैं।

**प्रारम्भिक व्यवहारः** छात्र त्यौहारों के महत्त्व को जानते हैं एवं उनको मानने के ढंग से भी परिचित है।

प्रस्तावनाः 1. हमारे देश का क्या नाम है।

2. भारत में कितने त्यौहार मनाए जाते हैं।

3. कार्तिक मास की अमावस्या को कौन सा त्यौहार मनाया जाता है।

उद्देश्य कथनः अन्तिम प्रश्न का उत्तर संतोषजनक पाकर छात्राध्यापक यह उद्घोषित करता है कि अच्छा बच्चो! आज हम 'दीपावली' नामक निबंध का अध्ययन करेंगे। निबन्ध को पढ़ाने के लिए प्रवचन विधि रूपरेखा व प्रश्नोत्तर प्रणाली का प्रयोग किया जायेगा व निबन्ध को तीन भागों में बाँटकर पढ़ाया जायेगा–

1. भूमिका
2. मध्य या प्रसार
3. उपसंहार

**प्रस्तुतीकरण**– मूल पाठ्य वस्तु

**भूमिकाः**

**''पावन पर्व दीपमाला का'**

**"आओ साथी दीप जलायें,**
**सब आलोक मंत्र उच्चारें,**
**घर-घर ज्योति ध्वज फहराये।"**

भारत त्यौहारों का देश है, ये त्यौहार जीवन और जाति में प्राणों का संचार करता है। त्यौहार हमारी सांस्कृतिक परम्परा, धार्मिक भावना, राष्ट्रीयता, सामाजिकता तथा एकता की कड़ी के समान है। भारत के पर्व किसी न किसी सांस्कृतिक अथवा सामाजिक परम्परा के प्रत्येक रूप में स्मरण किए जाते हैं। यह हमारी आस्था और आस्तिकता के प्रतीक हैं। दीपावली भी भारत का सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय पर्व है।

| छात्राध्यापक क्रियाएं | छात्र क्रियाएं | |
|---|---|---|
| प्रवचन विधि द्वारा छात्राध्यापक ने भूमिका बताई है, | बोध के अनुसार | छात्रों ने ध्यानपूर्वक सुना |
| और उसी पर आधारित बोधात्मक प्रश्न पूछेगी | उत्तर देंगे | छात्रों ने उत्तर दिया। |
| आज कौन सा पावन पर्व है? | | – – दीपावली का पावन पर्व – – |
| यह त्यौहार किस के प्रतीक है? | | – – आस्था और आस्तिकता – – |
| दीपावली भारत का किस प्रकार का त्यौहार है? | | – – सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय पर्व – – |

## खण्ड 'ख'

## मध्य भाग या प्रसार

**मनाने का समय व कारण:** दीपावली कार्तिक मास की अमावस्या को मनाई जाती है। अमावस्या की काली रात दीयों की रोशनी से जगमग हो उठती है। दीपावली अन्धकार पर प्रकाश की एंव असत्स की सत्य, और बुराईयों पर अच्छाई की विजय का पर्व है।

दीपावली का पर्व वास्तव में अकेला पर्व नहीं है, यह पर्वों का समूह है। दीपावली से दो दिन पूर्व धनतेरस मनाई जाती है, इस दिन लोग बाजार से बर्तन इत्यादि खरीदना शुभ मानते हैं, उनकी मान्यता है कि दैत्यों और देवों के बीच समुद्र मंथन इसी दिन हुआ था। चतुदर्शी को नरक चौदस या छोटी दीवाली मनाते है, अमावस्या को दीवाली का पर्व धूमधाम से मनाया जाता है। महर्षि दयानन्द ने इसी दिन निर्वाण प्राप्त किया था। इसी दिन सिक्ख धर्म के छोटे गुरू हरगोबिन्द सिंह ने जेल से मुक्ति पाई थी।

प्रतिपदा का अन्नकूट, गोवर्धन पूजा तथ विश्वकर्मा दिवस मनाया जाता है। द्वितीया को भाई–बहन के प्रेम का प्रतीक भैया दूज मनाया जाता है।

| छात्राध्यापक क्रियाएं/शिक्षण – विधि | छात्र क्रियाएं |
|---|---|
| | बोध के अनुसार उत्तर देंगे। |
| 1. दीपावली को किस महीने में मनाया जाता है? | – – कार्तिक मास – – |
| 2. दीवाली को महीने के किस दिन मनाते हैं? | – – कार्तिक मास की अमावस्या – – |
| 3. क्या दीवाली अकेला पर्व है? | – – अनके पर्वों का समूह – – |
| 4. धनतेरस कब मनाई जाती है एवं इसका क्या महत्त्व है | – – दीवाली से दो दिन पहले – – |
| | – – बर्तन व चांदी के गणेश लक्ष्मी लेना – |
| 5. प्रतिपदा को मन्दिरों में क्या होता है? | – – अन्नकूट – – |
| 6. भैया दूज कब मनाया जाता है? | – – द्वितीया को – – |
| | सभी छात्र अभ्यास–पुस्तिकाओं पर रूपरेखा को नोट करेंगे। |

**महत्त्वः** दीपावली स्वच्छता का प्रतीक है। छोटे–बड़े, धनी–निर्धन सब इस पर्व को उत्साह से मनाते हैं। बाजारों में चारों तरफ दुकानें सज जाती है। मिठाई की दुकानों की सजावट दर्शनीय होती है। दीवाली की राशि का दश्य भी अनुपम होता है। रंग–बिरंगे बल्बों की पंक्तियाँ सितारों से होड़ लगाती प्रतीत होती है। व्यापारी लोग इस दिन अपने पुराने बही–खातों में हिसाब करके उन्हें बन्द कर देते हैं व नई बहियाँ लगाते है। रात्रि को लक्ष्मी गणेश की पूजा करते है। मान्यता है कि इस दिन लक्ष्मी घर आती है, तो लोग घरों के दरवाजे खोल कर सोते हैं। दूसरा महत्त्व यह है कि वर्षा ऋतु के समाप्त होने के बाद सर्द ऋतु भी प्रारम्भ हो जाती है, लोग घरों के अन्दर सोना प्रारम्भ कर देते हैं।

| छात्राध्यापक क्रियाएं | छात्र क्रियाएं |
|---|---|
| 1. दीपावली किस बात का प्रतीक है? | – – स्वच्छता का – – |
| 2. लोग बाजारों में क्यों घूमते हैं? | – – सजावट देखने – – |
| 3. रात्रि के समय घरों में किस की पूजा होती है? | – – लक्ष्मी–गणेश की – – |
| 4. कौन सी ऋतु का आगमन होता है? | – – सर्द ऋतु का – – |
| | दी गई रूपरेखा को सभी छात्र अभ्यास पुस्तिका में लिखते हैं। |

**हानिः** दुःख की बात है कि कुछ लोग दीपावली जैसे महत्वपूर्ण पर्व पर जुआ खेलते हैं व शराब पीते हैं, जो जुए में जीतता है, वह मानता है कि घर में लक्ष्मी का आगमन हो गया। जो हारता है वह मानता है कि यह दीवाली अभिशाप है। ऐसे लोग दीपावली की उज्ज्वलता पर कालिमा पोत कर नास्तिकता व अराष्ट्रीयता का परिचय देते हैं।

| छात्राध्यापक क्रियाएं | छात्र क्रियाएं |
|---|---|
| 1. बुरी प्रवत्ति के लोग इस दिन क्या कार्य करते हैं। | – – जुआ खेलना व शराब पीना – – |

उपसंहारः दीवाली भारत का राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक पर्व है। इसके महत्त्व को बनाए रखना आवश्यक है। हमें चाहिए कि हम जुआ खेलने वाले व शराब पीने वालों का विरोध करें। तभी हम ऐसे पर्वों के प्रति श्रद्धा और आस्तिकता का परिचय दे सकते हैं। पर्व देश और जाति की सबसे बड़ी सम्पत्ति है। इसके महत्त्व को समझना तथा इसके आदर्शों का पालन करना चाहिए। प्रत्येक भारतवासी का यह परम कर्त्तव्य है कि वे इस महान् पर्व को सामाजिक कुरीतियों से बचाएं।

**पुनरावत्ति**

1. दीपावली का त्यौहार कब मनाया जाता है?
2. यह त्यौहार किस बात का प्रतीक है?
3. इस दिन किस महापुरुष को निर्वाण प्राप्त हुआ था?
4. दीवाली से कितने दिन बाद भैया–दूज मनाया जाता है?

**गहकार्यः** दी गई रूपरेखा के आधार पर सभी छात्र घर से निबंध लिख कर लायेंगें।

# (घ) पाठ योजना

छात्राध्यापक का अनुक्रमांक ..... कक्षाः नवीं

विषय – हिन्दी (रचना) अवधिः 35 मिनट

(कहानी–रचना) उपविषय– लोमड़ी और कौआ दिनांकः

**अनुदेशनात्मक उद्देश्यः**

1. छात्र लोमड़ी, कौआ, जंगल आदि शब्दों को जानते हैं
2. छात्र कहानी को सुनकर स्वयं कहानी लिखने का प्रयास करते हैं।
3. छात्रों में कहानी–रचना के माध्यम से शिक्षक मौलिकता का विकास करने का प्रयास करता है।
4. छात्र प्रश्नों के तर्क सम्मत उत्तर देते हैं।
5. छात्र व्याकरण सम्मत शुद्ध भाषा का प्रयोग करते हैं।
6. छात्र कहानी कहने का एवं लिखने का अभ्यास करते हैं।
7. लोमड़ी और कौए की कहानी के माध्यम से छात्रों में मित्रता का अर्थ समझते हैं और जीवन में इसे अपनाने का प्रयास करते हैं।

**अनुदेशनात्मक सामग्री**

1. लोमड़ी तथा कौए के मॉडल वास्तविक
2. कहानी से सम्बन्धित चार चित्र

यह चारों चार्ट अलग–अलग स्थितियां प्रदर्शित करते हैं पहले चार्ट में लोमड़ी नारियल की गिरी लिए हुए है।

दूसरे चित्र में लोमड़ी पथ्वी पर बैठी है, कौआ वक्ष की शाखा पर बैठा है व नारियल भी जमीन पर रखा है।

तीसरे चित्र में कौआ नारियल को लेकर उड़ रहा है। लोमडी भी साथ भागने की मुद्रा में दिखाई दे रही है।

चौथे चित्र में दोनों बांट कर गिरी को खा रहे हैं।

**पूर्व ज्ञान**

छात्रों ने कौए, नारियल और लोमड़ी को देखा है।

**क्रिया**–(लोमड़ी का मॉडल दिखाते हुए/यह किस जानवर का मॉडल है।)

1. लोमड़ी कहां रहती है?
2. यह किस पक्षी का मॉडल है?
3. (कौए का मॉडल दिखाते हुए) कौए कहां रहते हैं?

**उद्देश्य कथन**

छात्राध्यापक उपविषय की घोषणा करता है बच्चों! आज हम लोमड़ी और कौए की कहानी सुनायेंगे।

**प्रस्तुतीकरणः**–कहानी की रचना व सुनाने हेतु चित्र वर्णन प्रणाली व प्रश्नोत्तर प्रणाली की सहायता ली जाएगी।

चार्ट नम्बर एक प्रदर्शित करते हुए

## मूल पाठ्य वस्तु

**छात्राध्यापक कथन**–बहुत समय पहले की बात थी। उस समय जंगल में एक लोमड़ी रहती थी। उसी ंगल में एक पेड़ पर कौआ रहता था। इन दोनों में बड़ी गहरी मित्रता थी। वे एक–दूसरे की सहायता करते थे और इस प्रकार वह बड़े सुख

से रहते थे। एक बार लोमड़ी को जंगल में कहीं से नारियल मिला, नारियल कठोर था। लोमड़ी के लाख प्रयासों से भी वह उस नारियल को नहीं तोड़ पाई। तब वह लोमड़ी नारियल को लेकर कौए के पास गई।

**विकास**

(चित्र प्रदर्शन एवं प्रश्नोत्तर द्वारा कहानी का विकास किया जाएगा।)

**छात्राध्यापक क्रिया**–अध्यापक बच्चों के सामने नीचे अंकित चित्र प्रस्तुत करेगा।

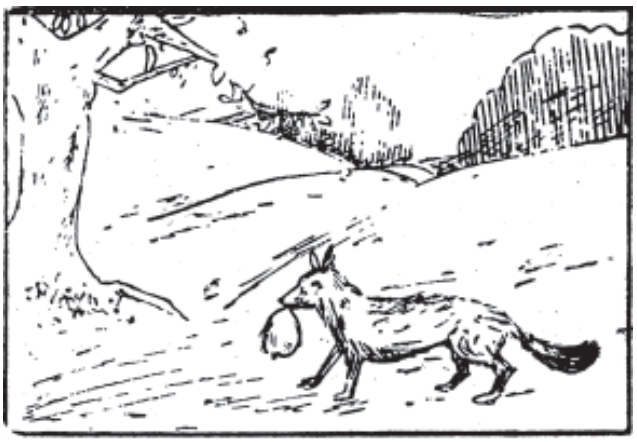

चित्र

**प्रश्न**

1. यह लोमड़ी अपने मुंह में क्या दबाए हुए है?
2. यह नारियल लोमड़ी को कहां से मिला होगा?
3. इसे लोमड़ी खा क्यों नहीं पा रही?

**छात्राध्यपक क्रिया**–अध्यापक बच्चों को नारियल दिखाएगा और उन्हें उसे छूकर देखने का आदेश देगा।

**प्रश्न**

1. नारियल का ऊपरी भाग कैसा है?
2. यदि तुम इसमें से गिरी निकालना चाहो तो क्या करोगे?
3. पत्थर, बाट आदि न मिलने पर तुम इसे कैसे तोड़ सकते हो?
4. लोमड़ी इसे कैसे तोड़ सकती थी।

**क्रिया**–अध्यापक बच्चों के सामने नीचे अंकित चित्र प्रस्तुत करेगा।

चित्र

**प्रश्न**

1. लोमड़ी कहां बैठी है?
2. उसका नारियल कहां रखा है?
3. वह कौए से क्या कह रही है?

**छात्राध्यपक कथन**—लोमड़ी ने कौए से कहा कि मित्र! तुम इस नारियल को अपनी चोंच में दबाकर उड़ो और बहुत ऊंचे इसे अपनी चोंच से नीचे गिरा दो।

**प्रश्न**

4. लोमड़ी ने कौए से ऐसा करने को क्यों कहा?

**छात्राध्यापक कथन**—लोमड़ी ने यह भी कहा कि ऊंचाई से गिरने पर इसकी ऊपर की खोपड़ी टूट जाएगी और उसमें गिरी निकल जाएगी। उस गिरी को हम दोनों खाएंगे।

**प्रश्न**

5. लोमड़ी की इस बात पर कौए पर क्या प्रभाव पड़ा होगा?

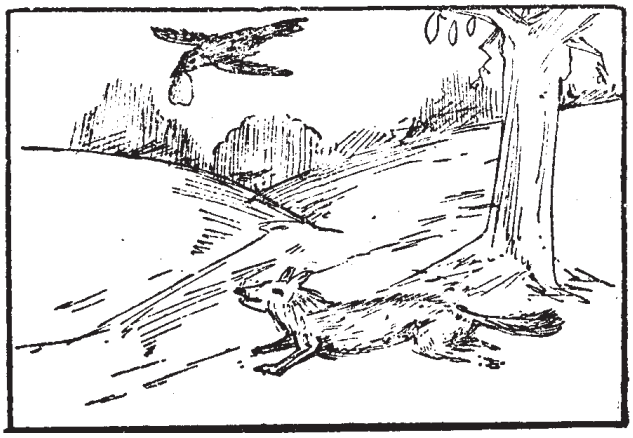

चित्र

**क्रिया**—अध्यापक बच्चों को सामने नीचे अंकित चित्र प्रस्तुत करेगा?

**प्रश्न**

1. इस चित्र में कौआ क्या कर रहा है?

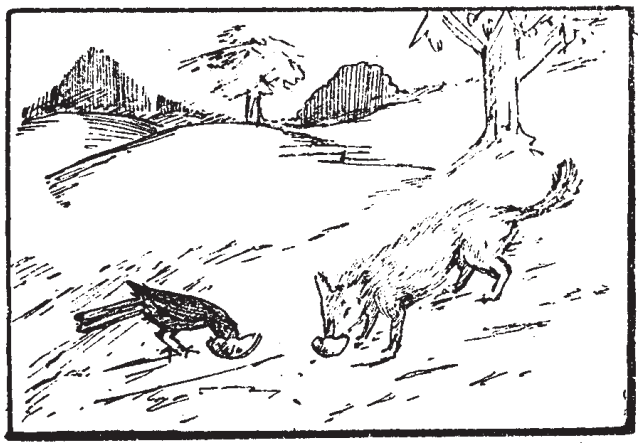

चित्र

2. बहुत ऊंचे पहुंचने पर कौए ने क्या किया होगा?

3. नारियल के नीचे गिरने पर उस पर क्या प्रभाव पड़ा होगा?

**छात्राध्यपक कथन**–कौए को लोमड़ी की बात बहुत अच्छी लगी और वह नारियल को अपनी चोंच में दबा कर ऊपर की ओर उड़ने लगा। बहुत ऊंचे पहुंचकर उसने नारियल को नीचे गिरा दिया। नारियल फूट गया और उसमें गिरी दिखाई देने लगी।

**छात्राध्यापक क्रिया**–अध्यापक बच्चों के सामने ऊपर अंकित चित्र प्रस्तुत करेगा।

**प्रश्न**

1. इस चित्र में लोमड़ी क्या कर रही है?

2. और कौआ क्या कर रहा है?

3. गिरी खाने के बाद लोमड़ी कहां चली गई होगी।

4. और कौआ कहां चला गया होगा?

**छात्राध्यापक कथन**–इस प्रकार गिरी देखते ही लोमड़ी और कौआ दोनों प्रसन्न हो गए। उन्होंने उसे बांट कर खाया और पिफर अपने–अपने स्थान को चले गए।

**मौखिक अभिव्यक्ति**

इस कहानी को अपने शब्दों में सुनाओ।

**लिखित अभिव्यक्ति**

इस कहानी को अपनी–अपनी पुस्तिकाओं में लिखो।

**कक्षा कार्य एवं निरीक्षण**

छात्र अपनी–अपनी पुस्तिकाओं में 'लोमड़ी और कौआ' शीर्षक डाल कर यथा कहानी को लिखना प्रारम्भ करेंगे। अध्यापक देखेगा कि सभी छात्र अपना–अपना कार्य स्वतन्त्रतापूर्वक स्वच्छता और शुद्धता के साथ करते हैं। अध्यापक बच्चों के बैठने के आसनों को भी ठीक करेगा।

**गह-कार्य**

बच्चों, इस कहानी के शेष भाग को अपने घर पर लिखना और अपने भाई–बहनों को सुनाना एवं दी गई रूपरेखा के आधार पर घर से कहानी अभ्यास–पुस्तिका में लिखकर लाना।

# (ङ)पत्र-लेखन

छात्राध्यापक का अनुक्रमांक ..... कक्षाः आठवीं

विषय – हिन्दी (रचना) अवधिः 35 मिनट

उपविषय– मित्र को छात्रवत्ति प्राप्त होने पर बधाई–पत्र दिनांकः 2 जून 2003

**सहायक-सामग्री**–कक्षा कक्ष, चॉक, झाड़न, श्यामपट्ट, अन्तर्देशीय पत्र

**अनुदेशनात्मक उद्देश्य**–प्रस्तुत पत्र को पढ़ने के उपरान्त छात्रों में निम्नांकित परिवर्तन होते हैं।

1. छात्र पत्र के प्रकारों से परिचित हैं।
2. छात्र पत्र के भागों के बारे में जानकारी रखते हैं।
3. उनको अर्जी लिखनी आती है।
4. वह अपनी समस्याओं से सम्बन्धित तथ्यों की जानकारी विभिन्न विभागों को दे सकते हैं।
5. छात्र बधाई पत्र लिखने को सामर्थ्य रखते हैं।

**पूर्व-ज्ञान**–बच्चे पढ़ने से ही पत्र लिखने का ज्ञान रखते हैं।

**पूर्व ज्ञान परीक्षा**

1. आपका क्या नाम है।
2. आप कौन सी कक्षा में पढ़ते हैं।
3. यदि आपने छुट्टी लेनी हो तो, क्या करोगे?
4. यदि मित्र को बधाई पत्र लिखना हो तो पत्र कैसे लिखोगे?

**उद्देश्य कथन**–आज हम मित्र को छात्रवत्ति मिलने पर बधाई पत्र लिखना सिखाएंगे।

**प्रस्तुतीकरण**–वर्णनात्मक एवं प्रश्नात्मक विधि द्वारा

| शिक्षण सामग्री | शिक्षण विधि | छात्र कार्य | श्यामपट्ट कार्य |
|---|---|---|---|
| बच्चों! पत्र के प्रारम्भ में अपने शहर का नाम, फिर नीचे तिथि और उसके बाएं हाथ अपने मित्र को सम्बोधित करना है। | पत्र के शुरू में क्या लिखा जाता है? | नाम, तिथि | 2 जून 2003<br>मित्र मोहन |
| यह पत्र का पहला भाग है इस के बाद कलेवर है, जो पत्र का मुख्य भाग है प्रिय<br>मित्र मोहन,<br>दिल्ली बोर्ड की दशम् कक्षा की परिणाम सूची में तुम्हारा नाम छात्रवत्ति प्राप्त छात्रों की सूची में देखकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। प्रिय | यह पत्र का कौन सा भाग है। | यह पत्र का पहला भाग है। | |

| शिक्षण सामग्री | शिक्षण विधि | छात्र कार्य | श्यामपट्ट कार्य |
|---|---|---|---|
| मित्र मुझे तो यही आशा थी कि तुमने अत्यधिक मेहनत की थी। 85 प्रतिशत अंक तुमने न केवल अपना वरन् माता–पिता व विद्यालय का नाम भी रोशन किया है। अपनी इस शानदार सफलता पर मेरी ओर से हार्दिक बधाई स्वीकार करें। अपने माता–पिता को भी मेरी तरफ से बधाई देना ना भूले। ग्रीष्म अवकाश में मैं तुम्हारे पास मिठाई खाने आऊंगा, मिठाई तैयार रखना।<br>आपका अभिन्न मित्र<br>सुरेन्द्र | छात्र अध्यापक पत्र को आगे बढ़ाने हेतु कई प्रश्न पूछेगा<br>छात्रवत्ति की खबर आप को कैसे लगी<br>उन्होंने (मित्र) किस–किस का नाम रोशन किया।<br>जीवन में परिश्रम का महत्व है।<br>मित्र कब आपने के लिए लिखना है। | समाचार पत्र से पता चला<br>माता–पिता का<br>विद्यालय का<br>परिश्रम की बड़ी महत्ता है।<br>ग्रीष्म अवकाश में। | मुख्य समाचार पत्र से पता चला।<br>उन्होंने माता–पिता एवं विद्यालय का नाम रोशन किया।<br>जीवन में परिश्रम की ही बड़ी महत्ता है।<br>मित्र ग्रीष्मावकाश में आने के लिए लिखता है। |

**पुनरावत्ति**

1. बच्चों पत्र के प्रारम्भ में क्या लिखना है?
2. बच्चों जिन्दगी में परिश्रम का क्या महत्व है?
3. आपके मित्र ने किस–किस का नाम रोशन किया?

**गहकार्य**

बच्चों! दिए गए पत्र को आधार बनाकर घर से मित्र को जन्मदिन के अवसर पर बधाई पत्र लिखकर लाना है।

# (च)– पाठ योजना

| | |
|---|---|
| छात्राध्यापक का अनुक्रमांक ..... | कक्षाः नवीं |
| विषय – हिन्दी (व्याकरण) | अवधिः 35 मिनट |
| उपविषय– समास एवं उसके भेद | कालांशः |
| | दिनांकः |

**अनुदेशनात्मक सामग्री**

चार्ट जिस पर समास व उसके भेदों की परिभाषा लिखी है, समास के भेदों को दर्शाता मॉडल/प्रतिमान।

**अनुदेशनात्मक उद्देश्यः** प्रस्तुत अध्याय का अध्ययन करने के उपरान्त छात्रों से यह अपेक्षा की जाती है कि उनमें निम्नांकित परिवर्तन दष्टिगोचर होंगे।

1. छात्र, वर्ण, शब्द और वाक्यों का शुद्ध प्रयोग करने की क्षमता रखते हैं।
2. वे भाषा के सर्वमान्य रूप का प्रयोग करते हैं।
3. छात्र व्याकरण के नियमों की जानकारी रखते हैं।
4. विद्यार्थी भाषा के गुण–दोषों को परखने में सक्षम है।
5. वै मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति शुद्ध रूप में करते हैं।
6. छात्र समास की परिभाषा बताते हैं।
7. छात्र समासों की परिभाषा का प्रत्यास्मरण करते हैं।
8. छात्र समास शब्दों का प्रत्यास्मरण करते हैं।
9. विद्यार्थी शिक्षण–सामग्री से समास शब्दों को पहचानते हैं।
10. छात्र समासों के उदाहरण देते हैं।
11. छात्र द्वन्द्व समास के उदाहरणों को देखकर उनका सामान्यीकरण करके परिभाषा बताते है।
12. छात्र कर्मधारय समास, अव्ययी भाव समास के अन्तर को पहचानते हैं।
13. छात्र तत्पुरूष समास और बहुब्रीहि समास की तुलना करते हैं।
14. छात्र द्वन्द्व समास की परिभाषा का प्रत्याभिज्ञान करते हैं।
15. छात्र समास के उदाहरण देने व समास–विग्रह करने में रूचि रखते हैं।
16. छात्र दिए गए शब्दों का संश्लेषण करते है।
17. छात्र द्वन्द्व समास के शब्दों का विश्लेषण करते हैं।

प्रारम्भिक व्यवहार

छात्र पहले से ही समास एवं उसके भेदों की जानकारी रखते हैं।

प्रस्तावना/पूर्व ज्ञान परीक्षा

1. बच्चों! आप के देश का क्या नाम है?
2. भारत के ऐसे कौन से नेता थे, जिन्हें बापू के नाम से जाना जाता है?
3. महात्मा गांधी की प्रिय राम धुन कौन सी थी।

छात्राध्यापक, छात्रों की सहायता से रामधुन को श्यामपट्ट पर लिखता है।

(रघुपति राधव राजा–राम

पतित पावन सीता–राम)

(चार्ट भी दर्शाया जा सकता है)

4. इन पंक्तियों में जुड़े–जुड़े शब्दों को रेखांकित कीजिए?
5. इन जुड़े–जुड़े शब्दों को व्याकरण की दष्टि से क्या कहते हैं?

**उद्देश्य कथन/उपविषय की घोषणा**–अन्तिम प्रश्न का उत्तर संतोषजनक पाकर या न पाकर छात्राध्यापक घोषणा करता है कि अच्छा बच्चो! आज हम 'समास एवं उसके भेदों का अध्ययन करेंगे।

**प्रस्तुतीकरणः** आगमन से निगमन की ओर शिक्षण सामग्री का निर्धारण

**समासः** आपस में सम्बन्ध रखने वाले दो या दो से अधिक पदों के मेल को समास कहते है।

समास के चार भेद हैं (चार्ट दिखाया जायेगा)

| शिक्षण – विधि | छात्र क्रियाएं |
|---|---|
| छात्राध्यापक बच्चों से कुछ प्रश्न पूछेगा | छात्र बोध के अनुसार उत्तर देंगे। |
| उत्तर भारत की पवित्र नदियों के नाम बताओ? | गंगा–यमुना |
| श्रवण किसकी आँखों का तारा था? | माता–पिता की |
| हमें अपने देश की सेवा कैसे करनी चाहिए | तन–मन–धन |
| आप इन जुड़े–जुड़े शब्दों से क्या समझते हैं। | समस्त पद |
| हम इन शब्दों को अलग कैसे करेंगे– | कारकीय विभिक्त लगा कर। |
| बच्चो! द्वन्द्व समास की परिभाषा बताओ? | बच्चे बोध के अनुसार उत्तर देंगे। आवश्यक नहीं की उत्तर ठीक हो। |
| जिस समास के दोनों पद प्रधान होते है तथा विग्रह करने पर 'और', 'तथा', 'अथवा', 'या' आदि शब्द लगते हैं, उसे द्वन्द्व समास कहते हैं। (परिभाषा श्यामपट्ट पर लिखी जाती है)। ज्ञान को स्थायी करने हेतु पुनः कुछ उदाहरण दिए जाते हैं– | |
| राम–लक्ष्मण – राम और लक्ष्मण | छात्र अपनी अभ्यास पुस्तिका में लिखते हैं। |
| भला–बुरा – भला और बुरा | |
| माँ–बाप – माँ एवं बाप | |
| धर्माधर्म – धर्म अथवा अधर्म | |
| थोड़ा–बहुत – थोड़ा या बहुत | |

छात्राध्यापक उपर्युक्त शब्दों को श्यापपट्ट पर लिखेगा एवं

घूम–घूम कर कक्षा कार्य का निरीक्षण करेगा।

**शिक्षण-प्रक्रिया का निर्धारणः** विषय–वस्तु को पढ़ाने के पश्चात् एवं अनुदेशनात्मक उद्देश्यों के निर्धारण के बाद अध्यापक पुनः शिक्षण प्रक्रिया को दोहराता है।

जैसे– सज्जन पुरुष, यश और अपयश की चिन्ता नहीं करते।

भगवान के सामने राजा और रंक बराबर है।

शिक्षक छात्रों को समस्त पद बनाने के लिए कहता है यथा–यश–अपयश, राजा–रंक।

**मूल्यांकनः**

**पुनरावत्तिः** 1. उत्तर भारत में कौन सी पवित्र नदियाँ है?

2. हमें अपने देश की सेवा किस प्रकार करनी चाहिए?

3. श्रवण किसी आंखों का तारा था?

**गहकार्यः** निम्न समस्त पदों का विग्रह घर से अभ्यास पुस्तिका में करके लाना है–

1. दाल – भात
2. खीर – पूड़ी
3. धर्माधर्म
4. माँ–बाप
5. पाप–पुण्य
6. सेवक–स्वामी
7. राधा–कृष्ण
8. राम – सीता
9. शिव–पार्वती